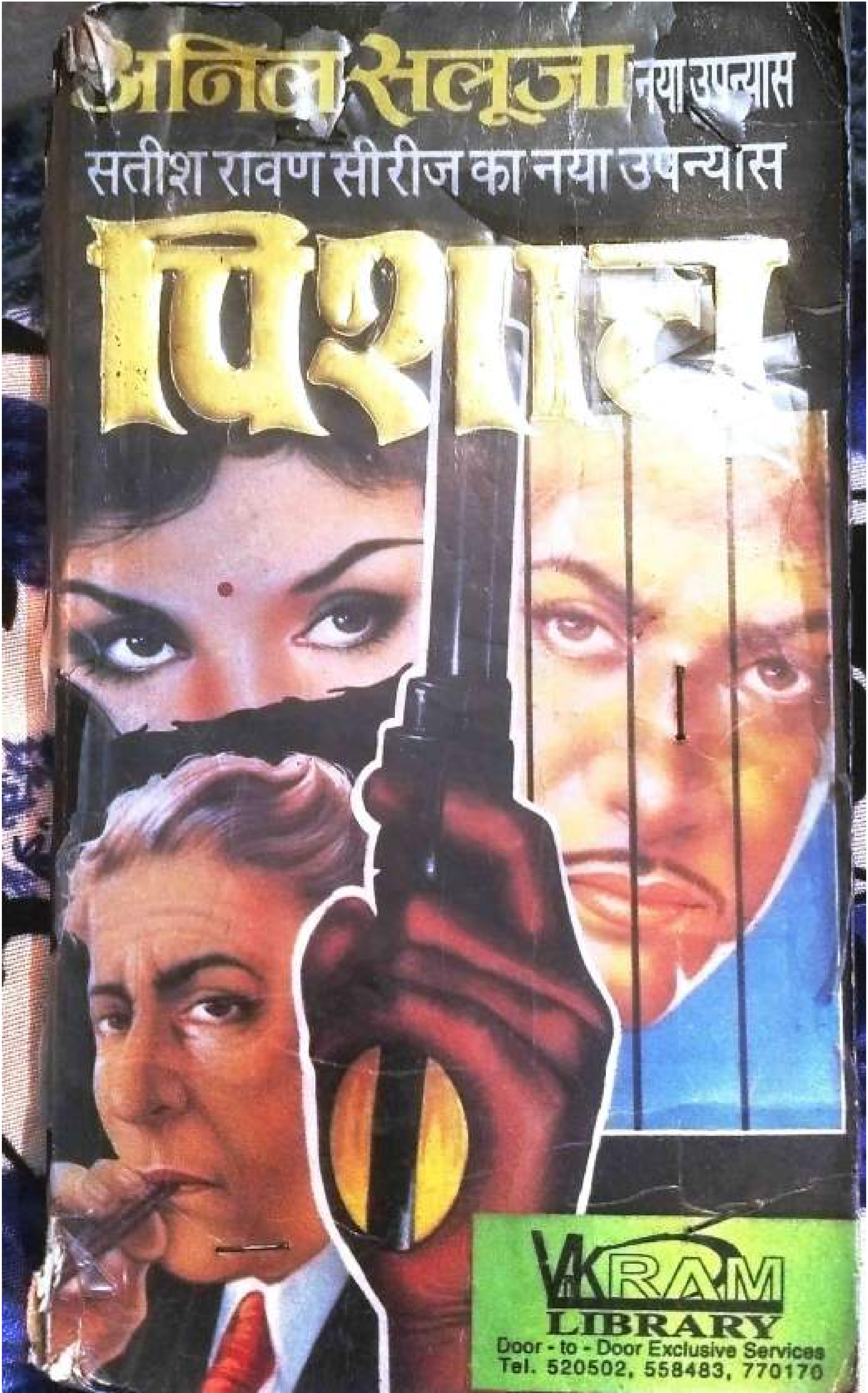

अनिल सलूजा
नया उपन्यास
सतीश रावण सीरीज का नया उपन्यास
पिशाच
VIKRAM
LIBRARY
Door - to - Door Exclusive Services
Tel. 520502, 558483, 770170

भेड़िया सीरीज

पिशाच

अनिल सलूजा

'तड़...तड़...तड़...।'

'बड़ा...म...!'

पहले गोलियों की आवाजों से पूरा इलाका कांपा...फिर टायर के ब्रस्ट होने का जबदस्त धमाका हुआ।

उसी के साथ ही वह वैन शराबी की तरह सड़क पर लहराई और फुटपाथ पर चढ़कर एक तरफ उलट गई।

'तड़...तड़...तड़...।' सड़क के दोनों तरफ से पुनः गोलियों की आवाजें उभरीं।

'खनाक्...खनाक्' की आवाजों से वैन की विण्ड स्क्रीन और खिड़कियों के शीशे टूट गये।

तभी वैन की टूटी विण्ड स्क्रीन में से तीन व्यक्ति हाथों में स्टेनगनें लिये बाहर कूदे...उसी के साथ ही वैन का पिछला दरवाजा खुला और उसमें से दो व्यक्ति बाहर निकले।

अपने साथियों की तरह वे भी स्टेनगनों से लैस थे।

मगर इससे पहले कि वे मुकाबला करने के लिये पोजीशन लेते—

'तड़...तड़...तड़...।'

सड़क के दोनों तरफ से शोलों की बारिश शुरू हो गई उन पर...और देखते-ही-देखते वे पांचों लाशों में तब्दील हो सड़क पर बिखर गये।

बेचारों को गोली चलाने तक का मौका हासिल नहीं हुआ...उनके हाथों में नयी स्टेनगनों से एक पटाखा तक नहीं छूटा।

उनके मरते ही वहां एकदम से मौत का-सा सन्नाटा छा गया।

करीब पांच मिनट बाद ही एक टाटा सूमो उस उलटी पड़ी वैन के करीब पहुंची और देखते-ही-देखते उसमें से स्टेनगनों से लैस चार व्यक्ति बाहर निकले।

स्टेनगनों को ताने उन्होंने पहले वैन का मुआयना करना शुरू किया कि कोई रह तो नहीं गया।

दो व्यक्ति आगे ड्राइविंग केबिन की तरफ बढ़े और टूटी हुई विण्ड स्क्रीन में से भीतर झांका।

एक व्यक्ति जमीन के साथ लगे दरवाजे के साथ घायलावस्था में पड़ा कराह रहा था।

तुरन्त दोनों में से एक ने स्टेनगन का रुख उसकी तरफ किया और ट्रेगर दबा दिया।

'तड़...तड़...तड़...!'

गोलियों ने उस व्यक्ति के जिस्म में घर बना लिया।

वह बेचारा तड़प भी नहीं पाया और लाश में तब्दील हो गया।

आगे की पूरी तसल्ली करने के बाद वे दोनों पीछे आये, जहां पर कि उनके साथी खड़े थे।

"कोई मिला...?" उनमें से एक ने पूछा।

"नहीं...।" पीछे वालों में से एक बोला—"सभी खत्म हो गये हैं।

"माल निकालो...

तुरन्त पीछे वाले दोनों वैन के पिछले हिस्से में प्रवेश कर गये।

अन्दर लकड़ी की छः पेटियां पड़ी थीं तथा चार पेटियां गत्ते की पड़ी थीं।

दोनों ने पांच चक्कर लगाये वे पेटियां वैन से सूमो में पहुंचाने में और फिर वे सभी सूमो में सवार हो गये।

सूमो स्टार्ट होकर थोड़ा-सा बैक हुई...फिर पीछे मुड़ी और फिर गोली की तरह वहां से भाग निकली।

□□□
□□□

"वाह! मजा आ गया...करोड़ों का माल एक ही झटके में हमारा। ठाकुर को जब पता चलेगा कि उसका करोड़ों का माल कोई उड़ाकर ले गया है तो उसके हाथों के तोते उड़ जायेंगे...।"

"और जब उसे अपने वफादारों की मौत का पता चलेगा तो निश्चय ही वह पागल हो उठेगा। छाती पीटने लगेगा अपनी।"

"हा...हा...हा...!"

तीसरे ने ठहाका लगाया।

"बेचारा ठाकुर...यह सोच-सोचकर ही मर जायेगा कि उसका माल उड़ाया तो किसने उड़ाया।"

चौथा भी हंसते हुए बोला। वह सूमो को ड्राईव कर रहा था।

इस वक्त सूमो शहर की सीमा में प्रवेश करने जा रही थी।

"इसी तरह अगर ठाकुर के दो-तीन चोट और पहुंच गई...तो समझ लो उसका बेड़ागर्क हुआ कि हुआ...।"

चौथा अपने साथियों की तरफ देखते हुए चहका।

"सलामत रहे चौहान... अगर उसकी इन्फारमेशन हमें वक्त पर मिलती रही तो वह दिन दूर नहीं जब लखनपुर पर हमारा राज चलेगा और ठाकुर का नाम भी लोग भूल जायेंगे।"

"सामने देख हीरा...।" तभी पीछे बैठा व्यक्ति चीखा।

ड्राइविंग कर रहे हीरा ने हड़बड़ा कर सामने देखा।

दैत्य की तरह एक ट्रक धड़धड़ाता हुआ उनकी तरफ बढ़ रहा था और इस वक्त वह सिर पर आ पहुंचा था।

सड़क तंग थी।

हीरा ने सूमो को सम्भालने की पूरी कोशिश की कि वह कच्चे पर उतार कर बचा ले।

मगर तब तक बहुत देर हो चुकी थी।

'धड़ाक...।' बड़ी तेज आवाज के साथ ट्रक सूमो से टकराया।

सूमो जोरों से लड़खड़ाई और पलट कर सड़क से नीचे गिरी और फिर पलटियां खाती हुई सड़क के नीचे लगी झाड़ियों की तरफ लुढ़कने लगी।

ट्रक ड्राइवर ने सूमो की हालत देखी तो पहले तो वह घबराया...फिर ट्रक को पूरी गति से दौड़ा दिया।

मन ही मन वह ऊपर वाले का शुक्र अदा कर रहा था कि सड़क पूरी तरह से खाली थी और किसी ने एक्सीडेन्ट होते नहीं देखा था।

□□□
□□□

'भड़ाक!'

एक तेज आवाज सतीश रावण के कानों में पड़ी।

आवाज से ही वह समझ गया कि कोई तगड़ा एक्सीडेन्ट हुआ है...सो वह तेजी से रेल की बोगी से निकला और उधर भागा जिधर से कि आवाज आई थी।

गंगानगर से भागकर वह सीधा हरियाणा में दाखिल हुआ था।

उसकी बदकिस्मती कि हरियाणा पुलिस को उसका पता चल गया और वह उसके पीछे लग गई।

उस वक्त सतीश रावण हिसार के रेलवे स्टेशन के करीब था, जब उसे हथियारों से लैस चार पुलिसिये अपनी तरफ बढ़ते नजर आये।

बुरी तरह से बौखला उठा वह और वहां से भागा।

पुलिस उसके पीछे भागी।

साथ ही सतीश रावण पर एक साथ तीन फायर हुए।

मगर वह सकुशल था। गोलियां उसके दायें-बायें से निकल गईं।

तभी छुक-छुक की आवाज उसके कानों में पड़ी।

भागते हुए ही उसने आवाज की दिशा की तरफ देखा।

एक मालगाड़ी स्टेशन छोड़कर जा रही थी।

बिना कोई वक्त गंवाये सतीश रावण ट्रेन की तरफ लपका और कुछ देर ट्रेन के साथ भागते हुए आखिर उसने एक बोगी को पकड़ ही लिया।

ठीक तभी दो-तीन फायर और हुए उस पर।

मगर तब तक सतीश रावण बोगी में चढ़ चुका था।

उस बोगी में कोयला भरा हुआ था।

सतीश रावण कोयले पर लेट गया और लम्बी-लम्बी सांसें छोड़ने लगा।

बाल-बाल बचा था वह।

अगर वक्त रहते उसे पुलिस का पता नहीं चल जाता तो निश्चय ही अब तक कई गोलियां उसके जिस्म में पेवस्त हो चुकी होतीं।

लेटे-लेटे पता नहीं कब नींद ने उसे धर दबोचा था और पता नहीं कितनी देर तक सोता रहा था वह।

उसे बस इतना पता था कि जब वह ट्रेन में चढ़ा था, तो सूरज निकला हुआ था और अब रात का अंधेरा चारों तरफ फैला हुआ था।

जिस वक्त उसकी नींद खुली... उसने अपने वाली बोगी को खड़े पाया था। उसकी बोगी के साथ दो बोगियां और भी खड़ी थीं। बाकी ट्रेन का कहीं पता नहीं था।

"ट्रेन उन दोनों बोगियों को वहां छोड़कर चली गई होगी।"

सतीश रावण ने यही सोचा।

अभी वह यह सब सोच ही रहा था, जब उसके कानों में एक्सीडेन्ट की आवाज पड़ी थी।

"हो सकता है, एक्सीडेन्ट में कोई मर-खप गया हो... और वहां से कुछ माल-पानी हासिल हो जाये...।"

यही सोचकर वह उधर भागा था।

सड़क के करीब पहुंचते ही उसकी निगाहें सड़क के नीचे उलटी पड़ी... बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो रही सूमो पर पड़ी।

तुरन्त वह उधर लपका और सूमो के करीब पहुंच कर भीतर झांका।

अंधेरे में उसे सूमो में चार साये बिखरे पड़े नजर आयें।

एक स्टेयरिंग के पीछे दबा हुआ था, दो पिछली सीटों के नीचे लकड़ी की पेटियों के नीचे दबे पड़े थे तथा एक सूमो के नीचे दबा हुआ था।

निश्चय ही वह सूमो के लुढ़कने से उछलकर बाहर आ गिरा था और तभी सूमो उस पर आ पड़ी थी।

तभी सतीश रावण की निगाहों में दो स्टेनगनें आईं।

अंधेरे में हालांकि स्टेनगनें नज़र नहीं आ रही थीं, मगर चांद की रोशनी सीधा उन दो स्टेनगनों पर पड़ रही थी...जिसकी वजह से उसे वे नजर आ गई थीं।

स्टेनगनें देखकर वह पहले तो चौंका...फिर उसके होठों पर मुस्कान फैल गई।

"मेरी ही बिरादरी के भाई-बन्द लगते हैं...।" वह बड़बड़ाया और आगे बढ़कर दोनों स्टेनगनों में से एक हाथ लम्बा करके निकाल ली।

'अवश्य ही पेटियों में भी मेरे ही मतलब का सामान भरा होगा।" वह स्टेनगन को उलटते-पलटते हुए पेटियों की तरफ देखते हुए बोला और सूमो के पिछले हिस्से की तरफ बढ़ा।

पिछले दरवाजे के सामने आकर उसने जोर लगाकर पिछला दरवाजा खोला और गर्दन भीतर करके दोनों हाथों से गत्ते की एक पेटी को खींचकर बाहर निकाली और उसे खोलने लगा।

मगर गत्ते की पेटी इतनी मजबूती से पैक थी कि हाथों से खोल नहीं पा रहा था वह उसे।

मगर हताश नहीं हुआ वह...अपना दायां हाथ ऊपर उठाकर उसने पीठ पर कॉलर के बीच डाला और अपनी पीठ से चिपकी आरी खींच ली।

उसने आरी से गत्ते को काटा और फिर उसे खोलकर भीतर झांका।

पोलीथीन की थैलियों से भरी पड़ी थी वह पेटी।

सतीश रावण ने एक थैली निकालकर उसे चांद की रोशनी में किया तो पेन के आकार की बत्तियां भरी नजर आईं उसे।

"चरस...।" वह बड़बड़ाया...साथ ही उसकी आंखों में हजारों वाट की चमक उभर आई।

एक ही झटके में करोड़ों का माल हासिल हो गया था उसे...वह भी बिना हाथ-पैर हिलाये और क्या चाहिये था उसे?

उसने तुरन्त थैली वापिस पेटी में डाली और उसे एक तरफ रखकर भीतर से अन्य पेटियां निकालने लगा।

अभी वह चार पेटियां ही निकाल पाया था कि तभी—

"हैण्ड्स अप...।" एक दहाड़ती आवाज उसके कानों के परदे से टकराई।

बुरी तरह से चिहुंक उठा सतीश रावण...साथ ही वह तेजी से आवाज की दिशा की तरफ मुड़ा।

एक-दो नहीं...पूरे छः पुलिसिये थे...जिनमें से दो के हाथ में रिवाल्वरें थीं और बाकी चार के हाथों में डण्डे थे।

पीछे सड़क पर पुलिस की जीप खड़ी थी।

इतना माल मिलने की खुशी में वह इस कदर बेसुध हो गया था कि उसे यह तक ध्यान नहीं रहा कि वह सड़क के करीब खड़ा है।

तभी तो खता खा गया था।

जब तक वह सम्भलता, पुलिस से चारों तरफ से घिर चुका था।

एक सिपाही के नीचे पड़ी स्टेनगन देखी तो वह चीखा—"स्टेनगन सर!"

"कब्जे में करो...!" रिवाल्वर ताने इंस्पैक्टर बोला—"और उन पेटियों में देखो!"

फौरन दूसरे सिपाहियों में से एक ने खुली पेटी से थैली उठाई।

अगले ही पल वह चीखा—"चरस...!"

इंस्पैक्टर जोरों से चौंका...फिर उसके होंठों पर ऐसी मुस्कान फैली जैसे उसने बहुत बड़ा हाथ मारा हो।

और फिर उसके आदेश पर सिपाहियों ने आनन-फानन सतीश रावण को हथकड़ी में जकड़ा और सड़क पर ले जाकर जीप के फ्रेम के साथ हथकड़ी के दूसरे सिरे को लॉक कर दिया।

"बुरे फंसे...!" सतीश रावण मन ही मन बड़बड़ाया। अब वह उस वक्त को कोस रहा था कि जब उसने एक्सीडेन्ट की आवाज सुनी थी...फिर उस वक्त को कोसने लगा जब उसने सड़क की तरफ से लापरवाही दिखाई थी।

ऊपर से उसे यह डर लग रहा था कि कहीं वह पहचाना न जाये। वह जानता था कि अगर वह पहचान लिया गया, तब मौत तो उसे शायद न आये...मगर सारी उम्र जेल से बाहर नहीं निकल पाये वह। क्योंकि अपनी मौत का उसे पता था कि वह कैसे आयेगी।

शैतान आत्मा जो था वह। वह शैतान आत्मा जिसने धर्मराज के सिंहासन तक को हिला डाला था!

उसे फ्रेम के साथ बांधने के बाद एक सिपाही वहीं रुक गया...जबकि बाकी सड़क से नीचे उतर कर इंस्पैक्टर के करीब पहुंच गये।

"तलाशी लो गाड़ी की।" इंस्पैक्टर ने हुक्म सुनाया।

कुछ ही देर में सभी पेटियां तथा चार लाशें बाहर पड़ी थीं।

हीरा तथा उसके तीनों साथी उस एक्सीडेन्ट में मर गये थे।

"फौरन कन्ट्रोल रूम मैसेज भेजो कि यहां एम्बूलेंस भेजी जाये।" इंस्पैक्टर ने एक हवलदार से कहा।

हवलदार फौरन सड़क की तरफ बढ़ने लगा।

इंस्पैक्टर ने अपने करीब खड़े सब-इंस्पैक्टर खरे की तरफ गर्दन मोड़ी।

"यह पांचों गैरकानूनी काम करते थे... ।" वह बोला—"और यह सारा माल लखनपुर से ला रहे थे...मगर इत्तफाक से गाड़ी का एक्सीडेन्ट हो गया और पांच में से चार मर गये। बाकी बचे एक ने सारा माल समेट कर वहां से निकलना बेहतर समझा, मगर उसके निकलने से पहले ही हम गायब हो गये।"

"हो सकता है सर कि यह सिर्फ प्यादे हों...और यह किसी और के लिये काम करते हों।" खरे बोला।

इंस्पैक्टर ने चौंककर उसकी तरफ देखा।

"कहीं तुम जगतार सिंह को तो इसमें नहीं घसीट रहे?" वह बोला।

"जगतार सिंह एक बहुत बड़ा क्रिम्नल है सर। लखनपुर के अण्डरवर्ल्ड पर उसी का राज है। यह बात हर कोई जानता है। पुलिस भी जानती है, लेकिन आज तक वह गिरफ्तार नहीं किया जा सका।"

"क्योंकि उसके खिलाफ आज तक कोई सबूत नहीं मिला...और बिना सबूत के उस पर हाथ डाला नहीं जा सकता।"

"हो सकता है, यह माल उसी का हो...और वो आदमी उसी का आदमी हो, अगर वह यह कबूल कर लेता है तो इससे पुलिस उसे बेशक गिरफ्तार न कर सके...मगर उसके विरुद्ध कदम उठाने का मौका तो मिल सकता है।"

इंस्पैक्टर ने समझने वाले अंदाज में सिर हिलाया। खरे की बात उसे सही लगी थी।

"थाने चलकर पूछेंगे इससे कि वह किस हरामी की औलाद है।"

वह बोला।

तभी हवलदार वापिस आ गया।

"मैसेज भेज दिया?" इंस्पैक्टर ने पूछा।

"यस सर...और कन्ट्रोल रूम की तरफ से भी एक मैसेज आया है सर।"

"क्या?"

"नत्थू शाह रोड पर एक वैन उलटी पड़ी है तथा उसके पास खून से लथपथ छह लाशें पड़ी हैं।"

बुरी तरह से चौंका इंस्पैक्टर शिवदयाल।

खरे भी चौंक पड़ा।

"कन्ट्रोल रूम से वहां के लिये एम्बूलैंस भेज दी गई है...और पंचनामा करने के लिये आपको कहा गया है।"

हवलदार ने कहा।

इंस्पैक्टर शिवदयाल ने गहरी सांस छोड़ी—"हा नई रात काली... ।" वह बड़बड़ाया और खरे को उन लाशों का पंचनामा तैयार करने तथा सारा माल उसकी निगरानी में छोड़ दो सिपाहियों को साथ ले जीप की तरफ बढ़ गया।

पिछली सीट पर बैठा सतीश रावण अभी भी ऊपर वाले को कोस रहा था कि यह किस जंजाल में फंसा दिया उसने।

स्टेयरिंग पर बैठकर शिवदयाल ने दोनों सिपाहियों को सतीश रावण के सामने उसकी निगरानी करने के लिये पीछे बैठने को कहा और फिर एक घुरती नजर सतीश रावण पर डालकर सामने देखने लगा।

□□□

□□□

सुबह छः बजे शिवदयाल थाने के फाटक में जीप चलाते हुए प्रविष्ट हुआ।

पिछली सीट पर बंधे सतीश रावण को फाटक के ऊपर लिखे थाना लखनपुर से ही पता चला कि इस वक्त वह लखनपुर में है।

उसने जीप थाने के प्रांगण में खड़ी की और उतरते हुए बोला—"इसे हवालात में डाल दो... ।"

सिपाही फौरन सतीश रावण की तरफ आकर्षित हो गये।

शिवदयाल मुंशी के आफिस में पहुंचा और वहां रोजनामचे में अपने आने का वक्त...सारी रात उसने क्या किया...सब कुछ दर्ज किया और फिर मुंशी से खरे के बारे में पूछा।

"खरे आया क्या...?"

"नो सर... ।" मुंशी बोला—"अभी नहीं आये।"

शिवदयाल बाहर निकला और कमर सीधी करने के लिये थाने के पिछवाड़े बने अपने कमरे की तरफ बढ़ गया।

अपने कमरे में प्रवेश कर वह कमर सीधी करने के लिये वर्दी समेत ही बैड पर लेट गया।

लेटते ही उसे नींद आ गई...और तब का सोया वह नौ बजे जाकर उठा।

उसने वर्दी उतारी और कमरे से निकलकर सीधा बाथरूम में जा घुसा।

दस बजे वह अपने आफिस में नहा-धोकर प्रविष्ट हुआ तो

खरे को कुर्सी पर बैठे अपना इन्तजार करते पाया जो कि उसे देखते ही खड़ा हो गया था।

शिवदयाल टेबल के पहलू से निकलकर अपनी कुर्सी पर बैठा।

"कब आये तुम...?" उसने खरे से पूछा।

"सात बजे आ गया था सर।" खरे बोला।

"क्या-क्या सामान हासिल हुआ वहां से...?"

खरे ने एक लिस्ट उसकी तरफ बढ़ा दी।

शिवदयाल ने लिस्ट लेकर उसे पढ़ना शुरू किया—"चार स्टेनगनें...एक बैकरी में काम आने वाली आरी...अस्सी किलो चरस...तीस किलो अफीम...पांच किलो प्योर हेरोइन और बीस किलो सोने के बिस्कुट। इनके अलावा लाशों की जेबों से दो ड्राइविंग लाइसेंस जो कि हीरालाल और करमचंद के नाम के थे...टाटा सूमो की आर.सी....तीन पर्स जिनमें कुल नौ हजार तीन सौ तीस रुपये थे...चार रुमाल और एक टेलीफोन नम्बरों की पॉकेट डायरी जिस पर कि तीन फोनों के नम्बर अंकित हैं।"

शिवदयाल ने लिस्ट टेबल पर रखी और खरे की तरफ देखा—

"नम्बरों का पता लगाया कि वे किसके हैं?"

"नो सर...अभी कुछ नहीं लगाया।"

"स्टेनगनें क्या फुल लोडेड थीं...?"

"नहीं...उनमें काफी कम गोलियां बची थीं...तथा उनकी नालों से बारुद की गंध आ रही थी, जैसे हाल ही में उनका भरपूर उपयोग किया गया हो।"

एक गहरी सांस निकल गई शिवदयाल के होठों से।

"फिर तो लंगोट कस लो खरे।" वह बोला—"अब के बाद शायद ही हमें आराम करने का मौका मिले...।"

"मैं कुछ समझा नहीं सर...।"

"नत्थूशाह रोड पर मुझे जो छः लाशें मिलीं, वे सभी स्टेनगन की गोलियों से मरे थे। साथ में एक वैन उलटी हुई थी, जिसका एक टायर गोली से ब्रस्ट हो रहा था।"

"ओह!"

"और वहां से पांच स्टेनगनें मिलीं, जिनमें से अभी एक भी गोली नहीं चली थी...सभी की सभी फुल लोडेड थीं...।"

"मगर सर...इसमें हमारे आराम हराम होने की बात कहां से आ गई?"

"गैंगवार...।"

बुरी तरह से उछल पड़ा खरे।

"य...यह आप क्या कह रहे हैं सर...?"

"सूमो वालों ने वैन वालों को गोलियों से उड़ाया और उनका

माल ले उड़े। यह कहानी साफ सामने आ रही है। यानि लखनपुर में दो गैंग सक्रिय हैं। वैन वाले गैंग के लोग किसी भी सूरत में अपने माल का लुटना...और अपने आदमियों की मौत बर्दाश्त नहीं करेंगे। वो सूमो वालों को दोगुना नुकसान पहुंचाने के लिये उन पर हमला करेंगे। जाहिर है कि इससे गैंगवार ही छिड़ेगा।"

"फिर तो सर जो आदमी हमने पकड़ा है...वह शर्तिया जगतार का ही आदमी है।"

"कैसे...?"

"जगतार का लखनपुर अण्डरवर्ल्ड पर राज चलता है। ऐसे में वह कैसे बर्दाश्त करेगा कि कोई दूसरा उसके सामने चुनौती बने। जगत ने वक्त रहते ही उठने वाले व्यक्ति की टांगें काट देने का फैसला किया और जब उसे पता चला कि उसके दुश्मन का माल आ रहा है तो उसने अपने आदमियों को आदेश दे दिया। उसके आदमियों ने दूसरे गैंग की वैन पर हमला कर उसमें सवार सभी को खत्म किया और सारा माल लूट कर चलते बने...मगर बदकिस्मती से सूमो का एक्सीडेन्ट हो गया और उनमें से चार खत्म हो गये। जब हम वहां पहुंचे तो पांचवा जो कि चमत्कारी ढंग से बच गया था...सारे माल को बाहर निकाल रहा था...ताकि पुलिस या दूसरे गैंग को पता न चले कि हमला जगतार के आदमियों ने किया है।"

शिवदयाल ने समझने वाले अंदाज में सिर हिलाया और बोला—

"टॉर्चर सेल में पहुंचाओ उसे...देखते हैं क्या बकता है वह?"

"यस सर...।" तत्परता से बोला खरे और खड़ा हो गया।

❑❑❑

❑❑❑

थाने के टॉर्चर रूम में सतीश रावण एक लोहे की कुर्सी से बंधा हुआ था।

उसकी टांगें कुर्सी के पायों के साथ बंधी हुई थीं...तथा बाहें हत्थों के साथ बंधी हुई थीं।

जिस्म पर कपड़े का एक रेशा भी नहीं था उसके।

सिर से पांव तक पूरी तरह से बेलिबास था।

उसके करीब ही सब-इंस्पैक्टर खरे खड़ा था तथा दो अन्य सिपाही खड़े थे जो कि हाथों में डण्डे लिये थे।

अभी तक किसी ने भी उससे बात भी नहीं की थी।

सतीश रावण मन ही मन बुरी तरह से कांप रहा था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह वहां से छूटे तो कैसे छूटे।

शिवदयाल के साथ वह वैन तक गया था...वहां उसने बिखरी पड़ी लाशें देखीं तो वही कहानी उसके जेहन में भी आई जो कि शिवदयाल ने खरे को सुनाई थी।

यही कहानी दिमाग में आते ही एक घबराहट-सी हावी हो गई थी उस पर। वह समझ गया कि अब उन छहों के खून उसी पर आमद होंगे...साथ ही गैरकानूनी माल भी उसी का ही माना जायेगा।

तभी शिवदयाल ने टॉर्चर सेल में प्रवेश किया।

तुरन्त एक सिपाही ने एक कुर्सी सतीश रावण के सामने रख दी और एक तरफ हट गया।

शिवदयाल उस कुर्सी पर बैठा और अपनी कोहनियां घुटनों पर रखते हुए निगाहें सतीश रावण के चेहरे पर केन्द्रित कीं।

"क्या नाम है तेरा...?" वह गुर्राया।

सतीश रावण ने जोरों से थूक सटकी। मुंह से बोल नहीं फूटा उसके।

"बहुत घुटा हुआ है सर यह...ऐसे नहीं मानेगा।" तभी खरे बोला—"इसे तो जूते मार कर ही कबुलवाया जा सकता है।"

"नाम बोल अपना।"

उसकी बात पर गौर न करते हुए शिवदयाल ने अपना प्रश्न दोहराया।

"ग...गनेश लाल।" सतीश रावण ने थूक सटकते हुए कहा।

"कहां रहता है?"

"द...दिल्ली...।"

"यहां क्या करने आया था?"

सतीश रावण चुप रहा...इस बात का जवाब नहीं था उसके पास।

"किसके लिये काम करता है...?"

"म...मैं किसी के लिये काम नहीं करता साहब...।"

'तड़ाक...!'

टॉर्चर सैल में पटाखा गूंजा और सतीश रावण के गाल पर पंजे का निशान छपे गया।

"हरामखोर...झूठ बोलता है। सच-सच बता...किसका कुत्ता है तू...?" दहाड़ा शिवदयाल।

सतीश रावण का गाल जल उठा। आंखों में आंसू भर आये। बंधा होने की वजह से वह अपने गाल को सहला भी नहीं सकता था।

"म...मेरा यकीन कीजिये साहब...मेरा उस सूमो से कोई रिश्ता नहीं...।" वह किसी तरह खुद को संयत करते हुए बोला।

शिवदयाल की आंखों में खून उतर आया।

"जूतों का यार है तू...तू ऐसे नहीं मानेगा।" वह गुर्राया और खड़ा हो गया।

अगले ही पल उसका दायां पैर उठा और सीधा सतीश रावण

के सीने पर जा पड़ा।

सतीश रावण कुर्सी समेत पूरे वेग से पीछे को पलट गया...उसके सिर का पृष्ठ भाग पूरे वेग से फर्श से टकराया और उसकी आंखों के आगे लाल-पीले तारे नाच उठे।

"ठुकाई करो हरामी की...!" दहाड़ा शिवदयाल—"अभी भौंकेगा कि यह किसका कुत्ता है।"

दोनों सिपाही तुरन्त सतीश रावण की कुर्सी के करीब आ खड़े हुए।

कुर्सी उलटने की वजह से सतीश रावण के पैरों के तले सामने हो गये थे।

और अगले ही पल उसके पैरों के तलवों पर डण्डे बरसने शुरू हो गये।

हर डण्डे की चोट उसके सिर तक पहुंच रही थी।

कुछ देर तक तो वह होठों को भींचे दर्द बर्दाश्त करता रहा...फिर उसके होठों से पीड़ा भरी चीखें उबलने लगीं।

लेकिन सिपाहियों ने अपने हाथ की गति कम नहीं की। उनके डण्डे बदस्तूर सतीश रावण के पैरों के तलवों पर बरसते रहे।

आखिर मार की पीड़ा को बर्दाश्त न करते हुए वह बेहोश हो गया।

उसे बेहोश होते देख शिवदयाल ने हाथ उठाया।

दोनों सिपाहियों के डण्डे फौरन रुक गये।

"बड़ा ढीठ है...।" गहरी सांस छोड़ी शिवदयाल ने—"होश में लाओ इसे।"

कहकर वह दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

□□□

□□□

काफी बड़ा हाल था वह जिसमें एक तरफ ऊंची पुश्त वाली सिंहासननुमा कुर्सी पड़ी थी। कुर्सी पर एक अधपके बालों वाला सांवले रंग का व्यक्ति बैठा था, जिसके चेहरे पर काले तथा लाल रंग के बेतहाशा तिल थे। उसके निचले होंठ पर सफेदी थी तथा ऊपर का होंठ कुछ ज्यादा ही लटका हुआ था...इतना कि वह उसके नीचे वाले होंठों को भी ढांप रहा था।

काले तथा सफेद रंग की चमड़े की जाकेट पहने था वह तथा नीचे सफेद रंग की पैन्ट।

वह जगतार सिंह था।

अण्डरवर्ल्ड किंग जगतार।

लखनपुर में होने वाले गैरकानूनी धन्धों में शायद ही कोई ऐसा धन्धा था, जिसमें जगतार की पैठ नहीं थी।

फिर भी वह अभी तक कानून के हत्थे नहीं चढ़ा था।

कारण था...वह हर काम को योजनाबद्ध तरीके से सोच-विचार कर करता था।

इस वक्त उसके चेहरे पर ऐसे भाव थे, जैसे किसी भेड़िये के चेहरे पर होते हैं। गुस्से से सुर्ख हो रही थीं उसकी आंखें।

उसने अपने सामने खड़े सात व्यक्तियों पर निगाहें डालीं और गुर्राया –

"लखनपुर में आज तक किसी में इतनी हिम्मत पैदा नहीं हुई जो उसके सामने सिर भी उठा सके और आज हमारे सामने न केवल सिर उठा...बल्कि उसने हम पर हमला भी कर दिया। हमारा तीस करोड़ का माल लुट गया...ऊपर से हमारे दो जांबाज मारे गये।"

उसने निगाहें सभी के चेहरों पर दौड़ाई...और अपनी गुर्राहट को और भयानक बनाते हुए बोला–

"हमारा काम इतने गुपचुप ढंग से होता है कि किसी को कानों-कान खबर नहीं होती, मगर इस बार ऐसा नहीं हुआ...दुश्मन को न सिर्फ हमारे माल का पता चल गया...बल्कि उसे यह भी पता चल गया कि हमारा माल किस रास्ते से अड्डे पर पहुंचेगा और यह काम किसी घर के भेदी के बिना सम्भव नहीं हो सकता।"

सातों के चेहरों की रंगत एकदम से पीली पड़ गई।

जगतार साफ-साफ कह रहा था कि कोई गद्दारी कर रहा है और गद्दारी की सजा हर कोई जानता था...तभी तो सभी के कलेजों की धड़कनें असामान्य हो गई थीं।

जगतार ने गहरी सांस छोड़ी और अपनी बात को आगे बढ़ाया--

"उस घर के भेदी से तो हम बाद में निपटेंगे...पहले हमें यह पता लगाना है कि हमारे सामने सिर उठाने की जुर्रत किसने की? किसने किया हमारे जांबाजों पर हमला...साथ ही हमें अपना वह माल वापिस लाना है जो इस वक्त पुलिस के कब्जे में है।"

"आप हुक्म कीजिये चीफ...।" एक सीना चौड़ा करते हुए बोला।

जगतार ने हाथ उठाकर उसे चुप रहने का इशारा किया।

उस व्यक्ति ने फौरन अपने होंठ भींच लिये।

ठीक तभी दरवाजे में एक व्यक्ति प्रविष्ट हुआ और चलता हुआ जगतार से चार कदम की दूरी पर आकर रुक गया।

जगतार ने प्रश्नभरी निगाहों से उसे देखा।

"आपका गुलाम आया है चीफ।" वह व्यक्ति सिर झुकाते हुए बोला।

जगतार फौरन कुर्सी छोड़कर खड़ा हो गया।

"तुम यहीं रहो...।" वह सातों से बोला—"हम अभी आकर अपना हुक्म जारी करते हैं।"

कहकर उसने कदम आगे बढ़ाया और आने वाले व्यक्ति के पीछे-पीछे चलता बाहर निकल गया।

□□□

□□□

जगतार ने आधुनिक ढंग से सजे हुए एक कमरे में प्रवेश किया। जिसमें कि एक सोफे पर इंस्पेक्टर शिवदयाल बैठा था।

जगतार को देखते ही शिवदयाल उठा और आगे बढ़कर जगतार के पैरों को छूकर उसे प्रणाम किया।

"बैठ।" जगतार गम्भीरता से बोला।

इस वक्त वह था तो इंस्पैक्टर की वर्दी में... मगर उसके चेहरे पर वही भाव थे जो कि पूंछ हिलाने वाले कुत्तों के चेहरों पर होते हैं।

जगतार उसके सामने वाले सोफे पर बैठा और अपनी टांग पर टांग रखते हुए उसकी तरफ देखा।

"मैंने सुबह से आपको फोन पर सारी रिपोर्ट भेज दी थी सर।" शिवदयाल बोला।

"उस आदमी के बारे में बोल...क्या बोला वो...?"

"बहुत ही पहुंचा हुआ आदमी है वो सर। इतना टॉर्चर किया गया उसे कि पत्थर भी पिघल जाये...मगर हम उससे सिवाय उसके नाम के अलावा और कुछ भी नहीं कबूलवा सके।"

"क्या नाम बताया उसने?"

"गनेश लाल।"

"और हमारा माल...?"

"वो सारा पूरी हिफाजत से माल खाने में पड़ा है।"

"तो उसे लेकर क्यों नहीं आया तू...?" गुर्राया जगतार—"जानता है पूरे तीस करोड़ का माल है वो, अगर यह माल सरकार के पास पहुंच गया तो मेरा तो बेड़ागर्क हो जायेगा। कहीं तुझे भी तो फर्ज निभाने की बीमारी तो नहीं हो गई?"

"ऐसी बात नहीं है सर।"

"तो फिर कैसी बात है?"

"आप तो जानते ही हैं सर कि खरे कैसा हरामी है। हर वक्त अपने फर्ज को ही निभाता रहता है। पता नहीं दस हजार की तनख्वाह में वह कैसे गुजारा कर लेता है। मैंने किसी और की मार्फत उसे दो-तीन दफा इशारा भी किया था...लेकिन वह बेवकूफ मरना पसन्द करता है...अपने फर्ज से गद्दारी नहीं कर सकता।"

"तो खरे के कारण तू सामान को यहां नहीं ला सकता।"

"म... मैं ऐसा कर तो दूं सर... मगर इससे मेरी नौकरी खतरे में पड़ जायेगी... खरे फौरन ऊपर खबर कर देगा। मैंने तो यह भी सोचा था कि आधा माल आपको भिजवा दूं... मगर उसने तो जैसे धर्मकांटे पर पकड़ा गया सारा माल तोल रखा है।"

"माल कहां है?"

"मालखाने में पड़ा है।"

जगतार ने टांग से टांग उतारी और सोफे की पुश्त से टेक लगाते हुए बोला—

"और वो जो लाशें मिली है...उनके बारे में क्या पता चला...?"

"उनका पता चल गया है... चारों लखनपुर के ही रहने वाले हैं।"

"और जो पकड़ा गया...?"

"वह खुद को दिल्ली का बता रहा है, मगर उसकी बात पर विश्वास नहीं किया जा सकता... क्योंकि दिल्ली का पता नहीं बता पा रहा वह।"

"फिर तो जरूर उन चारों ने ही उसे यहां बुलाया होगा।"

शिवदयाल ने सहमति में सिर हिलाया।

"उन चारों के नाम-पते बोल।"

शिवदयाल ने सभी के नाम-पते बताये।

जगतार ने गहरी सांस छोड़ी और बोला—"और कुछ...?"

"उन चारों लाशों की तलाशी में तीन टेलीफोन नम्बर मिले हैं सर। जिनमें से एक नम्बर किस्मत चन्द का है।"

बुरी तरह से उछल पड़ा जगतार।

"किस्मत का नम्बर...।"

"यस सर...।"

जगतार का चेहरा एकदम से सुलग उठा... आंखों में कहर उभर आया... मुट्ठियां भिंच गईं।

"तो गद्दार किस्मत है...।" वह बड़बड़ाया—"हराम का पिल्ला...हमारा खाकर हमारी ही पीठ में छूरा घोंप रहा है...।"

शिवदयाल कुछ नहीं बोला... बस उसे देखता रहा।

जगतार की आंखों में कुछ देर तक तो खून तैरता रहा... फिर उसके चेहरे पर सोचें उभर आईं। थोड़ी देर बाद उसने सिर को हल्के से झटका दिया और बोला—

"किस्मत से भी निपट लेंगे हम... मगर इस वक्त हमारा सारा ध्यान हमारे तीस करोड़ के माल पर है और उसे हर कीमत पर हमने अपने कब्जे में करना है।"

"मैं तो सारा माल वापिस लौटाने को तैयार हूं सर... मगर

खरे...।"

"अब हमें उसका इन्तजाम करना पड़ेगा। उसे उसकी कर्तव्य परायणता का इनाम जरूर मिलेगा।"

और फिर उसने शिवदयाल को जो समझाया...उसे सुनकर शिवदयाल के चेहरे पर बेचैनी फैल गई।

"यह तो सर बहुत खतरे वाली बात है...।" वह घबराये स्वर में बोला।

"तू चिन्ता मत कर...तुम पर कोई आंच नहीं आयेगी...।"

शिवदयाल के चेहरे पर राहत उभरी।

"अब जा तू...कल तेरा इनाम तेरे घर पहुंच जायेगा।"

शिवदयाल उठा और जगतार के पैर छूकर दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

उसके जाते ही जगतार के चेहरे पर क्रूरता के भाव उभर आये...साथ ही वह बड़बड़ाया—

"किस्मत...!"

□□□

□□□

जगतार वापिस हॉल में प्रविष्ट हुआ और आगे बढ़कर अपने सिंहासन पर बैठ गया।

उसके सातों सिपहसालार एक लाइन में उसके सामने खड़े थे।

जगतार ने बारी-बारी से सभी के चेहरों पर निगाहें दौड़ाई...और पांचवें व्यक्ति के चेहरे पर जाकर उसकी निगाहें स्थिर हो गईं।

"किस्मत...!" वह गुर्राया।

फौरन वह व्यक्ति लाइन से निकला और उस स्थानपर आ खड़ा हुआ जहां खड़े होकर जगतार के गुलाम ने शिवदयाल के आने की सूचना दी थी।

"यस बॉस...!" वह सिर को हल्के से झुकाते हुए बोला।

"पता है कितने का माल पकड़ा गया है हमारा...?"

"तीस करोड़ का चीफ।"

"इस तीस करोड़ में तेरा कितना हिस्सा था?"

बुरी तरह से उछल पड़ा किस्मत...साथ ही उसके चेहरे की रंगत एकदम से उड़ गई।

"य...यह आप क्या कह रहे है चीफ...मैं भला आपसे...?"

बाकी के शब्द उसके गले में ही फंसकर रह गये। उसकी निगाहें उस रिवाल्वर पर अटक गई थीं, जो अभी जगतार की जेब से निकलकर उसकी तरफ तन गई थी।

"कितना हिस्सा था तेरा...?" गुर्राया जगतार।

"च...चीफ...मैं...।"

'धांय...।' जगतार का ट्रेगर दब गया।

गोली सीधा किस्मत के कन्धे में जा धंसी...साथ ही कराह के साथ उसने अपना कन्धा पकड़ लिया।

"बरसों से जगतार यूं ही लखनपुर पर राज नहीं कर रहा हरामजादे...!" गुर्राया जगतार–"जगतार की आखें हर वक्त खुली रहती हैं...अगर ऐसा न होता तो अब तक पता नहीं कितनी बार जगतार मर चुका होता। तू क्या समझता था...मुझे पता नहीं चलेगा...और तू चुपचाप मेरा तीस करोड़ हड़प जायेगा, मगर जगतार का माल पचाना नामुमकिन है हरामखोर। उसे पचाने वाले की कोशिश करनेवाले के पेट में मरोड़ उठने लगते हैं।"

"म...मुझे माफ कर दीजिये चीफ...!" सहसा ही किस्मत गिड़गिड़ा उठा–"म...मैं लालच में अंधा हो गया था। मैं कसम खाता हूं कि आगे से कभी भी आपके खिलाफ गद्दारी करने की सोचूंगा भी नहीं...।"

"कौन...कौन थे तेरे साथी?"

"ह...हीरा...बचना...कलवा और राधू...।" उसने अपने साथियों के नाम बताये।

'धांय...।' रिवाल्वर ने फिर से गोला उगला।

किस्मत का दूसरा कन्धा भी बेकार हो गया। साथ ही उसके होठों से तेज चीख निकली।

"पांचवें का नाम बताना भूल गया है तू...तभी गोली मारी तुझे। नाम बता उसका...।"

"म...मैंने तो चार के साथ ही बात की थी चीफ...।" कराहते हुए बोला किस्मत।

"गनेश कौन है?"

"मैं किसी गनेश को नहीं जानता। म...मेरी बात सिर्फ चारों से ही हुई थी। ह...हो सकता है उनमें से किसी ने गनेश नाम के व्यक्ति से सम्पर्क किया हो। म...मगर मैं किसी गनेश को नहीं जानता।"

"इरादे क्या थे तेरे...?"

किस्मत ने जोरों से थूक सटकी।

"जवाब दे...।"

किस्मत के गले की घण्टी जोरों से उछली और वह कांपते हुए बोला–

"ह...हम अपना अलग गैंग बनाना च...चाहते थे।"

जगतार की आंखों में फैला खून और भी गहरा हो गया। चेहरा और भी ज्यादा कठोर हो गया।

"जंगल में सिर्फ एक ही शेर रहता है हरामखोर... शेर के होते हुए किसी दूसरे को शेर बनने की इजाजत नहीं होती... इजाजत नहीं होती... इजाजत तो दूर...कोई शेर बनने का सपना भी नहीं देख सकता...और तूने तो बाकायदा सिर उठा दिया था।"

"म...मुझे माफ कर दीजिये चीफ। म...मैं दौलत की बातों में आ गया था।"

"जगतार का सिपहसलार किसी दूसरे की बातों में आ जाये। ऐसा होने से पहले ही जगतार उसे गोली से उड़ा देता है।"

"न,..हीं...।" बुरी तरह से थर्रा उठा किस्मत।

"जगतार ने अपने किसी प्यादे तक को कोई कमी नहीं होने दी.. तू तो सिपहसलार था मेरा...। ऐसी क्या कमी हो गई थी तुझे कि तूने गद्दारी कर डाली?"

"म...मुझे माफ कर दीजिये चीफ...।"

"जगतार अगर अपने आदमियों की झोली भरने में कंजूसी नहीं बरतता तो उसे इस बात का भी पूरा हक है कि गद्दार को गोली से उड़ा दे।"

"न...हीं...मैं...।"

बात पूरी भी नहीं कर पाया किस्मत कि जगतार का रिवाल्वर गरज उठा।

'धांय...!'

गोली सीधी किस्मत के माथे के ऐन बीचों-बीच जा लगी।

किस्मत का जिस्म जोरों से उछला और धड़ाम् से नीचे गिरकर छटपटाने लगा।

जगतार ने नफरत भरी निगाहों से उसे देखा और रिवाल्वर जेब में डालते हुए दूसरे हाथ से कुर्सी के हत्थे पर लगा एक बटन दबा दिया।

तभी दरवाजे में वही आदमी प्रविष्ट हुआ जिसने कि शिवदयाल के आने की सूचना दी थी।

"इस हरामी की लाश को किसी गटर में फेंक दो।" जगतार गुर्राया।

आगंतुक जिसका नाम चौधरी था, आगे बढ़कर किस्मत की लाश के करीब पहुंचा...झुका और किस्मत की लाश को इस तरह उठाया जैसे जमीन से किसी हाड़-मांस की लाश को नहीं, बल्कि रबड़ के पुतले को उठा रहा हो।

उसने लाश को कन्धे पर लादा और वापिस मुड़कर बाहर निकल गया।

उसके दरवाजे से बाहर निकलते ही एक अन्य आदमी अन्दर आया जिसने कि बाल्टी उठा रखी थी।

वह वहां पहुंचा, जहां पर कि किस्मत की लाश पड़ी थी।

बाल्टी को नीचे रखकर उसने बाल्टी में से पोंछा निकाला और उस स्थान को साफ़ करने लगा, जहां पर कि किस्मत का खून गिरा पड़ा था।

इस बीच हॉल में मौत की-सी खामोशी छाई रही। ऐसा लग रहा था, जैसे कमरे में कोई हो ही न हो।

उस व्यक्ति के बाल्टी उठाकर जाने के उपरांत जगतार ने बाकी बचे अपने छह साथियों की तरफ देखा और गम्भीरता से बोला—

"माल पुलिस के हाथ लगा है, मगर अभी सरकार के हाथ नहीं लगा। इससे पहले कि माल थाने से निकलकर हमारी पहुंच से बाहर हो जाये...हमें माल वापिस ले आना है।"

"हुक्म कीजिये चीफ!" लाइन में खड़ा सबसे पहला व्यक्ति सिर झुकाते हुए बोला।

"यह काम प्रताप करेगा।" कहते हुए जगतार ने तीसरे नम्बर पर खड़े व्यक्ति की तरफ बांह सीधी की।

तुरन्त प्रताप लाइन से बाहर आया और किस्मत की लाश वाले स्थान पर खड़े होकर सिर को थोड़ा झुकाया।

"हुक्म कीजिये चीफ!" वह बोला।

जगतार उसे समझाने लगा कि उसे क्या करना है।

उसे अच्छी तरह से समझाने के पश्चात् जगतार ने लाइन में सबसे आखिरी आदमी की तरफ देखा।

"नानकू...!"

तुरन्त वह व्यक्ति भी लाइन से बाहर निकला और प्रताप के बराबर आ खड़ा हुआ।

"हुक्म चीफ...!" उसने भी प्रताप की तरह सिर हिलाया।

"तुझे सब-इंस्पैक्टर खरे का खून करना है।"

"यस चीफ!"

"काम ऐसे होना चाहिये कि उसके बचने की सम्भावना एक प्रतिशत भी नहीं रहनी चाहिए। बस यूं समझ ले कि अगर वह बच गया तो तू मर जायेगा। उसकी मौत में ही तेरी जिन्दगी है।"

"आप निश्चिंत रहें चीफ...नानकू अपना काम पूरा करके ही आपको अपनी सूरत दिखायेगा!"

कहते हुए नानकू के चेहरे पर कठोरता उभर आई।

□□□

□□□

टॉर्चर रूम में उल्टा लटक रहा था सतीश रावण।

कपड़े का एक रेशा भी नहीं था उसके जिस्म पर।

कपड़े पहनना तो दूर रहा...अभी तक उसे पानी का एक

गिलास भी नसीब नहीं हुआ था।

सुबह तो उसे कुर्सी से बांधकर उस पर थर्ड डिग्री इस्तेमाल की गई थी...और दोपहर बाद उसे उलटा लटका दिया गया था।

तब का लटका...वह अभी तक लटक रहा था।

पुलिस ने मार-मार कर उसका दुम्बा बना दिया था...मगर उससे कुछ भी कबुलवा नहीं पाई थी।

कबूलता भी क्या वह...जब वह कुछ जानता ही नहीं था और अपनी हकीकत बता नहीं सकता था वह।

उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह किस तरह इस नर्क से निजात पाये।

उसके जिस्म का कोई अंग शायद ही ऐसा बचा था, जहां पर कि नीले काले निशान न पड़े हों।

अगर पुलिस इस वक्त उसे छोड़ भी देती तो उसमें इतनी हिम्मत नहीं बची थी कि वह कुछ कदम चल पाता।

बस हड्डियां टूटने की कसर रह गई थी... वरना पुलिस ने उसकी ऐसी-तैसी फेरने में कोई कसर नहीं रख छोड़ी थी।

तभी शिवदयाल ने टॉर्चर रूम में प्रवेश किया।

सतीश रावण के करीब आकर उसने कमर को झुकाया और अपने चेहरे को उसके चेहरे की करीब लाते हुए धूर्तता भरी मुस्कान मुस्कुराया।

"बहुत पहुंचा हुआ उस्ताद है तू...?"

सतीश रावण कुछ नहीं बोला। उसने थूक निगलनी चाही...मगर उलटा लटके होने की वजह से वो भी नहीं निगल पाया।

"इतनी मार मैंने अपनी जिन्दगी में शायद ही किसी मुजरिम को मारी हो। कभी मौका ही नहीं लगा ऐसा...क्योंकि उससे पहले काफी पहले ही मुजरिम टूट जाता था, लेकिन तू नहीं टूटा। इतनी मार बर्दाश्त कर गया...लेकिन सिर्फ अपने नाम के अलावा और कुछ भी नहीं बताया तूने।"

"म...मैं निर्दोष हूं...।" सतीश रावण कराहा।

"इसका फैसला तो अब ऊपर की अदालत करेगी कि तू कसूरवार है या निर्दोष, क्योंकि मेरे बस का तो रहा नहीं तू। तुझे मार-मारकर मैं खुद थक गया हूं। रात ही तू ऊपर की अदालत में ट्रांसफर हो जायेगा और उस अदालत में पहले तुझे अपनी सफाई देनी पड़ेगी...तुझे खुद को निर्दोष साबित करना पड़ेगा, अगर तूने खुद को निर्दोष साबित कर दिया तो तुझे बड़ी ही आसान मौत हासिल होगी, वरना मुसीबतों का यह सिलसिला उस वक्त तक चलता रहेगा...जब तक कि तू मर नहीं जायेगा।" उसने हल्के से मुस्कुराते हुए सतीश रावण के गाल पर चपत जड़ दी।

सतीश रावण को ऐसा लगा जैसे उसके गाल पर अंगारे फेंक दिये गये हों।

बुरी तरह से कराह उठा वह।

"दुखता है. . .?" हंसा शिवदयाल।

"ऊपर की अदालत में जाने से पहले अच्छी तरह सोच-विचार ले कि तू आसान मौत मरना चाहता है या मरना ही नहीं चाहता।"

कहकर वह सीधा हुआ और एक भरपूर घूंसा उसके पेट में जड़ दिया।

बुरी तरह से चीख उठा सतीश रावण।

उसे ऐसा लगा जैसे उसका कल का खाया मुंह के रास्ते बाहर आ गिरेगा।

आंखों से आंसू बह निकले उसकी जो कि उसके माथे को चूमते हुए उसके बालों को गीला करने लगे।

□□□

□□□

शिवदयाल अपने आफिस में पहुंचा तो खरे को एक कुर्सी पर बैठे अपना इन्तजार करते पाया।

उसके भीतर आते ही खरे ने खड़े होकर उसका अभिवादन किया और शिवदयाल द्वारा कुर्सी सम्भालने के बाद ही वह कुर्सी पर वापिस बैठा।

"समझ में नहीं आ रहा. . .।" गम्भीरता से बोला शिवदयाल—"कि इस गनेश लाल का मुंह कैसे खुलवाया जाये. . .मुझे थर्ड डिग्री के जितने भी तरीके आते थे. . .वो सब आजमा चुका हूं मैं उस पर. . .लेकिन उसका मुंह नहीं खुला।"

"कहीं ऐसा तो नहीं सर कि वह सचमुच में बेकसूर हो?" खरे बोला।

शिवदयाल ने घूरकर उसे देखा।

हड़बड़ा उठा खरे—"म. . .मैंने कुछ गलत कहा सर. . .?"

"ठीक ही कहा है तुमने. . .।"

"ल. . .लेकिन सर. . .।"

"अगर वह सच्चा होता. . .निर्दोष होता तो अपने नाम के साथ-साथ अपने घर के बारे में भी बताता. . .मगर वह तो नाम से आगे बढ़ ही नहीं रहा और जितनी मार उसने बर्दाश्त की है. . .उतनी मार तो हाथी भी बर्दाश्त न कर पाये। यही बात इस तरफ इशारा करता है कि वह गुनाहगार है. . .और कोई बहुत पहुंची हुई शै है।"

"आप ठीक कहते हैं सर. . .मगर समस्या तो फिर भी है कि उसका मुंह कैसे खुलवाया जाये। कुछ भी तो नहीं बता रहा वह. . .बस चीखें ही उबलती हैं उसके होठों से।"

"बहुत बड़ा घाघ है यह... इतनी आसानी से मुंह नहीं खोलेगा!" बोला शिवदयाल—"मगर चिन्ता की कोई बात नहीं... सुबह कोर्ट से मैं उसके लिये कम से कम इक्कीस दिन का पुलिस रिमाण्ड मांगूंगा और इक्कीस दिन उसको तोड़ने के लिये बहुत होंगे।"

"आप ठीक कह रहे हैं सर... ।" हल्के उत्तेजित स्वर में बोला खरे—"बस एक बार वह जगतार का नाम मुंह से निकाल दे... फिर उसे घसीटता हुआ यहां लेकर आऊंगा मैं।"

कहते हुए उसकी मुट्ठियां भिंच गई थीं।

"बेशक... उसको गिरफ्तार करने के लिये मैं तुम्हें ही भेजूंगा, मगर उससे पहले गनेश लाल के मुंह से यह निकलना जरूरी है कि वह जगतार का कुत्ता है।"

मन ही मन मुस्कुराते हुए बोला शिवदयाल... साथ ही मन ही मन बड़बडाया—"इक्कीस दिन तो बहुत लम्बा फासला है खरे... गनेश तो उससे कहीं पहले तेरी पहुंच से निकल चुका होगा।"

"सर... अगर आप इजाजत दें तो कल मैं खुद उसे लेकर कोर्ट में पेश करूं... ?"

"बेशक... इजाजत है तुम्हें... मगर रात का राउण्ड भी पूरा करना है तुम्हें... और कल रात भी तुम जागते रहे हो। इसलिये बेहतर यही है कि तुम दो-चार घण्टे की नींद ले लो। मैं भी इस बीच अपनी कमर सीधी कर लूंगा।"

"यस सर।" तत्परता से बोला खरे।

❑❑❑

❑❑❑

रात के ठीक साढ़े दस बजे पुलिस की जीप थाने से निकली।

जीप में शिवदयाल... खरे तथा राइफलों से लैस चार सिपाही बैठे थे।

रोजाना की तरह राउण्ड पर निकले थे और उनका यह राउण्ड दो बजे तक पूरा हो जाता था। हां, अगर कहीं कोई गड़बड़ हो जाती थी, तो सारी-सारी रात भी लग जाती थी उन्हें। जैसे कल की रात लग गई थी।

थाने से निकलते ही खरे ने अपने बराबर में बैठे शिवदयाल की तरफ देखा।

"किधर चलें सर... ?"

"भाला रोड की तरफ से राउण्ड शुरू करो... वहां से नारंग चौक और फिर बापू मार्ग की तरफ बढ़ना।"

"यस सर... ।" कहते हुए खरे ने बायीं तरफ स्टयेरिंग काटा और एक्सीलेटर पर पैर का दबाव बढ़ा दिया।

□□□
□□□

प्रताप ने अपने सामने खड़े पांच व्यक्तियों की तरफ देखा जिनमें एक औरत थी। नौजवान औरत।

"तुम्हें पता है न तुम्हें क्या करना है...?" वह बोला।

"यस बॉस...।" एक तत्परता से बोला—"आपकी पूरी स्कीम हमारी समझ में आ गई है।"

"ध्यान रहे...काम पूरी तौर से मुकम्मल होना चाहिये, अगर कहीं भी जरा सी कमी रह गई तो समझ लो तुम्हारी खैर नहीं।" कहते हुए प्रताप का स्वर खूंखार हो उठा था।

"आप निश्चिंत रहिये सर...काम पूरी तसल्ली से पूरा होगा।" वह आदमी बोला।

प्रताप ने युवती की तरफ हाथ बढ़ाया और उसके ब्लाउज के गले में हाथ डालकर एक तेज झटका दिया।

'कड़ाक्...कड़ाक्' से उसके ब्लाउज के बटन टूट गये और नीचे से औरत की काले रंग की ब्रा नजर आने लगी।

अपनी इस हालत पर औरत पहले तो हड़बड़ा उठी—फिर एकाएक ही उसके होठों पर मुस्कान नाच उठी।

"ब्रा भी फाड़नी है क्या...?" वह बोली।

"वो काम मैं कर लूंगा...।" एक अन्य हंसा।

औरत पुनः मुस्कुराई।

प्रताप ने घड़ी में वक्त देखा, फिर बोला—

"वो आने वाले हैं...अपनी-अपनी जगह पर छुप जाओ।"

पांचों प्रताप के सामने से हट गये...और प्रताप गली से बाहर निकल कर अपनी कार की तरफ बढ़ गया।

□□□
□□□

जीप उस वक्त नारंग चौक से निकलकर बापू मार्ग की तरफ बढ़ रही थी।

अगले चौराहे से बापू मार्ग शुरू हो जाता था।

खरे ने चौक में पहुंचते ही स्टेयरिंग बायीं तरफ घुमाया और एक्सीलेटर पर पैर का दबाव बढ़ा दिया।

अभी जीप थोड़ी ही दूर चली थी कि जीप की हैडलाइट में खरे को बदहवासी की हालत में एक औरत एक गली से बाहर निकलती नजर आई।

औरत की हालत देख बुरी तरह से चौंका खरे।

उसका ब्लाउज फटा हुआ था...तथा नीचे उसकी छातियां नजर आ रही थीं। उसकी साड़ी का पल्लू सड़क पर उसके पीछे-पीछे घिसट रहा था।

खरे की तरह शिवदयाल भी उस औरत को देखकर चौंका। यह अलग बात थी कि मन ही मन वह मुस्कुरा रहा था।

तभी उस औरत के पीछे-पीछे तीन व्यक्ति भागते हुए गली से बाहर निकले।

देखते-ही-देखते एक व्यक्ति ने औरत के पीछे आकर उसकी चोटी को पकड़ा और झटके से पीछे खींचा।

चीखती हुई औरत पीठ के बल सड़क पर गिर पड़ी।

वह आदमी फौरन उसकी टांगों की तरफ आया और उसकी साड़ी को पूरा-का-पूरा ऊपर उठा दिया।

अब औरत की टांगें उसके कूल्हों तक नजर आने लगी थीं।

"यह...यह तो रेप हो रहा है सर।" चीखा खरे।

"जीप तेज करो...!" शिवदयाल भी चीखा—"वरना उस औरत की इज्जत लुट जायेगी।"

खरे ने जीप की रफ्तार और तेज कर दी।

जीप गोली की तरह उनकी तरफ बढ़ी।

उधर औरत पर सवार व्यक्ति जैसे ही जीप की हैडलाइट में नहाया...वह हड़बड़ाते हुए उसके ऊपर से खड़ा हो गया।

"भागो पुलिस...!" तभी एक चीखा।

फौरन तीनों वहां से भागे।

शिवदयाल ने जीप के रुकते ही छलांग लगाई और उन तीनों के पीछे भागा।

खरे भी जीप रोककर उसके पीछे-पीछे लपका...साथ ही उसने अपने होलेस्टर से रिवाल्वर भी खींच ली।

थोड़ा आगे बढ़ने पर तीनों व्यक्ति दो अलग-अलग रास्तों पर बंट गये।

दो एक रास्ते की तरफ मुड़े...तथा एक अन्य रास्ते की तरफ।

"तुम उधर जाओ खरे।" चीखा शिवदयाल और स्वयं दायीं तरफ दौड़ रहे अकेले व्यक्ति के पीछे भागा।

खरे दो व्यक्तियों के पीछे भागा।

"रुक जाओ...!" उनके पीछे भागते हुए खरे चीखा—"वरना गोली चला दूंगा।"

मगर वे दोनों नहीं रुके, बल्कि उन्होंने अपनी रफ्तार और भी तेज कर दी।

खरे ने दांतों पर दांत जमाये और ट्रेगर दबा दिया।

'धांय...!'

मगर गोली दोनों में से किसी का भी कुछ नहीं बिगाड़ सकी।

थोड़ा आगे जाने पर वह सड़क दो मार्गों में बंट रही थी।

खरे के देखते-ही-देखते दोनों अलग-अलग हो गये और खरे

को तिराहे पर पहुंचकर रुक जाना पड़ा।

असमंजस में पड़ गया था वह कि वह क्या करे? किसके पीछे जाये?

आखिर उसने बायीं तरफ वाले के पीछे जाना ही ठीक समझा... और उधर लपका।

अभी उसने कुछ ही कदम बढ़ाये थे कि तभी—

'धांय... !'

उसके पीछे पटाखा छूटा और एक सुलगता हुआ शोला उसकी पीठ में जा समाया।

बुरी तरह से कराहा खरे और किसी तरह खुद को सम्भालते हुए रिवाल्वर ताने पीछे मुड़ा।

'धांय... !' तभी उसकी पीठ में एक और शोला सनसनाता हुआ आ घुसा।

दुश्मन ने चालाकी से काम लिया था। जिस तरफ भी खरे की पीठ हुई... पीछे वाले ने उसके ऊपर फायर कर दिया।

चार गोलियां जिस्म में समा चुकने के बाद खरे पीठ के बल सड़क पर जा गिरा।

मर चुका था वह।

ठीक तभी राइफलों से लैस दो सिपाही वहां पहुंचे।

मगर तब तक दुश्मन खरे को शहीद कर गायब हो चुका था।

"फौरन इंस्पैक्टर साहब को बुलाओ... !" वह चीखा।

दूसरा पलटा और तेज गति से वहां से भागा।

❑❑❑

❑❑❑

ठीक बारह बजकर चालीस मिनट पर जब खरे उन व्यक्तियों के पीछे भाग रहा था!

ठीक उसी वक्त... एक मैटाडोर वैन थाने के गेट के ऐन सामने आकर रुकी।

थाने का ऊंचा लम्बा फाटक उस वक्त बन्द था।

देखते-ही-देखते वैन के दरवाजे खुले और उनमें से स्टेनगनों से लैस व्यक्ति इस तरह बाहर कूदने लगे जैसे किसी हवाई जहाज से छाताधारी ब्रिगेड उतर रही हो।

सभी आगे बढ़े और फाटक के करीब आ खड़े हुए।

एक व्यक्ति ने हाथ लम्बा करके दरवाजे को जोर से थपथपाया।

'धाड़... धाड़... !'

"कौन है... ?" भीतर से संतरी की कड़कती आवाज आई।

"दरवाजा खोलिये थानेदार साहब।" वह व्यक्ति बोला—"हमारे आदमी का खून हो गया है।"

खून के नाम ने भीतर तैनात संतरी पर जादू का-सा असर किया।

फौरन दरवाजा खुलने की आहट हुई और फाटक में बना एक छोटा दरवाजा खुला।

तुरन्त दरवाजा थपथपाने वाले ने भीतर प्रवेश किया।

उसके हाथ में स्टेनगन देख सन्तरी के जेहन में फौरन खतरे की घण्टी बज उठी... लेकिन कुछ कर नहीं पाया वह।

उससे पहले ही स्टेनगन चीख उठी।

'तड़... तड़... तड़... ।'

एक साथ दर्जनों गोलियां उसके जिस्म में जा समाईं।

वह जोरों से उछला और नीचे गिरकर झटके लेने लगा।

तभी बाकी के गुण्डे भी भीतर प्रवेश कर गये।

उनमें से एक को छोड़कर बाकी के नौ गुण्डे आगे बढ़े और थाने के प्रांगण में पहुंचे और टॉर्चर सैल की तरफ बढ़े।

अभी वे प्रांगण में ही थे कि दौड़ते हुए चार सिपाही बुरी तरह से चौंके...साथ ही उनके कलेजे जोरों से धड़क उठे।

वे सभी खाली हाथ थे और गुण्डे स्टेनगनों से लैस।

इससे पहले कि वे अपने बचाव के लिये कुछ करते...। गुण्डों की स्टेनगनें गरज उठीं।

'तड़...तड़...तड़... ।'

सिपाही के जिस्म लाश बनते हुए वहीं गिरने लगे।

देखते-ही-देखते मुंशी समेत सभी सिपाहियों की लाशें बिछ गईं।

"जल्दी से लाओ उसे।" एक गुण्डा फुफकारा—"और सारा माल लेकर आओ।"

फौरन तीन गुण्डे टॉर्चर सैल की तरफ भागे... तथा तीन मालखाने की तरफ... जबकि बाकी के तीन गुण्डे प्रांगण में इधर-उधर फैल गये।

□□□
□□□

सतीश रावण अभी भी टॉर्चर सैल में उलटा लटक रहा था।

दोपहर बाद से वह इसी अवस्था में था और इसी अवस्था में ही उसकी तीन बार धुनाई भी हो चुकी थी।

उसको ऐसा लग रहा था, जैसे उसके जिस्म का सारा खून उसकी आंखों और मस्तिष्क में आकर ठहर गया हो।

कई बार तो उसे ऐसा भी लगा कि कहीं भगवान धर्मराज ने उसकी मौत के तरीकों को बदल तो नहीं दिया है और अब उसकी मौत को ऐसे उलटे लटक कर मरना लिख दिया हो।

उसकी जो हालत हो रही थी...उससे तो उसे ऐसा ही लग

रहा था।

इस वक्त भी वह यही सोच रहा था कि अब वह हरगिज नहीं बचेगा... जब एकाएक ही उसके कानों में गोलियों की आवाजें पड़ीं।

बुरी तरह से चौंका वह।

"य... यह तो स्टेगन की गोलियां हैं... ।" वह बड़बड़ाया– "अवश्य ही किसी ने थाने पर हमला कर दिया है।"

"क्यों... ?"

यह प्रश्न फौरन उसके जेहन में उभरा।

"जरूर कोई वी.आई.पी. गैंगस्टर किसी हवालात में कैद होगा... जिसे छुड़ाने के लिये उसके आदमियों ने थाने पर हमला किया है।"

वह बड़बड़ाया... साथ ही उसने निराशा भरी गहरी सांस छोड़ी।

"काश कि वह भी कोई गैंगस्टर होता तो इस वक्त वह इस हालत में नहीं होता... बल्कि वह किसी सोने के सिंहासन पर बैठा अपने आदमियों पर हुक्म चला रहा होता।"

उसने अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिये कोशिश तो बहुत की थी... कितने ही बड़े-बड़े हाथ भी मारे थे, मगर अन्त में हमेशा किस्मत उसे धोखा दे जाती और वह करोड़ों-अरबों पाकर भी फिर से कंगाल हो जाता।

अब भी तो यही हुआ था... अगर ऐन वक्त पर पुलिस वहां न पहुंच जाती तो अब तक वह किसी दूसरे शहर में करोड़ों की दौलत पर बैठा होता जो कि मुफ्त में उसके हाथ लग गई थी।

मन ही मन उस गैंगस्टर के प्रति ईर्ष्या के भाव उभरे उसके दिल में जिसके लिये थाने में गोलियां चल रही थीं।

चौंका तो वह उस वक्त... जब उसने स्टेनगनों से लैस तीन व्यक्ति को टॉर्चर सैल में प्रवेश करते देखा।

कलेजा जोरों से धड़क उठा उसका।

ठीक तभी एक गुण्डे ने स्टेनगन सीधी की और–

'तड़... तड़... तड़... ।'

गोलियां उस रस्सी पर लगी जो कि सतीश रावण के पैरों को बांधे हुए थे।

रस्सी टूटी... और सतीश रावण के सिर बल धड़ाम से फर्श पर आ गिरा।

लाल-पीले तारे नाच उठे उसके आंखों के सामने। उसके शरीर की वो हालत हो रही थी कि वह उस चोट को बर्दाश्त नहीं कर पाया और बेहोशी की गर्त में डूबता चला गया।

बेहोश होते वक्त उसे बस इतना अहसास हुआ था कि कुछ हाथों ने उसे पकड़ लिया था।

□□□
□□□

एक गुण्डे ने सतीश रावण को उठाकर बेरहमी से उसे अपने कन्धे पर बोरी की तरह लादा और बाहर की तरफ बढ़ा।

बाकी के दोनों स्टेनगनधारी उसके दायें-बायें चल रहे थे।

तीनों गुण्डे प्रांगण में पहुंचे और सीधा गेट की तरफ लपके।

गेट पर रुके गुण्डे ने पहले से ही फाटक खोल दिया था... सो तीनों फाटक पार करते हुए मैटाडोर वैन के करीब पहुंचे।

सतीश रावण को कन्धे पर लादे व्यक्ति ने बेरहमी से उसे सीटों के बीचो-बीच फर्श पर पटका और फिर उसके पेट पर पैर रखकर भीतर प्रवेश कर गया।

पीछे-पीछे दूसरा भी सतीश रावण को रौंदते हुए अन्दर आ गया और फिर माल उठाये चार गुण्डे भी वहां पहुच गये।

देखते-ही-देखते बाकी के गुण्डे भी वहां पहुंचते हुए वैन में घुसने लगे और जैसे ही आखिरी गुण्डा वैन में प्रविष्ट हुआ... वैन तोप से छूटे गोले की तरह वहां से भाग निकली।

आखिर में प्रवेश करने वाला गुण्डा अभी सीट पर बैठ नहीं पाया था... सो झटके से वह सतीश रावण पर जा गिरा था... फिर वह सम्भलकर उठा और सीट पर बैठ गया... जबकि दूसरे ने दरवाजा बन्द कर दिया था।

सतीश रावण अब छह जोड़ी पैरों के नीचे दबा हुआ नजर आ रहा था।

□□□
□□□

थोड़ी देर बाद शिवदयाल चेहरे पर हताशा लिये वापिस लौट आया। उस वक्त तक दो सिपाही खरे के पीछे गये हुए थे... तथा दो वहीं खड़े थे।

वह औरत बुरी तरह से कांपती हुई उन दोनों के करीब खड़ी थी।

उसने अब साड़ी के पल्लू से अपनी छातियों को ढांप लिया था, मगर उसका चेहरा अभी भी ऐसा हो रहा था मानो अभी तक वह सदमे से निकल नहीं पाई हो।

"क्या नाम है तेरा... ?" शिवदयाल ने पूछा।

"औरत कुछ नहीं बोली... उसके होठ फड़फड़ा कर रह गये।

"जवाब दे... ।"

शिवदयाल मन ही मन उसकी एक्टिंग की तारीफ करते हुए बोला।

"र... रे... खा... ।"

औरत के होंठों से कांपती आवाज निकली।

"वो कौन हैं जिन्होंने तेरे साथ बुरा सलूक करने की कोशिश की थी?"

"म... मैं... उन्हें न... नहीं... जानती...।"

"इतनी रात को क्या कर रही थी तू बाहर...?"

"फ... फिल्म देख कर आ रही थी अपने पति के साथ...।"

"तेरा पति...!"

सहसा ही रेखा फफक कर रो पड़ी... साथ ही उसने बांह से गली की तरफ इशारा किया।

"उ... उन्होंने म... मेरे पति को मार डाला...।"

बुरी तरह से चौंका शिवदयाल... साथ ही एक सिपाही को गली में जाने का आदेश दिया।

फौरन वह व्यक्ति गली की तरफ बढ़ा।

"हौसला रखो...।" शिवदयाल उसे हौसला देते हुए बोला—"हम वक्त रहते आ गये... और तुम्हारी इज्जत लुटने से बच गई। क्या हुआ था?"

रेखा ने साड़ी के पल्लू से अपनी आंखों को पोंछा और रोते हुए बोली—

"हम फिल्म देखकर आ रहे थे...।"

"कौन-सी फिल्म...?"

"मोहब्बतें...।"

"फिर...?"

"एकाएक ही तीन व्यक्तियों ने पीछे से मुझे पकड़ लिया।"

"कहां...?"

"व... वहां...।" उसने करीब ही एक स्थान की तरफ इशारा किया।

"फिर...?" उधर देखते हुए पूछा शिवदयाल ने।

"मैं बुरी तरह से घबरा गई... मेरे पति भी एकदम से बौखला गये थे। जब तक हम सम्भलते... वे गुण्डे मुझे इस गली में ले जा चुके थे। तभी मेरे पति पीछे-पीछे गली में पहुंचे और मुझे उन गुण्डों से छुड़ाने के लिये उनसे भिड़ गये।"

"फिर...?"

"हमें क्या पता था कि उनके पास पिस्तौल भी है। तभी एक गुण्डे ने पिस्तौल निकाली और उन पर गोली चला दी।"

"ओह!"

"इन्हें गोली लगते देख मैं चीखी और उनकी पकड़ से निकलकर बाहर भागी और...।"

"आगे का मुझे पता है।" शिवदयाल बोला।

रेखा के बयान उसने सिपाही के सामने जानबूझ कर लिये थे कि किसी को उस पर संदेह न हो।

"क्या नाम है तेरे पति का...?" उसने पूछा।

"र... रमेश... ।"

"पता बोलो अपना...?"

रेखा ने आगे वाली गली के एक मकान का पता बता दिया।

"कोई और भी रहता है तुम्हारे मकान में...?"

"नहीं... हम दोनों ही रहते हैं।"

"काम क्या करता है तेरा पति...?"

"बिजली की दुकान है उनकी... नारंग चौक पर।" रेखा बोली।

"यह जिन्दा है सर... ।" तभी गली के भीतर से आवाज आई।

शिवदयाल गली की तरफ तेजी से बढ़ा... ठीक तभी पीछे से आवाज आई–

"सर।"

आवाज बुरी तरह से बदहवास थी... सो शिवदयाल फौरन ठिठका। साथ ही उसकी गर्दन आवाज की दिशा में घूमी।

सिपाही उसकी तरफ तेजी से आ रहा था।

"क्या है...?" उसके करीब पहुंचते ही पूछा शिवदयाल ने।

"स... सब-इंस्पैक्टर साहब को गोली लगी है सर।" सिपाही बोला।

बुरी तरह से चौंकने की एक्टिंग की शिवदयाल ने।

"व... वो ठीक तो है न?"

"प... पता नहीं सर... सड़क पर गिरे पड़े हैं वे... पाण्डूरंग उनके पास है।"

तुम रमेश को यहां लाओ... ।" शिवदयाल तेजी से दूसरे सिपाही से बोला और खुद तेजी से सड़क पर भागा।

सिपाही उसके साथ-साथ था।

कुछ ही देर में वह खरे की लाश के पास पंजों के बल बैठा उसकी तरफ देख रहा था।

"ओह नो।" उसने एक गहरी सांस छोड़ी और उसकी कलाई को छोड़ खड़ा हो गया।

"तुम दोनों यहीं रहो... मैं एम्बूलैन्स को बुलवाता हूं।"

कहकर वह वापिस भागा।

उसके वापिस आने तक सिपाही बेहोश रमेश को जो कि गुण्डों का ही साथी था... गली में से उठाकर जीप के पास ले आये थे।

गोली उसकी बांह के मांस को उधेड़ती हुई निकल गई थी।

रेखा रमेश के पास बैठी रोती हुई उसे होश में लाने का प्रयत्न कर रही थी।

मगर शिवदयाल ने उसके रोने पर ध्यान नहीं दिया और वायरलैस की तरफ बढ़ा।

ठीक तभी वायरलैस से आवाजें आने लगीं।

"हैलो चार्ली पी.एस.एल... हैलो चार्ली पी.एस.एल.।"

शिवदयाल के होठों पर एक मुस्कान आकर लुप्त हो गई। वह समझ गया कि थाने से आये मैसेज में क्या कहा जायेगा।

उसने डैशबोर्ड पर पड़ा इन्स्ट्रमेंट उठाया और उसे अपने मुंह के करीब ले जाकर अंगूठे से उसकी साइड का बटन दबाया और बोला—

"इंस्पैक्टर शिवदयाल... मैसेज... ओवर...।" कहकर उसने बटन छोड़ दिया।

"थाने पर कुछ गुण्डों ने हमला कर दिया है।" उसी इन्स्ट्रूमेन्ट में से आवाज आई।

"व्हाट...!" बटन को पुनः दबाते हुए बुरी तरह से चौंकते हुए बोला शिवदयाल और बटन छोड़ दिया।

"यस सर... हमारे छह जवान मारे गये हैं... और गुण्डे गनेश लाल को छुड़ाकर ले गये हैं।"

"ओह नो।"

"ऑर्डर सर...।"

"यहां भी बापू रोड पर कुछ गुण्डों ने सब-इंस्पैक्टर खरे की हत्या कर दी है...।"

"य... यह आप क्या कह रहे हैं सर...?" हड़बड़ाती आवाज आई।

"तुम फौरन कन्ट्रोल रूम वायरलैस करके एम्बूलैंस मंगवाओ... और ए.एस.आई. जमशेद राय को बापू मार्ग पर भेजो... फौरन...।"

"यस सर...।"

"ओवर एण्ड ऑल...।"

दूसरी तरफ से सम्बन्ध-विच्छेद हो गया।

तत्पश्चात् शिवदयाल ने कन्ट्रोल रूम में मैसेज भेजा। सारी बात बताई और डॉक्टर तथा एम्बूलैंस भेजने का आदेश दे दिया।

करीब आधे घण्टे बाद बाइक पर ए.एस.आई. जमशेद राय वहां पहुंच गया।

शिवदयाल ने उसे सारी बात समझाई और फिर सभी को वहीं छोड़कर जीप में सवार हो थाने की तरफ रवाना हो गया।

इस वक्त उसके होठों पर ऐसी मुस्कान थी, जैसी किसी हैवान के होठों पर होती है।

□□□

□□□

हॉल में सतीश रावण फर्श पर बेहोश पड़ा था। उसके पैरों में अभी भी वही रस्सी बधी हुई थी जिसे जगतार के आदमियों ने गोलियों से काटा था। उसका जिस्म अभी भी निर्वस्त्र था।

उसे इस वक्त चार आदमी घेरे हुए थे तथा करीब ही जगतार अपनी कुर्सी पर बैठा उसे देखते हुए हैरान हो रहा था।

जिस्म से या चेहरे से सतीश रवण कहीं से भी कोई घुटा हुआ आदमी नजर नहीं आ रहा था... बल्कि वह तो किसी शरीफ खानदान का चश्मो-चिराग दिख रहा था।

मगर उसके कानों में शिवदयाल की बातें भी कौंध रही थीं, जिसने कहा था कि बेहिसाब टॉर्चर होने के बावजूद भी उसने सिर्फ अपना नाम ही बताया था।

ऐसे में जाहिर था कि शरीफ नजर आने वाला वह युवक कोई पहुंचा हुआ हरामी था।

ऊपर से वह उसके माल के साथ पकड़ा गया था।

सो जगतार ने अपने ढंग से उससे सब कुछ उगलवाने के लिये ही हवालात से अपने पास मंगवाया था।

तभी एक आदमी हाथ में बाल्टी लटकाये वहां पहुंचा।

"होश में लाओ इसे।" जगतार गुर्राया।

उस आदमी ने बाल्टी का कुण्डा पकड़े हुए ही उसे ऊपर उठाया और दूसरे हाथ से बाल्टी को नीचे से पकड़ते हुए बाल्टी सतीश रावण पर उलट दी।

बुरी तरह से हड़बड़ाते हुए सतीश रावण ने आंखें खोलीं... और उसी के साथ ही उसके होंठों से कराहें फूट पड़ीं।

उसके जख्मों पर ठण्डे पानी ने नमक का-सा काम किया था।

"बैठ जा...।" तभी गुर्राया जगतार।

सतीश रावण ने कराहते हुए उसकी तरफ देखा और फिर बड़ी मुश्किल से उठते हुए फर्श पर बैठ गया।

"क्या नाम है तेरा...?"

"ग...गनेश लाल...।" कराहते हुए बोला सतीश रावण।

"मेरे माल के साथ तू ही पकड़ा गया था ना...?" जगतार ने पूछा।

सतीश रावण फौरन समझ गया कि वह शिवदयाल की ऊपरी अदालत में पहुंच गया है। जहां से उसे बुरी या अच्छी मौत हासिल होनी थी।

"ह...हां...।" वह बोला।

"किस्मत के साथ तेरा रिश्ता कब से है?"

"किस्मत...।" हड़बड़ाया सतीश रावण।

"मैं उस किस्मत की बात कर रहा हूं हरामखोर जिसके साथ मिलकर तूने मेरा माल लूटा था।"

"अ...आपको भी वही गलतफहमी हुई है सरकार जो पुलिस को हुई थी...मैं बेगुनाह हूं सरकार...उस माल से मेरा सिर्फ इतना ही रिश्ता था कि मैंने उसे सूमो से निकालकर बाहर रखा था।"

"अच्छा...।"

"हां सरकार...मैं न तो आपके माल को लूटने में उनके साथ था...न ही मेरा उनसे कोई सम्बन्ध था। जरा सोचिये सरकार जिस एक्सीडेन्ट में वे चारों बुरी तरह से मार गये...उसमें मुझे एक खरोंच तक नहीं आई। भला ऐसा भी कहीं हो सकता है। कम से कम मेरी टांग-बांह टूटनी चाहिए थी...मेरा जबड़ा टूटना चाहिये था। मेरा सिर फटना चाहिये था, मगर मुझे कुछ नहीं हुआ जो कि इस तरफ साफ इशारा करता है कि मैं उनका साथी नहीं हूं...।"

जगतार की आंखों में सोचें उभरीं।

सतीश रावण का हौसला उसके चेहरे का देख कुछ बढ़ा और वह अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए बोला—

"म...मैं तो एक मामूली जेबकतरा हूं साहब...लेकिन चार दिन पहले गंगानगर में कुछ ऐसा हो गया कि...।"

"क्या हुआ...?"

"म...मेरे हाथों एक खून हो गया...।"

"ओह!"

"सो पुलिस के डर से मुझे वहां से भागना पड़ा और मैं वहां से यहां पहुंच गया। उस वक्त मैं रेलवे स्टेशन पर था, जब मेरे कानों में दो वाहनों के टकराने की आवाज पड़ी।" उसने बाकी की कहानी कह सुनाई...मगर यह नहीं बताया कि उसने माल को खोलकर भी देखा था...बल्कि यह कहा कि वह उस माल को कहीं छुपाकर औने-पौने दामों में बेचने के लिये ही बाहर निकाल रहा था।

जगतार के होठों पर क्रूरता भरी मुस्कान फैल गई।

"कहानी तो बड़ी शानदार सुनाई है तूने।"

"य...यह कहानी नहीं सरकार...यह हकीकत है...मेरा यकीन कीजिये...मैं बेगुनाह हूं। पुलिस को मेरी हकीकत का पता न चले...इसीलिये मैंने पुलिस को यह बताया कि मैं दिल्ली का हूं...।"

"तू कहानी सुना रहा है या हकीकत बयान कर रहा है...इसका पता अभी चल जायेगा।"

कहा जगतार ने और अपने आदमियों को इशारा किया।

फौरन चारों आदमी भूखे कुत्तों की तरह सतीश रावण पर झपटे और फिर अगले ही पल उनके बूटों की ठोकरें उसके जिस्म पर पड़ने

लगीं।

सतीश रावण के होठों से तेज चीखें निकलने लगीं।

"पुलिस तो अपराधी को मारते वक्त शरीर का खास ख्याल रखती है...मगर जगतार के दरबार में यह नहीं देखा जाता कि चोट कहां लग रही है। हा-हा-हा...।"

सतीश रावण की चीखें और भी तेज गति से उबलने लगीं।

साथ ही उसके जिस्म पर बने गहरे काले नीले निशान कई स्थानों से फूट पड़े और वहां से खून बहने लगा।

मगर उस पर होने वाले जूतों की बरसात में कोई कमी नहीं आई।

आखिर में वही हुआ जो होना था।

वह बेहोश हो गया।

उसकी चीखों को ब्रेक लग गये।

मगर उसके जिस्म पर पड़ने वाली ठोकरों में कोई कमी नहीं आई।

तभी जगतार का हाथ ऊपर उठा...और उसी के साथ ही सतीश रावण को पड़ने वाली ठोकरें बन्द हो गई।

"बन्द कर दो इसे कमरे में...अब सुबह इससे बात करूंगा।" गुर्राया जगतार।

फौरन दो आदमियों ने उसे बाहों से पकड़ा और घसीटते हुए हॉल से बाहर ले गये।

जगतार ने नानक की तरफ देखा।

"माल...?" वह बोला।

"सारा माल हिफाजत से गोदाम में पहुंचा दिया गया है बॉस।" नानक तत्परता से बोला।

"कुछ कम तो नहीं...?"

"चरस की पेटी खुली हुई थी...मगर उसमें माल पूरा था।"

"गुड...कल शिवदयाल के घर दस लाख पहुंचा देना।"

"यस चीफ।"

जगतार ने दूसरे की तरफ देखा।

"जोशी।"

"यस चीफ...!" तुरन्त अटेन्शन होते हुए बोला दूसरा।

"यह गनेश लाल मुझे सच कहता लग रहा है।" जगतार सोच भरे स्वर में बोला—"जितना बुरा हाल इसका हुआ है...उतने में इसे सच बोल देना चाहिये था...।"

"मुझे भी ऐसा लग रहा है चीफ कि इसका किस्मत के साथ कोई सम्बन्ध नहीं था। यह तो लालच में मारा गया था।"

"सुबह इसकी लाश किसी गटर में फेंक देना।"

"मैं अभी... ।"

"अभी कुछ नहीं करना...थाने में पांच सिपाही मारे गये हैं...खरे का खून हो गया है। इस वक्त तो पूरे लखनपुर में पुलिस की जीपें दौड़ रही होंगी। तू सुबह उसके पास जाना और उसे खत्म कर देना...सुबह तक पुलिस की सरगर्मी कुछ कम हो जायेगी...अगर तूने उसे अभी खत्म कर दिया...अगर उसे फेंकने ले गया तो कोई भी बात नहीं कि तू पुलिस के हत्थे चढ़ जाये और मैं किसी भी तरह का रिस्क नहीं उठाना चाहता।"

"यस चीफ।" समझने वाले अन्दाज में सिर हिलाते हुए बोला।

"अब जाओ...मेरा भी आराम करने का वक्त हो गया है।"

दोनों ने सिर झुकाया और दरवाजे की तरफ बढ़ गये।

❑❑❑

❑❑❑

"अ...आह... ।"

सतीश रावण के होंठों से कराह फूटी और उसकी आंखें खुल गईं।

अपनी पिछली तमाम जिन्दगियों में उसका इतना बुरा हाल पहले कभी नहीं हुआ था।

पहले पुलिस की मार...फिर जगतार की मार।

पूरा जिस्म फोड़े की तरह दुख रहा था उसका।

वो...वो जख्म बन गये थे, उसके जिस्म पर और काले नीले निशानों का तो कोई अन्त नहीं था।

धीरे-धीरे हिम्मत करके वह उठ बैठा और लगा अपनी किस्मत पर आंसू बहाने।

"सुबह आऊंगा वीरू... ।" तभी एक आवाज उसके कानों में पड़ी।

"क्यों...?" दूसरी आवाज।

"चीफ का हुक्म है कि सुबह होते-होते गनेश की लाश किसी गटर में पहुंच जाये।"

"कोई बात नहीं...मुझे उठा लेना।"

"ठीक है।"

फिर शान्ति छा गई।

इधर सतीश रावण का कलेजा जोरों से धड़क उठा।

बात उसी को खत्म करने की हो रही थी।

पलभर में वह अपना सारा दर्द भूल गया और खुद को बचाने की सोचने लगा।

बेचैनी से उसने कमरे में निगाहें घुमाईं।

सिवाय दरवाजे के कमरे से निकलने का कोई और रास्ता नहीं

था...और दरवाजा बाहर से बन्द था।

साइड में फर्श पर एक मैली-सी चादर बिछी हुई थी, जिसके सिरे पर एक सिरहाना था।

उसने गर्दन बायीं तरफ घुमाई।

वहां भी कुछ भी नजर नहीं आया उसे।

सतीश रावण ने पूरा कमरा देख मारा...मगर उस चादर और सिरहाने के अलावा और कुछ भी नहीं मिला उसे जिससे कि वह वहा से निकलने की कोई तरकीब भिड़ा सकता।

आखिर उसने चादर को ही हथियार बनाने का फैसला किया और उठा खड़ा हुआ।

खड़ा होते ही उसकी आंखों के सामने अंधेरा छा गया और वह लहराकर धड़ाम से फर्श पर गिर पड़ा।

एक तो पेट से भूखा...ऊपर से पूरा शरीर फोड़ा बना हुआ था...चक्कर तो आना ही था उसे।

गिरते ही कराहें फूट पड़ीं उसके होठों से।

मगर उसने जल्द ही अपनी कराहों पर काबू पाया और फिर से हिम्मत जुटाते हुए खड़ा हो गया।

एक बार फिर चक्कर आया उसे...मगर इस बार उसने खुद को सम्भाल लिया।

किसी तरह लड़खड़ाते हुए वह चादर तक पहुंचा और झुककर उसे उठा लिया।

बस इतनी मेहनत में ही उसकी हिम्मत ने जैसे जवाब दे दिया था।

मगर जिन्दगी के मोह ने उसे सम्भाले रखा।

वह जानता था कि वह उनके हाथों मर नहीं सकता...आखिर भेड़िया था वह।

लेकिन लूला-लंगड़ा अपाहिज हो सकता था वह...और वह जिन्दगी मौत से भी बदत्तर होती।

कुछ देर तक वह लम्बी-लम्बी सांसें छोड़ता खुद को दुरुस्त करने की कोशिश करता रहा...फिर लड़खड़ाते हुए दरवाजे की तरफ बढ़ा।

❑❑❑
❑❑❑

'खड़...खड़...खड़...।'

दरवाजे के भिड़भिड़ाये जाने की आवाज सुन बैड पर लेटा व्यक्ति एकदम से उठ बैठा।

साथ वाला कमरा सतीश रावण का था, जिसके दरवाजे के भिड़भिड़ाये जाने की आवाज उसके कानों में पड़ी थी।

जगतार की सिक्योरिटी फोर्स का मैम्बर था वह।

नाम था जनार्दन।

जिस हालत में सतीश रावण को कमरे में डाला गया था...उससे ऐसा लगता था कि पता नहीं वह रात को जिन्दा रह भी पायेगा या नहीं। इसीलिये वह सतीश रावण की तरफ से पूरी तरह से निश्चिंत होकर लेटा था।

लेकिन दरवाजे की खड़खड़ाहट ने उसे चौंका दिया था।

बैड से उतर कर वह कमरे से बाहर निकला और सतीश रावण वाले कमरे मे दरवाजे के सामने आकर काट खाने वाले अंदाज में गुर्राया—

"क्या है?"

मगर भीतर से कोई आवाज नहीं आई। न ही फिर से दरवाजा भिड़भिड़ाया गया।

जनार्दन ने पुनः 'क्या है' कहा...कुछ देर रुका, फिर बैड पर आकर लेट गया।

ठीक तभी फिर से दरवाजा खड़खड़ाया गया।

चेहरे पर झुंझलाहट के भाव लिये वह पुनः बैड से उतरा और बाहर आकर गुस्से में बोला—

"अबे भूतनी के...कुछ भौंकेगा भी...या गूंगा हो गया है?"

जवाब में फिर शान्ति।

भुनभुनाया जनार्दन—"लगता है, वक्त से पहले मरना चाहता है हरामी।

उसने हाथ आगे बढ़ाकर कुण्डा खोला और दरवाजा धकेलते हुए जैसे ही भीतर प्रविष्ट हुआ।

जैसे बिजली टूट पड़ी उस पर।

दरवाजे के पीछे से कोई उस पर झपटा और अगले ही पल वह मुंह के बल फर्श पर गिरा।

इससे पहले कि वह सीधा होता, उसकी पीठ पर सवार सतीश रावण ने चादर का फंदा उसके गले में डाला और अपनी पूरी शक्ति लगाकर फन्दे को कसता चला गया।

नीचे गिर पड़े जनार्दन ने अपने हाथ-पैर पटकने शुरू कर दिये, लेकिन सतीश रावण ने अपनी कसावट में जरा भी ढील नहीं आने दी।

जनार्दन का मुंह खुल गया जिसमें से उसकी जुबान बाहर निकल आई।

आंखें फट पड़ीं।

और कुछ ही देर में उसके विरोध को पूर्णविराम लग गया।

मर चुका था वह।

सतीश रावण ने चादर छोड़ी और जनार्दन की पीठ पर सिर फैंक गहरी सांसें छोड़ने लगी।

थोड़ी देर बाद वह कराहते हुए उस पर से उठा और उसके कपड़े उतारने लगा।

आधे घण्टे की अथक मेहनत के बाद जाकर वह उसके कपड़े उतारकर खुद को पहनाने में कामयाब हो पाया।

कपड़े जख्मों के साथ लगते ही टीसें उबल पड़ीं उसके होठों से।

होठों को भींचकर उसने अपनी टीसों पर काबू पाया और पहने हुए कपड़ों की तलाशी लेने लगा।

तलाशी में उसे दो हजार रुपयों के अलावा वो चीज मिली जिसकी मौजूदा हालत में उसे सख्त जरूरत थी।

वह थी रिवाल्वर।

सतीश रावण ने रिवाल्वर का चैम्बर खोलकर उसे चेक किया और फिर चैम्बर को बन्द करके कमरे से बाहर आ गया।

कदम बढ़ाते वक्त वह इस तरह लड़खड़ा रहा था मानो किसी भी वक्त गिर पड़ेगा।

लेकिन जीने की तमन्ना उसे सम्भाले हुए थी।

कमरे से बाहर आकर उसने अपने कदम रोके और इधर-उधर देखा।

इस वक्त वह एक बरामदे के आखिरी कमरे के सामने था। तीन दरवाजों को पार कर वह दरवाजा बायीं तरफ मुड़ जाता था।

दायीं तरफ दीवार थी, जो कि उस बिल्डिंग की हद थी, जिसमें कि वह कैद था।

पूरी सावधानी से चलते हुए दीवार का सहारा लेते हुए वह आगे बढ़ा और बरामदे के कोने पर आकर ठिठक गया।

दीवार से चिपके हुए उसने गर्दन लम्बी कर मोड़ के उस पार देखा।

ठीक तभी उसे एक व्यक्ति बरामदे को क्रॉस करता नजर आया। उसके दोनों हाथ जेबों में थे।

निश्चय ही वह कोई गार्ड था।

अगर सतीश रावण ठीक होता तो वह दुस्साहस कर सकता था, मगर इस वक्त उसकी हालत ऐसी थी कि अगर कोई उसे पीछे से धक्का भी दे देता तो वह फिर से नहीं उठ सकता था।

लड़ना तो बहुत दूर की बात थी।

थोड़ी देर दीवार से चिपके रहने के बाद उसने पुनः गर्दन लम्बी की तो इस बार वह गार्ड उसे कहीं नजर नहीं आया।

बरामदे में एक ही बल्ब जल रहा था, जो कि पूरे बरामदे में

रोशनी फैला रहा था।

सतीश रावण ने पहले वहीं खड़े-खड़े ही स्विच बोर्ड को ढूंढा।

वह उसे बरामदे के अन्त में नजर आया।

रिवाल्वर को सख्ती से पकड़े वह दीवार से हटकर बरामदे में आया और लड़खड़ाते हुए तेजी से आगे बढ़ते हुए स्विच बोर्ड की तरफ लपका।

इधर उसने स्विच को ऑफ किया...उधर उस गार्ड ने बरामदे के सिरे पर कदम रखा।

सतीश रावण ने फौरन स्वयं को इस तरह नीचे गिराया कि जरा भी आवाज न हो।

उसका चेहरा इस वक्त बुरी तरह से सुर्ख हो रहा था...होंठ भिंचे हुए थे।

साफ नजर आ रहा था कि वह अपनी कराहों को पूरी शक्ति से भीतर ही रोकने की कोशिश कर रहा है।

स्वयं को नीचे गिराते ही वह दीवार की जड़ से चिपक गया।

"ओह...लगता है, बल्ब फ्यूज हो गया।"

उसके कानों में गार्ड की आवाज पड़ी...और फिर उसने गार्ड के साये को एक तरफ बढ़ते देखा।

सतीश रावण ने राहत भरी सांस छोड़ी और लेटे-लेटे ही बरामदे के सिरे की तरफ रेंगने लगा।

सिरे पर पहुंच कर उसने बाहर झांका।

करीब बीस फीट लम्बा लॉन था, जिसके बाद करीब आठ फीट ऊंची बाउण्ड्री वाल थी।

उस कोठी का गेट किधर था...यह उसे मालूम नहीं था।

कुछ देर उसने अपनी सांसें दुरुस्त कीं और लेटे-लेटे ही गार्ड की तरफ देखा।

कहीं भी नजर नहीं आया उसे गार्ड।

"शायद किसी कमरे में प्रवेश कर गया है...या फिर किसी दूसरे रास्ते का राउण्ड लगाने गया है।"

यह सोचकर उसने मन को तसल्ली दी और बरामदे से निकलकर लॉन में आ गया।

जिन्दगी का मोह इन्सान में कितनी ताकत भर देता है...यह सतीश रावण को देखकर पता चल रहा था।

अपने तमाम जख्मों को भूले हुए वह लड़खड़ाते कदमों से बाउण्ड्री वाल की तरफ बढ़ रहा था।

कुछ ही देर में वह बाउण्ड्री वाल की जड़ में लगा बुरी तरह से हांफ रहा था।

उसका सीना धौंकनी की तरह फूल-पिचक रहा था।

आंखों के सामने बार-बार अंधेरा आ रहा था...लेकिन जीने की चाह उसे चौकस बनाये हुए थी।

करीब पांच मिनट तक वह सांसें दुरुस्त करता रहा...फिर उसने बैठे-बैठे ही बाउण्ड्री वाल की ऊंचाई देखी।

अगर वह ठीक होता तो इतनी ऊंचाई का उसके लिये कोई महत्व नहीं था।

लेकिन इस वक्त उसकी जो हालत थी...उसमें उस दीवार को पार करना पहाड़ को लांघने के बराबर था।

तभी उसकी निगाहें एक स्थान पर पड़ीं।

उस स्थान की ईंट उखड़ी हुई थी।

सतीश रावण के लिये इतना सहारा ही बहुत था।

वह उठा...दीवार की तरफ मुंह करके रिवाल्वर को दांतों से पकड़ा...अपना दायां पैर उठाकर उस गड्ढे में फंसाया और हाथों को दीवार से लगाकर अपनी पूरी शक्ति संजोकर ऊपर उछला।

अगले ही पल बाउण्ड्री वाल का सिरा उसके हाथों में था।

पूरी हिम्मत जुटाते हुए वह दीवार पर चढ़ा।

"कौन है...?" ठीक तभी पीछे से दहाड़ती आवाज आई। साथ ही गोली चलने की आवाज उभरी।

'धांय...!'

बिना कोई वक्त गंवाये सतीश रावण परली तरफ कूद गया।

नीचे कूड़े का ड्रम पड़ा था, जिसमें कि दिन भर का कूड़ा-करकट भरा पड़ा था।

खुशकिस्मत था वह जो सीधा ड्रम में गिरा, वरना अगर वह जमीन पर गिरा होता तो अब तक बेहोश हो चुका होता।

गिरते ही उसने अपने दिमाग से काम लिया और जल्दी-जल्दी कूड़े को इधर-उधर करके स्वयं ड्रम में बैठ गया और खुद को पूरी तरह से कूड़े से ढक लिया।

ठीक तभी दौड़ते हुए कदमों की आवाज उसके कानों में पड़ी।

आवाजों से ही पता चल रहा था कि वे एक-दो नहीं, बल्कि कई आदमी हैं।

आवाजें ड्रम के करीब आकर रुकीं।

सतीश रावण का कलेजा जोरों से धड़कने लगा। वह जानता था कि अगर उन्हें पता चल गया कि वह ड्रम में छुपा है तो फिर वह कुछ भी नहीं कर पायेगा...जो करेंगे...वो ही करेंगे।

"यहीं से कूदा था वह।" एक आवाज उसके कानों में पड़ी।

"इतनी जल्दी गायब कैसे हो गया वो...?" दूसरी आवाज—"जबकि वह सख्त घायल था।"

"लगता है, उस गली में भाग है वो।" तीसरी आवाज।

"तुम उस गली में देखो... तुम इधर जाओ... ध्यान रहे... वह हर सूरत में मिलना चाहिये... ।" चौथी आवाज़ सतीश रावण के कानों में पड़ी।

और फिर भागते कदमों की दूर होती आवाज उसे सुनाई दी।

"पता नहीं कैसे फरार हो गया वह।" सतीश रावण के कानों में चौथे की आवाज पड़ी—"जनार्दन की खैर नहीं अब... जगतार उसकी इस लापरवाही पर उसे हरगिज नहीं बख्शेंगे।"

"तो जगतार है इनके चीफ का नाम... ।" सतीश रावण मन ही मन बड़बड़ाया।

तभी भागते हुए कदमों की नजदीक आती आवाज सुनाई दी उसे।

वह खुद में और भी ज्यादा दुबक गया।

"कुछ पता चला उसका... ?" एक नई आवाज सतीश रावण के कानों में पड़ी।

"नहीं... तूने जनार्दन से पूछा कि... ।"

"वो मर गया है।"

"क्या... ?"

"गला घोंट कर मार दिया है गनेश ने उसे।"

"ओह!"

"इतना ही नहीं... वह उसे नंगा कर गया है और इस वक्त उसकी रिवाल्वर भी उसके कब्जे में है।"

"कमाल है... इतनी बुरी तरह से जख्मी होने के बाद भी उसने जर्नादन को मार डाला और पूरी कामयाबी से निकल भागा... अगर वह ठीक होता तो पता नहीं क्या कर गुजरता?"

"मुझे तो वह कोई बहुत ही पहुंचा हुआ खलीफा लगता है।"

"जो भी हो। जर्नादन तो मर गया... अब हमारी खैर नहीं... पता नहीं चीफ हमारे साथ कैसा सलूक करेंगे।"

"हौसला रखो। इस हालत में वह फरार होने में कामयाब तो हो गया है... लेकिन ज्यादा दूर नहीं जा पायेगा वह... देख लेना बहुत जल्द वह हमारे आदमियों की गोली का निशाना बन जायेगा।"

"अगर ऐसा हो जाये तो चाहिये ही क्या... लेकिन अगर वह पुलिस को किसी बड़े अफसर के हत्थे चढ़ गया तो चीफ के लिये बहुत बड़ी मुश्किल पैदा हो जायेगी... क्योंकि इन्टरोगेशन में वह फौरन चीफ का नाम ले देगा कि वह उसे थाने से अगवा करके लाया था और यह तो तू जानता ही है कि पुलिस का अगर कुत्ता भी मर जाये तो पूरा महकमा एक जुट हो जाता है... जबकि यहां तो पांच सिपाहियों और एक सब-इंस्पेक्टर की हत्या हुई है। ऐसे में पुलिस क्या करेगी... इसका अन्दाज हर कोई लगा सकता है।"

"ओह!"

"इसलिये ऊपर वाले से कुछ दुआ कर कि वह पुलिस के हत्थे चढ़ने की बजाय हमारी गोली का निशाना बने।"

"ऐसा ही होगा, मगर एक बात समझ में नहीं आ रही।"

"क्या...?"

"जब चीफ ने गनेश को खत्म ही करना था, तो फिर इतना बड़ा ड्रामा करने की क्या जरूरत थी। रेखा से रेप का नाटक कर खरे को मारा...थाने में पांच पुलिसियों को गोली से उड़ा दिया। सीधा ही गनेश को खत्म करने के लिये शिवदयाल को बोल देता।"

"रहा न बुद्धू का बुद्धू...।"

"वो कैसे...?" हड़बड़ाई आवाज पड़ी सतीश रावण के कानों में।

"थाने में हमारा तीस करोड़ का माल पड़ा था। उसी के लिये थाने पर हमला किया गया था।"

"ओह।"

"गनेश को तो सिर्फ इसीलिये वहां से निकाला गया था...क्योंकि चीफ को संदेह था कि किस्मत पहले भी उसके साथ बेइमानी करता रहा था। गनेश से यह सब जाना जा सकता था और खरे को मारने के पीछे यह कारण था कि उसे कर्तव्यपरायणता का रोग हो गया था। तभी तो चीफ ने शिवदयाल के साथ मिलकर चाल चली थी, ताकि उसे रास्ते से हटाया जा सके। अब बड़े अधिकारी यह समझते रहेंगे कि बलात्कारियों ने खरे को मार डाला। रेखा भी यही कहेगी और अपनी बात को वह साबित भी कर सकती है। अब किसी को क्या पता कि हकीकत में क्या हुआ था।"

"बेवकूफ था खरे जो ऐसा रोग पाल बैठा...अगर वह शिवदयाल के नक्शे-कदम पर चलता तो वह भी कोठी बना सकता था। पता है, चीफ ने दस लाख का इनाम पहुंचाया है शिवदयाल को।"

"उसके तो मजे हो गये।"

"मगर अपनी तो मुसीबत आ गई। गनेश भाग निकला और हमारे एक आदमी का खून भी कर डाला। पता नहीं इसकी क्या सजा मिलेगी हमें?"

"वो तो मिलेगी ही...आओ...चीफ के पास चलते हैं।"

और फिर कदमों की दूर होती आवाजें सतीश रावण के कानों में पड़ी।

मगर सतीश रावण अपने स्थान से हिला भी नहीं। वह वहीं कूड़े के ड्रम में दुबका रहा।

करीब बीस मिनट के लम्बे इन्तजार के बाद सतीश रावण धीरे

ही खड़ा हुआ।

उसके कपड़े तो ही कुछ उसके जिस्म से [illegible] लगा, मगर अभी भी यहां स्थानों पर कुछ चिपका हुआ था उसके।

उसने वहीं रखे साबुन से [illegible] तथा कपड़ों को [illegible]... फिर बाहर आ गया।

रिवाल्वर निकालकर उसने जेब में रख ली थी।

दिन के उजाले आने की सूचना [illegible] दे दी थी... [illegible] रात की कालिमा खत्म होने लगी थी।

एक बार फिर सतीश रावण थोड़ा आगे बढ़ा और एक गली में प्रवेश कर आगे बढ़ने लगा।

गलियों में आगे बढ़ते हुए [illegible] गायब हो गया।

उसकी किस्मत अब जवाब दे चुकी थी... उजाले की लालिमा भी काफी फैल चुकी थी।

समझ में नहीं आ रहा था कि वह कहां छुपे... कहां जाये।

एक तरफ उसके पीछे पुलिस लगी हुई थी, तो दूसरी तरफ जगलार के कुत्ते उसे सूंघते फिर रहे थे।

आखिर एक दीवार से लगकर वह अपनी सांस दुरुस्त करने लगा।

लोग-बाग सैर करने के लिये घरों से निकलने लगे थे... इसलिये उसने रिवाल्वर अपनी जेब में डाल ली थी।

तभी अपने करीब किसी दरवाजे के खुलने की आवाज सुनकर उसकी गर्दन उधर घूम गई।

जागिंग सूट पहने एक औरत दरवाजे से बाहर निकली... मुड़ी और दरवाजे को बन्द कर कुण्डा लगा दिया।

और फिर जैसे ही वह वहां से रवाना हुई... सतीश रावण का शैतानी दिमाग फौरन जाग उठा।

तुरन्त वह अपने स्थान से हटा और दरवाजे के सामने आकर उसने कुण्डा खोला और भीतर प्रवेश कर दरवाजे को बन्द किया और रिवाल्वर निकाल लीं।

वह दो कमरों का एक छोटा, मगर खूबसूरत मकान था।

दोनों कमरे सामने बने थे तथा दांयी तरफ पहले किचन थी, फिर बाथरूम।

सतीश रावण ने एक-एक करके दोनों कमरे देखे।

हैरानी हुई उसे... दोनों कमरे खाली मिले उसे... बाथरूम में भी कोई नहीं था।

"घर का मालिक कहां गया...?" वह बड़बड़ाया—"जरूर वह पहले सैर करने निकल गया होगा।"

यह सोचकर वह सीधा बाथरूम में जा घुसा।

बाथरूम में गीजर लगा देख उसने उसका बटन दबाकर ऑन किया और फिर करीब पांच मिनट बाद उसने कपड़े जो कि कूड़े के कारण बदबू मारने लगे थे... उतार कर एक तरफ टांगे और नल खोलकर उसके नीचे बैठ गया।

गर्म पानी ने शरीर पर गिरते ही उसके जख्मों में आग-सी लगा दी। कराहें फूट पड़ीं उसके होठों से... मगर फिर उसे धीरे-धीरे राहत मिलने लगी।

अपने शरीर को गर्म पानी से धोकर वह नंगा ही बाथरूम से बाहर निकल आया और सीधा कमरे में जाकर बायीं तरफ पड़ी लोहे की अलमारी के सामने आकर खड़ा हो गया।

उसने अलमारी खोली।

पूरी अलमारी जनाना कपड़ों से भरी पड़ी थी।

सतीश रावण ने उन्हीं में से एक लेडीज पायजामा कुर्ता पसन्द किया और उसे पहन लिया।

पायजामा उसको न सिर्फ फंसकर आया... बल्कि वह उसके टखनों से काफी ऊँचा था।

इसी तरह कुर्ता भी फंसकर आया।

मगर वक्ती तौर पर उसका काम चल रहा था।

वह कमरे से बाहर निकला... बाथरूम में पहुंचा और उतारे गये कपड़ों में से रिवाल्वर और दो हजार रुपये निकालकर वापिस कमरे में आकर बैड पर चढ़ा और रजाई ओढ़कर लेट गया।

एक अजीब-सा सुकून मिला था उसे इस गर्माहट में।

❑❑❑

❑❑❑

थके हुए कदमों से देवकी जैसे ही अपने घर के दरवाजे के सामने रुकी... वह बुरी तरह से चौंक उठी।

उसका मेन डोर का कुण्डा खुला हुआ था... जबकि उसे अच्छी तरह से याद था कि वह कुण्डा लगाकर गई थी।

एक अन्जानी आशंका से उसका कलेजा दहल उठा था।

कहीं उसके घर में चोर तो नहीं घुस गये।

इसी सोच ने उसे दहला दिया था।

हिम्मत करके उसने दरवाजे को धक्का देकर खोला और भीतर प्रवेश कर गई।

कांपते कदमों से वह भीतर प्रविष्ट हुई और आगे बढ़ती हुई अपने बैडरूम की तरफ बढ़ी।

जैसे ही वह बैडरूम में दाखिल हुई, उसका कलेजा जोरों से उछला और हलक में आ फंसा।

आंखें फट पड़ीं... मुंह चीखने के लिये भाड़-सा खुल गया,

लेकिन खौफ के मारे चीख उसके गले से बाहर नहीं निकली।

सामने बेड पर अधलेटी अवस्था में रजाई ओढ़े सतीश रावण बैठा था।

हाथ में रिवाल्वर लिये...जिसका रुख उसी की तरफ था।

"अन्दर आओ...।" सतीश रावण बोला।

देवकी ने उसकी आवाज में छुपी कराह को भी सुना था, मगर पर इस कदर हावी हो रहा था कि वह कुछ भी सोचने के लायक नहीं थी।

"ड...आओ...डरो नहीं।"

देवकी आगे बढ़ी और बैड के करीब आ खड़ी हुई।

"बैठो...।"

देवकी बैड के कोने पर इस तरह बैठ गई जैसे किसी भी पल उसे उठकर भागना पड़ सकता है।

सतीश रावण ने रिवाल्वर वाला हाथ आगे किया और गहरी सांस छोड़ते हुए रिवाल्वर उसकी गोद में रख दी।

"रिवाल्वर पूरी तरह से भरी हुई है...,अगर तुम चाहो तो इसी रिवाल्वर से मुझे गोली मार सकती हो।" वह बोला।

बुरी तरह से बौखला उठी देवकी सतीश रावण की इस हरकत पर।

"अगर चाहो तो पुलिस को भी खबर कर सकती हो...मैं न नहीं करूंगा...लेकिन भगवान के लिये कोई भी कदम उठाने से पहले मेरी बात जरूर सुन लेना।"

देवकी कुछ नहीं बोली...बस फटी-फटी आंखों से उसे देखती रही।

सतीश रावण ने अपने सीने से रजाई हटाई और बोला—"यह कुर्ता तुम्हारा पहन रखा है मैंने...नीचे पायजामा भी तुम्हारा है।"

देवकी हैरानी से अपने कपड़ों को देखने लगी।

"त...तुमने मेरे कपड़े पहने...?" पहली बार उसके मुंह से निकला।

"हां...।"

"और तुम्हारे कपड़े...?"

"वो बाथरूम में टंगे हुए हैं...मगर वो कपड़े भी मेरे नहीं...किसी और के उतार कर पहने थे मैंने...उससे पहले मैं दो दिन तक बिल्कुल ही नंगा रहा था।"

"क...क्या मतलब...?"

सतीश रावण ने कुर्ते को आगे से ऊपर उठाया।

बुरी तरह से उछल पड़ी देवकी...सतीश रावण का पेट सीना जख्मों से भरा हुआ था।

"य...यह...।"

"पुलिस की और गुण्डों की सौगात है यह...।" कहते हुए सतीश रावण का गला भर आया।

"म... मैं कुछ समझी नहीं...।"

सतीश रावण ने गहरी सांस छोड़ी और बोला—

"मां बचपन में ही मर गई थी मेरी... पापा की मौत अभी दो महीने पहले ही हुई थी। गंगापुर में हमारा काम कोई खास नहीं था...इसलिए किसी और शहर में किस्मत आजमाने के लिये मैंने अपना मकान तीन लाख में बेचा और यहां आ गया...मगर यहां आते ही मैं ऐसा फंसा कि मैं ऊपर वाले से मौत मांगने लगा।"

"क्या हुआ था...?"

"किसी एक्सीडेंट की आवाज सुनकर मैं स्टेशन से सीधा वहां पहुंचा तो एक टाटा सूमो को उलटा पड़ा पाया। शायद सूमो में सवार लोगों में कोई बच गया हो...यही सोचकर मैंने सूमो में झांका। अब मुझे क्या मालूम था कि वह सूमो एक गैंगस्टर की थी और उसमें गैरकानूनी माल भरा पड़ा था। मेरी बदकिस्मती कि ठीक तभी पुलिस वहां पहुंच गई और...।"

उसने पुलिस के अत्याचारों से लेकर जगतार की कैद से भागने तक की सारी कहानी कह सुनाई, मगर यह नहीं बताया कि वह जगतार के एक आदमी का खून करके भागा था।

अपनी बात खत्म कर उसने गहरी सांस छोड़ी और बोला—

"उसके बाद मुझे तुम नजर आई और मैं तुम्हारे घर में घुस गया। दो दिन से मैंने पानी भी नहीं पिया और मेरी हालत इस वक्त ऐसी है कि मैं बच्चा भी आसानी से मुझे धाराशायी कर सकता है। तुम तो जवान हो। अब यह तुम पर निर्भर करता है कि तुम मेरे साथ क्या सलूक करती हो। बस यूं समझ लो कि मैं तुम्हारी शरण में हूं।"

उसकी बात पूरी होने पर देवकी ने गहरी सांस छोड़ी और बोली—

"तुम्हारी कहानी वाकई बड़ी दुख भरी है। मुझे तुमसे हमदर्दी है, लेकिन मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकती।"

"ल...लेकिन...।"

"मेरी बात समझने की कोशिश करो मिस्टर...मैं एक तलाकशुदा औरत हूं और नौकरी करती हूं। इस घर में मैं अकेली रहती हूं। ऐसे में मगर किसी ने तुम्हें यहां देख लिया तो मैं बेवजह बदनाम हो जाऊंगी। इसलिये खुद प्लीज कोई और ठिकाना ढूंढ लो।"

सतीश रावण के चेहरे पर निराशा फैल गई।

उसने गहरी सांस छोड़ी और कराहते हुए रजाई को एक तरफ

किया और पैर नीचे उतारते हुए बोला।

"थैंक्यू...तुम्हारे घर में मैंने जो एक घण्टा गुजारा...उसे मैं मरते दम तक नहीं भूलूंगा और मुझे यह भी पता है कि यहां से निकलने पर मैं पुलिस की...या उस गैंगस्टर की गोली का शिकार हो जाऊंगा। सोचा था, ठीक होकर मैं ब्याज समेत अपना पैसा वसूल करूंगा और सारा पैसा अपनी शरणदाता के चरणों में डाल दूंगा, मगर...।"

उसने पुनः गहरी सांस छोड़ी और खड़ा होकर दरवाजे की तरफ बढ़ा।

"य...यह रिवाल्वर...।"

देवकी की बात बीच में ही रह गई। तभी सतीश रावण जोरों से लहराया और धड़ाम से फर्श पर गिर पड़ा।

बुरी तरह से हड़बड़ाते हुए देवकी ने रिवाल्वर बैड पर रखी और बैड से उतरकर सतीश रावण के करीब पहुंची।

बेहोश हो चुका था वह।

"ओह! सर क्या करूं?" बड़बड़ाई वह—"यह बेचारा तो सचमुच घायल है।"

वह झुकी और सतीश रावण को बगलों से पकड़कर उसे घसीटते हुए बैड तक लाई और उसे बैड पर डालकर ऊपर रजाई ओढ़ा दी।

कुछ देर तक वह घबराहट में हाथ मलती रही...फिर तेजी से कमरे से बाहर निकल गई।

उसके बाहर निकलते ही सतीश रावण की आंखें फटाक से खुलीं और उसके होंठों पर मुस्कान नाच उठी।

अब उसे विश्वास हो गया था कि उसे इस घर में पनाह मिल जायेगी।

❑❑❑
❑❑❑

जगतार की आंखों में शोले दहक रहे थे। मुट्ठियां इस कदर भिंची हुई थीं कि इस वक्त अगर उसकी मुट्ठियों में लोहा भी होता तो वह भी चूरन बन जाता...चेहरा पत्थर की मानिन्द कठोर हो रहा था।

उसके सामने उसकी सिक्योरिटी फोर्स का इंचार्ज और तीन गार्ड सिर झुकाये खड़े थे।

अभी दस मिनट पहले ही उसे सतीश रावण के फरार हो जाने की खबर मिली थी। यह जानकर तो वह उछल ही पड़ा था कि वह जनार्दन का खून कर गया था।

सतीश रावण की हालत देखी थी उसने। उससे तो ढंग से बैठा भी नहीं जा रहा था...अगर वह होश में होता तो सिर्फ एक घूंसे से उसे फिर से बेहोश किया जा सकता था। एक तरह से वह सहारा लेकर ही चलने के काबिल था।

इतनी खस्ता हालत में होने के बावजूद भी उसने न सिर्फ जनार्दन का खून कर डाला...बल्कि उसकी कोठी से भाग भी निकला था।

ऐसी सूरत में उसका चौंकना क्या, बल्कि उछल पड़ना स्वाभाविक ही था।

फिर भी उसने मस्तिष्क से संयम नहीं खोया और थाने फोन किया...ताकि शिवदयाल को उसके भागने के बारे में बताकर यह कह सके कि वह उसे देखते ही गोली मार दे।

लेकिन शिवदयाल थाने में नहीं था। सो उसने बिना कुछ कहे फोन रखा और दो व्यक्तियों को जनार्दन की लाश ठिकाने लगाने का आदेश दे दिया।

और अब वह अपनी कोठी के सिक्योरिटी इन्चार्ज की तरफ खून भरी निगाहों से देख रहा था।

"तो यह है तेरी सिक्योरिटी...।" वह गुर्राया—"एक हरामी मेरे आदमी का खून मेरी ही कोठी में करके इत्मीनान से निकल गया और तुझे पता उस वक्त लगा जब वह बाउण्ड्री वाल फांद गया, फिर भी तेरे हाथ नहीं लगा वह।"

इन्चार्ज ने जोरों से थूक सटकी।

"ऐसे में कल को कोई भी ऐरा-गैरा मेरी कोठी में प्रवेश कर मुझे मारकर निकल जाये तो कोई हैरानी वाली बात नहीं होगी।"

"ए...ऐसी बात नहीं है चीफ...।" थर्राये स्वर में बोला इन्चार्ज—"म...मैंने दिनकर को पूरी हिदायत दी थी कि...।"

"फिर भी वह निकल गया और उसकी जिम्मेदारी तेरे पर है।"

इंचार्ज जिसका नाम शेर खान था, ने चुपचाप सिर झुका लिया।

"जवाब दे...क्या कहेगा तू अपनी सफाई में?" गुर्राया जगतार।

"म...मैं अपनी गलती कबूल करता हूं...और सारी जिम्मेदारी अपने सिर लेता हूं। चीफ मुझे जो भी सजा देंगे...गुलाम उस सजा को हंसते-हंसते कबूल कर लेगा।"

"तुझे सजा देने से वह मुसीबत कम नहीं हो जायेगी।" गुर्राया जगतार—"हालांकि दिल तो यही करता है कि तुम सबको गोली से उड़ा दूं...मगर ऐसा करूंगा नहीं मैं।"

शेर खान का सिर और भी झुक गया।

जगतार के माथे पर सोचों की सलवटें उभर आईं।

आंखों में सिकुड़न पैदा हो गई।

"इतनी बुरी तरह से घयाल होने के बावजूद भी जो व्यक्ति जनार्दन को मारकर पूरी सफलता से यहां से फरार होने में कामयाब हो गया...वह कोई छोटा-मोटा हरामी नहीं हो सकता। कोई घुटा हुआ शातिर आदमी ही ऐसा होसला कर सकता है।"

"ज...आप ठीक कर रहे हैं चीफ!"

"इससे पहले कि वह हमारे लिये कोई मुसीबत खड़ी करे...उसे फौरन से पहले ढूंढकर खत्म कर दो।"

"ह...हो सकता है वह लखनपुर से भाग गया हो?"

"तो क्या यह सोचकर तुम हाथ पर हाथ धरकर बैठ जाओगे।" भड़का जगतार—"हराम की खाने की आदत पड़ गई है क्या...?"

हड़बड़ा उठा शेर खान।

"फौरन पूरे लखनपुर में उसकी तलाश शुरू कर दो...वह जहां मिले...जिस हालत में मिले उसे फौरन गोली से उड़ा दो।"

"यस चीफ...।"

ठीक तभी फोन की घण्टी बज उठी।

'ट्रिन...ट्रिन...।'

जगतार ने उन्हें जाने का इशारा किया और अपने करीब रखे चांदी के स्टूल पर रखे फोन का रिसीवर उठा लिया।

"हैलो...।" वह अपनी आवाज को सामान्य बनाने की कोशिश करते हुए बोला।

"शिवदयाल बोल रहा हूं सर...।" आवाज आई—"गनेश ने कुछ बताया...?"

"वह फरार हो गया है।"

"क्या...?" बुरी तरह से चौंकती आवाज आई—"य...यह आप क्या कह रहे हैं?"

"इतना ही नहीं...उसने हमारे एक गुलाम का खून भी कर दिया है...।"

"ओह नो।"

"तू उसे तलाश कर और जहां कहीं भी वह मिले उसे खत्म कर देना।"

"य...यस सर...लेकिन वह भागने में कामयाब कैसे हो गया?"

"बाद में बताऊंगा...तू बोल...थाने में रात जो कुछ हुआ...किसी को तेरे पर शक तो नहीं हुआ।"

"आपने स्कीम ही इतनी शानदार बनाई थी सर कि फेल हो ही नहीं सकती थी।"

"यानि शक नहीं हुआ...?"

"नो सर।"

"ठीक है... अब उस हरामी धनेश लाल को ढूंढने में लग जा।"

कहकर उसने रिसीवर क्रेडिल पर रखा और कुर्सी की पुश्त से टेक लगाकर आंखें बन्द कर लीं।

चिन्ता के भाव उसके चेहरे पर साफ नजर आ रहे थे।

❑❑❑

❑❑❑

एक घण्टे बाद सतीश रावण को मेन डोर खुलने की आवाज आई।

उसने फौरन आंखें बन्द कर लीं...साथ ही रिवाल्वर अपने कब्जे में कर ली।

कहीं उसे पनाह देने वाली औरत पुलिस को तो साथ नहीं ले आई, यही सोचकर उसने सावधानी बरती थी।

मगर जब उसने देवकी को अकेले ही कमरे मे प्रवेश करते देखा तो उसने रजाई के भीतर पकड़ी रिवाल्वर छोड़ दी और आंखों के बीच जो झिरी बना रखी थी...उसे भी बन्द कर दिया।

देवकी ने एक कैरी बैग उठा रखा था।

उसने बैग बैड पर ही सतीश रावण के करीब रखा और बाहर निकल गई।

करीब पांच मिनट बाद वह वापिस लौटी तो उसने गर्म पानी से भरा तसला उठा रखा था।

उसने तसला बैड के करीब ही फर्श पर रखा और फिर कैरी बैग में से एक शीशी निकालकर उसे खोला और कुछ बूंदें गर्म पानी में डाल दीं।

तत्पश्चात् उसने सतीश रावण पर पड़ी रजाई एक तरफ हटाई। रिवाल्वर को उठाकर सिरहाने के नीचे रखा और फिर उसके कपड़े उतारने लगी।

सतीश रावण बेहोश होने का नाटक करता रहा।

जब भी उसके किसी जख्म पर उसका हाथ लगता तो उसका दिल करता कि वह कराह पड़े...मगर अपनी पीड़ा को उसने होठों पर नहीं आने दिया।

देवकी ने उसका कुर्ता किसी तरह उतारा...फिर पायजामें का नाड़ा खोलकर उसे नीचे किया।

उस वक्त सतीश रावण ने आंखों की झिरी में से उसका चेहरा देखा।

देवकी का चेहरा सुर्ख हो रहा था तथा आंखों में चाहत के हिलौरे मार रही थी।

बार-बार वह अपने निचले होंठ को चबाती हुई उसके पौरुष

को देख रही थी।

आखिर उसने किसी तरह हिम्मत करके अपनी निगाहों को वहां से हटाया और उसका पायजामा उतारकर कैरी बैग में से रूई निकाली...उसमें से फोहा अलग किया और फिर उसे गर्म पानी में भिगोकर सतीश रावण के जख्मों की तरफ बढ़ने लगी।

इस बार सतीश रावण लाख कोशिशों के बावजूद भी अपनी कराहें नहीं रोक पाया।

लेकिन बेहोशी का नाटक वह पूर्ववत् ही करता रहा...जैसे बेहोशी में ही कराह रहा हो।

देवकी उसके जख्मों को धोती रही।

पीठ...छाती...पैर...बाहों के जख्मों को साफ करके उसने कुछ नीचे की तरफ किया और उसकी जांघों के जख्मों को धोने लगी।

कई बार उसने देवकी के हाथों को कांपते हुए अपनी जांघों पर फिरते महसूस किया। साथ ही उसने उसकी गर्म सांसों को भी साफ सुना...लेकिन अपना बेहोशी का नाटक उसने जारी ही रखा।

जख्मों को धोकर देवकी ने उसके जख्मों पर दवा लगाई और फिर उस पर रजाई डालकर बैड से उतर गहरी-गहरी सांस छोड़ने लगी।

आंखों में झिरी पैदा कर सतीश रावण ने उसके पसीने से तर-बतर हो रहे सुर्ख चेहरे को देखा...उसके सीने को बार-बार उठते गिरते देखा तो वह मन ही मन मुस्कुरा रहा।

अपनी सांसों को दुरुस्त कर देवकी ने सारा सामान वापिस कैरी बैग में डाला...पतीले को उठाया और बाहर निकल गई।

इधर दवा के असर ने धीरे-धीरे सतीश रावण पर अपना असर दिखाना शुरू कर दिया और वह नींद के आगोश में समाता चला गया।

उसके बाद क्या हुआ...उसे कुछ पता नहीं।

□□□

□□□

सतीश रावण की नींद खुली।

आंखें खुलते ही उसने सामने दीवार पर लगे क्लॉक की तरफ देखा।

दोपहर का एक बजने वाला था।

रजाई से अपने नग्न जिस्म को ढांके हुए ही वह उठ बैठा और थोड़ा पीछे खिसक कर बैड की पुश्त से टेक लगा ली।

तभी उसकी नजर बैड के करीब पड़े टेबल पर पड़ी जिस पर कि ढके हुए कुछ बर्तन पड़े थे।

साथ ही तह किया हुआ एक कागज पड़ा था।

उसने हाथ आगे बढ़ाकर कागज उठाया और उसे खोलकर पढ़ने

लगा।

टेबल पर खाना लगा हुआ है... खा लेना... मैं शाम को पांच बजे लौटूंगी... खाना खाने के बाद पास में रखे कैरी बैग में से लाल रंग की शीशी में से दो चम्मच दवा पी लेना और बेड की पुश्त पर रखी दो गोलियां खा लेना।

देवकी!

सतीश रावण ने गहरी सांस छोड़ी।

"तो देवकी नाम है मोहतरमा का।" वह मुस्कुराया।

उसने गर्दन मोड़कर बैड की पुश्त पर रखी गोलियों को देखा, फिर रजाई को एक तरफ करके बैड के किनारे पर आकर बर्तनों पर रखी प्लेटों को हटाया... और फिर खाने पर जुट गया।

खाना हालांकि ठण्डा हो चुका था... मगर फिर भी बढ़िया था।

यूं भी भूख से बुरा हाल हो रहा था उसका... ऐसे में उसे जैसा भी खाना मिलता... वह बढ़िया ही होता।

उसने पेट भरकर खाना खाया... कैरी बैग से दवाई की शीशी निकालकर दवा ली... फिर गोलियां लीं और फिर बैड पर लेट कर रजाई ओढ़ ली।

अब उसका ध्यान जगतार और शिवदयाल की तरफ था।

एक-एक करके सारी घटनायें उसकी आंखों के सामने नाचने लगीं... और फिर वह होले से बड़बड़ाया—

"मेरे साथ जो बीती... उसे मैं तो बर्दाश्त कर गया। अब देखना है कि तुम कहां तक बर्दाश्त कर पाते हो। वैसे मुझे पूरा यकीन है कि तुम बर्दाश्त नहीं कर पाओगे... क्योंकि हरामी का वार सबसे खतरनाक होता है और मैं तो सबसे बड़ा हरामी हूं।"

❑❑❑

❑❑❑

ठीक पांच बजकर दस मिनट पर दरवाजा खुलने की आवाज सतीश रावण के कानों में पड़ी।

रजाई में से सिर निकालकर वह दरवाजे की तरफ देखने लगा।

दरवाजा खुला और उसमें देवकी प्रविष्ट हुई।

हरे रंग की साड़ी जिसका बॉर्डर सुनहरी गोटे से चमक रहा था... पहने हुए थी वह।

सतीश रावण को देखते हुए वह मुस्कुराई और हाथ में थमा बैग बैड की पुश्त पर रखते हुए बोली—

"अब कैसी तबीयत है...?"

"ठीक हूं... अगर आपने मेरी मदद नहीं की होती तो अब तक मैं लाश में तब्दील हो चुका होता।"

"खाना खा लिया...।" उसकी बात का जवाब न देते हुए

वह बर्तनों की तरफ देखते हुए बोली।

"हां।" सतीश रावण बोला—"दवा भी ले ली।"

"गुड!"

"मैं आपका अहसान... ।"

"मैं चाय बनाकर लाती हूं... ।"

कहकर वह मुड़ी और बाहर निकल गई।

सतीश रावण के होंठों पर मुस्कान उभर आई।

दस मिनट में ही देवकी चाय की ट्रे उठाये कमरे में लौट आई। इन दस मिनटों में उसने न सिर्फ चाय ही बना ली थी... बल्कि कपड़े भी बदल लिये थे।

अब वह गुलाबी रंग की नाइटी पहने हुए थी।

उसने ट्रे टेबल पर रखी और एक कप उठाकर सतीश रावण को दिया... तथा दूसरा कप अपने लिये उठाकर बैड पर बैठ गई।

"शहर में बड़ी सरगर्मी से तुम्हारी तलाश चल रही है... ।" वह घूंट भरते हुए बोली—"पुलिस की गाड़ियां इधर-से-उधर भाग रही हैं। साथ ही तुम्हारे नाम की मुनादी भी फिरी है कि तुम पांच सिपाहियों को मारकर फरार हो गये हो।"

"मैंने किसी की भी हत्या नहीं की देवकी जी। सिपाहियों को तो जगतार ने मारा है... और सारा इल्जाम मुझ पर थोपा जा रहा है।"

"मैं समझती हूं... ।"

"मगर अब मैं उन्हें नहीं छोडूंगा। बस एक बार ठीक हो जाऊं... फिर मैं उनकी वो हालत करूंगा कि उनकी रूहें कांप उठेंगी। मेरा तीन लाख छीन लिया उन्होंने... और... ।"

"अभी सिर्फ चाय पीओ... जब ठीक हो जाओगे... फिर आगे की सोचना।"

सतीश रावण ने गहरी सांस छोड़ी और चाय पीने लगा।

चाय पीने के बाद देवकी ने सारे बर्तन किचन में पहुंचाये और फिर कैरी बैग से एक ट्यूब निकालते हुए बोली—"उल्टे लेट जाओ... दवा लगा दूं... ।"

बुरी तरह से हड़बड़ाया सतीश रावण और हैरानी से उसे देखते हुए बोला—

"अ... आप दवा लगायेंगी मुझे।"

"हां... ।"

"त... तो क्या सुबह भी... आप ही ने... ।"

"हां... मैंने ही लगाई थी दवा... ।" कहते हुए वह नजरें चुराने लगी—"बाहर से किसी डाक्टर को बुलाना तुम्हारी जिन्दगी को खतरे में डालने के बराबर था... इसलिये मैंने... ।"

"आइ नो... ।"

"चलो ...लेट जाओ उल्टे और आंखें बन्द कर लेना।"

सतीश रावण मन ही मन मुस्कुराया और उल्टा लेट गया।

देवकी ने उसके जख्मों पर दवा लगाई। इस बार भी उसका हाथ कई बार कांपा था...उसकी सांसों में तेजी आई थी।

सतीश रावण की हालत भी इस बार बिगड़ी थी...उसका दिल गया था कि वह उसे नीचे गिराये और उस पर छलांग लगा दे, मगर इस वक्त न तो वह सवारी गांठने के काबिल था...न ही वह ऐसा करना चाहता था। मौजूदा वक्त में उसे पनाह और इमदाद की जरूरत थी जो कि उसे मिल रही थी। ऐसे में वह छोटा-सा भी रिस्क नहीं उठाना चाहता था।

दवा लगाकर देवकी एक पल भी कमरे में नहीं रुकी और फौरन बाहर निकल गई।

सतीश रावण जानता था कि वह बाहर क्यों गई है। उसके भीतर जो आग लग रही थी...वह उसे उसके सामने जाहिर नहीं करना चाहती थी।

करीब पन्द्रह मिनट बाद वह वापिस लौटी तो पहले से काफी सामान्य नजर आ रही थी।

सतीश रावण से निगाहें चुराते हुए वह बेड पर बैठी और होठों पर जबरदस्ती मुस्कान लाते हुए बोली—

"दवा ले लो...।"

सतीश रावण ने आज्ञाकारी बच्चे की तरह दवा ली और फिर चेहरे पर गम्भीरता ओढ़ते हुए बोला—

"आप तो अकेली ही रहती हैं यहां...?"

"हां...।"

"मुझे याद है...आपने बताया था कि आप तलाकशुदा हैं।"

"हां।"

"कमाल है। आप जैसी देवी से तलाक लेने वाला मेरी निगाह में सबसे बड़ा बेवकूफ होना चाहिये...।"

"वह बेवकूफ ही था।" निराशा भरी गहरी सांस छोड़ देवकी ने।

"क्या मतलब...?"

"छोड़ो इस टॉपिक को.. मैं बीती बातों को दोहराकर और ज्यादा दुखी नहीं होना चाहती...।"

"स...सॉरी...।" सतीश रावण गम्भीरता से बोला।

"नेवर माइण्ड...।" मुस्कुराई देवकी।

सतीश रावण भी मुस्कुराया।

❑❑❑
❑❑❑

रात को दस बजे शिवदयाल अपने घर में प्रविष्ट हुआ।

बुरी तरह से थका हुआ था वह। सारी रात और सारा दिन भागदौड़ करता रहा वह। रात को तो भागदौड़ करने का नाटक किया था उसने...क्योंकि थाने के पांच आदमी मारे गये थे, मगर दिन को जब उसे सतीश रावण के जगतार की कैद से फरार हो जाने का पता चला...उसके बाद उसकी भागदौड़ का नाटक हकीकत में बदल गया था।

सतीश रावण को उसने कई जगहों पर तलाश किया था...मगर वह तो ऐसे गायब हो गया था, जैसे गधे के सिर से सींग।

आखिर थक-हार कर वह दस बजे अपने घर पहुंचा...मगर उसकी थकावट उस वक्त छू-मन्तर हो गई जब उसकी पत्नी आरती ने उसे बताया कि कोई व्यक्ति दस लाख का बैग दे गया था।

शिवदयाल का चेहरा खिल उठा।

जगतार की तरफ से उसे कई बार हड्डी फेंकी गई थी...मगर इस बार फेंकी जाने वाली हड्डी का साइज काफी बड़ा था।

अब से पहले उसे कभी भी पचास हजार से ज्यादा की रकम नहीं मिली थी...और इस बार पूरे दस लाख मिले थे...ऐसे में थकावट तो फौरन खत्म हो जानी थी।

खुशी से उसने आरती की कलाई पकड़कर अपनी तरफ खींचा और उसे अपने साथ लिपटा लिया।

"अ...र...रे...यह क्या रहे हो...सोनू जाग रहा है।" उसकी बांहों में मचलते हुए बोली आरती।

शिवदयाल ने गहरी सांस छोड़ते हुए आरती को छोड़ दिया—"अभी सोया नहीं वह...?"

आरती खिलखिला पड़ी। साथ ही शोख अदा से उसे देखा।

"मसखरी करती है।" शिवदयाल बोला और उसे फिर से बांहों में भर लिया।

इस बार आरती ने विरोध नहीं किया...बल्कि स्वयं को शिवदयाल के साथ और भी ज्यादा चिपका दिया।

शिवदयाल ने उसकी नाइटी ऊपर उठाकर उसकी बेलगाम छातियों को दबाया और बोला—

"दस लाख का बैग खोलकर देखा तुमने...?"

"ऐसे कैसे देख सकती हूं...आप ही ने तो कहा था कि आपकी किसी भी चीज को छेड़ूं नहीं...।" आरती बोली—"मुझे तो वह आदमी बैग देते हुए बोला कि इसमें दस लाख हैं...साथ ही जगतार का नाम लिया और चलता बना।"

"कहां है बैग... ?"

"यहीं इसी कमरे में... बैड के नीचे पड़ा है।"

शिवदयाल ने उसकी जांघों को छोड़ा।

आरती की मैक्सी फौरन उसके पैरों तक जा पहुंची।

"दरवाजा बन्द करो... !"

आरती फौरन पीछे हटी और दरवाजा बन्द करके शिवदयाल के सामने आ खड़ी हुई।

शिवदयाल ने झुककर उसकी नाइटी की डोरी खोली और अगले ही पल आरती सिर से पैर तक निर्वस्त्र उसके सामने खड़ी थी।

शिवदयाल ने उसके लश्कारे मारते जिस्म को ऊपर से नीचे तक देखा और फिर एकाएक उसे अपनी बाहों में भर लिया।

आरती भी बेतहाशा उससे लिपट गई। उसकी सांसों ने तूफान का रुख अख्तियार कर लिया।

"बड़ी तमन्ना थी कि... !" शिवदयाल उसके अंगों पर हाथ फेरते हुए बोला—"नोटों के बिस्तर पर तुमसे सुहागरात मनाऊं... आज वो तमन्ना पूरी होगी।"

कहकर उसने आरती के होंठों को चूसा... और फिर खुद भी आरती की तरह बेलिबास होने लगा।

कुछ ही देर में उसकी वर्दी एक तरफ पड़ी थी... और वह सिर से पैर तक निर्वस्त्र आरती के सामने खड़ा था।

आरती की निगाहें नीचे को झुकीं... और उसी के साथ ही उसका चेहरा सुर्ख होने लगा।

शिवदयाल ने झुककर बैड के नीचे से बैग खींचा... उसे उठाकर बैड पर रखा और जैसे ही उसने बैग को खोला... उसका कलेजा खुशी से धड़क उठा।

आरती के होंठों से तो सिसकारी निकल गई।

बैग सौ-सौ के नोटों की गड्डियों से भरा पड़ा था!

"य... यह सब हमारे हैं... ?" आरती फंसे स्वर में बोली।

"हां... !' अपने सूख रहे कण्ठ को थूक से तर करते हुए हुए बोला शिवदयाल—"य... यह सब हमारे हैं।"

और फिर वह बैग से गड्डियां निकाल-निकाल कर उसे बैड पर सजाने लगा।

कुछ ही देर में नोटों की गड्डियों का बिस्तर तैयार था।

शिवदयाल ने बैग को उठाकर फर्श पर रखा और फिर नोटों के बिस्तर पर बैठते हुए आरती की तरफ बाहें फैला दीं।

आरती फौरन उसकी बाहों में समा गई।

"शिवदयाल ने उसे बाहों में भरे हुए ही नोटों पर गिराया और फिर उस पर सवार होते हुए गर्म सांसें छोड़ते हुए बोला—"आज सिर्फ मेरी मर्जी चलेगी... मैं जो चाहूंगा, वही करूंगा।"

आरती हौले से हंस पड़ी... बोली कुछ नहीं वह। हां... उसकी सांसों ने जरूर गति पकड़ ली थी।

और फिर शिवदयाल उस पर नये-नये तजुर्बे करने लगा। उन तजुर्बों के दौरान आरती के चेहरे पर कई बार दर्द भी उभरा... मगर नीचे मिल रही नोटों की गर्मी ने उसे सारा दर्द भूल जाने को विवश कर रखा था।

इन्सान चाहे जैसे भी प्रयोग कर ले... मगर अन्त में उसे वही रास्ता अख्तियार करना पड़ता है जो कि कुदरत ने बनाया होता है

उसी कुदरत के नियम का पालन कर रहा था शिवदयाल इस वक्त।

और फिर... वह आरती पर गिर कर बुरी तरह से हांफने लगा।

आरती ने भी उसे जोरों से भींच लिया।

थोड़ी देर बाद शिवदयाल आरती से लुढ़ककर उसके पहलू में गर्क हो गया।

आरती ने उसकी तरफ करवट ली और उसकी छाती के घने बालों पर उंगलियां फेरते हुए बोली—

"सुनो जी... ।"

"हूं... !" शिवदयाल अपनी टांग उठाकर उसकी कमर पर रखते हुए बोला।

"अब हम इस मकान में नहीं रहेंगे... किसी पाश कालोनी में मकान खरीदेंगे। पता भी है... जब मैं सोने की लदी-महंगी गाड़ियों में घूमती औरतों को देखती हूं तो मेरे दिल पर कैसे आरे चलते हैं।"

"घबरा मत मेरी बन्नो... अगर ऐसे ही तीन-चार हाथ और लग जायें तो तू भी गाड़ियों में घूमेगी... और सोने से लदी हुई नौकरों पर हुक्म चलाती होगी।"

"फिर हम सोनू को यहां नहीं पढ़ायेंगे...उसकी पढ़ाई आस्ट्रेलिया में पूरी होगी।"

"वो तो मैंने भी सोच रखा है मेरी जान... ।" कहते हुए शिवदयाल ने उसे अपने सीने से चिपका लिया।

❑❑❑

❑❑❑

शेरखान ने जगतार के सामने पहुंचकर सिर को हल्के से झुकाया।

"चीफ की खिदमत में आदाब।" वह सिर झुकाये हुए ही बोला।

"कुछ पता लगा उसका... ?" उसे घूरते हुए पूछा जगतार ने।

शेर खान ने सिर झुकाये हुए ही इन्कार में सिर हिलाया।

"मुंह से भौंक... ।" फुंफकरा जगतार।

"न...नहीं चीफ...।" हड़बड़ाया शेर खान—"अभी उसका कहीं पता नहीं चला, मगर आप इत्मीनान रखिये...मैंने पूरे शहर में अपने आदमी फैला दिये हैं। बहुत जल्द उसका पता चल जायेगा।"

"सुबह से रात हो गई...अभी तक पता नहीं लगा सका तू उसका...अब कहां से ढूंढेगा?"

गुस्से से भुनभुनाया जगतार।

शेर खान का झुका सिर और भी झुक गया।

"कहां-कहां तलाश किया उसे?" पूछा जगतार ने।

"शहर की एक-एक गली छान मारी है चीफ...।"

"फिर भी कह रहा है कि जल्दी ही उसका पता चल जायेगा।"

शेर खान चुप।

"गलियों सड़कों के अलावा और कहां ढूंढा है उसे?"

"अभी तो यहीं पर ही तलाश कर रहे हैं।"

जगतार ने माथे पर हाथ मारा—"पता नहीं कैसे मेरे सुरक्षा प्रबन्धों का इन्चार्ज बन गया तू...जबकि तू तो घरों में झाड़ू मारने के भी काबिल नहीं। अबे अक्ल के कोल्हू...दिमाग है भी कि नहीं तेरा? कम से कम यह सोचा होता कि वह बुरी तरह से जख्मी है...ऐसे में उसे किसी अस्पताल या नर्सिंग होम में मिलना चाहिये और तू उसे गलियों में तलाश कर रहा है...सड़कें नाप रहा है।"

बुरी तरह से हड़बड़ाया शेर खान...साथ ही उसके चेहरे पर अफसोस भरे भाव उभरे। निश्चय ही उसे सबसे पहले अस्पतालों की तरफ ध्यान देना चाहिये था।

"कुछ आया अक्ल में...?" उसे घूरते हुए गुर्राया जगतार—"या तुझे अब यह कहूं कि हस्पतालों की खाक छान...।"

"म...मैं समझ गया चीफ! म...मैं अभी हर हस्पताल को चैक करता हूं।"

"तो फिर खड़ा क्यों है...दफा हो और सुबह सात बजे अपनी मनहूस शक्ल जरूर दिखाना मुझे।"

हड़बड़ाते हुए शेर खान मुड़ा और बाहर निकल गया।

उसके बाहर निकलते ही जगतार के चेहरे पर चिंता की रेखायें उभर आईं।

ऐसी बात नहीं थी कि वह सतीश रावण के हाथ से निकल जाने से डर गया था। अण्डरवर्ल्ड का बादशाह था वह। उसके सिर्फ एक इशारे भर से लखनपुर में खून की नदियां बह सकती थीं...सड़कों पर लाशें बिछ सकती थीं। उसकी पहुंच सिर्फ शिवदयाल तक ही नहीं थी...बल्कि दो मन्त्री भी उसके साथ में थे।

उसे डर था तो सिर्फ इस बात का कि कहीं दुनिया को उसकी हकीकत का पता न चल जाये। जनता में एक शरीफ और प्रतिष्ठित

व्यक्ति का उसका जो रुतबा था...वह रुतबा कहीं खत्म न हो जाये और यह तभी हो सकता था कि जब पुलिस के किसी बड़े अधिकारी के हाथों में पड़ने से पहले सतीश रावण को मौत के घाट उतार दिया जाये। इसी वजह से वह उसे ढूंढने के लिये जमीन-आसमान एक किए हुए था।

लेकिन... ।

वह नहीं मिला।

तीन दिन बीत गये। लखनपुर का चप्पा-चप्पा छान मारा उसने।

मगर सतीश रावण कहीं नहीं मिला।

आखिर में उसने यही सोचा कि वह या तो शहर छोड़कर भाग निकलने में कामयाब हो गया है...या उसकी लाश किसी अन्जान जगह पर पड़ी सड़-गल गई होगी।

यानि उसकी तरफ से अब वह निश्चिंत हो गया था।

□□□

□□□

देवकी ने सतीश रावण के जख्मों पर दवाई लगाई।

"अब तो काफी भर गये हैं तुम्हारे जख्म... ।" वह बोली।

सतीश रावण ने आंखें बन्द किये हुए ही सिर हिला दिया।

तीन दिनों में ही उसके शरीर की ताकत काफी हद तक लौट आई थी। अब वह खुद को पहले से काफी स्वस्थ महसूस कर रहा था।

लेकिन अभी वह इस काबिल नहीं हुआ था कि कोई भारी काम खुद कर सके।

देवकी ने मन से उसकी सेवा की थी।

रोज सुबह वह उसे दवा लगाकर मकान को बाहर से दरवाजा लगाकर चली जाती...और शाम को वापिस लौटकर फिर से दवा लगा देती।

"अब तुम खुद ही दवा लगा लिया करना।" वह बोली।

"जी।" सतीश रावण बोला।

"कल मैं तम्हारे लिये नया जोड़ा ले आऊंगी...परसों पहन लेना तुम उसे।"

सतीश रावण ने सिर हिला दिया।

उसके बाद देवकी ने खाना पकाया। दोनों ने बैड पर आमने-सामने बैठकर खाना खाया और फिर रात दस बजे देवकी पिछली रातों की तरह नाइटी पहन कर बैड पर चढ़ी और अपनी रजाई अपने ऊपर लेते हुए सतीश रावण की तरफ देखते हुए मुस्कुराई।

"गुड नाइट... ।"

"गुड नाइट... ।" सतीश रावण भी मुस्कुराया और रजाई

ओढ़कर सो गया।

देवकी ने भी रजाई ओढ़ ली।

करीब दो घण्टे बाद सतीश रावण ने गर्दन रजाई में से निकालकर देवकी की तरफ देखा।

देवकी बेसुध सो रही थी।

रजाई पेट तक पहुंची हुई थी और वह दोनों बाहें सिर के पीछे किये हुए थी।

सतीश रावण के होठों पर एक जहरीली मुस्कान उभर आई।

उसने अपनी आंखें बन्द कीं और रजाई को अपने पेट तक नीचे करके इस तरह करवट ली जैसे उसने नींद में करवट ली हो।

उसी के साथ ही उसका उल्टा हाथ सीधा देवकी की छाती पर जा लगा।

कहीं उसे एतराज तो नहीं...फिर अपने हाथ को सीधा कर लिया।

अब देवकी की छाती उसके फैले हुए पंजे के नीचे दबी हुई थी।

थोड़ी देर बाद उसने हल्के से देवकी की छाती को दबाया। साथ ही उसने उसके दिल की धड़कनों को तेज गति से चलते साफ महसूस किया।

इधर देवकी बुतबनी सोने का अभिनय कर रही थी...जैसे उसे पता ही न हो कि उसके साथ क्या हो रहा है।

जबकि भीतर से उसे आग-सी लग गई थी। उसका दिल कर रहा था कि वह अभी सतीश रावण से चिपक जाये।

लेकिन नारी लज्जा के कारण वह ऐसा नहीं कर पाई।

रजाई में आते ही सतीश रावण ने महसूस किया कि उसकी नाइटी उसकी जाघों तक चढ़ी हुई है।

उसने धीरे-धीरे नाइटी को ऊपर सरकाना शुरू किया और सरकाते हुए पेट से ऊपर तक ले आया।

और फिर सतीश रावण ने अपनी टांग उठाई और उसके शरीर को पारकर बैड पर अपना घुटना टिका दिया।

इधर देवकी की टांगें अपने आप खुल गई।

सतीश रावण धीरे-धीरे उस पर छाने लगा।

और कुछ ही देर में देवकी उसके साथ कदम से कदम मिलाती हुई मंजिल की तरफ जा रही थी।

❑❑❑

❑❑❑

"सॉरी...।"

सुबह दोनों की निगाहें आपस में मिलते ही सतीश रावण निगाहें

चुराते हुए बोला।

देवकी कुछ नहीं बोली... बस बैड से उतरी और बाहर निकल गई।

थोड़ी देर बाद वह ट्रे में चाय लिये भीतर प्रविष्ट हुई।

चुपचाप उसने एक कप उसे दिया तथा दूसरा कप स्वयं उठाकर बैड पर बैठ गई।

"रात जो हुआ... उसका मुझे सख्त अफसोस है।" सतीश रावण गम्भीरता से बोला—"मुझे ऐसा नहीं करना चाहिये था।"

देवकी तब भी कुछ नहीं बोली... बस चुपचाप चाय पीती रही।

"जिसने मुझे सहारा दिया... मेरी जान बचाई... मेरी इतनी सेवा की। मैंने उसी के साथ ही... उफ्... समझ में नहीं आ रहा कि इसका क्या प्रायश्चित करूं... ।" कहते हुए सतीश रावण की आंखें भर आईं—"समझ में नहीं आ रहा कि मैं इतना बड़ा शैतान कैसे बन गया।"

देवकी ने उसके चेहरे पर निगाहें जमाईं... गहरी सांस छोड़ी और बोली—

"मुझसे शादी करोगे?"

"क्या... ?" बुरी तरह से चौंका सतीश रावण।

देवकी ने पुनः गहरी सांस छोड़ी।

"मैं एक तलाकशुदा औरत हूं। मेरा आदमी मर्द तो था... लेकिन पूरा मर्द नहीं था। उसने कभी भी मेरी चाहत को पूरा नहीं किया... ऊपर से निखट्टू भी था। बस यह वजह बनी हम दोनों के तलाक में।"

"ओह!"

"मैं मानती हूं कि रात एक बहुत बड़ा पाप हो गया था और वह पाप तुमने अकेले नहीं किया था। मैं भी उस पाप में बराबर की भागीदार थी। रात जो कुछ भी हुआ... उसका मुझे कोई अफसोस नहीं। हां, अगर तुम शादी से इन्कार कर दोगे तो मुझे अफसोस जरूर होगा कि मैं एक सम्पूर्ण मर्द को खो बैठी हूं।"

"क... कैसी बातें करती हैं आप देवकी जी? आप जैसी पत्नी पाकर तो कोई भी अपने भाग्य पर इश्क ही करेगा, बल्कि मैं तो यह समझता हूं कि मुझसे शादी की बात करके आप मुझ पर अहसान कर रही हैं।"

देवकी का चेहरा खिल उठा।

"तो फिर आगे से तुम मुझे 'तुम' कहोगे, 'आप' नहीं... ।"

"ल... लेकिन... ।"

"पत्नी का दर्जा पति से हमेशा छोटा होता है गनेश... ऐसे में पति पत्नी को आप कहते हुए अच्छा नहीं लगता।"

सतीश रावण ने मुस्कुराते हुए होठ हिला दिये, फिर एकाएक ही गम्भीर हो गया।

"क्या हुआ...?" उसका चेहरा देख चौंकी देवकी।

सतीश रावण ने गहरी सांस छोड़ी और चाय का कप एक तरफ रख देवकी का हाथ अपने हाथ में लेते हुए बोला—

"दिल तो करता है कि मैं अभी मन्दिर में जाकर तुमसे शादी कर लूं, लेकिन... ।"

"लेकिन क्या...?"

"मैं नहीं चाहता कि तुम दुल्हन बनते ही विधवा हो जाओ।"

बुरी तरह से उछल पड़ी देवकी—"य...यह क्या कह रहे हो तुम...?"

"मेरी एक बुरी आदत है देवकी।"

"क...कैसी आदत...?"

"मैं एक बार जो बात मन में ठान लेता हूं...उसे पूरा करके ही चैन लेता हूं...चाहे उस बात को पूरा करने के लिये मुझे अपनी जान भी क्यों न देनी पड़े? मैं जगतार की कैद से फरार होकर तुम्हारी पनाह में आया था, तो मैंने मन ही मन यह प्रतिज्ञा कर ली थी कि मैं जगतार और शिवदयाल को न कवेल उनके किये की सजा दूंगा, बल्कि अपना तीन लाख उनसे मयब्याज के लूंगा।"

"ओह!"

"इस काम को पूरा करने में जान जाने का पूरा खतरा है। ऐसे में अगर तुमसे शादी कर ली...और अगले ही दिन मैं उनमें से किसी की गोली का निशाना बन गया तो मेरी रूह हमेशा इस बात के लिये छटपटाती रहेगी कि मैंने ही तुम्हें विधवा का जोड़ा पहनाया है।"

देवकी ने अपना खाली कप टेबल पर रखा और उसके करीब सरक आई।

"वो आदमी मेरे लिये इतना चिन्तित है...वह निश्चय ही प्यार करने योग्य है।" वह उसके सीने पर हाथ फेरते हुए बोली—"तुम मुझसे चाहे जब भी शादी करना गनेश...मगर मैंने तो उसी वक्त तुम्हें अपना पति मान लिया था, जब तुमने मुझे छुआ था।"

"देवकी...।' भावुकता से भरा हुआ था सतीश रावण का स्वर।

"हां गनेश...इस दिल के मन्दिर में अब सिर्फ एक ही मूरत है...और वह मूरत तुम हो...।"

सतीश रावण ने उसे अपनी बाहों में भर लिया। जैसे वह भावकुता में बहा जा रहा हो।

देवकी भी उससे चिपक गई।

"औरत अपने पति के हर काम में उसकी सहायक होती है। बराबर की पार्टनर। तभी तो उसे अर्धांगिनी कहा जाता है। शिवदयाल और जगतार से बदला लेने का तुम्हारा जो मिशन है... उसे पूरा करने में मैं तुम्हारा पूरा-पूरा साथ दूंगी...और यकीन मानो...अगर तुम पर कोई गोली चली तो उसे पहले तुम्हारी देवकी का सीना भेदना होगा...उसके बाद ही गोली तुम्हें अपना निशाना बनायेगी।"

"नहीं देवकी...ऐसा मत कहो...भगवान करे तुम्हें मेरी भी उम्र... ।"

देवकी ने उसके होठों पर हाथ रख दिया—"ऐसी बातें नहीं करते।" वह भावुकता भरे स्वर में बोली।

और उसी भावुकता का लाभ उठाते हुए सतीश रावण ने उसे बैड पर गिराया और उस पर सवार हो गया।

रात वाला खेल फिर से शुरू हो गया और अब की बार देवकी उस खेल में शुरू से ही उसका पूरा-पूरा साथ दे रही थी।

❑❑❑

❑❑❑

देवकी द्वारा तन-मन-धन से की गई सेवा ने सतीश रावण को सात दिनों में ही घोड़ा बना दिया।

उसके जख्म अब पूरी तरह से भर चुके थे और उसकी पुरानी चुस्ती-फुर्ती भी वापस लौट आई थी।

देवकी नाश्ते की ट्रे उठाये कमरे में प्रविष्ट हुई तो उसके होठों पर गर्वीली मुस्कान फैल गई।

सामने उसके सपनों का राजकुमार खड़ा था। कोट-पैंट में वह किसी रियासत का राजकुमार नजर आ रहा था।

देवकी ने आगे बढ़कर ट्रे टेबल पर रखी और फिर सतीश रावण के करीब आकर अपनी आंख के कोर से उंगली से थोड़ा-सा काजल निकाला और सतीश रावण के गाल पर लगा दिया।

"अरे यह क्या...?"

"डरती हूं, कहीं मेरे गनेश को मेरी ही नजर न लग जाये...इसीलिये काला टीका लगा दिया।" वह बोली।

सतीश रावण हंस पड़ा।

देवकी भी हंसी।

और फिर दोनों ने मिलकर नाश्ता किया।

नाश्ते के उपरान्त सतीश रावण ने देवकी की तरफ देखा—"आज से मैं मिशन पर निकल रहा हूं।"

"मेरी दुआयें तुम्हारे साथ हैं... ।" देवकी बोली और फिर बैड के गद्दे के नीचे से एक चाबी निकाल कर उसे दे दी।" यह बाहर के ताले की दूसरी चाबी है।" वह बोली—"तुम जब मर्जी घर आ-जा

सकते हो। मेरे इन्तजार की जरूरत नहीं पड़ेगी तुम्हें।"

सतीश रावण ने चाबी जेब में डाली...और फिर टेबल के नीचे से पिछले दिनों के अखबारों में से एक अखबार निकालकर उसकी एक विशेष खबर पढ़ने लगा।

यह खबर सब-इंस्पैक्टर खरे की मौत से सम्बन्धित थी, जिसमें यह लिखा गया था कि रेखा के साथ बलात्कार करने की कोशिश करने वालो के हाथों मारा गया था वह। साथ में रेखा का पता भी लिखा था।

देवकी सतीश रावण को हर रोज अखबार लाकर देती रहती थी...ताकि वह बोर न हो और यह अखबार उससे अगले दिन का था, जिस रात खरे की हत्या हुई थी।

कूड़े के ड्रम के घुसा होने के दौरान उसने साफ सुना था कि खरे की मौत एक जबरदस्त प्लानिंग के दौरान हुई थी।

यानि रेखा और उसका खसम जगतार के गुलाम थे।

रेखा के एड्रेस को अपने जेहन में बिठाने के बाद सतीश रावण ने पेपर टेबल के नीचे रखा और खड़ा हो गया।

"मैं चलूं...?" वह मुस्कुराया।

देवकी ने मुस्कुराते हुए सिर हिला दिया...साथ ही खड़ी हो गई।

कुछ ही देर में सतीश रावण घर से बाहर था।

❑❑❑
❑❑❑

'डिंग...डां...ग...।'

कॉलबैल का मधुर संगीत गूंजा।

रेखा ने बैड पर लेटे-लेटे ही वाल क्लॉक की तरफ देखा।

साढ़े दस बज रहे थे।

उसने लेटे-लेटे भी भरपूर अंगड़ाई ली और अपने ऊपर पड़ी रजाई को हटाते हुए अपने बराबर में सो रहे राकेश की तरफ देखा। जो कि रजाई ओढ़े अभी भी खुर्राटे भर रहा था।

रजाई के हटते ही रेखा का दमकता बदन नुमाया होने लगा।

सिर से पांव तक निर्वस्त्र थी वह।

रात के दो बजे वह रमेश के साथ जगतार के अड्डे से लौटी थी।

जगतार का बाहर से माल आना था, जिसे उसके अड्डे पर पहुंचाने का काम जगतार ने उन दोनों को सौंपा था।

सारा काम निबटा कर वे दो बजे वापिस लौटे थे और बैड पर आते ही उस खेल में शुरू हो गये जिससे कि दिमाग को राहत मिलती है और नींद भरपूर आती है।

सुबह पांच बजे तक वे एक-दूसरे से जूझते रहे... उसके बाद ऐसा सोचे कि अब कॉलबैल बजने पर रेखा की नींद खुली थी, जबकि रमेश अभी भी खर्राटे भर रहा था।

रेखा ने बैड के किनारे पर नीचे लटक रही अपनी नाइटी उठाई... उसे पहना और अपने बालों को व्यवस्थित करती हुई दरवाजे की तरफ बढ़ी।

सिटकनी गिराकर उसने दरवाजा खोला और लॉबी में आकर मेन डोर की तरफ बढ़ी।

"कौन... ?" दरवाजे के करीब आकर उसने आवाज लगाई।

"मैं हूं... ।" बाहर से एक अंजानी आवाज आई।

"कौन आ गया सुबह-सुबह तंग करने... ?"

बड़बड़ाते हुए उसने जैसे ही दरवाजा खोला,...रिवाल्वर की नाल उसके उभारों के ऐन बीचों-बीच आ लगी।

रेखा का कलेजा उछलकर उसके हलक में आ फंसा... साथ ही उसने चीखने के लिये अपना मुंह खोल दिया।

लेकिन चीख नहीं पाई, वह।

उससे पहले ही सतीश रावण ने रिवाल्वर की नाल उसके हलक में घुसेड़दी।

"आवाज नहीं... ।" वह खौफनाक अन्दाज में फुंफकारा।

रेखा की आंखें फट पड़ीं।

"और कौन है तेरे साथ... ?" गुर्राया सतीश रावण।

"गौं...गौं... ।" रेखा के हलक से फूटा।

"तेरा घरवाला रमेश है... ?"

रेखा की गर्दन ऊपर-नीचे हुई।

"और... ?"

रेखा की गर्दन दायें-बायें हिली।

"चल ले चल मुझे अपने घरवाले के पास... उहूं... ऐसे ही पीछे हट... घूमना नहीं।"

कहते हुए सतीश रावण ने पैर से दरवाजा बन्द कर दिया... साथ ही हाथ पीछे करके सिटकनी टटोल कर चढ़ा दी।

रेखा उसी की तरफ मुंह करके कदम पीछे हटाने लगी।

सतीश रावण के कदम उसके कदमों के साथ-साथ आगे बढ़ने लगे। उसकी रिवाल्वर की नाल निरन्तर रेखा के मुंह में घुसी रही।

उलटी चलती हुई रेखा बैडरूम में प्रविष्ट हुई... जहां पर कि रमेश अभी भी गहरी नींद सो रहा था।

सतीश रावण रेखा को बैड के करीब लाया और बिना कुछ कहे ट्रेगर दबा दिया।

रेखा का हलक भड़ाक से उड़ गया और वह सीधी रमेश के

ऊपर जा गिरी।

बुरी तरह से हड़बड़ाते हुए रमेश रेखा को एक तरफ धकेलते हुए जैसे ही उठा...उसके होठों से हौलनाक चीख गूंज उठी।

रेखा की खोपड़ी आधी के करीब उड़ चुकी थी...और वह खुद उसके खून से सीने तक नहा चुका था।

चीखते हुए ही उसकी नजरें जैसे ही सतीश रावण पर पड़ी...उसकी चीख वहीं घुट गई।

सतीश रावण की रिवाल्वर की नाल का छेद अब उसे घूर रहा था।

एक अन्जान आदमी को देख रमेश बुरी तरह हड़बड़ा उठा था।

"क...कौन हो तुम...?"

वह थर्राये स्वर में बोला।

सतीश रावण के होठों पर अचानक मुस्कान नाच उठी।

"जो भी बताऊंगा...पहले जरा अपनी बेगम को गोद में लिटा लो।"

"क...क्या मतलब...?"

"हिन्दी नहीं समझता क्या...?" फुंफकारा सतीश रावण—"या फिर अपनी पत्नी के साथ सता होना चाहता है।"

कहते हुए सतीश रावण ने रिवाल्वर का कुत्ता पीछे खींचा।

बुरी तरह से हड़बड़ाते हुए रमेश ने रेखा की लाश को अपनी गोद में रख लिया।

"नाइटी ऊपर उठा इसकी...जरा मैं भी तो देखूं कितना हुस्न समेटे हुए थी तेरी घरवाली?"

खौफ से रमेश का चेहरा काला पड़ गया। बड़े से बड़ा दरिन्दा भी किसी लाश की दुर्गति नहीं करता...और वह रेखा की लाश की नाइटी उठाने को कह रहा था।

मरता क्या न करता...जिस तरह सतीश रावण ने रेखा को बिना किसी वजह के मार डाला था...वह उसे भी खत्म कर सकता था।

उसने रेखा की नाइटी उसकी जांघों तक ऊपर उठाई।

"और ऊपर...।"

उसने नाइटी पेट तक उठा दी।

"गले तक पहुंचा...।"

रमेश ने आज्ञा का पालन किया।

"हुस्न तो थोक के भाव समेटे हुए थी तेरी घरवाली...।" सतीश रावण कुटिलता से हंसा।

रमेश कुछ नहीं बोला...बस थूक सटक कर रह गया।

"छातियां पकड़ अपनी बीवी की।"

"क...क्या...?" हड़बड़ाया रमेश।

सतीश रावण ने एक पैर बेड पर रखा और रिवाल्वर की नाल उसके माथे से लगा दी।

"छातियां पकड़...।" वह फुफकारा।

बुरी तरह से कांपते हुए रमेश ने रेखा की लाश की दोनों छातियां अपने हाथों में पकड़ लीं।

"हां...अब ठीक है...।" मुस्कुराया सतीश रावण—"ऐसे ही पकड़े रहना...इतना जान ले...अगर तूने अपनी बीवी की छातियां छोड़ने की जरा भी कोशिश की तो मैं फौरन तुझे तेरी बीवी के पास भेज दूंगा।"

"न...नहीं...मैं कुछ नहीं करूंगा।" कांपा रमेश।

सतीश रावण ने रिवाल्वर उसके माथे से हटाई और गुर्राया—

"अब पूछ...कौन हूं मैं...?"

"क...कौन हो तुम...?"

"तेरे बाप जगतार का दुश्मन नम्बर एक...।"

"ज...जगतार...।"

"हां जगतार...मैं हूं गनेश लाल...उर्फ सतीश रावण...।"

सतीश रावण का नाम सुनते ही रमेश की रंगत एकदम से पीली पड़ गई। अब तक उसमें जो थोड़ा-बहुत हौंसला बचा हुआ था...उसे सतीश रावण के नाम ने ही पस्त कर दिया था।

"त...तुम सतीश रावण हो?" वह कांपते स्वर में बोला।

"कोई शक...?"

जवाब में रमेश के गले की घण्टी जोरों से उछली।

"जगतार का कुत्ता ही है न तू...?" सतीश रावण बोला।

"य...यह क्या कह रहे हो तुम...? म...मैं तो एक सीधा-सादा गृहस्थी आदमी हूं...जिसकी बीवी को तुमने बिना वजह मार डाला।"

"यानि जगतार से तेरा कोई रिश्ता नहीं...?"

"म...मेरा किसी जगतार से कोई रिश्ता नहीं...।"

"फिर तो...।" गहरी सांस छोड़ी सतीश रावण ने—"खामखां ही मैंने तेरी बीवी को मार डाला। बेचारी...अब क्या प्रायश्चित करूं मैं...हां यह ठीक रहेगा...तुझे भी खत्म कर देता हूं। यहां तो बिछोड़ दिया मैंने तुम्हें...अब स्वर्ग में मेल करा दूंगा...।"

कहते हुए सतीश रावण ने जैसे ही रमेश की कनपटी से रिवाल्वर लगाई—

"ग...गोली मत चलाना...।" चीख उठा रमेश।

"मगर मैं तो प्रायश्चित करूंगा।" सतीश रावण बोला।

"म...मैं कबूल करता हूं...।"

"क्या कबूल करता है...?"

"म...मैं जगतार का आदमी हूं...।" रमेश बौखलाये स्वर में बोला।

इतने में ही उसका पूरा जिस्म पसीने से तर-बतर हो गया था।

"और रेखा तेरी बीवी थी?"

"ह...हां...।"

"छातियां दबा...।"

रमेश ने बौखलाते हुए रेखा की लाश की छातियों पर पड़ रही अपनी पकड़ पुनः कस दी।

"खरे को खत्म क्यों किया गया...?" सतीश रावण ने तसल्ली से अपना सिर हिलाते हुए सवाल किया।

रमेश ने बताया।

सतीश रावण ने करीब बीस मिनट तक उससे पूछताछ की। जब उसे लगा कि अब वह सब कुछ बता चुका है तो उसने बैड की पुश्त के ऊपर रखे फोन को उठाकर रेखा की लाश के पेट पर रखा और रिसीवर उठाकर उसकी तरफ बढ़ाते हुए बोला—

"फोन लगा जगतार को।"

मजबूर था रमेश।

रेखा की छातियों को छोड़ उसने रिसीवर पकड़ा और दूसरे हाथ से जगतार का नम्बर मिलाने लगा।

"हैलो...।" तभी दूसरी तरफ से जगतार की आवाज उसके कानों में पड़ी।

"म...मैं बोल रहा हूं चीफ...रमेश...।" रमेश थर्राये स्वर में बोला।

ठीक तभी सतीश रावण ने उससे रिसीवर छीन लिया और अपने कान से लगाया।

"क्या बात है रमेश...?" उसके कान के परदे से जगतार की आवाज टकराई—"तेरी आवाज घबराई हुई क्यों है...?"

"मौत जब सिर पर खड़ी हो तो अच्छे-अच्छों की फूंक निकल जाती है जगतार...।"

जहरीली हंसी हंसा सतीश रावण।

दूसरी तरफ सन्नाटा छा गया।

"क्या बात है जगतार...जुबान को लकवा मार गया है...या हार्टफेल हो गया है?"

"कौन है तू...?" इस बार आने वाली आवाज में मौत की-सी फुंफकार थी।

"एक हरामी...ऐसा हरामी जो पहले पुलिस की बेतहाशा मार से गुजरा...फिर एक बड़े हरामी के हाथ चढ़ गया...मगर इससे पहले

कि वह बड़ा हरामी उसे मार सकता...वह उसी के एक गुलाम का काम-तमाम कर उसकी कैद से भाग निकला...।"

"ग...ने...श...?" दूसरी तरफ से बुरी तरह चौंकती आवाज आई—"त...तू ग...गनेश है?"

"तो तू कबूल करता है कि बड़ा हरामी है।" हंसा सतीश रावण।

"हरामखोर...मुझे गाली देने वाली की जुबान काट लेता हूं मैं...।"

"तूने मेरा जो बिगाड़ना था, बिगाड़ लिया...जो काटना था, काट लिया...अब तेरी बारी है जगतार और इसकी मैंने बकायदा शुरुआत कर दी है।"

"क्या मतलब...?"

"तेरी गुलाम रेखा की लाश रमेश की गोद में पड़ी है और रमेश उसकी छातियां दबाये...ऐ...छातियां दबा अपनी बीवी की...हां, ऐसे ही पकड़े रहे...अपनी बीवी से इश्क कर रहा है रमेश...।"

"हरामजादे...।"

"वो तो मैं हूं ही...अगर हरामजादा नहीं होता तो अब तक मर-खप न जाता और तू भी कबूल कर चुका है कि तू बड़ा हरामी है...जरूर तेरी मां भी रण्डी होगी...नहीं...कॉलगर्ल होगी...रण्डी कहने से तेरा स्टैण्डर्ड जरा कम हो जाता है न...कॉलगर्ल ठीक कहा न मैंने...?"

"सूअर की औलाद...!" बुरी तरह से दहाड़ती आवाज आई।

"हां तो मैं कह रहा था कि तेरी मां कॉलगर्ल थी...अब उसने कितनों के साथ रातें रंगीन की थीं...यह पूछ लेना उससे...अगर तेरी मां पर चढ़ने वाले सौ से ज्यादा हुए तो निश्चय ही तू सबसे बड़ा हरामी है...वरना यह खिताब मेरे पास तो है ही।"

"कमीने...!" दहाड़ती आवाज आई—"पहले तो तू किसी तरीके से मेरे हाथों बच निकला था, मगर अब...अब नहीं छोड़ूंगा तुझे। मेरी मां को गोली दी तूने...तेरा वो हश्र करूंगा कि मौत भी कांप उठेगी। बोटी-बोटी काट डालूंगा तेरी।"

"यह सब तू तभी करेगा न जब मैं तेरे हाथ आऊंगा।"

"लखनपुर में जगतार का राज चलता है। यहां की हर गली में जगतार के कुत्ते घूमते हैं...।"

"फिर तो तू बड़ा कुत्ता हुआ...यानि बुलडॉग...पुच-पुच...।"

"भौंक ले...जी भरकर भौंक ले हरामखोर...बहुत जल्द तू मेरे सामने रहम की भीख मांगता नजर आयेगा। भीख तो तुझे मिलेगी...मगर मौत की भीख मिलेगी।"

"फिलहाल तो मैं तेरे दूसरे गुलाम को वही भीख देने जा रहा

हूं। पटाखा सुनेगा न मुन्ने...ले सुन...।"

सतीश रावण ने रिसीवर का रुख रमेश की तरफ किया और बिना कोई बात किये गोली चला दी।

'धांय...।'

गोली सीधी उसकी कनपटी में घुसी और दूसरी तरफ से निकल गई।

रमेश का जिस्म एक बार उछला...फिर वह रेखा के ऊपर औंधे मुंह गिर पड़ा।

सतीश रावण ने रिसीवर कान से लगाया।

"आवाज आई जगतार...?" वह हंसते हुए बोला—"कैसा लगा पटाखा...?"

"हरामजादे...।" दहाड़ती आवाज आई।

"रमेश की कनपटी में एक लम्बा सुराख हो गया है...जिसमें इधर से देखो तो दूसरी तरफ का सब कुछ नजर आता है।"

"कर ले मजाक...जी भरकर कर ले कुत्ते...लेकिन बहुत जल्द तेरी यह हंसी मौत की चीखों में तब्दील न कर दी तो मेरा नाम भी जगतार नहीं...।"

"कितनी जल्दी आयेगी वह तेरी पलटी?"

"क्या मतलब...?"

"वो बात क्या है कि मैंने तेरे लिये एक बढ़िया-सा नाम सोच रखा है...अगर तू मुझे बता दे कि तू कब तक मुझे काबू कर लेगा तो जाहिर है कि उसके बाद तेरा नाम जगतार नहीं रह जायेगा...क्योंकि तूने खुद ही अभी-अभी यह बात कही है। वैसे तेरा जगतार का नाम खत्म होने के बाद मैंने जो तेरा नाम रखने का फैसला किया है...वह नाम बहुत बढ़िया है...और तुझ पर सूट भी बहुत करेगा...उल्लू का पट्ठा...अच्छा लगा न।"

"हरामजादे...।" दूसरी तरफ से इतनी जोर से दहाड़ आई कि सतीश रावण के कान झनझना उठे।

"बहरा करेगा क्या...?" वह हंसा।

"मैं तुझे मौत की नींद सुलाऊंगा कुत्ते...तूने जगतार को ललकारा है। आज तक कोई उसके कुत्ते को भी नहीं छू पाया...और तूने उसके दो आदमी मार डाले। तू मरेगा हरामजादे...बहुत बुरी मौत मरेगा।"

"तड़प...इसी तरह तड़प...और तब तक तड़प, जब तक कि मुझे मौत नहीं आ जाती...मैं तो चला...।"

उसी के साथ ही सतीश रावण ने रिसीवर क्रेडिल को रमेश की लाश पर छोड़ दिया और पिछले कमरे में जा पहुंचा।

पूछताछ के दौरान रमेश ने उसे बताया था कि पिछले कमरे

की अलमारी में दो लाख की नकदी पड़ी है।

उसने अलमारी खोलकर उसमें से वह बैग निकाला जिसमें कि दो लाख पड़े थे। बैग को खोलकर चैक किया और फिर वापिस उसी कमरे में आ गया।

दोनों लाशों को देखकर वह धूर्तता से हंसा और दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

□□□

□□□

जगतार ने रिसीवर क्रेडिल पर इतने जोरों से पटका कि रिसीवर के दो टुकड़े हो गये।

भड़ाक् की तेज आवाज सुनकर बाहर खड़ा भीमा हड़बड़ाया-सा भीतर दाखिल हुआ और हैरानी से कभी टूटे हुए फोन की ओर कभी जगतार को देखने लगा जिसका चेहरा इस वक्त दहकती भट्टी के समान तप रहा था।

"शेर खान को बुला... ।" भीमा को देखते ही दहाड़ा जगतार।

भीमा इस तरह वापिस पलटा मानो अगर उसने एक शब्द भी उससे पूछने की जुर्रत की तो उसे गोली मार दी जायेगी।

कुछ ही देर में शेर खान उसके सामने खड़ा था।

"हुक्म चीफ... ।" वह सिर झुकते हुए बोला।

जगतार ने तीन-चार गहरी सांस छोड़ी और गुर्राया—

"वह हरामजादा जिन्दा है।"

चौंका शेर खान—"म...मैं कुछ समझा नहीं चीफ...किसी बात कर रहे हैं आप...?"

"वह गनेश का बच्चा...हरामखोर... ।"

बुरी तरह से उछल पड़ा शेर खान। उसके चेहरे पर ऐसे भाव उभरे जैसे उसे विश्वास न हुआ हो।

"य...यह आप क्या कह रहे हैं चीफ?"

"वह न सिर्फ जिन्दा है...बल्कि उसने हमारे खिलाफ जंग भी छेड़ दी है...और उसने रेखा और रमेश की हत्या भी कर दी है।"

एक तेज झटका लगा शेर खान को। अगले ही पल उसका चेहरा धधक उठा।

"उस कीड़े की इतनी औकात कि उसने आपको ललकारा... ।"

"उस हरामजादे ने न सिर्फ हमें ललकारा...बल्कि हमें ऐसी-ऐसी गालियां भी दीं जो हमारी बर्दाश्त से बाहर हैं। हमें वह चाहिये शेर खान...शाम तक वह हमें हर कीमत पर हमारी आंखों के सामने चाहिये...उसे ढूंढ...कहीं से भी ढूंढ...चाहे शहर का चप्पा-चप्पा ही क्यों न छानना पड़े...उसे पकड़कर हमारे सामने ला।"

"ऐसा ही होगा चीफ...शाम होने तक वह नाली का कीड़ा

आपके सामने घुटनों के बल खड़ा आपसे रहम की भीख मांग रहा होगा।"

कहकर शेर खान ने सिर झुकाया और वापिस मुड़ गया।

उसके जाने के बाद जगतार ने टूटे हुए फोन की तरफ देखा...फिर जेब से मोबाइल निकालकर थाने का नम्बर डायल करने लगा।

□□□
□□□

'ट्रिन...ट्रिन...।'

फोन की घण्टी बजी।

शिवदयाल ने रिसीवर उठाकर कान से लगाया और बोला—

"हैलो...इंस्पैक्टर शिवदयाल स्पीकिंग...।"

"जगतार बोल रहा हूं...।" दूसरी तरफ से ही जगतार की गुर्राती आवाज आई।

शिवदयाल एकदम से सीधा होकर बैठ गया।

"य...यस सर।"

"गनेश लाल जिन्दा है शिवदयाल। न सिर्फ जिन्दा है...बल्कि उसने रेखा और रमेश की हत्या भी कर दी है।"

बुरी तरह से उछल पड़ा शिवदयाल—"य...यह आप क्या कह रहे हैं सर? सात दिन से सोया मुर्दा किस तरह जाग गया।"

"जो हालत उसकी हो रही थी...उससे उभरने में वक्त तो लगना था न। यकीनन अब वह पूरी तरह से ठीक हो गया है और अब वह मुझसे बदला लेने निकल पड़ा है।"

"उसकी इतनी जुर्रत...।" गुर्राया शिवदयाल—"कि वह आपसे पंगा ले। आप निश्चिंत रहिये सर...मैं अभी उसकी खोज में निकल पड़ता हूं। वह कुत्ता मुझे जहां भी मिलेगा...मैं उसे गोली...।"

"तू उसे नहीं मारेगा...।" फुंफकारती आवाज आई।

"ल...लेकिन सर...।"

"उस हरामजादे ने मेरा अपमान किया है...अब वह मरेगा तो सिर्फ मेरे हाथों से मरेगा।"

"ज...जी...मैं समझ गया सर।" हड़बड़ाया शिवदयाल—"मैं अभी उसकी तलाश में निकल पड़ता हूं।"

दूसरी तरफ से सम्बन्ध-विच्छेद हो गया।

शिवदयाल ने रिसीवर क्रेडिल पर रखा और सिपाही को बुलाकर ए.एस.आई. जमशेद राय को बुलाने को कहा।

कुछ ही देर में जमशेद राय उसके सामने खड़ा था।

"बैठो।" गम्भीरता से बोला शिवदयाल।

जमशेद राय वहां पड़ी चार विजिटर्स कुर्सियों में से एक पर बैठ गया। शिवदयाल का गम्भीर चेहरा देखकर ही वह समझ गया था कि अवश्य ही कोई खास बात है।

शिवदयाल ने पहलू बदला और बोला--

"अभी-अभी मुझे किसी ने फोन पर खबर की है कि रेखा और रमेश की किसी ने हत्या कर दी है।"

"रेखा और रमेश...?"

"वही रेखा जिसकी इज्जत बचाने के चक्कर में खरे बलात्कारियों के हाथों शहीद हो गया था।"

बुरी तरह से चौंक उठा जमशेद राय।

"उनकी हत्या हो गई?" उसे जैसे विश्वास नहीं हुआ।

"साथ ही एक ऐसी सनसनी खेज खबर भी मुझे मिली है जो हमारे थाने में हुए गोली काण्ड से सम्बन्ध रखती है।"

"कैसी खबर?"

"गनेश लाल को जो लोग छुड़ाकर ले गये थे...वे बलात्कारियों के साथी थे।"

"य...यानि...सब-इंस्पैक्टर साहब को मारने वालों ने ही गनेश लाल को छुड़ाया था।"

"हां।"

"फिर तो सर...सब-इंस्पैक्टर साहब की हत्या इत्तफाक नहीं थी...अवश्य ही इसके पीछे कोई सोची-समझी चाल थी...।"

"चाल तो यही थी कि वे हमें ज्यादा-से-ज्यादा देर तक थाने से दूर रखना चाहते थे...ताकि पीछे से गनेश लाल को आसानी से छुड़ाया जा सके! बाकी का पता तो गनेश लाल के मिलने पर ही चलेगा...वह अभी इसी शहर में है।"

"लेकिन वो गनेश को छुड़ाना क्यों चाहते थे सर...?"

"यह तो अब उनके पकड़े जाने पर ही पता चलेगा। वैसे जो बात मेरे जेहन में आई है...उसके मुताबिक थाने पर हमला करने के पीछे उनका उद्देश्य गनेश लाल को छुड़ाना नहीं था...बल्कि अपना माल प्राप्त करना था। माल छुड़ाने के साथ ही उन्होंने गनेश को भी छुड़ा लिया।"

"ओह!"

"अगर उन्होंने स्पेशल गनेश लाल के लिये थाने पर हमला किया था, तो समझ लो गनेश कोई छोटी-मोटी हस्ती नहीं है। अवश्य ही वह उनका चीफ है। ऐसी सूरत में उसका जिन्दा पकड़ा जाना बहुत जरूरी है, ताकि उससे हकीकत का पता लगाया जा सके।"

जमशेद राय ने समझने वाले अन्दाज में सिर हिलाया।

"इसलिये तुम फौरन पूरी फोर्स के साथ पूरे लखनपुर में फैल

जाओ। इस केस की बागडोर मैं तुम्हारे हाथ सौंपता हूं।"

"थैंक्यू सर...।" जमशेद राय सीना चौड़ा करते हुए बोला—"आपने मुझे यह केस सौंप कर मुझ पर जो विश्वास किया...मैं उसे टूटने नहीं दूंगा।"

"मैं रमेश के घर जाता हूं...पंचनामा तैयार करके मैं अभी गनेश की तलाश में निकल पड़ूंगा।"

जमशेद राय खड़ा हुआ और एक जोरदार सैल्यूट ठोंक कर बाहर निकल गया।

□□□

□□□

रमेश और रेखा की लाशें जिस अवस्था में पड़ी थीं...उसे देखकर एकबारगी तो शिवदयाल भी भीतर-ही-भीतर कांप उठा था।

लाशों की हालत ही बता रही थी कि हत्यारा बेहद क्रूर और बेरहम व्यक्ति है।

व्यक्ति की बजाय अगर उसे पिशाच कहा जाये तो वो ज्यादा बेहतर होगा।

किसी तरह हिम्मत बांधकर उसने लाशों का पंचनामा किया और फिर उन्हें पोस्टमार्टम के लिये रवाना कर दिया।

वहां से फारिग होकर वह सीधा थाने पहुंचा।

उस वक्त शाम के चार बज चुके थे।

थाने पहुंचते ही उसने सबसे पहले वायरलैस से जमशेद राय से सम्पर्क किया...उससे पूछने पर पता चला कि अभी गनेश लाल का कुछ पता नहीं चला।"

हल्की-सी निराशा के साथ वह अपने आफिस आया और अपनी कुर्सी पर बैठ गया।

तभी—

□□□

□□□

सतीश रावण ने दो लाख का बैग देवकी के घर रखा...करीब दो घण्टे आराम किया, फिर बैग में से सौ-सौ की एक गड्डी निकालकर जेब में रखते हुए बाहर निकला और घर से बाहर आ गया।

उसने मेन डोर को ताला लगाया और चाबी जेब में रखते हुए सीधा मार्किट में जा पहुंचा।

जगतार को उसने फोन पर चैलेंज दे दिया था...ऊपर से उसके दो आदमी मार डाले थे। ऐसे में जाहिर था कि वह उसे खोजने के लिये जमीन-आसमान एक कर देगा।

और कोई बड़ी बात नहीं कि उसने शिवदयाल को भी इस काम पर लगा दिया हो।

ऐसे में उसका फ़ौरन से पहले अपनी सूरत बदलना जरूरी हो गया था...वरना वह कहीं भी...किसी भी वक्त जगतार के हत्थे चढ़ सकता था।

वह सीधा मार्किट पहुंचा। वहां से उसने अपने मतलब का सामान खरीदा और वापिस देवकी के घर आ गया।

इत्मीनान से उसने ड्रेसिंग टेबल के सामने बैठकर अपना मेकअप किया और करीब दो घण्टे बाद जब वह देवकी के घर से बाहर निकला तो वह एक सिक्ख नौजवान के वेश में था।

सिर पर गुलाबी रंग की पगड़ी पहन रखी थी उसने। काली घनी दाढ़ी और मूंछों पर फिक्सी लगाकर उन्हें सैट किया हुआ था तथा आंखों पर सुनहरी फ्रेम का गहरे काले रंग का चश्मा डाल रखा था। कपड़ों में उसने हल्के नीले रंग की जीन्स तथा ऊपर काले रंग की जाकेट पहन रखी थी।

थोड़ी दूर पैदल चलकर उसने एक टैक्सी रुकवाई और उसमें सवार हो गया।

करीब बीस मिनट बाद टैक्सी शिवदयाल के मकान के सामने आकर रुकी।

सतीश रावण ने टैक्सी की पिछली सीट पर बैठे-बैठे ही शिवदयाल के मकान के दरवाजे की तरफ देखा।

लोहे की ग्रिल के बने दरवाजे पर लकड़ी का एक नेम प्लेट लगी थी जिस पर लिखा था—

शिवदयाल लौहार

पुलिस इंस्पैक्टर।

दायीं तरफ दीवार में एक छोटा बोर्ड लगा था, जिस पर कि एक इन्डीकेटर जल रहा था तथा उसके साथ कॉलबैल का पुश बटन लगा था।

सतीश रावण ने टैक्सी में बैठे-बैठे ही भाड़ा चुकाया और फिर दरवाजा खोलकर बाहर आ गया।

टैक्सी के वहां से चले जाने के पश्चात् वह शिवदयाल के घर के दरवाजे के सामने आकर ठिठका और बिना किसी हिचकिचाहट के कॉलबैल का बटन दबाकर हाथ जाकेट की जेब में डाल लिया।

भीतर कहीं घण्टी का कर्कश स्वर उभरा।

शीघ्र ही प्रतिक्रिया हुई।

"कौन...?" अन्दर से किसी औरत की आवाज आई।

"दरवाजा खोलो भैन जी...मैं वां...।" सतीश रावण पंजाबी में बोला।

दरवाजा खुला।

सामने आरती खड़ी थी

"सतश्री अकाल... ।" सतीश रावण सिर को हल्के से हिलाते हुए बोला।

"सतश्री अकाल... ।" आरती उसे प्रश्नभरी निगाहों से देखते हुए बोली—"कौन हैं आप... ?"

"ओये मैं बलविन्द सिंग...जगतार जी ने मैनूं घल्या वे।"

जगतार का नाम सुनकर ही आरती का चेहरा खिल उठा। जरूर वह कुछ लेकर आया होगा। यही सोचकर वह तुरन्त एक तरफ हटी।

"आइये...अन्दर आ जाइए।"

सतीश रावण भीतर प्रवेश कर गया।

आरती ने दरवाजा बन्द किया और सतीश रावण को लिये ड्राइंग रूम में आ गई जिसमें कि करीब दस साल का लड़का सोफे पर कलाबाजियां खा रहा था।

सतीश रावण को देख वह वहीं रुक गया और टुकुर-टुकुर उसे देखने लगा।

"ओये किन्ना सोना मुण्डा ने...की नां वे तेरा?"

कहते हुए उसने आगे बढ़कर सोनू को अपनी बाहों में उठा लिया।

"सोनू... ।" जवाब आरती ने दिया।

सतीश रावण उसे लिये सोफे पर बैठ गया।

"कहिये... ।" तभी आरती उसके सामने वाले सोफे पर बैठते हुए बोली।

"सतीश रावण ने सोनू को अपनी गोद में बिठाया और बाहें उसके इर्द-गिर्द लपेट ली।

"ओ गल्ल ऐ वे भैन जी कि मैनूं जगतार साहब ने कहा वे कि कल जेडे दस लक्ख तुहानू दिये-सी...ओ वापस लें आवां... ।"

बुरी तरह से उछल पड़ी आरती।

"द...दस लाख... ।"

"आहो जी... ।"

"लेकिन वो तो... ।" बात अधूरी ही रह गई उसकी। आंखें अपने बेटे पर जा अटकीं जिसकी गर्दन एक तरफ लुढ़क गई।

"स...सोनू... ।"

"ओ घबरा न दी लोड नई भैन जी...सिर्फ बेहोश होया है।"

आरती का चेहरा बुरी तरह से पीला पड़ गया...कलेजा जोरों से धड़क उठा। उसे समझते देर नहीं लगी कि आने वाला जगतार का आदमी नहीं...बल्कि कोई और है। जिसने सोनू को अपने कब्जे में कर रखा है।

साथ ही वह मन ही मन हैरानी हो रही थी कि उसने सोनू को

बेहोश कब किया...जबकि उसने ऐसे कोई भी ऐसी-वैसी हरकत करते नहीं देखा था।

"क...कौन हो तुम...?" वह थर्राये स्वर में बोली।

सतीश रावण के होंठों पर जहरीली मुस्कान रेंग गई। आंखों में हैवानियत नाच उठी।

"ओ मैंने जगतार दा बन्दा वां भैन जी।" वह बोला—"ते जगतार दी मैनूं एक होर वी ऑर्डर दिया सी।"

"क...कैसा ऑर्डर...?"

"ओह ना ने कया सी कि मैं तुहाडे कपड़े उतरवा के थोड़ी देर तुहाडे नाल इट उड़क्का करां। ओये...ए...ऐ की तुमदा रया ए...?"

कहते हुए उसने जेब में हाथ डाला और रिवाल्वर निकाल ली। गहरी सांस छोड़ सतीश रावण ने और मुस्कुराया—"ऐ चुम रिया सी।" उसने रिवाल्वर उंगलियों में नचाई।

आरती का कलेजा उछल कर उसके हलक में आ फंसा। आंखों में खौफ नाचने लगी।

"त...तुम...।"

"कपड़े उतारो भैन जी। जरा मैं वी तां वेखां कि इंस्पैक्टर साहब दी वोहटी किन्नी सोहनी वे।"

"श...शरम आनी चाहिये तुम्हें...ए...एक तो बहन कह रहे हो...ऊपर से मुझे...।"

"मेरी आदत ही यही वे...भैन कै के ही मैं ऐहो नये कम करना वां...हुन चल कपड़े उतार!"

"न...नहीं...मैं कपड़े नहीं उतारूंगी...।"

"ऐ मुण्डा किन्ने साल दा वे भैन जी...?" कहते हुए सोनू की कनपटी पर रिवाल्वर टकठकाई।

"न...नहीं...त...तुम सोनू को कुछ नहीं कहोगे।" कांप उठी आरती।

"ते फेरे चुपचाप कपड़े उतार। मैं बस थोड़ी देर लावां गा...फेर दस चक्ख लै के चलदा बनांगा।"

"नहीं...मैं...।"

"लगता वे मैनूं ऐ मुण्डे का कम्म खिंचना ही पयेगा...।" कहते हुए सतीश रावण ने आंगूठे से घोड़ा का कुत्ता पीछे खींचा।

"न...नहीं...।" चीख पड़ी आरती—"म...मैं उतारती हूं...।"

"शाबास...चल उतार।"

ममता ने एक मां को एक वहशी के सामने निर्वस्त्र होने को मजबूर कर दिया।

एक-एक करके आरती के तमाम कपड़े उसके जिस्म का साथ छोड़ते हुए उसके पैरों के पास इकट्ठे होने लगे।

और जब आखिर में आरती की पैंटी ने धरती का छुआ तो सतीश रावण की जैसे आंखें फट पड़ीं।

उसे अपनी सांसें रुकती महसूस होने लगी।

बिना कोई वक्त गवाये उसने सोनू को एक तरफ रखा और खड़ा होकर आरती के सामने आ उसकी छातियां पर हाथ रख पीछे धकेला।

हल्की-सी चीख के साथ आरती सोफे पर जा गिरी।

उसकी छातियां एकबारगी जोरों से उछलीं...फिर स्थिर हो गईं।

"बल्ले ओय बल्ले...दस साल दा मुण्डा जन के तू अजे वी जवान ने... !"

कहते हुए सतीश रावण ने अपने बायें हाथ से उसकी छाती को जोरों से भींचा।

आरती का पूरा जिस्म थर्रा उठा।

शर्म तथा गलानि से उसकी निगाहें धरती में गड़ी जा रही थीं।

बेशक वह लालची प्रवृत्ति की औरत थी...लेकिन लालच को उसने अपने अस्तीत्व पर कभी हावी नहीं होने दिया था। आज तक उसने किसी पर पुरुष का ध्यान भी नहीं किया था...उसके साथ रासलीला रचाना तो दूर की बात थी।

और आज वह एक बेगाने आदमी के सामने पूर्ण रूप से बेलिबास बैठी हुई थी। ऐसे में उसके दिल पर जो बीत रही थी...वो वो ही जानती थी।

सतीश रावण ने उसे सोफे पर लिटाया और फिर रिवाल्वर को सोनू वाले सोफे पर फेंककर आरती पर सवार हो गया।

आरती लुटने लगी।

उसके लालच ने ही आज उसे लूट डाला था। अगर वह लालच में नहीं पड़ती तो वह किसी भी सूरत में उसे अपने मकान में दाखिल नहीं होने देती।

सतीश रावण उसकी छातियां को दांतों से काटता पल-प्रतिपल उस पर हावी होता जा रहा था।

और थोड़ी देर बाद जब वह अपने लक्ष्य पर पहुंचा तो आरती की छातियों पर गिरकर हांफने लगा।

अपनी सांसें दुरुस्त होने के बाद वह उस पर से उठा और जाकर अपनी रिवाल्वर कब्जे में कर सोनू को अपनी गोद में बिठाते हुए सोफे पर बैठ गया।

आरती मन-मन आंसू बहाती हुई अपने कपड़े पहनने लगी।

"दस लाख किथे ने?" उसके कपड़े पहन चुकने के बाद सतीश रावण सोनू की गर्दन पर हाथ फेरते हुए बोला।

"ब...बैड के नीचे...।"

"यानि बैडरूम विच ने...?"

"ह...हां...!"

"चल...लै चल मैनूं ओथे।"

कहते हुए सतीश रावण ने सोनू को बेदर्दी से उठाया और खड़ा हो गया।

आरती डगमगाते कदमों से उसके आगे आगे चलती बैडरूम में पहुंची...बैड के नीचे से नोटों से भरा बैग खींचा और उसे सोफे पर रख दिया।

"खोल के दिखा...!"

आरती ने बैग को खोलकर दिखाया।

सौ-सौ के नोटों से भरा पड़ा था बैग।

सतीश रावण की आंखों में वहशी दरिन्दे की-सी चमक नाच उठी।

"बन्द कर दे।" वह बोला।

आरती ने हुक्म का पालन किया।

"फोन कर अपने घरवाले नूं...और जो कुछ मैं कवां...ओहो ही कहना वे तू फोन ले...समझी...?"

आरती ने आंसू बहाते हुए सिर हिलाया और साइड स्टूल पर रखे फोन का रिसीवर उठाकर कांपती उंगलियों से थाने का नम्बर मिलाने लगी।

□□□

□□□

'ट्रिन...ट्रिन...!'

फोन की घण्टी बजी।

शिवदयाल ने थोड़ा-सा आगे को झुकते हुए बांह लम्बी करके रिसीवर उठाया।

"हैलो...।" वह माउथपीस में बोला।

"मैं बोल रही हूं जी...!"

दूसरी तरफ से आरती की घबराई आवाज सुनकर चौंका शिवदयाल।

"खैरियत तो है आरती...? तुम इतना घबराई हुई क्यों हो...?" वह बोला।

"आप फौरन घर आ जाइए।"

"क्यों...?"

"सोनू की तबीयत अचानक बिगड़ गई है...जल्दी आइये...।"

"म...मैं आ रहा हूं।"

कहकर उसने तुरन्त रिसीवर रखा और उछलकर खड़ा हो गया।

एक ही तो बेटा था उसका...सोनू के जन्म के बाद डाक्टरों ने घोषित कर दिया था कि आरती दोबारा मां नहीं बन सकती। ऐसे में दोनों की जान बन गया था वह। अपना सारा प्यार वे पति-पत्नी उसी पर उंड़ेलते रहते थे। उसे जरा-सी खराश भी आ जाती थी, तो उनकी जान निकल जाती थी।

ऐसे में सोनू की तबीयत खराब होने की खबर सुनकर वह कैसे रुक सकता था।

लगभग भागते हुए वह आफिस से निकला और प्रांगण में खड़ी जिप्सी की तरफ भागा।

कुछ ही पलों में जिप्सी गोली की तरह उसके घर की तरफ उड़ी जा रही थी।

❑❑❑

❑❑❑

रिसीवर क्रेडिल पर रखकर आरती ने सहमे भाव से सतीश रावण की तरफ देखा।

"बैठ जा।" सतीश रावण धूर्तता से मुस्कुराया।

आरती बैड के कोने पर बैठ गई।

सतीश रावण ने उसके चेहरे पर निगाहें जमाई और अपना चेहरा उसके करीब ले जाते हुए बोला—

"हुन पूछ कौन वां मैं...?"

आरती कुछ नहीं बोली...बस थूक सटक कर रह गई। वह पूछती भी क्या...सब कुछ तो लूट ही चुका था उसका।

"पूछ...।" घुड़का सतीश रावण ने।

"क...कौन हो तुम...?" हड़बड़ाई-सी बोली आरती।

सतीश रावण ने गहरी सांस छोड़ते हुए अपना चेहरा पीछे किया और चेहरे पर उदासी लाते हुए बोला—

"मैं वो बदनसीब हूं जिसे तेरे पति ने बिना किसी कसूर के गिरफ्तार कर लिया और फिर मेरी बुरी हालत बनाकर जगतार को सौंप दिया...ताकि वह मुझे खत्म कर सके। यह दस लाख मेरे को जगतार को सौंपने का मिला था तेरे पति को।"

इस बार सतीश रावण का लहजा पंजाबी की बजाय हिन्दी में था।

बुरी तरह से चौंकी आरती।

"त...तुम गने...श...।"

"हां...गनेश लाल हूं मैं। अब बोल तेरी सवारी गांठकर अपने दस लाख वापिस लेकर मैंने कोई बुरा तो नहीं किया।"

आरती भला क्या जवाब देती? बस थूक निगल कर रह गई वह।

"तेरे पति ने मेरे साथ जो कुछ किया...अब वही मैं उसके साथ करूंगा। यूं समझ ले कि तेरे साथ कुछ देर बिताकर और यह दस लाख लेकर मैंने अभी ब्याज का एक हिस्सा ही वसूल किया है। बाकी का ब्याज मैं अब वसूल करूंगा...।"

कहने के साथ ही उसने सोनू को बेरहमी से एक तरफ फेंका और भूखे कुत्ते की तरह आरती पर झपट पड़ा।

आरती को सपने में भी उम्मीद नहीं थी कि वह इस तरह उस पर झपटेगा...तभी तो वह अपना जरा भी बचाव नहीं करपाई।

नतीजा...आरती पीठ के बल बेड पर जा गिरी और सतीश रावण उस पर सवार हो गया।

उसने रिवाल्वर उसके माथे से लगाई और भयानक अंदाज में गुर्राया—

"पिशाच हूं मैं...जो न तो किसी पर रहम खाता है...न किसी को बख्शता है...बल्कि मैं पिशाच का भी बाप हूं। पिशाच को तो सिर्फ खून की भूख होती है...जबकि मुझे तो खून के साथ-साथ नोटों की भी भूख है।"

"न...नहीं...।" गिड़गिड़ाई आरती—"म...मुझे बख्श दो...म...मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है...?"

"तेरे खसम ने तो बिगाड़ा है। यूं भी मैं यह नहीं देखता कि किसी ने मेरा कुछ बिगाड़ा है या नहीं...बस जहां भी हाथ में खुजली होती है...वहीं दो-चार की गर्दनें उतार देता हूं। चूंकि इस वक्त मेरे पास आरी नहीं है...इसलिये मैं इस रिवाल्वर से ही अपना काम चला रहा हूं।"

"न...नहीं...।"

लेकिन सतीश रावण ने उसकी गिड़गिड़ाहट पर ध्यान नहीं दिया। बस घोड़ा दबा दिया।

गोली सीधा आरती के माथे के ऐन बीचो-बीच घुसी और उसकी खोपड़ी का पृष्ठ भाग फाड़ती हुई बेड में जा घुसी।

अगली सांस भी नहीं ले पाई आरती...और लाश में तब्दील हो गई।

होठों पर भयानक मुस्कान लिये हुए सतीश रावण उसके ऊपर से उतरा और सोनू की तरफ बढ़ा।

बिना किसी घबराहट के उसने झुककर रिवाल्वर की नाल उस मासूम के मुंह में डाली और ट्रेगर दबा दिया।

क्या मजाल जो एक मासूम का खून करते हुए उसका कलेजा जरा भी दहला हो।

भेड़िया जो था वह।

वह मासूम बेहोशी के आलम में ही उछला...फिर स्थिर हो गया।

उसने रिवाल्वर की नाल पर लगा खून बैड की चादर से पोंछा और रिवाल्वर को जेब में डालते हुए कमरे से बाहर निकल गया।

मेन डोर के करीब आकर उसने सिटकनी गिराई और दरवाजे को इस तरह थोड़ा-सा खोल दिया कि देखने वाले को फौरन पता चल जाये कि दरवाजा भीतर से बन्द नहीं है।

तत्पश्चात् वह वहां से हटा और वापिस कमरे में आ गया।

❑❑❑

❑❑❑

शिवदयाल ने जीप ऐन अपने घर के दरवाजे के सामने रोकी और बदहवासी के आलम में नीचे उतर कर दरवाजे की तरफ लपका।

दरवाजे में बनी छोटी-सी झिरी देखकर उसने घण्टी बजाने की जहमत नहीं उठाई और दरवाजे को धकेलते हुए भीतर प्रवेश कर गया।

"आरती...।" आंगन पार करते हुए उसने आवाज लगाई।

कोई आवाज नहीं आई।

आती भी कैसे...आरती तो उसके पहुंचने से काफी पहले ही ऊपर को रवाना हो चुकी थी।

"आरती...।" बैडरूम की तरफ बढ़ते हुए शिवदयाल ने पुनः अपनी पत्नी को पुकारा।

"क्या बात है तुम जवाब क्यों नहीं...?"

कहते हुए जैसे ही उसने बैडरूम में प्रवेश किया...उसके बाकी के शब्द घुटी-घुटी चीख में तब्दील हो गई।

कलेजे ने जैसे धड़कना ही बन्द कर दिया।

सामने फर्श पर सोनू की लाश पड़ी थी, जिसकी खोपड़ी चिथड़ों में तब्दील हो रही थी...और बैड पर उसकी पत्नी आरती की लाश पड़ी थी, जिसके माथे के बीचो-बीच सुराख नजर आ रहा था...जिसके चारों तरफ खून फैला हुआ था। उसके करीब ही वह बैग पड़ा था, जिसे कल जगतार का आदमी दे गया था।

शिवदयाल को सपने में भी उम्मीद नहीं थी कि उसके सामने ऐसा हादसा पेश आयेगा।

कुछ पल तो वह बुत बना अपनी पत्नी और बेटे की लाशों को घूरता रहा...फिर वह लड़खड़ाते कदमों से सोनू की लाश की तरफ बढ़ा।

वह यह भूल गया था कि कानूनन उसे अभी कमरे में भी प्रवेश नहीं करना चाहिये।

अभी उसने दो कदम ही आगे ही बढ़ाये थे कि एकाएक बुरी तरह से चिहुंक उठा वह।

लोहे की एक ठण्डी नाल उसकी पीठ से आ लगी थी। साथ ही एक फुंफकारती आवाज उसके कानों में पड़ी—

"हाथ ऊपर...।"

शिवदयाल के हाथ अपने आप ही उसके सिर पर जा पहुंचे।

पीछे खड़े सतीश रावण ने फौरन अपना बायां हाथ आगे कर उसके होलेस्टर से उसकी सर्विस रिवाल्वर खींचली और उसी के साथ ही थोड़ा पीछे हटकर एक भरपूर लात उसके कूल्हों पर जमा दी।

कराहता हुआ शिवदयाल लड़खड़ाते हुए आगे बढ़ा और सीधा आरती की लाश पर जा गिरा।

गिरते ही वह बुरी तरह से हड़बड़ाया और फौरन लाश पर से उठकर पीछे देखा।

सामने एक सरदार को देख वह बुरी तरह से चौंका।

"क...कौन हो तुम...?" वह कांपते स्वर में बोला।

सतीश रावण के होंठों पर भयानक मुस्कान रेंग गई। उसने शिवदयाल की रिवाल्वर जेब में डाली और अपनी रिवाल्वर को उंगलियों में नचाते हुए बोला—

"बड़ी जल्दी भूल गया मुझे...?"

शिवदयाल की आंखें फट पड़ीं...कलेजा जोरों से धड़क उठा। सतीश रावण की आवाज को फौरन पहचान लिया उसने।

"ग...गनेश लाल...।" उसके होंठों से थर्राया स्वर निकला।

"पहचान लिया...।" हंसा सतीश रावण—"लेकिन यह तो मेरा वो नाम है जो मैंने तुम्हें बताया था। मेरा असली नाम सुनेगा तो जरूर तेरी हवा खराब हो जायेगी। सुनेगा...?"

शिवदयाल कुछ नहीं बोला...बस थूक निगल कर रह गया।

"ओनली वन बास्टर्ड इन दी वर्ल्ड...एण्ड दैट इज सतीश रावण...।"

बुरी तरह से उछल पड़ा शिवदयाल। सतीश रावण के नाम ने ही उसके रोंगटे खड़े कर दिये।

"त...तुम...स...सतीश राव...ण...।"

"इकलौता हरामी...।" हंसा सतीश रावण।

शिवदयाल के गले की घण्टी जोरों से उछली।

सतीश रावण आगे बढ़ा और एक भरपूर ठोकर उसके पेट में जड़ दी।

शिवदयाल पीठ के बल आरती की लाश पर जा गिरा।

इससे पहले कि वह उठता...सतीश रावण ने अपना दायां पैर उठाया और उसके सीने पर जमा दिया। साथ ही रिवाल्वर की नाल

उसके माथे से लगा दी।

"तुझे नगा करके पहले कुर्सी से बांधा तूने...फिर उल्टा लटकाया...।" गुर्राया सतीश रावण—"फिर बड़ी अदालत में भेज दिया। क्या कहा था तूने...बड़ी अदालत में अगर मैं सच्चा निकला तो आसान मौत मिलेगी...वरना बुरी मौत। यही कहा था न तूने...?"

"म...मुझे माफ कर दो सतीश रावण...म...मुझे मालूम नहीं था कि त...तुम कौन हो?"

"अगर मालूम हो जाता तो क्या छोड़ देता तू मुझे...?"

जवाब में शिवदयाल ने थूक सटकी।

"तब तो तू खुद हर वक्त मेरा पहरा देता रहता कि कहीं मैं भाग न जाऊं...।"

शिवदयाल के गले की घण्टी पुनः उछली।

"जो रिश्ता तूने मेरे साथ शुरू किया था...अब उसका अन्त मैं करूंगा। तूने जो मुझे दस लाख में जगतार के हाथों बेच दिया था...अब मैं तुझे ऊपर वाले के हाथों बेच रहा हूं।"

"न...नहीं...ए...ऐसा मत करना सतीश रावण! मैं...।"

लेकिन सतीश रावण ने उसकी बात पूरी नहीं होने दी।

ट्रेगर दबा दिया उसने।

गोली सीधा उसके माथे में घुसी और उसकी खोपड़ी को फाड़ती हुई नीचे पड़ी आरती की लाश में जा धंसी।

सतीश रावण ने उसके सीने से पैर हटा कर रिवाल्वर जेब में डाली...और फिर फोन की तरफ बढ़ा।

अगले ही पल वह जगतार का नम्बर डायल कर रहा था।

❑❑❑

❑❑❑

'ट्रिन...ट्रिन...।'

फोन की घण्टी बजते ही जगतार ने रिसीवर को इस तरह उठाया जैसे वह घण्टे के बजने की मुद्दत से इन्तजार कर रहा हो।

शेर खान सुबह का उसके दुश्मन को ढूंढने के लिये निकला हुआ था और अभी तक उसकी तरफ से कोई खबर नहीं आई थी।

अब घण्टी बजी तो उसने यही समझा कि शेर खान का ही फोन है। तभी तो उसने झपट कर रिसीवर उठाया था।

"हैलो...।" वह बेसब्री से बोला—"शेर खान।"

दूसरी तरफ से खौफनाक हंसी उभरी—"किसी और के फोन का इन्तजार कर रहा था तू...?"

जगतार का सारा उत्साह सोडे की झाग की तरह ठण्डा पड़ गया। सतीश रावण की आवाज को उसने फौरन पहचान लिया था।

"गनेश लाल... ?" वह गुर्राया।

"बड़ी पहचान हो गई है मेरी आवाज की।" पुनः हंसी उभरी।

"तू तो मेरी आंखों में बस गया है हरामखोर... ।" गुर्राया जगतार—"अब जब तक तुझे खत्म नहीं कर लूंगा... मैं चैन से नहीं रह पाऊंगा।"

"यानि जागते हुए ही मरेगा तू... ।" सतीश रावण की आवाज आई—"क्योंकि मैं तो मरूंगा नहीं... और तू सो नहीं पायेगा... ऐसे में जागते हुए ही मरेगा न तू... ।"

"जगतार को मारना तो दूर, तू उसके करीब भी नहीं फटक पायेगा हरामजादे... ।"

"घबरा नहीं... बहुत जल्द मैं न केवल तेरे करीब फटकूंगा... बल्कि तेरी मौत बनकर तेरे सामने भी खड़ा होऊंगा। फिलहाल तो वो शानदार खबर सुन जिसे सुनाने के लिये मैंने तुझे फोन किया है।"

न चाहते हुए भी जगतार का कलेजा धड़क उठा।

"क... कैसी खबर?"

"तेरा एक और प्यादा खत्म... ।"

"क... क्या मतलब... ?"

"इंस्पैक्टर शिवदयाल सपरिवार जन्नत नशीं हो गया है।"

बुरी तरह से उछल पड़ा जगतार... चेहरे पर अविश्वास उभर आया।

"त... तूने उसे मार डाला... ?"

"सपरिवार... ! पत्नी और बेटा भी चल बसे हैं। उसकी पत्नी ने तो मरने से पहले मुझे खुश भी किया था और फिर मेरी मर्दानगी से खुश होकर मुझे बतौर वो दस लाख दे दिये जो कि तूने शिवदयाल को दिये थे।"

जगतार के मुंह से सहसा ही बोल नहीं फूटा।

"क्या बात है जगतार मियां... मां मर गई... या जुबान कट गई?"

"भौंक ले... जी भरकर भौंकले हरामजादे... लेकिन इतना याद रखना... जिस दिन भी तू मेरे हत्थे चढ़ गया... उस दिन तेरी वो हालत करूंगा कि तू अपनी मां को गालियां बकेगा कि उसने तुझे पैदा किया तो क्यों किया।"

"वो तो मैं अभी भी निकालता हूं। इसलिये नहीं कि उसने मुझे पैदा क्यों किया... बल्कि इसलिये निकालता हूं कि उसने गीनिज बुक में अपना नाम दर्ज नहीं कराया। चार सौ अट्ठान्वे आदमी चढ़ाये थे उसने खुद पर... अगर दो और चढ़ा लेती तो उसका नाम गीनिज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज हो जाता। तब मैं भी गर्व से कहता

कि मैं पांच सौ बापों की इकलौती पैदावार हूं। इसलिये गालियां तो निकालूंगा ही मैं। तू भी कोई नया डायलॉग मार...।"

"तेरी तो मां की...।" एक भद्दी गाली निकली जगतार के होठों से।

"वो तो है...मगर गाली पुरानी है। तू ऐसा कर मेरे अगले फोन तक कोई नई बढ़िया-सी गाली का ईजाद कर, क्योंकि अगली बार जब तुझे फोन करूंगा तो तुझे इससे भी बढ़िया खबर दूंगा। अब बाय...टाटा...सी यू...।"

उसी के साथ ही दूसरी तरफ से फोन कट गया।

जगतार ने रिसीवर को खा जाने वाली निगाहों से घूरा और उसे क्रेडिल पर पटक दिया।

अजीब आदमी से पाला पड़ा था उसका जिसे गालियां खाना पसन्द था। पैरों पर पानी नहीं पड़ने दे रहा था वह।

"सूअर की औलाद...।" वह बड़बड़ाया—"अब मैं तुझे जिन्दा नहीं छोड़ूंगा...तू चाहे जिस भी बिल में घुस जा...मैं तुझे खोज निकालूंगा।"

कहते हुए उसका चेहरा भयानक हो उठा था।

❑❑❑

❑❑❑

सतीश रावण ने टैक्सी को देवकी के घर से काफी पहले ही सड़क किनारे रुकवाया। उसका भाड़ा अदा किया और फिर बैग उठाकर बाहर आ गया।

टैक्सी के वहां से जाने के उपरान्त उसने दो-तीन गलियों को पार किया और फिर देवकी के घर के सामने आ खड़ा हुआ।

मकान को ताला नहीं लगा हुआ था। जिसका मतलब था देवकी नौकरी से आ चुकी थी।

उसने बैल पुश दबाया और दरवाजा खुलने का इन्तजार करने लगा।

दरवाजा खुला।

सामने एक सरदार को देख देवकी ने प्रश्न भरी निगाहों से उसे देखा।

"कहिये...।" वह बोली।

निश्चय ही उसने सतीश रावण को नहीं पहचाना था।

सतीश रावण के होठों पर मुस्कान रेंग गई।

"अपने प्रियतम को भी नहीं पहचान सकी तुम...जबकि औरत तो पहली ही निगाह में अपने प्रियतम को पहचान लेती है...चाहे वह किसी भी रूप में क्यों न हो।"

"गने...श...।"

"आखिर पहचान ही लिया।" सतीश रावण हंसा।

देवकी फौरन एक तरफ हट गई।

सतीश रावण अन्दर दाखिल हुआ और सीधा बेडरूम में जा पहुंचा।

उसने बैग बैड पर रखा और अपनी पगड़ी उतारने लगा।

कमाल का मेकअप कर रखा था तुमने...तभी देवकी भीतर दाखिल होते हुए बोली--"कसम से मैं तो बिल्कुल ही नहीं पहचान पाई थी तुम्हें...।"

सतीश रावण ने हौले से हंसते हुए पगड़ी को बैड की पुश्त पर रखा और अपनी दाढ़ी-मूंछे उतारने लगा।

"इस बैग में क्या है?" वह बोली।

"खाना मिलेगा?"

"ओह। मैं अभी लाती हूं।" कहकर देवकी बैग पर से निगाहें हटाती हुई बाहर निकल गई।

कुछ देर बाद जब वह खाना लेकर कमरे में आई तो सतीश रावण अपने असली रूप में बैड पर अधलेटी अवस्था में बैठा था। नोटों से भरा बैग उसके करीब खुला पड़ा था तथा वह रमेश वाला बैग खोल रहा था।

इतने नोटों को देख देवकी बुरी तरह से उछल पड़ी।

"य...यह रुपया...।"

"सब तुम्हारा है मेरी जान और यह भी...।" कहते हुए उसने रमेश वाला बैग भी खोलकर बैड पर रख दिया।

देवकी की आंखें फट पड़ीं।

"इ...इतना...रुपया...।"

"यह तो अभी ब्याज भी नहीं...।" सतीश रावण उसके हाथों से ट्रे पकड़ते हुए बोला--"मेरा जो तीन लाख मेरे दुश्मनों ने छीना था...उसे मैं हजारों गुणा करके वसूलूंगा उनसे।"

कहते हुए उसने चौकड़ी मारी और ट्रे अपने सामने रख ली।

देवकी ने बड़े बैग में से नोटों की दो गड्डियां निकालकर इस तरह अपनी आंखों के सामने किया जैसे वह परख रही हो कि वे नोट नकली तो नहीं।

"नोटों के बाद में देखना पहले खाना खा लो।"

देवकी ने गड्डियां वापिस बैग में रखीं और फिर सतीश रावण के सामने बैठ गई।

खुशी की अधिकता से उसके हाथ काम रहे थे...चेहरा हजारों वाट की रोशनी बिखेर रहा था।

ऐसी सूरत में भूख कहां लगनी थी उसे। सो एक रोटी खाकर वह पीछे हट गई और नोटों को पागलों की तरह उठा-उठाकर देखने

लगी।

सतीश रावण ने तसल्ली से खाना खाया और ट्रे को उठाकर बैड के नीचे सरका दिया।

"इतना रुपया कहां से लाये तुम...?" तभी देवकी उसे देखते हुए बोली।

"कहा तो...ब्याज लिया है।"

"कोई खुन-खराब तो नहीं किया तुमने?" संदेह भरी नजरों से उसे देखते हुए बोली देवकी।

सतीश रावण ने गहरी सांस छोड़ी और चेहरे पर गम्भीरता का आवरण ओढ़ते हुए बोला—

"अपना हक पाने के लिये इन्सान कुछ भी कर सकता है देवकी...।"

"तो तुमने खून-खराबा किया...।" कहते हुए देवकी ने गड्डियां वापिस बैग में रख दीं।

सतीश रावण कुछ नहीं बोला...बस गहरी सांस छोड़ दी।

देवकी सरक कर उसके करीब आ गई और बोली—

"जानते हो कितना बड़ा पाप किया है तुमने। इन नोटों की खातिर तुमने खून बहाया। मुझे तुमसे यह उम्मीद नहीं थी गनेश...मैं तो यह सोचकर खुश हो रही थी कि मेरा पति बहादुर है...लड़ने वाला है, मगर तुम हत्यारे भी होओगे...यह मैं सपने में भी नहीं सोच सकती थी।"

कहते हुए देवकी की आंखों से आंसू बह निकले।

सतीश रावण ने गम्भीरता भरी गहरी सांस छोड़ी और देवकी के गले में बाहें डाल उसकी आंखों में झांका।

"तुमने मुझे हत्यारा तो कह दिया देवकी...लेकिन यह नहीं सोचा कि अगर मैं उन्हें नहीं मारता तो क्या होता...।"

"क्या होता...?" देवकी अपनी आंखों से आंसू पोंछते हुए बोली।

"अण्डरवर्ल्ड के बारे में तुम कुछ नहीं जानती देवकी...मगर मैं जानता हूं...। मैंने फिल्मों में देखा है...किताबों अखबारों में पढ़ा है। अण्डरवर्ल्ड में किसी को भी किसी के प्रति रहम नहीं होता। यहां अगर किसी की किसी के साथ दुश्मनी बढ़ जाये तो वह तभी खत्म होती है, जब दोनों में से कोई एक मर जाता है।"

"ओह।"

"जगतार की कैद से भागकर मैंने उससे दुश्मनी मोल ले ली। शिवदयाल भी जगतार का ही आदमी था। यानि अगर मैं किसी के भी हत्थे चढ़ता...मेरी मौत निश्चित थी। इस वक्त भी जगतार के कुत्ते मुझे जगह-जगह तलाश कर रहे हैं और जहां भी मैं उनके काबू

में आया वे वहीं मुझे गोली से उड़ा देंगे। इसी तरह अगर मैं शिवदयाल को छोड़ देता...रमेश को छोड़ देता तो अब तक मेरी लाश कहीं-न-कहीं बिछ चुकी होती।"

"लेकिन...।"

"मैंने खुद को बचाने के लिये उन्हें मारा है देवकी...फिर भी अगर तुम मुझे ही कुसूरवार ठहराती हो तो मैं खुद ही खुद को जगतार के हवाले कर दूंगा, मगर उसके बाद तुम्हें अपने लिये नया जीवन-साथी ढूंढना पड़ेगा...क्योंकि मैं तो...।"

"बस...।" देवकी ने उसके मुंह पर हाथ रख दिया—"आगे कुछ मत कहना, वरना मैं रो पड़ूंगी।"

"मैंने तुमसे इसीलिये अभी शादी करने से मना किया था देवकी, क्योंकि मैं जानता था कि जिस रास्ते पर मैंने कदम बढ़ाये हैं, वहां हर तरफ मौत-ही-मौत बिखरी पड़ी है।"

देवकी बेसाख्ता ही उससे लिपट गई। उसकी आंखों से टप-टप आंसू बहने लगे।

सतीश रावण ने भी उसे अपनी बाहों के घेरे में ले लिया।

थोड़ी देर बाद देवकी उससे अलग हुई और अपने आंसू पोंछते हुए बोली—

"तुम ठीक कह रहे हो गनेश...जगतार को खत्म करना अब तुम्हारी मजबूरी बन गई है, लेकिन इस तरह तुम खुद को अकेला मत समझना। तुम्हारी देवकी तुम्हारे साथ कदम-से-कदम मिलाकर चलेगी, लेकिन तुम्हें एक वादा करना पड़ेगा।"

"वादा...कैसा वादा...?"

"तुम्हें यह वादा करना पड़ेगा कि जगतार को खत्म करने के बाद तुम किसी और का खून नहीं करोगे।"

सतीश रावण ने गहरी सांस छोड़ी—"तुम क्या समझती हो देवकी...मुझे किसी को मारकर खुशी मिलती है। तुम्हें क्या पता कि किसी का खून करने के बाद मेरी आत्मा मुझे कितना धिक्कारती है। मैं गुनाहों का बोझ-सा महसूस करता हूं अपनी आत्मा पर...मगर अपनी जान तो हर किसी को प्यारी होती है...।"

"मैं तुम्हारी बात का मतलब समझ रही हूं...फिर भी तुम्हें वादा करना पड़ेगा।"

"किया...।" मुस्कुराया सतीश रावण।

"क्या किया...?"

"वादा!"

कहकर सतीश रावण ने उसे अपने साथ लिपटा लिया।

देवकी भी उससे लिपट गई।

और फिर कुछ ही देर बाद दोनों उसी खेल में तल्लीन हो गये

जो कि सिर्फ बिस्तर पर ही खेला जाता है।

एक-दूसरे के प्रतिद्वन्द्वी बने दोनों एक-दूसरे को पछाड़ने में जुटे हुए थे।

□□□

□□□

"क्या सोच रहे हो...?"

देवकी अपनी छातियां सतीश रावण के कन्धों से रगड़ते हुए उसकी आंखों में झांकते हुए बोली।

अभी थोड़ी देर पहले ही दोनों तृप्त हुए थे, फिर सतीश रावण बैड की पुश्त से टेक लगाकर बैठ गया और गहरी सोचों में डूब गया।

दोनों के जिस्मों पर कपड़े का एक रेशा भी नहीं था।

सतीश रावण ने उसकी तरफ देखते हुए गहरी सांस छोड़ी और बोला—

"सोच रहा हूं कि जगतार पर अगला वार क्या किया जाये?"

"कुछ सोचा?"

"अभी तो कुछ नहीं सूझा।"

"ओह!"

"हां, मगर एकाध पेग मिल जाये तो दिमाग के घोड़े तेज दौड़ने लगेंगे।"

"ब्रांडी चलेगी?" मुस्कुराई देवकी।

"बिल्कुल चलेगी। चलेगी क्या दौड़ेगी। क्या तुम पीती हो?"

"कभी-कभी जब ठण्ड ज्यादा हो जाती है तो...!" देवकी बोली—"मैं लाती हूं...।"

कहकर उसने अपनी टांगों पर से रजाई हटाई और बैड से नीचे उतरकर वार्डरब की तरफ बढ़ी।

सतीश रावण ने पीछे से उसके थरथराते नितम्बों को देखा तो उसके खून में फिर से गर्मी भरने लगी। आंखों में लाल डोरे तैरने लगे। उसका दिल किया कि वह अभी उठे और उसे पीछे से झपटकर दबोच ले।

मगर उसने ऐसा किया नहीं। खुद को काबू में किये रखा।

देवकी ने वार्डरब खोलकर उसमें से ब्रांडी का एक अद्धा निकाला और उसे लेकर बैड पर आ गई।

अद्धा सतीश रावण को पकड़ा उसने सिर बैड के से नीचे किया और बैड के नीचे रखी ट्रे में से गिलास उठा लिया।

"लो...।" वह बोली।

सतीश रावण ने गिलास लेकर उसे आधा भरा और एक ही सांस में खाली कर दिया।

ब्रांडी ने भीतर जाते ही अपना रंग दिखाना शुरू किया और

सतीश रावण के दिमाग के पर खुलते चले गये।

"सुनो... ।" वह अद्धे को बन्द कर एक तरफ रखते हुए बोला।

"हूं... ।" देवकी रजाई में घुस अपनी टांगों को उसकी टांगों पर रखते हुए बोली।

"तुम तो काफी अर्से से रह रही हो यहां... ।"

"हां...चार साल हो गये हैं।"

"फिर तो तुम्हें जगतार के बारे में भी मालूम होगा।"

"देवकी के होठों पर फीकी मुस्कान फैल गई।" मुझ तो यह भी नहीं पता कि यहां का एम.एल.ए. कौन है। मेरा तो बस एक रूटीन है...सुबह उठकर जोगिंग करना जो कि तुम्हारे आने के बाद बन्द हो गई है...फिर दस बजे आफिस जाना और वहां से पांच बजे वापिस लौटना। शहर में कहां क्या हो रहा है...मुझे कुछ नहीं मालूम... ।"

"ओह।"

"लेकिन हां... ।" एकाएक ही वह बोल पड़ी--"एक घटना याद है मुझे और वह जगतार से ही सम्बन्धित है।"

"क्या... ?"

"करीब दो-ढाई साले पहले की बात है यह... ।" देवकी सोचपूर्ण स्वर में बोली--"उस रोज मैं ऑटो पर बैठकर आफिस से घर आ रही थी कि ऑटो रास्ते में ही बिगड़ गया। मैं ऑटो से निकलकर पैदल ही घर के लिये चल पड़ी। अभी मैं थोड़ी दूर ही चली थी कि तभी कुछ चीखों की आवाजें सुनकर मैंने उधर देखा तो लोगों की भीड़ खड़ी थी वहां। उत्सुकता से मैं भी भीड़ में शामिल हुई तो मैंने जो दृश्य देखा...उसे देख मेरे तो रोंगटे ही खड़े हो गये।"

"क्या देखा तुमने... ?"

"कुछ लोग एक आदमी को जो कि बुरी तरह से घायल था, पकड़ रखा था और दो आदमी उसके सामने एक औरत की इज्जत लूट रहे थे।"

"ओह।"

"औरत चीख रही थी, चिल्ला रही थी...रहम की भीख मांग रही थी...लेकिन उन दरिन्दों पर उसकी चीखों का कोई असर नहीं हो रहा था।"

"फिर... ?"

"वह औरत मेरी आंखों के सामने लुट गई...और फिर उन गुण्डों ने उस घायल आदमी को भी मार डाला और चलते बने। किसी में भी इतनी हिम्मत नहीं हुई कि कोई उनका रास्ता रोक सके। उनके जाने के बाद औरत लुटी-पिटी सी सामने अपने घर में चली गई और

आदमियों में कानाफूसी शुरू हो गई। वही उड़ती हुई-सी कानाफूसी मेरे कानों में पड़ी कि वह आदमी जगतार के खिलाफ सरकारी गवाह बनने जा रहा था...उसी की सजा मिली है उसे। उफ्...आज भी वह दृश्य सतीश रावण ने उसके जिस्म को कांपते हुए साफ महसूस किया।

उसने उसकी छातियों पर हाथ फेरा और बोला—

"कौन थी वह औरत...?"

"मुझे क्या पता...?"

"मेरा मतलब है...क्या तुमने उसे फिर कभी देखा?"

"नहीं...शुरू-शुरू में रोज आते-जाते वक्त उस घर को देखा करती थी...और जब भी मेरी निगाह उस पर पड़ती थी, तो मैं कांप उठती थी...मगर फिर धीरे-धीरे मैं सामान्य जीवन की अभ्यस्त हो गई।"

"कहां है उसका घर...?" पूछा सतीश रावण ने।

"क्यों...?"

"हो सकता है, वहीं से मुझे कोई काम की जानकारी हासिल हो सके, क्योंकि दुश्मन का दुश्मन दोस्त होता है।"

"पता नहीं...अब वह औरत वहां रहती है या नहीं। यह भी हो सकता है कि उसने आत्महत्या कर ली हो।"

"फिर भी पता करने में क्या हर्ज है?"

"हां...पता करने में क्या हर्ज है।" मुस्कुराई देवकी और एक पता बता दिया उसे।

सतीश रावण ने पता जेहन में बिठाया और लेटकर देवकी से चिपक गया।

खेल शुरू करने की नये सिरे से तैयारी होने लगी।

□□□

□□□

जिस दरवाजे के सामने सतीश रावण के कदम रुके...वह एक लोहे की चादर का जंग खाया दरवाजा था...जिसके दायें-बायें की दीवारों पर प्लास्टर कई जगहों से उधड़ा हुआ था तथा नीचे से ईंटें नजर आ रही थीं।

इस वक्त वह कल की तरह सिक्ख युवक के वेश में ही था।

देवकी के दफ्तर जाने के उपरान्त वह घर से निकला और एक टैक्सी पकड़कर सीधा यहां आ पहुंचा था।

उसने आसपास के मकानों की तरफ देखा तो सभी मकान उसे उस मकान से बेहतर नजर आये।

उसने कदम आगे बढ़ाया और लोहे की जंग लगी चादर पर हाथ मारा।

'खड़...खड़...।' आवाज उभरी।

शीघ्र ही दरवाजा खुला।

सामने करीब तीस साल की एक औरत खड़ी थी, जिसके बाल बिखरे हुए थे...चेहरा ऐसे नजर आ रहा था, जैसे उसका सब कुछ लुट चुका हो। सफेद रंग की सूती साड़ी पहने थी वह...मगर फिर भी साफ नजर आ रहा था कि कपड़ों के पीछे वह काफी शानदार जिस्म छुपाये हुए है।

औरत ने सूनी आंखों से उसे देखा।

"सतश्री अकाल...।" सतीश रावण ने दोनों हाथ जोड़े।

"कहिये...?" औरत मरी हुई आवाज में बोली।

"जी मैनूं आपसे कुछ काम है...?" सतीश रावण पंजाबी में हिन्दी का मिश्रण करते हुए बोला।

"लेकिन मैं तो आपको नहीं जानती।"

"मैं भी तुहानु पहली बार देख रहा हूं...मुझे तो यह नहीं पता कि जिससे मिलने के लिये मैं ऐथे आया हूं, ए तुसी ही हो...।"

औरत के चेहरे पर असमंजसता के भाव उभरे।

"काम क्या है...?" वह बोली।

"ओ काम ऐथे नहीं बताया जा सकदा...अगर तुहानु एतराज न हो तो...।"

"आइए...।" औरत एक तरफ हटी।

सतीश रावण भीतर दाखिल हो गया।

दरवाजा बन्द कर औरत सतीश रावण को जिस कमरे में ले गई...वह अपनी कहानी खुद कह रहा था कि किसी वक्त वह बहुत शानदार ढंग से सजा करता था, मगर रख-रखाव की कमी तथा पैसों की किल्लत से उसकी काया बिगड़ गई।

कमरे में बीचों-बीच शानदार सोफा पड़ा था, जिसकी गद्देदार बांहों में अब सुराख हो गये थे। सोफे की गद्दियां भी क्रैक हो रही थीं। बीच में पड़ा शीशे का सैंटर टेबल अभी ठीक-ठाक था। एक तरफ स्टील के स्टैण्ड पर कलर टी.वी. रखा था तथा दीवारों पर पेंटिंग्स टंगी हुई थीं, जिनमें से दो तो फटकर लटक रही थीं।

"बैठिये...।" औरत बोली।

सतीश रावण एक सोफा चेयर पर बैठ गया।

औरत उसके सामने बैठ गई।

"कहिये...क्या काम है...?" वह बोली।

सतीश रावण ने पहलू बदला और गम्भीरता से बोला—

"बताने से पहले मैं यह जानना चाहूंगा कि तूसी वहीं हो जिसके साथ जगतार के आदमियों ने बदसलूकी की थी?"

औरत का रंग एकदम से फीका पड़ गया। आंखों में बदहवासी

उभर आई।

"त...तुम कौन हो...?"

"मैं भी आप ही की तरह उसके जुल्मां दा सताया हुआ हूं...।" सतीश रावण गम्भीरता से बोला—"लखनपुर में आये मुझे अभी दस दिन ही हुए हैं...जिनमें पहले दे तीन दिन मेरे नू वो कहर टूटा कि मैं सत दिन तक मंजी तो नहीं उठ सका। अजे कल रात ही मैनूं तुहाड़ा पता लगा कि तुहाडे नाल दी जुल्म हुए हैं...।"

"हां...।" औरत की आंखें बह निकलीं—"मैं ही वो बदनसीब हूं...जिसे सैकड़ों लोगों के बीच जगतार कुत्तों ने नंगा करके उसकी इज्जत लूटी...और उसे विधवा बना दिया।"

"ओह।"

"मैं ही वो बदनसीब चांदनी हूं, जिसे पहले उसे पति ने मैला किया...और जब पति ने उसे मैली चांदनी को साफ करने की कोशिश की तो उन कमीनों ने इस चांदनी की इज्जत के चीथड़े उड़ा दिये।"

सतीश रावण ने गहरी सांस छोड़ी और गम्भीरता से बोला—

"आप अपने बारे में दसेंगी चांदनी जी तुहाडे नाल क्या बीती...?"

"म...मगर तुम...?"

"मेरा नाम गनेश लालने...ते मैं...।"

"मगर तुम तो सिक्ख हो...और तुम्हारा लहजा भी पंजाबी है...फिर...।"

"यह दाढ़ी-मूंछ नकली है चांदनी जी...और मैं पंजाबी लहजे मे जानबूझ कर बोल रहा था...ताकि अगर आप वो नहीं हैं जिससे मिलने मैं यहां आया था तो किसी को मुझ पर शक न हो।"

इस बार सतीश रावण हिन्दी में बोला।

"लेकिन यह मेकअप...।"

"जगतार से बचने के लिये अपनी सूरत बदल रखी है मैंने...।"

"ओह।"

"आपकी तरह न जाने कितने ही लोग जगतार के खौफ से उसके जुल्मों को सह कर चुप बैठे हैं...लेकिन मैं चुप नहीं बैठा...बल्कि मैंने बाकायदा उसके खिलाफ जंग छेड़ दी है...।"

"अकेले...?" हैरानी से बोली चांदनी।

"मेरी हिम्मत मेरे साथ है...मेरा हौसला मेरे साथ है चांदनी जी और मैं अपनी हिम्मत और हौसले के साथ उसे दो घाव भी दे चुका हूं। उसके गुलाम रमेश और उसकी पत्नी तथा इंस्पैक्टर शिवदयाल का नामोनिशान मैंने इस दुनिया से मिटा दिया है।"

"क्या...?" उछल पड़ी चांदनी...।" त...तुमने उन्हें मार

डाला।

"जी हां...अगर विश्वास न हो पता कर लीजिये। कोई अखबार पढ़ लीजिये...आपको मेरी बात पर यकीन हो जायेगा।"

चांदनी हैरानी से उसे देखने लगी।

सतीश रावण ने गहरी सांस छोड़ी और आगे बोला—

"मेरा निशाना जगतार है...लेकिन मुझे उस तक पहुंचने का रास्ता नहीं मिल रहा। हालांकि रमेश ने मरने से पहले मुझे काफी कुछ बताया था...मगर जगतार को और भी तगड़ी चोट पहुंचाने के लिये मुझे किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश थी, जो कि उसका दुश्मन हो। तभी मुझे आपके बारे में पता चला। हो सकता है, आपसे कुछ हासिल हो जाये...यही सोच कर मैं यहां आ गया!"

"मेरा पता कैसे चला?"

"मेरे एक हमदर्द ने बताया। जगतार की कैद से छूटकर जब मैं वहां से भागा था तो उसी ने मुझे पनाह दी थी।"

"कौन है वो...?"

"सॉरी...मैं उसका नाम-पता नहीं बता सकता। मैं नहीं चाहता कि उस पर जरा-सी भी आंच आये...उसी की बदौलत ही तो मैं आज जिन्दा हूं, वरना कब का मर-खप गया होता।

"हुआ क्या तुम्हारे साथ...?"

सतीश रावण ने उसे भी वही कहानी सुना दी जो देवकी को सुनाई थी, फिर बोला—

"मेरे बारे में तो आपने सब कुछ जान लिया...अब अपने बारे में बताइए...।"

चांदनी के चेहरे पर गम्भीरता उभर आई।

"राहुल से मेरी लव मैरीज हुई थी...।"

"राहुल...!"

"मेरा पति...।"

"ओह।"

"शादी से पहले मुझे नहीं पता था कि वह जगतार के काले धन्धों में उसका साथी था। मुझे बस यही पता था कि वह जगतार के पास नौकरी करता है। मैं तो जगतार को जानती भी नहीं थी...ऐसे मुझे उससे गैरकानूनी काम का पता कैसे चलता। इसका पता मुझे शादी के दो साल बाद लगा, जब एक रोज जगतार का फोन रात को आया था। उस वक्त हम दोनों सो रहे थे, जब फोन आया था। फोन की बैल पर मैं जाग गई थी...मगर राहुल को पता नहीं चला कि मैं जाग रही हूं।"

फोन पर जो बात राहुल ने की...उसे सुनकर मुझ पर तो जैसे आसमान ही टूट पड़ा था।"

"क्या बात की थी राहुल ने... ?"

"वह कह रहा था कि एक किलो हेरोइन शहर में वितरित कर दी गई है और उससे पचास लाख का शुद्ध मुनाफा हुआ है और यह भी कहा था कि कल को आने वाली स्मैक को वह ठीक वक्त पर रिसीव कर लेगा।"

"फिर... ?"

"उस वक्त तो मैं कुछ भी नहीं बोली और अगले रोज वह सुबह-सुबह ही चला गया। शाम को चार बजे जब वह वापिस आया तो मैं फट पड़ी उस पर और उससे साफ कह दिया कि वह गैरकानूनी धन्धा करता है। साथ ही यह भी कहा कि उसने मुझे धोखा दिया। मेरे विश्वास को तोड़ा।"

"फिर... ?"

"राहुल ने मेरी बात का कोई जवाब नहीं दिया। तब मैंने उससे कहा कि या तो वह गलत धन्धे छोड़ दे... वरना मैं उसे छोड़ दूंगी। उस वक्त उसने मुझसे कहा कि गुनाहों की जिस दलदल में वह फंस चुका है... उससे अब मरकर ही निकला जा सकता है। उसका फैसला सुना मैं और भी भड़क उठी और मैंने उसी वक्त उसका साथ छोड़ दिया।"

चांदनी ने गहरी सांस छोड़ी और अपनी बात आगे बढ़ाते हुए बोली—

"हफ्ता भर तो मैं उससे अलग रहकर उबलती रही और जब मेरा मन शांत हुआ तो मुझे महसूस हुआ कि राहुल ठीक कह रहा था। ऐसे धन्धे में आदमी जाता तो अपनी मर्जी से है... लेकिन अपनी मर्जी से इससे किनारा नहीं कर सकता। राहुल को दिलो-जान से चाहती थी मैं... और मैं यह भी जानती थी कि ऐसे काम करने वालों की जिन्दगी बहुत छोटी होती है। कभी भी किसी भी वक्त कानून की गोली उसे अपना शिकार बना सकती है। सो मैंने काफी सोचने-विचारने के बाद यही फैसला किया कि मैं राहुल को धीरे-धीरे सही रास्ते पर लाऊंगी।"

"और आप वापिस राहुल के पास आ गई?"

"हां।" गहरी सांस छोड़ी चांदनी ने।

"फिर तो राहुल ने आपका खूब मजाक उड़ाया होगा?"

"नहीं... मेरी तरह वह भी मुझे बेपनाह प्यार करता था। तभी तो उस रोज मुझसे लिपटकर वह खूब रोया था... और यह कसम भी दी कि आइन्दा मैं उसे कभी भी छोड़कर न जाऊं... ।"

"फिर... ?"

चांदनी ने पहलू बदलते हुए अपनी साड़ी के पल्लू को दुरुस्त किया और बोली—

"अब मैं उसकी राजदार हो गई थी। वह जब भी घर आता तो मुझे सब कुछ बताता कि उसने आज क्या किया... यहां तक कि वह जगतार के बारे में भी मुझे सब कुछ बता देता था। इधर मैं भी धीरे-धीरे उसके दिल में यह बात बिठा रही थी कि इस कीचड़ में धंसने का अंजाम बहुत बुरा होता है।

करीब एक साल बाद मैं गर्भवती हो गई और तब मैंने राहुल से कहा कि जरा सोचो कि अगर मुझे कुछ हो गया तो उसके बच्चे का क्या भविष्य होगा। लोग उसे चोर-स्मगलर की औलाद कहकर पुकारेंगे।

और इस प्रकार जो काम मैं साल भर में नहीं कर पाई... वह हमारे बच्चे ने मेरे पेट में पहुंचते ही कर दिया।

राहुल को अब नफरत-सी हो गई थी इस धन्धे से... मगर वह मजबूर था... वह छोड़ नहीं सकता था उसे, क्योंकि वह जानता था कि इधर उसने जगतार से किनारा किया उधर जगतार उसे गोली मार देगा।"

"उसका सोचना सही था।"

सतीश रावण बोला।

"मगर अब वह दिल से इस धन्धे को छोड़ना चाहता था... सो मैंने उसे एक तरीका बताया।"

"क्या... ?"

"मैंने राहुल से कहा कि वह सीधा पुलिस के पास चला जाये और सरकारी गवाह बनने का वायदा लेकर जगतार की हकीकत बयान कर दे। इस प्रकार जगतार जेल पहुंच जायेगा... और हमारे सिरों पर लटकी उसके खौफ की तलवार हट जायेगी।"

"फिर... ?"

"काश कि मैं राहुल को यह सलाह न देती।" चांदनी की आवाज भर्रा गई—"तो आज मैं विधवा न होती... और मेरी गोद में मेरा बच्चा खेल रहा होता... ।" उसकी आंखें बह निकलीं।

"क्या हुआ था... ?"

सतीश रावण अपने स्वर को और भी गम्भीर करते हुए बोला।

"राहुल सीधा इंस्पैक्टर शिवदयाल के पास गया था। उसे पता नहीं था कि शिवदयाल भी जगतार का ही कुत्ता है।"

"ओह।"

"शिवदयाल ने उसे राहुल को मीठी बातों में फंसाकर उससे जगतार के बारे में सब कुछ पूछ लिया... साथ ही उसे सरकारी गवाह बनाने का वायदा कर घर वापिस भेज दिया। बस... उसी शाम हम पर आफत टूट पड़ी। जगतार के कुत्ते यहां पहुंच गये और हम दोनों को घर से खींचकर बाहर सड़क पर ले गये... जहां उन्होंने पहले राहुल

को बहुत मारा... फिर मेरे पति और दुनिया के सामने मेरी इज्जत लूटी और राहुल को मार डाला।"

"ओह।"

"मैं चीखती रही... चिल्लाती रही... यहां तक कि मैंने अपने गर्भवती होने की भी दुहाई दी... लेकिन किसी को भी मुझ पर तरस नहीं आया... सरेआम लूट लिया गया मुझे।" रो पड़ी चांदनी।

सतीश रावण गम्भीरता ओढ़े उसे देखता रहा।

थोड़ी देर रोने के बाद चांदनी ने साड़ी के पल्लू से अपनी आंखें पोंछी और बोली—

"मैं गिरती पड़ती पुलिस स्टेशन गई और जब मैंने शिवदयाल को सारी बता बताई तो शिवदयाल उल्टे मुझे ही बुरा-भला कहने लगा। साथ ही यह भी धमकी दी कि अगर मैंने जगदार के खिलाफ आवाज उठाने की कोशिश भी की तो मुझे भी खत्म कर दिया जायेगा। और इस तरह मैं अन्दर-ही-अन्दर मरती हुई... खून के आंसू पीते हुए अपनी जिन्दगी की गाड़ी चलाने लगी।"

"और आपका बच्चा...?"

"वो तो मेरे पेट में उसी वक्त ही दम तोड़ गया था, जब उन कुत्तों ने मेरी इज्जत लूटी थी।"

सतीश रावण ने गहरी सांस छोड़ी और बोला—

"सचमुच... बहुत ही दुख भरी कहानी है आपकी...।"

चांदनी ने आंसू पोंछे और बोली—"अब तो हर वक्त ऊपर वाले से एक ही प्रार्थना करती हूं कि जगदार को मौत आ जाये... उसका सर्वनाश हो जाये, मगर लगता है कि ऊपर वाला भी ऐसे लोगों से डरता है। तभी तो उसका कुछ नहीं बिगाड़ पा रहा।"

"नहीं चांदनी जी... ऐसी बात नहीं कहते। कई मामलों में भगवान भी मजबूर हो जाता है। किसी की प्रार्थना पर अगर वह यूं ही हर किसी को मारने लगे तो फिर इन्सान बचेगा ही कहां। उसकी बनाई यह दुनिया भी खत्म हो जायेगी। इसीलिये उसने खुद को अपने ही बनाये नियमों में बांध रखा है... और हर किसी की मौत का वक्त-जगह पहले ही तय कर देता है। जैसे ही वह वक्त आयेगा... मौत तुरन्त उस व्यक्ति को झपट लेगी।"

सतीश रावण ने गलत नहीं कहा था। ऊपर वाला अपने बनाये नियमों से खुद ही बंधा होता है... और इसका जीता-जागता सबूत खुद था।

ऊपर वाले की एक छोटी-सी गलती के कारण वह मर कर फिर से जी उठा था... और कई शरीर भी बदल लिये थे उसने।

इधर चांदनी हैरानी से उसे देख रही थी। ऐसी ज्ञान की बातें तो सिर्फ माहत्माओं के मुख से निकलती है, जबकि उसके सामने

तो प्रतिशोध से सुलग रहा व्यक्ति बैठा था... और अपने प्रतिशोध की आग में वह दो कुनबों को राख भी कर चुका था।

इधर सतीश रावण अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कह रहा था—

"लगता है, जब जगतार की मौत करीब आ गई है। तभी तो ऊपर वाले ने मुझे आपसे मिलाया है, ताकि आप मेरी मार्गदर्शक बनें—और मैं दुश्मनों का संहार करता चलूं...।" हड़बड़ाई चांदनी।

"ल... लेकिन मैं तुम्हारा मार्गदर्शन क्या कर सकती हूं... ?" वह बोली।

सतीश रावण ने पहलू बदला और चांदनी के चेहरे पर निगाहें गाड़ते हुए होंठों पर गम्भीर मुस्कान लाते हुए बोला—

"अपनी आप बीती के दौरान आपने कहा था कि आप राहुल की राजदार बन गई थीं... और वह आपको जगतार के बारे में काफी कुछ बताता रहता था।"

"हां... कहा था।"

"बस आप मुझे जगतार के बारे में सब कुछ बता दीजिये जो आप जानती हैं... फिर देखिये... मैं कैसे पटकता हूं उसे।"

चांदनी ने गहरी सांस छोड़ी।

"जगतार के बारे में जितनी जानकारी मुझे राहुल से मिली थी... उससे तुम जगतार का कुछ नहीं बिगाड़ सकते। वह मुझे जगतार की शानो-शौकत उसके इर्द-गिर्द खड़े उसके गार्डों के बारे में ही बताता था।"

"ओह।"

"वह जगतार का कोई खासम-खास नहीं था। जगतार से उसका सामना एक-दो दफा ही हुआ था। हां, अगर तुम प्रताप को काबू कर लो तो उससे तुम्हें बहुत कुछ हासिल हो सकता है... ।"

"प्रताप कौन... ?"

"जगतार का एक सिपहसालार है... ।" बोली चांदनी—"राहुल को वही ऑर्डर दिया करता था। यानि राहुल प्रताप के अन्डर में काम करता था। जगतार के बारे में काफी कुछ जानता है।"

"वो कहां मिलेगा?"

"बिशन सरूप कॉलोनी में उसका घर था... ।"

"था... ?"

"मैं उस वक्त की बात कर रही हूं, जब राहुल जिन्दा था। उसकी मौत के बाद प्रताप या किसी और के बारे में मैंने कोई खोज-खबर नहीं ली। ऐसे में हो सकता है, वह अपना वो मकान छोड़ चुका हो। इसीलिये मैंने कहा था। वैसे उम्मीद है कि वह अभी भी वहीं रहता हो।"

"और क्या कुछ बताया था राहुल ने प्रताप के बारे में?"

चांदनी उसे बताने लगी।

सतीश रावण ने उससे मिली सारी जानकारी को जेहन में जमा किया और बोला—

"प्रताप का पता। मेरा मतलब है विशन सरूप कालोनी में वह कहां रहता है?"

चांदनी ने कुछ पल सोचने की मुद्रा बनाई.. फिर बोली—

"नम्बर तो मुझे याद नहीं...पता नहीं राहुल ने बताया भी था या नहीं। हां...इतना जरूर याद है कि प्रताप के घर के ऐन पीछे...यानि उसकी पिछली दीवार के साथ बारात घर है।"

"मैं खोज कर लूंगा।" बोला सतीश रावण और फिर उससे कुछ और जानकारियां लेकर खड़ा हो गया।

"ऊपर वाले ने चाहा तो बहुत जल्द ही आपके कानों में जगतार की मौत की खबर पहुंच जायेगी!" वह बोला।

"चाय तो पीते जाओ।" बोली चांदनी।

"बस धन्यवाद!" सतीश रावण ने हाथ जोड़ दिये, फिर कुछ सोचकर बोला—"वैसे अगर आप मुझसे सम्पर्क करना चाहें तो मेरा पता नोट कर लीजिये....।" कहकर रावण ने एक फर्जी पता उसे बता दिया, फिर बोला—"कोई भी जानकारी याद होते ही जो कि मेरे मतलब की हो...आप मुझे मेरे इस पते पर फौरन बता दीजियेगा...मैं वहां चाहे न होऊं...आप उस घर के मालिक को वह जानकारी बता देना...जानकारी मुझ तक अपने आप पहुंच जायेगी।"

चांदनी ने सिर हिला दिया।

और फिर सतीश रावण ने एक बार फिर उसे हाथ जोड़े और वहां से निकल गया।

मकान से बाहर निकलते ही उसके होठों पर एक ऐसी भयानक मुस्कान नाच रही थी जो साफ बता रही थी कि उसके शैतानी दिमाग में कोई हरामीपने से भरी स्कीम जन्म ले चुकी है।

❑❑❑

❑❑❑

कान्फ्रेंस रूम था वह, जिसमें कि एक टेबल के दोनों तरफ कुर्सियों पर पुलिस अधिकारी बैठे थे। सामने एक ऊंची पुश्त वाली कुर्सी पर पुलिस कमिश्नर बैठे उस मीटिंग की अध्यक्षता कर रहे थे।

सभी के चेहरों पर गम्भीरता छाई हुई थी।

"आफीसर्स...!" तभी कमिश्नर ने बात शुरू की—"पिछले दिनों हमारे डिपार्टमेंट के दो अधिकारियों के खून हुए। पहले सब इंस्पेक्टर खरे को बलात्कारियों ने उस वक्त निशाना बनाया...जब वह उन्हें पकड़ने के लिये उनका पीछा कर रहे थे...और लगभग

उसी वक्त थाने पर हमला बोलकर कुछ गुण्डा तत्व न सिर्फ एक अपराधी को छुड़ाकर ले गये, बल्कि वह सारा गैरकानूनी सामान भी ले गये जिसे कि हमारे अधिकारियों ने अपनी जांबाजी से पकड़ा था। तीस करोड़ की कीमत थी उस गैरकानूनी माल की...जिसकी लिस्ट आप लोग भी पढ़ चुके हैं।

उस माल को पाने के लिये हमारे छह जवानों को भी अपनी जान से हाथ धोना पड़ा...और अब कल दिन-दहाड़े हत्यारों ने इंस्पैक्टर शिवदयाल को उसके परिवार समेत खत्म कर दिया। शिवदयाल की पत्नी की पोस्टमार्टम रिपोर्ट से भी पता चला है कि उसे खत्म करने से पहले उससे सम्भोग किया गया था, जो कि बलात्कार भी हो सकता है और सम्भोग एक ही आदमी ने किया था जो कि यह जाहिर करता है कि शिवदयाल को उसके परिवार के साथ खत्म करने वाला एक ही आदमी है—

और वो आदमी है गनेश लाल।

वह गनेश लाल जिसे तीस करोड़ के गैरकानूनी माल के साथ पुलिस ने पकड़ा था और फिर उसके साथी उसे थाने से फरार करा कर ले गये थे।"

कहकर कमिश्नर ने ए.एस.आई. जमशेद राय की तरफ देखा—

"टॉर्च होने के दौरान गनेश लाल ने कुछ बताया था...?"

"बस अपना नाम बताया था सर...।" जमशेद राय खड़ा होते हुए बोला—"इसके अलावा और कुछ नहीं बताया था। उसने तो यह तक कबूल नहीं किया कि पकड़ा गया माल उसका है।"

"यानि वह कोई बहुत ही पहुंचा हुआ अपराधी है।"

जमशेद राय हिचकिचाया।

"कुछ कहना चाहते हो...?"

"यस सर...वह सर...।"

"खुलकर कहो...क्या कहना चाहते हो...?"

जमशेद राय का हौंसला कुछ बढ़ा। उसने एक नजर सभी अधिकारियों पर डाली और फिर कमिश्नर की तरफ देखते हुए बोला—

"जितनी बुरी हालत गनेश लाल की हुई थी सर...उससे ऐसा लग रहा था कि माल के बारे में उसने जो कुछ भी कहा था, सच कहा था...।"

"कि माल उसका नहीं है?"

"यस सर...।"

"तो फिर किसका माल था वह?"

"ज...जगतार का सर।" हिचकिचाया जमशेद राय।

"व्हाट नॉनसेंस...।" गुस्से भुनभुनाया कमिश्नर—"जानते हो किसका नाम ले रहे हो तुम। जगतार इस शहर की प्रतिष्ठित हस्ती

है। उसका लखनपुर में वो सम्मान है जो यहां के एम.एल.ए. का भी नहीं। बड़े-बड़े मन्त्री तक उसका हुक्का भरने उसकी कोठी प आते हैं...और तुम उसको अपराधी ठहरा रहे हो?"

"स...सॉरी सर...।" हड़बड़ाया-सा बोला जमशेद राय।

"जगतार के खिलाफ कोई सबूत...कोई दलील है तुम्हारे पास जिससे तुम उस पर इल्जाम लगा सको?"

"स...सबूत तो नहीं सर...मगर दो-ढाई साल पहले की एक घटना मुझे अभी भी याद है...जिसे मैं अभी भी याद करता हूं तो मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं।"

"कैसी घटना...?"

"उस वक्त मैं हैडकांस्टेबिल था [illegible] थाने में राहुल नाम का एक व्यक्ति आया था। उस वक्त मैं थाने के प्रांगण में खड़ा था। राहुल ने मुझसे कहा कि वह इंस्पेक्टर साहब से मिलना चाहता है।"

"फिर...?"

दिलचस्पी भरे स्वर में पूछा कमिश्नर ने।

अन्य सभी अधिकारी भी उसे गहरी निगाहों से देख रहे थे।

जमशेद राय ने थूक सटकी और अपनी बात को आगे बढ़ाया—

"मैंने उससे कारण पूछा कि वह इंस्पैक्टर साहब से क्यों मिलना चाहता है...तो उसने बताया कि वह जगतार के लिये काम करता है...और अब उसकी आंखें खुल गई हैं...और वह उसके खिलाफ सरकारी गवाह बनना चाहता है। मैंने फौरन उसे इंस्पैक्टर साहब के आफिस में पहुंचा दिया...।"

"वहां क्या कहा उसने...?"

"इसका मुझे पता नहीं...क्योंकि इंस्पैक्टर साहब ने मुझे बाहर भेज दिया था।"

"फिर...?"

"और अगले रोज ही राहुल का उसके घर के सामने सरेआम कत्ल हो गया...और इसी तरह सरेआम उसकी पत्नी की इज्जत लूट ली गई।"

"ओह नो।" बुरी तरह से उछल पड़ा कमिश्नर।

अन्य अधिकारी भी चौंक पड़े।

"फिर क्या हुआ...?"

"कुछ नहीं सर...।" गहरी सांस छोड़ी जमशेद राय ने—"इंस्पैक्टर साहब ने इस तरह तफतीश की जैसे कोई बड़ी घटना न हुई हो...यहां तक कि उन्होंने एफ.आई.आर. भी दर्ज नहीं की...और इस प्रकार वह घटना ठण्डे बस्ते में चली गई।"

"क्या तुमने विरोध नहीं किया?"

"एक हवलदार था मैं सर। मेरी इतनी हिम्मत कहां कि अपने

अधिकारी से ज़ुबानदराजी करूं... ।"

"क्या जगतार के विरुद्ध कोई कार्यवाही की इंस्पैक्टर शिवदयाल ने?"

"नो सर।"

कमिश्नर ने गहरी सांस छोड़ी और बोला—

"तुम्हारी बातें दिवंगत इंस्पैक्टर शिवदयाल के खिलाफ जहर उगल रही है कि वह जगतार का पिट्ठू था।"

जमशेद राय कुछ नहीं बोला... बस चुपचाप खड़ा रहा।

"साथ ही जगतार के गुनाह होने की तरफ भी इशारा कर रही हैं... लेकिन इससे यह तो साबित नहीं होता कि थाने पर हमला जगतार ने ही किया था और तीस करोड़ का माल भी उसी का था।"

"गुस्ताखी माफ हो सर... दो-ढाई साल पहले जब जगतार इतना खतरनाक था कि उसने सरेआम एक औरत की इज्जत लुटवाई... और एक आदमी का कत्ल किया... तो इतने अर्से बाद अब वह अण्डरवर्ल्ड का किंग होना चाहिये। गनेश लाल को पहली बार एक अपराधी के रूप में पकड़ा गया था... वो भी तीस करोड़ के माल के साथ। तीस करोड़ के माल के साथ एक अन्जान आदमी का पकड़ा जाना हैरत में डालता है सर। इस शहर के जिसके पास दस लाख की भी रकम है... वह भी लोगों में जाना-पहचाना हो जाता है। तीस करोड़ के माल वाले की तो बहुत ही पूछ होनी चाहिये। बेशक उसने नया धन्धा शुरू किया हो... फिर भी माल खरीदने के लिये उसके पास दस-बीस करोड़ तो होना ही चाहिये था।"

"हो सकता है, वह बाहर का आदमी और यहां पैर पसारने के लिये माल के साथ दाखिल हुआ हो।"

एस.पी. बिजेन्द्र पाल ने अपनी राय दी।

जमशेद राय ने उसकी तरफ देखते हुए सिर झुका लिया।

"जवाब दो।"

जमशेद राय तब भी कुछ नहीं बोला।

"तुम खुलकर बोल सकते हो जमशेद राय... ।" कमिश्नर बोला—"घबराने की कोई जरूरत नहीं... ।"

जमशेद राय ने कमिश्नर की तरफ देखा और दबे स्वर में बोला—

"म... मैं एस.पी. साहब की बात से सहमत नहीं हूं सर... ।"

"क्यों... ?"

"यह काम कोई दुकानदारी नहीं कि बाहर से आये और दुकान खोलकर बैठ गये। ऐसे धन्धों के लिये पहले शहर में अपने प्रतिद्वन्द्वी को परास्त करना पड़ता है... तब माल लाया जाता है... अगर गनेश लाल पैर जमाने के लिये यहां माल लाता तो उससे पहले यहां खूब

खून-खराबा होता... मगर खून-खराबा उसके पकड़े जाने के बाद हुआ।"

"हुआ तो... ।"

एस.पी. बिजेन्द्र पाल बोला।

"यस सर... हुआ तो... मगर वह खून-खराबा और तरीके का था। कल इंस्पैक्टर साहब ने मुझसे कहा था कि उन्हें एक गुप्त फोन मिला है, जिसमें यह कहा गया था कि गनेश लाल जिन्दा है और... ।" सब कुछ बताया जमशेद राय ने... फिर आगे बोला—"अगर थाने से गनेश लाल को उसके आदमी छुड़ाकर ले गये थे तो वह किसी बन्द कमरे में हुक्म सुना रहा होता। यूं सड़कों पर न घूमता कि कोई उसे पहचान ले और फिर इस शहर में उसे पहचाना किस मुखबिर ने जबकि पुलिस भी उसे नहीं जानती थी।"

"तो फिर उसे छुड़ाया किसने... ?"

"जगतार ने... ।"

"क्यों... वह भला क्यों छुड़ाने लगा?" बोला बिजेन्द्र पाल—"क्या वह जगतार का आदमी था?"

"उसका आदमी तो हरगिज नहीं है वह।"

"फिर... ?"

"आप शायद भूल रहे हैं सर... जिस वक्त गनेश लाल माल के साथ पकड़ा गया था... उसके चार साथी एक्सीडेंट में मारे जा चुके थे... मगर मुझे नहीं लगता कि वे उसके साथी थे, क्योंकि अगर वे उसके साथी होते तो गनेश लाल भी सूमो में होता... उसे मौत बेशक न आई... मगर उसे गहरी हल्की चोटें तो जरूर लगनी चाहिये थीं... मगर जब वह गिरफ्तार हुआ तो उसे एक खरोंच भी नहीं लगी थी। यानि वह वहां एक्सीडेंट के बाद पहुंचा था। उस एक्सीडेंट वाले स्थान से करीब छः-सात किलोमीटर दूर एक वैन के पास भी कुछ लाशें मिली थीं, जिन्हें स्टेनगनों से मारा गया था और जो सूमो में लाशें मिली थीं वे सभी यहीं लखनपुर के निवासी थे।"

"तुम कहना क्या चाहते हो?" कमिश्नर ने पूछा।

"सर... ।" जमशेद राय बोला—"मेरे हिसाब से जगतार के कुछ साथी बागी हो गये थे। उन्होंने जगतार के तीस करोड़ के आ रहे माल को लूटा और माल लाने वालों को मार डाला। उनकी बदकिस्मती कि जिस सूमो में माल लेकर वे भाग रहे थे, उसका एक्सीडेन्ट हो गया और वे सभी मारे गये। इत्तफाक से गनेश वहां पहुंच गया। इतना माल देखकर या तो उसका मन डोल गया... फिर वह भीतर मरे पड़े लोगों को निकालने के लिये माल को बाहर निकालने लगा और तभी वह गिरफ्तार हो गया।"

जमशेद राय ने सांस ली और आगे बोला—

इंस्पैक्टर साहब जगतार के आदमी थे... सो उन्होंने उसे खबर

कर दी और जगतार ने यही समझा कि गनेश लाल ने उसके आदमियों को गद्दार बनाकर पता नहीं पहले भी कई बार माल लूटा हो... । सो उसने उससे यह सब जानने के लिये और यह जानने के लिये कि उसके साथ कौन-कौन उसका आदमी मिला हुआ है, थाने पर हमला किया और गनेश लाल को अपने माल के साथ छुड़ा लिया... । मगर गनेश लाल उसकी पकड़ से भाग निकला... सो जगतार ने अपने आदमी उसके पीछे लगाये ही... साथ ही इंस्पैक्टर साहब को भी फोन कर दिया।"

"जिसे तुम गुप्त कॉल कह रहे हो।"

"यस सर।"

"इसका मतलब तो यह हुआ कि शिवदयाल को गनेश लाल ने मारा है।"

"प्रतिशोध की आग में जलते हुए ही गनेश लाल ने इंस्पैक्टर साहब को मारा होगा।"

"और सब-इंस्पैक्टर... खरे उसका खून किसने किया।" पूछा कमिश्नर ने—"रमेश और रेखा को किसने मारा?"

जमशेद राय चुप रहा... उसके पास कमिश्नर के इन सवालों का कोई जवाब नहीं था।

कमिश्नर ने पहलू बदला और चेहरे पर गम्भीरता का आवरण ओढ़ते हुए बोला—

"दो-ढाई साल पहले की घटना तो जगतार को अण्डरवर्ल्ड से सम्बन्धित बताती है सर।"

बोला जमशेद राय।

"वह घटना अब पुरानी हो चुकी है। हमें मौजूदा हालात को देखना है। इन कुछ ही दिनों में जो खून-खराबा हुआ है... हमने उसे साल्व करना है।"

"यस सर... ।"

"वैसे अगर तुम्हारी थ्योरी को सच माना जाये तो एक बात और भी सामने आती है।"

जमशेद राय प्रश्नभरी निगाहों से उसे देखने लगा।

"बेशक गनेश लाल इस मामले में निर्दोष था... मगर जिस तरह उसने शिवदयाल को उसके परिवार समेत मारा है... और जिस तरह उसने उसकी पत्नी की हत्या से पहले उसकी इज्जत लूटी है... उससे यह जाहिर होता है कि गनेश लाल जगतार और शिवदयाल के जुल्मों का सताया कोई साधारण व्यक्ति नहीं था, जिसने प्रतिशोध में शिवदयाल को मारा हो... बल्कि वह कोई आदि मुजरिम है जिसे खून-खराबा करने का न केवल अच्छा-खासा तजुर्बा है... बल्कि उसका पेशा ही यही है।"

"आप ठीक कह रहे हैं सर।"

जमशेद राय ने सहमति जताई।

कमिश्नर ने गहरी सांस छोड़ी और अपने सामने रखे पानी के गिलास को उठाकर उसमें से दो घूंट भरे और गिलास को वापिस टेबल पर रख दिया।

"मिस्टर जमशेद राय... ।" वह जेब से रूमाल निकालते हुए बोला।

"सर... ।" जमशेद राय तत्परता से बोला।

कमिश्नर ने अपने होंठ पौंछे और बोला—

"अभी तक तुमने जगतार पर शोहमद की आमद की है। दो-ढाई साल पहले की घटना बताकर तुमने जो दलील दी है, वह भी सशक्त है... लेकिन यह जगतार के खिलाफ कोई सबूत नहीं... जबकि उस जैसे प्रतिष्ठित व्यक्ति पर हाथ डालने के लिये बहुत बड़े सबूत की जरूरत है।"

"मैं समझता हूं सर... ।" जमशेद राय बोला।

"ऐसे में अगर तुम्हें यह केस सौंप दिया जाये तो तुम क्या करोगे... ?"

"जगतार पर हाथ डालने का एक रास्ता सूझा है मुझे सर।" जमशेद राय जोश भरे स्वर में बोला।

उसकी बात सुनकर कमिश्नर ही नहीं... वहां मौजूद हर अधिकारी चौंक उठा।

"यानि तुम... उस पर हाथ डाल सकते हो?"

"यस सर... ।" जोशीले स्वर में बोला जमशेद राय।

"कैसे... ?"

"दो-ढाई साल पहले राहुल की पत्नी की सरेआम इज्जत लूटी गई थी, अगर वह जगतार के खिलाफ बयान दे दे तो जगतार को अदालत के कटघरे में खड़ा किया जा सकता है।"

"वैरी गुड... ।" तारीफी अन्दाज में बोला कमिश्नर—"बहुत दूर की सोची है तुमने... अब यह बताओ कि गनेश लाल को कैसे पकड़ोगे?"

"उसके बारे में मैं अभी कुछ नहीं सोच पाया सर... लेकिन इतना तय है कि मैं उसे ढूंढने में जमीन-आसमान एक कर दूंगा।"

कमिश्नर ने गहरी सांस छोड़ी... कुछ देर सोचा, फिर बोला—

"ओ०के०... हम यह केस तुम्हें सौंपते हैं।"

"थैंक्यू सर... ।"

"और अब से थाने के एस.एच.ओ. तुम होवोगे... ।"

जमशेद राय का चेहरा खिल उठा।

"थैंक्यू सर... ।" वह बोला।

"एस.एच.ओ. का मतलब समझते हो न...यानि पूरी जवाबदेही तुम्हारी होगी।" पुलिस स्टेशन का आफिसर तुम्हें बनाया जा रहा है। इसलिये तुम्हारे हर कार्य की जिम्मेदारी तुम पर आयद होगी।"

"आई अण्डरस्टैण्ड सर... ।"

और उसके बाद कमिश्नर ने मीटिंग बर्खास्त कर दी।

□□□

□□□

'ट्रिन...ट्रिन... ।'

फोन की घण्टी बजी।

जगतार ने रिसीवर इस तरह उठाया जैसे उसका रिसीवर उठाने को मन न कर रहा हो। कलेजा यह सोचकर धड़क उठा था कि कहीं गनेश का फोन न हो...और वह फिर से कोई वारदात न कर बैठा हो और ऐसा सोचने की यही वजह थी कि अभी तक शेर खान की तरफ से कोई भी खबर नहीं आई थी, जिससे कि उसकी तबीयत खुश हो जाती।

"हैलो... ।" वह माउथपीस में बोला।

"मैं एस.पी. बिजेन्द्र पाल बोल रहा हूं जगतार साहब... ।"

दूसरी तरफ से आई आवाज को सुन बुरी तरह से चौंक पड़ा जगतार...मगर तुरन्त ही उसने खुद को सम्भाल भी लिया।

"ओह! एस.सी. साहब। कहिये...इस नाचीज की याद कैसे आ गई।" वह अपनी आवाज में मिठास लाते हुए बोला।

"शिवदयाल तो मर गया जगतार साहब...यानि इस वक्त पुलिस में आपका कोई वफदार नहीं रह गया। अब क्या कहेंगे आप?"

एक तेज झटका लगा जगतार को।

"य...यह कैसी बातें कर रहे हैं आप एस.पी. साहब?"

"इंस्पैक्टर और एस.पी. में बहुत फर्क होता है जगतार साहब...आप मेरी बात समझ रहे हैं न...?"

"मेरी तो कुछ भी समझ में नहीं आ रहा कि आप समझाना क्या चाहते हैं?"

"किस मुआवजे की बात कर रहे हैं आप एस.पी. साहब... ।"

"अब इतने भोले सनम भी मत बनो जगतार साहब...आपकी हकीकत का पता चल चुका है और बहुत जल्द आपके हाथों में लोहे के कंगन पहनाये जा सकते हैं...मेरी बात समझ रहे हैं न आप?"

न चाहते हुए भी कलेजा धड़क उठा जगतार का।

"ल...लेकिन म...मैंने किया क्या है...मैं एक शरीफ और नेक शहरी हूं...मैं... ।"

"ठीक है...अगर आप अपनी हकीकत छुपाना ही चाहते हैं

तो फरमाइये...मैं फोन रख रहा हूं... ।''

''ठहरो... ।''

''क्यों...?''

''तुम यहां आ सकते हो...?''

''तुम्हारी कोठी पर...?''

''हां... ।''

''बेशक आ सकता हूं।''

''आ जाओ...मैं तुम्हारा इन्तजार कर रहा हूं और यकीन मानो...यहां से जब तुम निकलोगे तो पूरी तरह से खुश होवोगे।''

''खुश होने के लिये ही तो फोन किया है मैंने आपको...मैं आ रहा हूं।''

''मैं तुम्हारा इन्तजार कर रहा हूं।''

कहकर उसने रिसीवर रखा और गहरी सोच में डूब गया। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि एस.पी. को उसकी हकीकत का पता कैसे लगा?

□□□

□□□

'खड़...खड़...खड़... ।'

दरवाजे की थपथपाहट चांदनी के कानों में पड़ी तो वह बैड से उतरी और कमरे से निकल कर आंगन पार करते हुए मेन डोर के करीब पहुंची।

''कौन...?'' उसने आवाज लगाई।

''पुलिस... ।'' बाहर से आवाज आई—''दरवाजा खोलो... ।''

न चाहते हुए भी चांदनी का कलेजा धड़क उठा।

''रब खैर करे... ।'' मन ही मन ऊपर वाले से प्रार्थना करते हुए उसने दरवाजा खोला।

सामने जमशेद राय खड़ा था।

होठों पर गम्भीर मुस्कान लिये हुए।

''कहिये...?'' चांदनी बोली।

''मैं ए.एस.आई. जमशेद राय...तुम ही से मिलने आया हूं।''

''म...मगर...मैंने तो ऐसा कोई काम नहीं किया कि पुलिस को यहां आने की जरूरत पड़े।'' हड़बड़ाई चांदनी।

''घबराओ नहीं...मैं तुम्हें इन्साफ दिलाने के लिये आया हूं... ।''

''इन्साफ...!'' चांदनी के चेहरे पर हड़बड़ाहट फैल गई।

''हां इन्साफ... ।''

''लेकिन... ।''

''बात अगर बैठकर की जाये तो बेहतर होगा।''

"सॉरी...मैं घर में अकेली हूं...।" मुंह बिगाड़ते हुए बोली चांदनी।

"मैं जानता हूं...दो-ढाई साल पहले तुम्हारे पति का कत्ल हो गया था और तुम्हारी इज्जत...।"

"तुम्हें गलतफहमी हुई है...मैं वो औरत नहीं हूं...मेरे पति को तो हार्टअटैक हुआ था...और न ही मेरी इज्जत को कोई दाग लगा है। तुम्हें शायद किसी और की तलाश है।"

कहकर उसने उसके मुंह पर दरवाजा बन्द कर दिया।

जमशेद राय कशमकश में पड़ गया। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। उसे पूरा यकीन था कि वही राहुल की पत्नी है...लेकिन वो तो मान ही नहीं रही थी।

वह यह भी समझ रहा था कि वह हकीकत क्यों छुपा रही है। सिर्फ इसीलिये कि उसके मन में पुलिस की गलत धारणा बन चुकी है...पुलिस पर से उसका विश्वास खत्म हो चुका है। ऐसे में वह इन्कार ही करेगी।

उसने कुछ सोचा और पुनः दरवाजा खटखटाया।

इस बार तीन-चार बार दरवाजा थपथपाया उसने...तब जाकर खुला।

चांदनी बुरी तरह से झुंझलाती हुई उस पर बरस पड़ी।

"यह क्या बदतमीजी है मिस्टर...।" वह गुस्से से चीखी—"क्यों खामखां तंग कर रहे हो मुझे...?"

मगर जमशेद राय ने उसके बरसने-बिगड़ने पर कोई गौर नहीं किया...उसने चांदनी को एक तरफ धकेला और जबरदस्ती भीतर प्रवेश कर गया।

"य...यह क्या हरकत है? देखो...फौरन यहां से चले जाओ...वरना मैं शोर मचा दूंगी।"

जमशेद राय ने घूरकर उसकी तरफ देखा और सख्त स्वर में गुर्राया—

"अगर तुमने ऐसी हरकत की तो फिर मैं यहां नहीं, बल्कि थाने में बुलवा कर तुमसे बात करूंगा और जब दो सिपाही तुम्हें घसीटते हुए थाने ले जायेंगे तो तुम्हारी क्या इज्जत रह जायेगी...इसका तुम खुद अन्दाजा लगा सकती हो।"

चांदनी का रंग पीला पड़ गया।

"इसलिये वही करो जो मैं कह रहा हूं। अन्दर आ जाओ...और यकीन मानो तुम्हारे भले के लिये ही मैं यहां आया हूं।"

न चाहते हुए भी चांदनी को उसकी बात माननी पड़ी।

कुछ ही देर में वह ड्राइंग रूम में उसके सामने बैठी थी।

"कहो...।" वह चिढ़े स्वर में बोली—"क्या कहना चाहते हो?"

जमशेद राय ने गहरी सांस छोड़ी और बोला—

"मैं जानता हूं कि इंस्पैक्टर शिवदयाल की वजह से तुम्हारे दिल में पूरे पुलिस डिपार्टमेंट के प्रति घृणा फैली हुई है। शिवदयाल की वजह से ही तुम न केवल विधवा हुई...बल्कि तुम्हारी इज्जत भी लुट गई।"

"फिर वही बात...जब मैंने कहा कि मैं वो नहीं हूं जो...।"

"तुम वही हो...और मैं तुम्हें खूब अच्छी तरह से पहचानता हूं।"

"लेकिन...।"

"देखो...।" जमशेद राय उसे समझाते हुए बोला—"तुम्हारे साथ जो हुआ...बहुत बुरा हुआ। पुलिस की वजह से ही तुमसे तुम्हारा पति छिना...तुम्हारी इज्जत लुटी और जिसने यह सब किया...ऊपर वाले ने उसे सजा भी दे दी है...जानती हो शिवदयाल मर गया है...सिर्फ वही नहीं...उसकी पत्नी और बेटा भी मर गये हैं।"

चांदनी कुछ नहीं बोली...मगर उसका चेहरा बता रहा था कि वह शिवदयाल की मौत से बहुत खुश हुई है।

जमशेद राय ने पुनः गहरी सांस छोड़ी।

"कानून तुम्हारी खोई हुई इज्जत तो नहीं लौटा सकता...और न ही तुम्हारे पति को जिन्दा कर सकता है, मगर प्रायश्चित तो कर सकता है। कानून के एक प्रहरी की गद्दारी की वजह से उसके माथे पर जो दाग लगा है, कानून उसे धोना चाहता है और उसी के लिये मैं तुम्हारे पास आया हूं।"

"म...मगर मैं इसमें क्या कर सकती हूं?"

"अगर तुम जगतार के विरुद्ध बयान दे दो तो तुम्हारे बयान के आधार पर मैं जगतार की कलाइयों में हथकड़ियां डाल सकता हूं।"

"जैसे मेरे पति के सरकारी गवाह बनने पर डाली थीं।" व्यंग से बोली चांदनी—"क्या मिला उसे सच्चाई का साथ देकर...वह खुद मारा गया...मेरी इज्जत लुट गई। क्या अब फिर उस तमाशे को दोहराना चाहते हो? एक बार फिर इस विधवा की इज्जत सरेआम लुटवाना चाहते हो? जाइये, थानेदार साहब जाइये...जो हादसा मेरे साथ हो चुका है...उसे मैं दोहराना नहीं चाहती...।"

"लेकिन...।"

"मैं न तो किसी जगतार को जानती हूं...और न ही मेरा उससे कोई वास्ता है।"

जमशेद राय के चेहरे पर निराशा फैल गई।

"देखो... ।" वह बोला—"मुझे शिवदयाल मत समझो... मैं ईमानदार पुलिस अफसर हूं। मैं जगतार के काले कारनामों का पर्दाफाश करना चाहता हूं और इसके लिये मुझे तुम्हारी मदद की जरूरत है।"

"मगर मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकती। जगतार को गिरफ्तार करना है तो उसके किसी सिपहसालार को पकड़ो, मैं जगतार को नहीं जानती।"

जमशेद राय खड़ा हो गया।

"अब तो मैं जा रहा हूं चांदनी जी... मगर कल फिर आऊंगा। आप आज पूरा दिन सोचिये... पूरी रात सोचिये और मुझे यकीन है कि कल जब मैं आऊंगा तो तुम्हारा ब्यान सही होगा... ।"

कहकर वह दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

चांदनी के मकान से निकलकर वह कुछ दूर खड़ी अपनी जीप की तरफ बढ़ा जिसके करीब दो सिपाही खड़े थे।

"मकान पर नजर रखो।" वह एक सिपाही से बोला।

"यस सर... ।" तुरन्त बोला सिपाही।

और फिर जमशेद राय ने दूसरी सिपाही को जिप्सी में बिठाया और वहां से रवाना हो गया।

□□□

□□□

जगतार ने बिजेन्द्र पाल की सारी बात गम्भीरतापूर्वक सुनी और फिर हौले से मुस्कुराया—

"तुम्हारे दस लाख खरे एस.पी.।"

बिजेन्द्र पाल का चेहरा खिल उठा।

"इसी तरह से हमारी सेवा करते रहे हो तो रिटायर होने तक इतनी दौलत इकट्ठी कर लोगे कि आने वाली सात पुश्तों तक किसी को कमाने की जरूरत नहीं पड़ेगी।"

"मैं तो आपके मुंह से दस लाख का नाम सुनकर ही आपका साथी बन गया था जगतार साहब।"

बिजेन्द्र पाल ने खीसे निपोरे।

"जगतार को गाय नहीं कुत्ते पालने का शौक है एस.पी.... ।" गुर्राया जगतार।

बिजेन्द्र पाल का चेहरा पलभर के लिये पीला पड़ा... फिर वह पुनः दांत दिखाने लगा।

"अब तो मैं आप ही का हूं जगतार साहब... आप जो चाहें कहिये। बस हड्डी फेंकते रहे... वह कुत्ता आपके सामने दुम हिलाता रहेगा।"

"घबरा नहीं... हड्डी मिलती रहेगी और हड्डी का साइज भी तेरी

औकात का होगा और एक बात और... ।"

"जी कहिये जगतार साहब... ।"

"शिवदयाल मुझे सर कहा करता था।"

"मैं समझ गया जगतार... सॉरी... सर... ।"

जगतार ने संतुष्टी से सिर हिलाया और फिर गम्भीरतापूर्वक बोला—

"तो जमशेद राय ढाई साल पुराना मुर्दा खोद रहा है।"

"यस सर...और अगर वह मुर्दा बाहर आ गया तो आपके लिये सिरदर्द पैदा कर सकता है। राहुल की पत्नी की जुबान आपके खौफ से बेशक अभी तक बन्द थी, लेकिन अगर जमशेद राय ने उसे विश्वास में ले लिया तो निश्चय ही वह आपके खिलाफ जहर उगल देगी... ।"

"जहर तो वह तभी उगलेगी, जब उसका फन उठेगा। मैं उस नागिन का फन उठने से पहले ही कुचल दूंगा।"

"क्षमा चाहूंगा सर...मगर यह कदम जरा सोच-समझकर उठाइएगा।"

"क्या मतलब... ?"

"अगर आपने उसे मरवा दिया तो कमिश्नर और जमशेद राय फौरन समझ जायेंगे कि मीटिंग में कोई ऐसा अधिकारी भी था, जो आपका गुलाम है और उसी ने आपकी मुखबिरी की है। ऐसे में अगर तफतीश हुई तो... ।"

"तू बेफिक्र रह एस.पी. किसी को भी तेरे पर शक नहीं होगा।"

"लेकिन... ।"

"इस नागिन का फन इस तरह कुचला जायेगा कि वह हत्या न होकर एक हादसा साबित होगी।"

"मैं समझ गया सर। अब मैं बेफिक्र हूं... ।"

"और जमशेद राय से रिपोर्ट लेते रहना।"

"वो खुद मुझे रिपोर्ट देने आयेगा...आखिर आफिसर हूं मैं उसका।"

मुस्कुराया बिजेन्द्र पाल।

"शाम तक दस लाख तेरे पहुंच जायेंगे... ।"

जिस ढंग से जगतार ने कहा था...उसी से बिजेन्द्र पाल समझ गया था कि अब वह उसे दफा होने का कह रहा है। सो वह फौरन सोफे से खड़ा हो गया।

□□□
□□□

जमशेद राय के जाते ही चांदनी गहरी सोचों में डूब गई। जिस अन्दाज से जमशेद राय ने उससे बात की थी...उससे

ऐसा लगा कि वह वाकई में एक ईमानदार पुलिसिया है।

मगर जो खौफ उसके दिल में पुलिस के प्रति बैठा हुआ था...वह इतनी आसानी से तो निकल नहीं सकता था।

आखिर इसी पुलिस की वजह से ही तो वह विधवा हुई थी...उसकी इज्जत लुटी थी।

ऐसे में वह इतनी जल्दी कैसे विश्वास कर सकती थी जमशेद राय पर।

आखिर काफी सोच-विचार के बाद उसने इस वक्त गनेश लाल से सलाह लेना उचित समझा।

वह उसे अपना सच्चा हमदर्द नजर आया था।

सो वह उठी...कपड़े बदले और मकान से बाहर निकल कर एक ऑटो रोकी और उसमें सवार हो गई।

एक घण्टे बाद वह सतीश रावण द्वारा बताये उसके एक फर्जी पते वाले मकान के सामने ऑटो से उतर रही थी। भाड़ा चुकाकर वह दरवाजे की तरफ बढ़ी।

वह एक दो-मंजिला साफ-सुथरा मकान नजर आ रहा था, जिसका ग्रिल का गेट काले रंग से पेंट किया हुआ था।

गेट के सामने आकर उसने दायीं तरफ दीवार में लगे बैल पुश का बटन दबाया।

शीघ्र ही भीतर से एक औरत की आवाज आई--

"कौन...?"

"मैं हूं चांदनी...दरवाजा खोलिये...!" चांदनी बोली।

दरवाजा खुला।

सामने उसी की उम्र की हुस्नो-शबाब से माला-माल एक औरत खड़ी थी।

उस औरत ने प्रश्न भरी निगाहों से चांदनी को देखा।

"म...मेरा नाम चांदनी है।" चांदनी उसके हुस्न से प्रभावित होते हुए बोली।

"कहिये...!"

"मुझे गनेश लाल से मिलना है।"

"वो तो घर में नहीं है।"

"ओह!"

"कोई खास काम है क्या उससे...?"

"जी हां...आप उसे मेरा मैसेज दे दीजियेगा।"

"कहिये...!"

"उससे कहियेगा कि पुलिस मेरे घर आई थी...और वह इस बात पर जोर डाल रही है कि मैं जगतार के खिलाफ बयान दूं। इसलिये वह मुझे बताये कि मैं क्या करूं? मैं घर में उसका इन्तजार कर रही

हूं।"

कहकर वह मुड़ी और एक तरफ चल दी।

वह औरत हैरानी से उसे जाते देख रही थी। उसके चेहरे पर असमंजसता के भाव थे। कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था उसे कि वह क्या कह गई थी और क्यों कह गई थी?

वह एक अजीब इत्तफाक ही था कि उस औरत के देवर का नाम भी गनेश लाल ही था। इसीलिये चांदनी के मैसेज को सुन उसके जेहन में तरह-तरह की शंकायें सिर उठाने लगीं। उसे ऐसा लगने लगा कि उसका देवर किन्हीं गलत धन्धों में फंसा हुआ है। आखिर उसने सिर को झटक कर दरवाजा बन्द कर दिया।

❑❑❑

❑❑❑

'ट्रिन...ट्रिन...।'

फोन की घण्टी बजते ही शिवदयाल की कुर्सी पर बैठे जमशेद राय ने रिसीवर उठाकर कान से लगाया।

"हैलो...।"

"मैं शिवचरण बोल रहा हूं सर...।"

दूसरी तरफ से आई आवाज सुनकर जमशेद राय सीधा होकर बैठ गया।

सिपाही शिवचरन को उसने चांदनी के मकान की निगरानी पर तैनात किया था।

"हां बोलो शिवचरन...।" वह बोला।

"आपके जाने के थोड़ी देर बाद चांदनी तिलक चौक गई थी।"

"तिलक चौक में कहां...?"

"बी-5 मकान के सामने...वहां उसने दरवाजे पर खड़े-खड़े ही एक औरत से बात की और उल्टे पांव वापिस अपने घर आ गई।"

"क्या बात की...?"

"मैं उस वक्त उनसे काफी दूर खड़ा था सर।"

"अब कहां है वो...?"

"अपने घर में ही है।"

"ठीक है...उस पर नजर रखे रहो और कोई भी खास बात देखते ही मुझे खबर कर देना।"

"यस सर।"

जमशेद राय ने रिसीवर क्रेडिल पर रखा और खड़ा हो गया।

उसके चांदनी से मिलने के बाद वह तिलक चौक गई थी...अगर वह अपने किसी रिश्तेदार के पास गई थी, तो उसे भीतर जाना चाहिये था, जबकि वह दरवाजे से ही वापिस लौट आई थी।

"अवश्य ही कोई बात है...।"

[illegible] सोचते हुए [illegible] खड़ा हुआ था, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
कि क्या बात है।

□□□
□□□

[illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] औरत [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] की [illegible] [illegible]।

"[illegible]..." [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] बोली।

"[illegible]..." [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आवाज आई।

[illegible] औरत [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कोई [illegible] [illegible] है..." [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] बोली।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] था।

[illegible] औरत [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] स्वर में बोली—

"[illegible]... [illegible]..."

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] औरत आई थी [illegible]..." [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हुए बोला।

"[illegible]... [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कुछ नहीं..."

"फिर [illegible] आई थी [illegible] [illegible]..."

औरत ने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

"[illegible]..."

"[illegible]... [illegible]..." औरत [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

"[illegible] है, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]..."

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

औरत [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

"[illegible]... [illegible] [illegible] कोई [illegible] नहीं। [illegible]... और न [illegible] [illegible] [illegible] मिलने आई थी।"

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हुए बोली थी। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

"[illegible] [illegible]..." [illegible] [illegible] [illegible]।

"[illegible]... मैं [illegible] [illegible] हूं। [illegible]... [illegible] [illegible] मिलने नहीं आई थी।"

"[illegible] [illegible] मिलने आई थी..." [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible]

हूं।''

कहकर वह मुड़ी और एक तरफ चल दी।

वह औरत हैरानी से उसे जाते देख रही थी। उसके चेहरे पर असमंजसता के भाव थे। कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था उसे कि वह क्या कह गई थी और क्यों कह गई थी?

वह एक अजीब इत्तफाक ही था कि उस औरत के देवर का नाम भी गनेश लाल ही था। इसीलिये चांदनी के मैसेज को सुन उसके जेहन में तरह-तरह की शंकायें सिर उठाने लगीं। उसे ऐसा लगने लगा कि उसका देवर किन्हीं गलत धन्धों में फंसा हुआ है। आखिर उसने सिर को झटक कर दरवाजा बन्द कर दिया।

□□□

□□□

'ट्रिन...ट्रिन...।'

फोन की घण्टी बजते ही शिवदयाल की कुर्सी पर बैठे जमशेद राय ने रिसीवर उठाकर कान से लगाया।

"हैलो...।"

"मैं शिवचरण बोल रहा हूं सर...।"

दूसरी तरफ से आई आवाज सुनकर जमशेद राय सीधा होकर बैठ गया।

सिपाही शिवचरन को उसने चांदनी के मकान की निगरानी पर तैनात किया था।

"हां बोलो शिवचरन...।" वह बोला।

"आपके जाने के थोड़ी देर बाद चांदनी तिलक चौक गई थी।"

"तिलक चौक में कहां...?"

"बी-5 मकान के सामने...वहां उसने दरवाजे पर खड़े-खड़े ही एक औरत से बात की और उल्टे पांव वापिस अपने घर आ गई।"

"क्या बात की...?"

"मैं उस वक्त उनसे काफी दूर खड़ा था सर।"

"अब कहां है वो...?"

"अपने घर में ही है।"

"ठीक है...उस पर नजर रखे रहो और कोई भी खास बात देखते ही मुझे खबर कर देना।"

"यस सर।"

जमशेद राय ने रिसीवर क्रेडिल पर रखा और खड़ा हो गया।

उसके चांदनी से मिलने के बाद वह तिलक चौक गई थी...अगर वह अपने किसी रिश्तेदार के पास गई थी, तो उसे भीतर जाना चाहिये था, जबकि वह दरवाजे से ही वापिस लौट आई थी।

"अवश्य ही कोई बात है...।"

यही सोचते हुए वह खड़ा हुआ था, ताकि यह जाना जा सके कि क्या बात है।

□□□

□□□

'डिंग...डां...ग...।'

कॉलबैल का मधुर संगीत सुन उस औरत ने रिमोट कन्ट्रोल से टी.वी. की आवाज बन्द की और कुर्सी से खड़ी होकर दरवाजे की तरफ बढ़ी।

"कौन...?" मेन डोर के करीब आकर वह बोली।

"पुलिस...।" बाहर से रौब भरी आवाज आई।

उस औरत का कलेजा जोरों से धड़क उठा।

"अवश्य ही उसके देवर ने कोई गुल खिलाया है।" वह मन ही मन बोली।

धड़कते कलेजे से उसने दरवाजा खोला।

सामने जमशेद राय खड़ा था।

उस औरत ने सहमे अन्दाज में जोरों से थूक सटकी और थर्राये स्वर में बोली—

"क...कहिये...।"

"अभी थोड़ी देर पहले चांदनी नाम की एक औरत आई थी यहां...।" जमशेद राय उसे गौर से देखते हुए बोला।

"ह...हां...लेकिन मेरा उससे कोई सम्बन्ध नहीं। मैं तो उसे जानती तक नहीं...।"

"फिर क्यों आई थी वह यहां...?"

औरत ने जोरों से थूक सटकी।

"बोलो...।"

"व...वो...।" औरत के गले की घण्टी पुनः उछली।

"लगता है, थाने चलकर ही बोलोगी तुम...?"

सख्त स्वर में गुर्राया जमशेद राय।

औरत बुरी तरह से बौखला उठी...साथ ही उसका चेहरा पसीने से तर-बतर हो गया।

"म...मेरा उससे कोई सम्बन्ध नहीं। अ...और न ही वह मुझसे मिलने आई थी।"

बुरी तरह से कांपते हुए बोली वह। थाने के नाम ने ही उसके छक्के छुड़ा दिये।

"फिर बकवास...?" गुर्राया जमशेद राय।

"म...मैं सच कहती हूं। व...वो मुझसे मिलने नहीं आई थी।"

"तो किससे मिलने आई थी...?" यहां की दीवारों से...या

इस दरवाजे से?"

"व...वो...ग...गनेश को मिलने आई थी।"

वह औरत इस तरह बोली जैसे अपने देवर का नाम होठों पर लाते हुए उसकी मां मरी जा रही हो।

इधर उसके मुंह से गनेश का नाम सुनकर जमशेद राय बुरी तरह से उछल पड़ा।

"गनेश...!"

"ज...जी हां...।"

जमशेद का कलेजा जोरों से धड़क उठा। अन्जाने में ही उसके हाथ एक बहुत बड़ा अपराधी लग गया था...ऐसे में खुशी से उसका कलेजा जोरों से धड़कना ही था।

"कहां है वह...?" अपनी खुशी को भीतर ही छुपाते हुए गुर्राया वह।

"वो...वो तो फैक्ट्री गया है इंस्पैक्टर साहब।" औरत घबराये स्वर में बोली—"म...मगर उसने किया क्या है?"

"तेरा क्या लगता है वो?"

"द...देवर...मगर उसने किया क्या है...?" उसने अपना प्रश्न दोहराया।

"नाम बोल अपना...।"

"अ...अपर्णा...लेकिन...।"

"भोली मत बन...।" गुर्राया जमशेद राय—"तू जानती है कि तेरे हरामी देवर ने क्या किया है...फिर भी मेरे मुंह से सुनना चाहती है तो सुन...तीन खून किये हैं उसने...।"

"ख...खून...।"

"हां खून...इंस्पैक्टर शिवदयाल का...उसकी पत्नी का और उसके बेटे का...।"

"अ...आपको गलतफहमी हुई है इंस्पैक्टर साहब...।" बुरी तरह से कांपती हुई बोली अपर्णा—"म...मैं जानती हूं कि वह उद्दण्ड है...लेकिन वह खून जैसा घिनौना अपराध कभी नहीं कर सकता। वो भी पुलिस का? नहीं इंस्पैक्टर साहब आपको अवश्य ही गलतफहमी हुई है।"

"फिर तो तू यह भी कहेगी कि वह पिछले दिनों गिरफ्तार भी नहीं हुआ था।"

"ग...गिरफ्तार...।" अपर्णा गिरते-गिरते बची।

"हां...तीस करोड़ के गैरकानूनी माल के साथ गिरफ्तार हुआ था वह। लगता है, तू...तेरा पति और गनेश लाल तीनों फैक्ट्री की आड़ में गैरकानूनी काम करते हो। हरामी कह रहा था कि दिल्ली में रहता है।"

अपर्णा की टांगें कांपने लगी। उस पर स्मग्लर होने का इल्जाम लग रहा था।

उसने दुपट्टे से अपने चेहरे पर उभरे पसीने को पोंछा और बोली—

"म...मेरे देवर के गलत कामों में मुझे और मेरे पति को मत घसीटिये इंस्पेक्टर साहब...ऐसे व्यक्ति को तो मैं एक मिनट भी घर में न रहने दूं...मैं अभी उसे यहां बुलाती हूं...आप उसे गिरफ्तार कर ले जाइए। आइये।"

कहकर वह मुड़ी और लड़खड़ाते कदमों से भीतर प्रवेश कर गई।

पीछे-पीछे जमशेद राय भी भीतर आ गया।

अपर्णा उसे लिये ड्राइंग रूम में आई जिसमें कि टी.वी. अभी भी चल रहा था, मगर उसकी आवाज बन्द थी।

अपर्णा ने रिमोट से टी.वी. बन्द किया और फोन की तरफ बढ़ी जो कि टी.वी. के करीब ही एक स्टूल पर रखा था। तभी जमशेद राय की नजर टी.वी. पर फ्रेम में जड़ी एक तस्वीर पर पड़ी जिसमें कि अपर्णा के दायें-बायें दो व्यक्ति खड़े मुस्कुरा रहे थे।

"यह फोटो...।"

"यह है मुआ गनेश...।" अपर्णा रिसीवर उठाते हुए बोली—"हमारी सारी इज्जत पर पानी फेर दिया कम्बख्त ने।"

जमशेद राय की सारी खुशी पल भर में मिट्टी में बदल गई।

"य...यह गनेश है?"

"हां...।"

"और...दूसरी तस्वीर...?"

"मेरे पति की है...महेश लाल है इनका नाम।" कहते हुए अपर्णा नम्बर मिलाने लगी।

इधर जमशेद राय को समझते देर नहीं लगी कि चांदनी उस गनेश से नहीं...बल्कि किसी दूसरे गनेश से मिलने आई थी।

अपर्णा ने फोन करके गनेश को फौरन घर आने को कहा और फिर जमशेद राय की तरफ मुड़ते हुए बोली—

"आप बैठिये...मैं आपके लिये चाय लाती हूं...पांच-सात मिनट में गनेश आपके सामने होगा।"

"चाय रहने दो...।" कुर्सी पर बैठते हुए बोला जमशेद राय।

इस बार उसका लहजा सख्त नहीं था...बल्कि नर्म था...वो भी बेहद नर्म।

अपर्णा उसके सामने वाली कुर्सी पर बैठ गई।

"क्या चांदनी गनेश को जानती है...?"

पूछा जमशेद राय ने।

''आप खुद ही उससे पूछ लीजियेगा। मेरी तरफ से आप बेशक उसे फांसी चढ़ा दीजिये...ऐसे खूनी को...।''

''चांदनी ने क्या कहा था तुमसे...?''

अपर्णा ने बताया।

जमशेद राय ने गहरी सांस छोड़ी और गनेश का इन्तजार करने लगा।

कुछ ही देर में चौबीस-पच्चीस साल का एक स्मार्ट युवक उसके सामने खड़ा था।

अपनी भाभी की तरह उसके चेहरे की रंगत भी पुलिस को देख बदरंग हो रही थी।

इससे पहले कि वह कुछ बोलता...या जमशेद राय उससे कुछ पूछता...अपर्णा उस पर फट पड़ी।

''अरे नासपीटे...यह क्या कर डाला तूने...? अरे अपना नहीं तो अपने खानदान की इज्जत का ख्याल तो किया होता...क्या कमी थी तुझे यहां जो तू गलत धन्धों में लग गया और खून भी करने लगा? इससे अच्छा होता कि कहीं डूब मरता तू। कम से कम तेरे भाई के नाम पर बट्टा तो नहीं लगता।''

उसने जमशेद राय की तरफ देखते हुए उंगली गनेश की तरफ सीधी की और चीखी—

''ले जाओ इसे मेरी आंखों के सामने से और डाल दो काल कोठरी में। अपने पति को मैं खुद ही समझा लूंगी।''

लेकिन जमशेद राय ने कुर्सी से उठने का उपक्रम नहीं किया। वह पूर्ववत् ही बैठा रहा।

''बैठो...।'' वह गम्भीरता से गनेश से बोला।

चेहरे पर बदहवासी का आलम लिये गनेश कुर्सी पर बैठा और कांपते लहजे में बोला—

''म...मैं न तो कोई गलत धन्धा करता हूं...न ही मैंने किसी का खून किया है। म...मेरा यकीन कीजिये सर। मेरे बारे में आपको किसी ने गलत सूचना दी है।''

''चांदनी को कब से जानते हो...?'' उसकी बात का उत्तर न देते हुए पूछा जमशेद राय ने।

''चांदनी...?''

''राजीव चौक वाली चांदनी...वह चांदनी जिसके पति का दो-ढाई साल पहले खून हो गया था।''

''म...मैं ऐसी किसी चांदनी को नहीं जानता। मैं अपने भाई की कसम खाकर कहता हूं कि चांदनी नाम की किसी भी औरत के साथ मेरा कोई सम्बन्ध नहीं...।''

''तो फिर वह यहां क्या करने आई थी?'' गुस्से से बोली

अपर्णा।

"म...मुझे क्या पता?" हड़बड़ाया-सा बोला गनेश।

"वह यहां तुमसे मिलने आई थी और तुम्हारे लिये मैसेज छोड़कर गई थी।" जमशेद राय बोला।

"म...मेरा यकीन मानिये सर...मेरा किसी चांदनी से कोई सम्बन्ध नहीं...अगर आपको यकीन नहीं तो आप मेरा उससे आमना-सामना करवा दीजिये...तब आपको यकीन हो जायेगा और न ही मैंने किसी का खून किया है।"

जमशेद राय को उसकी बात ठीक लगी। उसने गहरी सांस छोड़ी और बोला—

"तुम मेरे साथ चल रहे हो...।"

"ल...लेकिन...।"

"मेरी मर्जी से नहीं...बल्कि अपनी मर्जी से। तुम पर कोई इल्जाम आमद नहीं। जिस गनेश की मुझे तलाश है वो तुम नहीं हो। मैं सिर्फ यह देखना चाहता हूं कि चांदनी तुमसे ही मिलने आई थी या दूसरे गनेश से।"

गनेश ने इस तरह गहरी सांस छोड़ी जैसे उस पर पड़ा टनों बोझ हट गया हो।

इधर अपर्णा पहले तो हड़बड़ाई, फिर बोली—

"मैं तुमसे पहले भी कहा था इंस्पैक्टर कि तुम्हें गलतफहमी हुई है...मेरा देवर ऐसा गलत काम हरगिज नहीं कर सकता।"

मुस्कुराया जमशेद राय...बोला कुछ नहीं वह।

❑❑❑

❑❑❑

"तुम समझ गये न कि तुम्हें क्या करना है?"

चांदनी के घर के आगे जीप रोकते हुए जमशेद राय गनेश से बोला।

"जी हां...मुझे कुछ नहीं बोलना...और न ही चांदनी को कोई इशारा करना है।"

गनेश बोला।

तभी एक साइड से शिवचरण निकल कर जीप के पास आया।

"कोई नई खबर...?" जमशेद राये ने पूछा।

"नो सर...।" तुरन्त बोला शिवचरण।

जमशेद राय सिर हिलाते हुए जिप्सी से उतरा और दरवाजे की तरफ बढ़ा।

पीछे-पीछे गनेश भी उतर आया।

जमशेद राय ने दरवाजे पर हाथ मारा।

'खड़...खड़...खड़...।'

"कौन...?" थोड़ी देर बाद भीतर से चांदनी की आवाज आई।
"पुलिस!" जमशेद राय सख्त स्वर में बोला।
दरवाजा खुला।
चांदनी ने एक उड़ती नजर गनेश पर डाली...फिर जमशेद राय की तरफ देखते हुए बोली—
"तुम तो कल आने वाले थे...?"
"क्यों...?" मुस्कुराया जमशेद राय—"अभी कुछ सोचा नहीं तुमने...?"
"नहीं...!"
"सोचा नहीं या सलाह नहीं मिली अभी...!"
"सलाह...!" हड़बड़ाई चांदनी।
"गनेश से सलाह लेने गई थी न तुम...?"
चांदनी का रंग एकदम से पीला पड़ गया।
"तुम क्या समझती हो पुलिस बेवकूफ है। तुम्हारी एक-एक हरकत पर पुलिस की निगाह है। भीतर चलो...!"
चांदनी के कदम अपने आप ही पीछे हट गये।
जमशेद राय ने गनेश के साथ भीतर प्रवेश किया और ड्राइंग रूम में आ गया।
"बैठो...!" वह स्वयं सोफे पर बैठते हुए बोला।
चांदनी थूक सटकते हुए उसके सामने बैठ गई, जबकि गनेश खड़ा रहा।
"तुम क्या समझती हो चांदनी...!" जमशेद राय उसके चेहरे पर निगाहें गड़ाते हुए बोला—"कि गनेश शिवदयाल की तरह जगतार को भी मारने में कामयाब हो जायेगा। जिस आदमी से तुमने हाथ मिलाया है...वह आदमी बेहद खतरनाक है और मौत उस पर मंडरा रही है। क्यों उसका साथ देकर अपनी जिन्दगी खतरे में डाल रही हो?"
चांदनी पहले तो हड़बड़ाई...फिर उसके चेहरे पर कड़वाहट उभरती चली गई।
"मुझे पता है कि उससे हाथ मिलाकर मैंने अपनी जिन्दगी को खतरे में डाला है और मुझे यकीन भी है कि वह जगतार से बदला लेने में कामयाब रहेगा। वह पुलिस की तरह जगतार का गुलाम नहीं...बस यही मेरे लिये बहुत है!"
उसके आखिरी शब्द तमाचे की तरह जमशेद राय के जेहन पर पड़े। एक शिवदयाल के कारण पूरे पुलिस डिपार्टमेंट को गोली दे दी थी उसने। साथ ही यह बात भी साफ हो गई थी कि उसके करीब खड़ा गनेश चांदनी के लिये नितान्त अजनबी था, यानि गनेश ने उसे अपना झूठा पता बताया था।

"देखो... ।" वह बोला—"जिसकी उंगली तुमने पकड़ी है... वह एक धोखेबाज व्यक्ति है। तुम... ।"

"उसने शिवदयाल को मारकर कौन-सा धोखा किया मेरे से... रमेश और रेखा का खून करके कौन-सा पाप किया है उसने?"

बुरी तरह से चौंक उठा जमशेद राय।

"रेखा और रमेश का खून भी उसी ने किया था... ?"

"कमाल है जगतार के कुत्तों का खून उसके हाथों होना तुम्हें पच नहीं रहा।"

जमशेद राय ने उसकी बात का उत्तर नहीं दिया।

"तुम पुलिस वालों से तो वह लाख दर्जे सही है।"

"इसीलिये उसने तुम्हें अपना गलत पता बताया... ।" व्यंग भरे स्वर में बोला जमशेद राय।

"क... क्या... ?" बुरी तरह से उछल पड़ी चांदनी।

"तिलक चौक... बी-5 यही पता बताया था न उसने तुम्हें... और तुम वहां गनेश के लिये मैसेज छोड़कर आई हो। तुम्हारी जानकारी के लिये तिलक चौक वाला गनेश तुम्हारे सामने खड़ा है।"

उसने गनेश की तरफ इशारा किया।

बुरी तरह से चौंकी चांदनी... साथ ही उसके जेहन को एक झटका लगा।

"अगर तुम्हें मेरी बात पर विश्वास नहीं तो तुम वहां जाकर अपनी तसल्ली कर सकती हो। गनेश लाल ने तुम्हें जो पता बताया था... वहां एक गनेश नाम का व्यक्ति रहता है... इसके बारे में या तो वह पहले से जानता था... या फिर यह एक बेहूदा इत्तफाक था।"

चांदनी के गले की घण्टी जोरों से उछली।

"मेरी यही बात यह साबित करती है कि वह तुम्हारे साथ वफा नहीं कर रहा।"

चांदनी के गले की घण्टी पुनः उछली।

"देखो चांदनी... ।" जमशेद राय उसे समझाते हुए बोला—"एक इकलौती मछली ने पूरे तलाब को गन्दा कर रखा था... लेकिन अब वह मछली मर चुकी है। गनेश के हाथों ही सही... ऊपर वाले ने उसे उसके किये की सजा दे दी है। अब पुलिस डिपार्टमेंट नाम का तालाब पूरी तरह से साफ है। मैं तुम्हारी गारण्टी लेता हूं कि जगतार तुम्हारा बाल भी बांका नहीं कर पायेगा। बस तुम उसके खिलाफ जो जानती हो... वह बता दो।"

चांदनी के चेहरे पर असमंजसता भरे भाव उभरे।

"मैंने कल आने का वायदा किया था। उसके चेहरे को देखते हुए बोला वह—"मगर तुम्हारे और गनेश के सम्बन्धों का पता लगने के कारण मुझे अभी आना पड़ा, फिर भी मैं तुम्हें कल तक का वक्त

देता हूं। मुझे पूरा यकीन है कि कल जब मैं आऊंगा तो तुम मुझे जगतार के विरुद्ध खड़ा होने की ताकत दोगी।"

कहकर वह खड़ा हो गया।

इधर गनेश के चेहरे पर राहत के भाव उभरे... जैसे बहुत बड़े जंजाल से मुक्ति मिली हो उसे।

❑❑❑
❑❑❑

रात के नौ बजे देवकी ताला खोलकर अपने घर में प्रविष्ट हुई और सीधा बेडरूम में पहुंची जहां पर कि सतीश रावण बैड पर बैठा स्कॉच का पैग खाली कर रहा था।

उसके सामने टेबल पर स्कॉच की बोतल पड़ी थी तथा साथ में एक प्लेट में ड्राई फ्रूट पड़ा था।

स्कॉच की बोतल देवकी शाम को लेकर आई थी।

देवकी को देख सतीश रावण ने पैग होंठों से हटाया और उसे देखते हुए मुस्कुराया।

उत्तर में देवकी भी मुस्कुराई और आगे बढ़कर उसके साथ सटकर बैठ गई।

"क्या पता लगा... ?" सतीश रावण ने उसके गले में बांह डाल उसकी छाती को दबाते हुए पूछा।

"प्रताप अभी भी वहीं रहता है।" बोली देवकी—"अड़ोस-पड़ोस में वह वी.आई.पी. व्यक्ति के नाम से जाना जाता है।"

"वी.आई.पी. !"

"हां... उसकी कोठी के गैट पर हर वक्त स्टेनगन से लैस एक व्यक्ति खड़ा रहता है। हथियारबन्द गार्ड वी.आई.पी. के मकानों पर ही होते हैं न।"

"तुमने देखा उस गार्ड को... ?"

"हां देखा... !"

"और क्या देखा... ?"

"भीतर लॉन में दो व्यक्ति नजर आये मुझे। वे भी हथियारबन्द थे?"

"और... ?"

"बस यही नजर आया मुझे।"

"उसका फोन नम्बर पता लगाने को कहा था मैंने... ?"

"वो पता नहीं लगा पाई मैं।"

"कोठी के बारे में पता लगाने को भी कहा था?"

"हां...वो लगा आई हूं मैं... !"

"बोलो... ?"

देवकी प्रताप की कोठी के बाहरी भाग तथा आसपास की

लोकेशन के बारे में बताने लगी।

इस बीच सतीश रावण ने हाथ में थमा पैग खत्म कर दिया।

उसने नया पैग भरा और सोचपूर्ण अन्दाज में उसे धीरे-धीरे खत्म करने लगा।

□□□

□□□

सतीश रावण ने बिशन सरूप कालोनी में प्रताप की कोठी से काफी पहले ही टैक्सी रुकवाई और किराया अदा करके बाहर आ गया।

सुबह की तरह इस वक्त भी वह सरदार के मेकअप में ही था।

इस वक्त रात के साढ़े बारह बज रहे थे। सर्दी की वजह से इन्सान तो क्या कुत्ते भी कहीं नजर नहीं आ रहे थे।

जेबों में हाथ डाले सतीश रावण आगे बढ़ता हुआ प्रताप की कोठी की तरफ बढ़ रहा था।

तभी उसके निगाहें प्रताप की कोठी के पीछे बने मन्दिर के गुम्बज पर लहरा रहे भगवा झण्डे पर पड़ीं।

एक भयानक मुस्कान आकर लुप्त हो गई उसके होठों पर।

उसी झण्डे के कारण उसे फौरन पता चल गया कि अगली दो कोठियां छोड़कर तीसरी कोठी प्रताप की है।

भीतर से पूरी तरह से सतर्क वह कोठी के आगे से गुजरा।

गेट बन्द पड़ा था...और चारदीवारी से थोड़ा ऊंचा गेट के बायीं तरफ एक कमरा नजर आ रहा था, जो यह बता रहा था कि दरबान की ड्यूटी निभा रहा गार्ड भीतर बायीं तरफ बने कमरे में मौजूद है।

उसके पैर थोड़ा आगे चलकर ठिठके।

सावधानीवश उसने इधर-उधर देखा...फिर अपने हाथ ऊंचे कर हल्का-सा जम्प लिया।

अगले ही पल बाउण्ड्री वॉल पर उसके हाथ जमे नजर आ रहे थे।

अपनी बाहों के जोर पर वह धीरे-धीरे ऊपर उठा और अपनी गर्दन बाउण्ड्री वाल से ऊपर ले जाकर भीतर झांका।

लॉन में कोई भी नजर नहीं आया उसे...हां तीन व्यक्ति कम्पाउण्ड में कुर्सियों पर बैठे जरूर दिखे।

तीनों एक टेबल के गिर्द बैठे ताश खेल रहे थे तथा उनकी स्टेनगनें उनकी गोद में पड़ी नजर आ रही थी।

कुछ पल सतीश रावण उन्हें देखता रहा...फिर आहिस्ता से ऊपर चढ़ा और बाउण्ड्री वाल पर चढ़कर दूसरी तरफ लटक कर पंजों

के बल नीचे कूद गया।

कूदते ही वह वहीं उकड़ू होकर बैठ गया...साथ ही उसकी रिवाल्वरें निकलकर उसके हाथों में आ गई।

उसकी शिकारी कुत्ते की-सी निगाहें उन तीनों पर टिकी हुई थीं।

तीनों पूर्ववतः ताश खेलने में तल्लीन थे। यानि उन्हें आभास नहीं हुआ था कि कोई कोठी के भीतर प्रवेश कर गया है।

कुछ देर इन्तजार करने के उपरान्त वह आहिस्ता से बूथ की तरफ रेंगा और करीब पांच मिनट बाद वह बूथ की पिछली दीवार से सटा हुआ था।

दीवार से सटे हुए ही उसने किसी सुराख को या दरार को ढूंढने की कोशिश की, लेकिन दीवार को बाहर से प्लास्टर किया हुआ था।

अगर उसे कोई दरार नजर आ जाती तो वह भीतर बैठे गार्ड की स्थिति देखकर कदम उठा सकता था...मगर उसे जो करना था...सामने से ही करना था।

उसने एक नजर तीनों गार्डों पर डाली।

वे अभी भी ताश खेलने में तल्लीन थे।

वह अपने स्थान से सरका और दीवार से लगे हुए ही आगे बढ़ा।

मोड़ मुड़ते ही वह उन तीनों के सामने आ गया था...यानि अगर कोई नजर उठाता तो उसका उनकी निगाहों में आ जाना यकीनी था।

मगर ऐसे हालातों से वह कई बार गुजर चुका था। इसलिये उसने परवाह नहीं की।

हां...पहले से ही कहीं ज्यादा सतर्क जरूर हो गया था।

उसके हाथों में थमी रिवाल्वरें किसी भी पल गरजने को पूरी तरह से तैयार थीं।

एक-एक इंच आगे सरकता हुआ वह दीवार के अन्त में पहुंचा और फिर गर्दन लम्बी करके दरवाजे की तरफ देखा।

उसी के साथ ही उसने फौरन अपनी गर्दन पीछे खींच ली।

दरवाजे से निकल रही रोशनी में उसने एक परछाई को खड़े होते देखा था।

फिर उसे जूतों की आवाजें आईं।

फौरन वह पीछे हटा और तेजी से बढ़ता हुआ पीछे वाली दीवार के कोने में जो कि बाउण्ड्री वॉल से जुड़ा था आ दुबका।

"कौन जीता...?"

तभी उसके कानों में आवाज पड़ी।

कम्पाउण्ड में ताश खेल रहे गार्डों ने बूथ की तरफ देखा...फिर

एक ऊंचे स्वर में बोला—

"मैं जीत रहा हूं।"

"गेट का ध्यान रखना...मैं राउण्ड लगा लूं...।" गेट की तरफ से आवाज आई।

तीनों में से किसी ने उत्तर नहीं दिया और वे ताश खेलने में लग गये।

करीब एक मिनट बाद उसे कमरे की दीवार के पीछे से एक व्यक्ति निकलता दिखा...और फिर उसके देखते-ही-देखते वह लॉन में आगे बढ़ गया।

सतीश रावण की निगाहें निरन्तर उसकी पीठ पर जमी हुई थीं।

गार्ड का रुख कोठी की पिछली साइड की तरफ था।

लॉन पार करके जैसे ही वह गली में प्रविष्ट हुआ...सतीश रावण अपने स्थान से हिला और रेंगता हुआ दीवार का मोड़ मुड़कर सामने आया...फिर दरवाजे वाली दीवार का मोड़ मुड़ गया।

दरवाजे के करीब आकर वह पलभर के लिये ठिठका। कम्पाउण्ड में बैठे तीनों गार्डों को गर्दन मोड़कर देखा, फिर दरवाजे में प्रवेश कर गया।

अगले ही पल वह सांस रोकें दरवाजे के पीछे खड़ा था।

❑❑❑

❑❑❑

कोठी के पीछे का राउण्ड लगाकर वह गार्ड कम्पाउण्ड में आ खड़ा हुआ।

"कितने लिये...?" उसने जीतने वाले गार्ड के हाथों में थमे पत्तों पर निगाहें मारते हुए पूछा।

"सात सौ।" गार्ड पत्ते फेंकते हुए बोला।

"मेरा भी हिस्सा रख ले।"

"उहूं...अख्तर से मिल जा...बेचारा पांच सौ रुपये हार रहा है।"

उसने दूसरे गार्ड की तरफ देखा...मुस्कराया और बोला—"जगन तो चढ़ते सूरज को सलाम करता है। हारने वाले के साथ मिलकर अपना बेड़ागर्क नहीं करना चाहता।"

"अबे जा यार...क्यों जला रहा है।" अख्तर जले स्वर में बोला...और अपने पत्ते फेंक दिये।

जगन हौले से हंसा और वहां से हट गया।

ड्राइव-वे पर चलते हुए वह अपने बूथ के सामने आया और जैसे ही उसने बूथ में प्रवेश किया।

जैसे कोई बिजली चमकी।

दरवाजे के पीछे छुपे सतीश रावण की बांह सांप की तरह पीछे से उसकी गर्दन में लिपटी और उसने रिवाल्वर के दस्ते का भरपूर वार उसकी खोपड़ी के पृष्ठ भाग पर कर दिया।

यह सब करते हुए उसने उसे एक साइड में खींच लिया था, ताकि बाहर परछाईं में उसकी हरकत अन्य गार्डों पर न पड़े।

सिर पर पहाड़ टूटते ही जगन के घुटने मुड़ते चले गये।

सतीश रावण ने उसके सिर पर एक और वार किया और फिर धीरे से उसे फर्श पर लिटाकर तेजी से अपने कपड़े उतारने लगा।

कुछ ही देर में वह उसके कपड़ों में था तथा जगन सिर्फ एक अण्डरवीयर में दीवार की जड़ में बेहोश पड़ा था।

सतीश रावण ने उसकी स्टेनगन अपने कब्जे में की और करीब पांच मिनट बाद वह बूथ से बाहर निकल आया।

सिर को झुकाये लापरवाही से चलता हुआ वह लॉन पार कर गली में प्रविष्ट हो कोठी के पीछे वाले लॉन में आ गया।

सतर्क निगाहों से उसने इधर-उधर देखा...फिर कोठी के पीछे वाले दरवाजे चैक करने लगा।

गहरी सांस छोड़कर रह गया वह।

पीछे के तीनों दरवाजे भीतर से बन्द थे।

अब कोठी में प्रवेश करने का बस एक ही रास्ता था...और वह रास्ता सामने वाला था, जिसके कम्पाउण्ड में वे तीनों गार्ड बैठे ताश खेल रहे थे।

ऊपर से कम्पाउण्ड में ट्यूब लाइट जल रही थी।

ऐसे में वहां जाने का मतलब मुसीबत मोल लेना था।

सतीश रावण ने तेजी से कुछ सोचा और फिर जेब से रिवाल्वर निकाल ली।

"कौन है...?"

वह ऊंचे स्वर में मुंह से जगन की आवाज निकालते हुए चीखा...साथ ही रिवाल्वर से फायर कर दिया।

'धांय...!'

'आऽऽऽ...!' वह जगन की आवाज में चीखा और औंधे मुंह लॉन में लेट गया।

स्टेनगन को उसने ऐसे पकड़ रखा था कि किसी भी वक्त वह फायर कर सके।

□□□
□□□

"कौन है...?"

फिर फायर की आवाज...और फिर जगन के चीखने की आवाज।

कम्पाउण्ड में ताश खेल रहे तीनों गार्ड बुरी तरह से उछल पड़े।

बिना कोई वक्त गंवाये उन्होंने पत्ते फेंके और स्टेनगनें उठाकर कुर्सियां छोड़ कम्पाउण्ड से निकलकर पीछे की तरफ भागे।

सबसे आगे भाग रहे अख्तर की निगाहें लॉन में पहुंचते ही औंधे मुंह पड़े सतीश रावण पर पड़ी।

"जगन...।" वह हौले से चीखा और उसकी तरफ बढ़ा।

बाकी के दोनों भी उसकी तरफ बढ़े।

तीनों सतीश रावण के पास आकर ठिठके।

"इसे छोड़...।" तभी दूसरा बोला—"और उसे देख जिसने इसे मारा है।"

उसकी बात पर फौरन अमल करते हुए तीनों सतीश रावण की तरफ पीठ करते हुए इधर-उधर देखने लगे।

ठीक तभी सतीश रावण की आंखें खुलीं।

ऐसे जैसे कब्र में सोये किसी शैतान ने आंखें खोली हों।

उसी के साथ ही उसके हाथों में हरकत हुई। स्टेनगन उसके हाथों में कस गई।

फिर धीरे से उसकी गर्दन उठी...और फिर—

'तड़...तड़...तड़...।'

तीनों पीछे पलटकर भी नहीं देख पाये कि गोलियां चलाने वाला कौन है? उससे पहले ही उनकी पीठों में बेतहाशा सुराख हो गये।

तीनों के जिस्म जोरों से उछले और एक-दूसरे से उलझते हुए नीचे गिर पड़े।

तीनों को खत्म कर सतीश रावण उठा नहीं।

पूर्ववतः ही पड़ा रहा वह। वह यह देखना चाहता था कि कोठी के भीतरी सुरक्षा प्रबन्ध क्या हैं?

करीब एक मिनट बाद पीछे वाला दरवाजा आहिस्ता से खुला और उसमें से स्टेनगन की नाल बाहर निकली।

कुछ पल नाल स्थिर रही...फिर एक आदमी बाहर आया और इधर-उधर देखते हुए अपने बायें हाथ से बिना पीछे देखे अपने पीछे आने का इशारा किया।

फौरन के बाद एक तीन आदमी बाहर निकले।

वे तीनों भी आगे वाले की तरह स्टेगनों से लैस थे।

उनके हाथों में भी स्टेनगनें किसी भी पल गरजने को पूरी तरह से तैयार थीं।

सतीश रावण औंधे मुंह पड़ा आंखों में झिरी पैदा किये उनकी एक-एक हरकत पर निगाह रखे हुए था।

सबसे आगे वाले ने लॉन में पड़ी लाशों को देखा...फिर बोला—

"ध्यान रहे...दुश्मन के पास स्टेनगन है। इसलिये पूरी तरह

से चौंकस रहना है।'

पीछे चल रहे तीनों की तरफ देखा भी नहीं था उसने।

सतीश रावण मन ही मन मुस्कुरा पड़ा।

जिस दुश्मन की बात वह कर रहा था...वह खुद इस वक्त उनके निशाने पर था।

मगर जब बुराई आती है तो आदमी आंखों के होते हुए भी अन्धा हो जाता है। उसकी अक्ल मारी जाती है।

वही हाल उन चारों का था।

मौत उनके सामने थी...मगर वे अन्धे हो चुके थे।

सतीश रावण अब बस मौका देख रहा था कि कब उनकी पीठ उनकी तरफ हो...और कब वह अपना काम करे।

शीघ्र ही मौका मिला उसे।

चारों उसकी तरफ पीठ कर इधर-उधर फैलने लगे।

सतीश रावण ने फौरन आंखें खोलीं और ट्रेगर दबा दिया।

'तड़...तड़...तड़...।'

देखते-ही-देखते तीन ईश्वरपुरी की तरफ रवाना हो गये।

बेचारों को मुकाबला करने का भी मौका नहीं मिला।

चौथा जो कि सबसे पहले निकला था...वह उनसे थोड़ा हटकर खड़ा था। सो उसने फौरन एक तरफ छलांग लगा दी...जिसके कारण उसकी पीठ में तो सुराख नहीं हुए, मगर उसकी टांगें जरूर बेकार हो गईं।

बुरी तरह से चीख पड़ा था वह।

सतीश रावण ने बिना वक्त गंवाये अपने स्टेनगन छोड़ पास पड़ी दूसरी स्टेनगन पर कब्जा किया और अपने स्थान से लुढ़क गया।

'तड़...तड़...तड़...।'

तभी कई गोलियां उस स्थान पर आ लगीं जहां पर कि वह अभी-अभी लेटा था।

वक्त रहते उसने स्थान बदल लिया था, वरना अब तक वह भी अपाहिज हो चुका होता।

लुढ़कते हुए ही उसने स्टेनगन का मुंह खोल दिया।

'तड़...तड़...तड़...।'

गोलियां चलाने वाले के दोनों हाथ लहुलूहान हो गये और स्टेनगन उसके हाथों से छूट गई।

मगर सतीश रावण उठा नहीं...वह लुढ़कते हुए ही उसके करीब पहुंचा और स्टेनगन उसकी खोपड़ी के साथ लगा दी।

उस व्यक्ति की घिग्गी बंध गई।

टांगें और हाथ तो पहले ही बेकार हो चुके थे...अब स्टेनगन उसकी खोपड़ी से आ लगी थी।

सतीश रावण ने एक नजर खुले दरवाजे में डाली कि कोई खतरा तो नहीं आ रहा...फिर नाल का दबाव उसकी खोपड़ी पर बढ़ाते हुए जहरीले नाग की मानिन्द फुंफकारा—

"प्रताप कहां है...?"

उस व्यक्ति के होठों से एक शब्द भी नहीं निकला।

"देखो...मेरी दुश्मनी तुमसे नहीं प्रताप से है, क्यों खामखां अपनी जान के दुश्मन बन रहे हो? बताओ...प्रताप कहां है?"

"व...वो यहां नहीं हैं।" कांपते हुए कराहते हुए बोला वह व्यक्ति।

"क्या बकता है...?" गुर्राया सतीश रावण—"मुझे पक्का पता है कि वो यहीं है...।"

"व...वो तो ग्यारह बजे चले गये थे।"

"कहां...?"

"प...पीली कोठी। वहां से नानक का फोन आया था।"

"नानक कौन?"

"व...वो भी प्रताप की तरह जगतार का सिपहसालार है।"

"क्यों गया वो वहां...?"

"प...पता नहीं...।"

"पीली कोठी का पता बोल...।"

उसने पता बताया।

सतीश रावण ने उससे कुछेक सवाल और किये और ट्रेगर दबा दिया।

'तड़...तड़...तड़...।'

उस व्यक्ति की खोपड़ी के चीथड़े उड़ गये।

सतीश रावण ने गहरी सांस छोड़ी और खड़ा हो गया।

जिस आदमी की तलाश में वह यहां आया था...वह तो ग्यारह बजे ही कोठी से निकल गया था।

"पीली कोठी...!"

वह बड़बड़ाया और स्टेनगन पकड़े सामने वाली साइड में आया और दीवार फांद कर सड़क पर आ गया।

स्टेनगन को उसने दीवार फांदने से पहले ही भीतर फेंक दिया था।

काश कि वह कोठी से निकलने से पहले कोठी के भीतर भी एक राउण्ड लगा लेता तो उसे वहां एक और शख्स के भी दर्शन हो जाते...जो कि एक औरत थी।

❑❑❑
❑❑❑

"मैं कहता हूं रुक जाओ...वरना मैं गोली चला दूंगा।"

एक चीखती आवाज को सुन शिवचरण बुरी तरह से चौंक उठा।

उस वक्त वह चांदनी के घर से थोड़ी दूर एक हलवाई की दुकान के बंद शटर के साथ पीठ लगाये... घुटनों को सीने से लगाये दुबक कर बैठा था।

अभी वह चौंका ही था कि तभी उसने एक व्यक्ति को भागते देखा जो कि बुरी तरह से बदहवास था।

इससे पहले कि वह सम्भलता... वह व्यक्ति सीधा चांदनी के घर के आगे रुका और जोर-जोर से दरवाजा पीटने लगा।

ठीक तभी दरवाजा खुला।

"प... प्लीज... मुझे बचा लो... प... पुलिस मेरे पीछे लगी है।" वह व्यक्ति गिड़गिड़ाया।

इधर शिवचरण ने दो व्यक्तियों को देखा जो कि पुलिस की वर्दी पहने हुए थे।

हालांकि उस वक्त अंधेरा था... ऊपर से धुन्ध भी थी, मगर स्ट्रीट लाइट में शिवचरण ने उनमें से एक को पहचान लिया।

तभी तो बुरी तरह से उछल पड़ा था वह।

"अपने आप को कानून के हवाले कर दो...।" दोनों में से एक जो कि रिवाल्वर ताने हुए था, दहाड़ा।

मगर उस व्यक्ति ने फौरन चांदनी को खींचा और अपने सामने कर दिया।

ठीक तभी गोली चली।

'धांय...।'

चांदनी की चीख पूरे इलाके में गूंज उठी और उसी के साथ ही उसके सीने में सुराख हो गया।

वह व्यक्ति चांदनी को फेंक एक तरफ भाग खड़ा हुआ।

'धांय... धांय...।'

पुलिस वाले ने दो फायर और किये।

मगर वह व्यक्ति वहां से भागने में कामयाब हो गया।

दोनों पुलिस वाले भी उसके पीछे-पीछे भागे... और देखते-ही-देखते आंखों से ओझल हो गये।

उनके वहां से जाते ही अड़ोस-पड़ोस के दरवाजे खुलने लगे... और देखते-ही-देखते चांदनी की लाश के आसपास लोगों की भीड़ इकट्ठी होने लगी।

"बेचारी... खामखां मारी गई।" एक बोला।

"पहले ही क्या कम दुखी थी... जो अब मौत लील गई इसे।" दूसरे ने अफसोस भरे स्वर में कहा।

"क्या जरूरत थी दरवाजा खोलने की...?" तीसरा बोला—"एक बड़े अपराधी का पीछा कर रही थी पुलिस और... यह

उनकी मुठभेड़ का शिकार हो गई।"

"अरे कोई थाने भी तो फोन करो... ।" चौथा बोला–"या यूं ही बातें करते रहोगे।"

पहले वाले ने घूरकर उसे देखा।

"पुलिस की गोली का शिकार हुई है यह... फिर थाने फोन करने की क्या जरूरत? फिर भी अगर शौक है तो खुद ही कर लो न... हमें क्यों फंसाना चाहते हो लफड़े में?"

वह व्यक्ति बगलें झांकने लगा।

"देख लेना ..अब पुलिस इस बेचारी की मौत किसी दूसरे के सिर मढ़ देगी... ।"

तीसरा बोला।

वो तो पुलिस का काम है ही।" दूसरा बोला।

"भाई मैं तो चला... मुझे सुबह जल्दी उठना है... दिल्ली जाना है मुझे।"

एक व्यक्ति बोला और वहां से हट गया।

फिर दूसरा हटा... फिर तीसरा... और देखते-ही-देखते वहां से सभी खिसक गये।

कारण यही था कि कोई भी पुलिस से बैर नहीं लेना चाहता था।

अब वहां सिर्फ चांदनी की लाश पड़ी थी।

कुछ ही दूर एक पब्लिक बूथ में खड़ा शिवचरण थाने का नम्बर डायल कर रहा था।

❑❑❑
❑❑❑

काफी बड़ा हॉल था वह जिसमें एक तरफ रखी एक बड़ी टेबल पर नोटों की गड्डियों के ढेर लगे हुए थे तथा टेबल के दोनों तरफ रखी कुर्सियों पर बैठे नानक और प्रताप नोटों को गिन रहे थे।

हॉल में एक तरफ फर्श पर बिछे प्लास्टिक पर ब्राउन शुगर का ढेर लगा था... जिसके इर्द-गिर्द वह व्यक्ति बैठे उस ब्राउन शुगर की कागजों की छोटी-छोटी पुड़ियां बनाकर रख रहे थे।

हर एक के पास पुड़ियों का छोटा-छोटा ढेर लगा हुआ था।

जिस हॉल में यह सब हो रहा था... वह पीली कोठी का बेसमेंट था।

आज शाम को बीस करोड़ की ब्राउन शुगर पहुंची थी... और सुबह उनकी पुड़ियां बनाकर एजेन्टों को पहुंचानी थी, जिनकी पेमेन्ट वे आज शाम कर गये थे। इसी वजह से नानक ने प्रताप को बुला लिया था।

बेसमेंट की सीढ़ियों के मुहाने पर स्टेनगनों से लैस दो व्यक्ति

पूरी चौकसी से पहरा दे रहे थे।

तभी फोन की घण्टी बजी।

नानक ने अपने हाथ में नयी नोटों की गड्डी को गिनना बन्द किया और अपने दायीं तरफ रखे फोन की तरफ हाथ बढ़ाया।

"हां बोल... !" वह रिसीवर कान से लगाते हुए बोला।

"प्रताप साहब का फोन है... !" आवाज आई—"उनकी कोठी से किसी मेघना ने फोन किया है।"

"क्यों... ?"

"पता नहीं बॉस... मगर वह काफी घबराई हुई लग रही है।"

नानक ने रिसीवर प्रताप की तरफ बढ़ाया।

"तेरी माशूका का फोन है। कर ले बात... !" वह बोला।

"प्रताप ने रिसीवर लिया और कान से लगाया।

"बात करा।" वह तनिक गुस्से में बोला।

तुरन्त हल्की-सी क्लिक की आवाज हुई और फिर मेघना की आवाज उसके कान में पड़ी।

"हैलो... !"

"हरामजादी... !" गुर्राया प्रताप—"ज्यादा आग लगी हुई है तुझे। मैंने तुझे कहा भी हुआ था कि... !"

"ए... ऐसी बात नहीं बॉस... !" दूसरी तरफ से कांपती आवाज आई।

"तो फिर फोन क्यों किया... क्या तेरी मां भी तेरे साथ शेयर करने आई है?"

"अ... आपकी कोठी पर हमला हुआ है बॉस।"

"व्हाट!" प्रताप इतनी जोरों से चौंका कि झटके से खड़ा हो गया।

"यस बॉस... ह... हमारे सभी छः गार्ड मारे गये हैं। मुझे छोड़कर बाकी सभी लाशों में तब्दील हो गये हैं।"

प्रताप के हाथ से रिसीवर छूटते-छूटते बचा।

"और तू कैसे बच गई कुतिया... ?"

दूसरी तरफ से बताया गया।

"कौन थे हमला करने वाले?"

"म... मैं सिर्फ एक को ही देख पाई हूं बॉस और... और मेरे ख्याल से हमलावर वही एक था।"

"सिर्फ एक... !" हैरानी नाच उठी प्रताप के चेहरे पर—"सिर्फ एक आदमी ने मेरे गार्डों को मार गिराया... !"

उसे जैसे विश्वास नहीं हुआ।

"य... यस बॉस... !"

"कौन था वो हरामी... ?"

"क...कोई सरदार था।"

प्रताप ने तेजी से कुछ सोचा और बोला—"तू फौरन कोठी से दफा हो जा।"

"य...यस बॉस!"

प्रताप ने रिसीवर क्रेडिल पर रखा और नानक की तरफ देखा।

"क्या हुआ...?"

नानक बोला—जो कि उसकी बातों से ही काफी कुछ समझ चुका था।

जवाब में प्रताप ने उसे बताया तो वह भी बुरी तरह से उछल पड़ा।

"य...यह जरूर उस गनेश की करामात है।" वह बोला।

प्रताप ने जवाब नहीं दिया और रिसीवर उठाकर कोई नम्बर डायल करने लगा।

"किसे फोन कर रहा है...?"

"चीफ को...!"

□□□

□□□

'ट्रिन...ट्रिन...!'

फोन की घण्टी घनघनाई।

उस वक्त जमशेद राय राउण्ड लगाकर अपने ऑफिस में प्रविष्ट ही हुआ था।

रिसीवर उठाकर उसने कान से लगाया।

"हैलो...!" वह माउथ पीस में बोला।

"म...मैं शिवचरण की आवाज घबराहट महसूस कर चौंका जमशेद राय।

"क्या बात है...? तुम घबराये हुए क्यों हो?"

"च...चांदनी का खून हो गया है सर!"

"व्हाट...!" बुरी तरह से उछल पड़ा जमशेद राय। कलेजा जोरों से धड़क उठा उसका।

"य...यस सर।"

"कैसे हुआ खून...?"

दूसरी तरफ से बताया गया फिर आवाज आई—"दुनिया की नजरों में चांदनी पुलिस की गोली का निशाना बनी है...लेकिन वह दोनों पुलिस के जवान नहीं थे सर। उनमें से एक को पहचानता हूं मैं...!"

"कौन था वो?" कहते हुए जमशेद राय की आवाज में सख्ती उभर आई। आंखों में खून जमा होने लगा।

"बलवीर है-उसका नाम...जगतार की ट्रांसपोर्ट कम्पनी में

ट्रक ड्राइवर है वो।''

"उसका पता मालूम है?"

दूसरी तरफ से एक पता बताया गया।

जमशेद राय ने तेजी से कुछ सोचा, फिर शिवचरण को कुछ हिदायतें देकर रिसीवर रखा और सिपाही को आवाज लगाई।

"तुरन्त सिपाही भीतर प्रविष्ट हुआ।

"ए.एस.आई. नाइक को बुलाओ...फौरन...।''

सिपाही फौरन बाहर निकल गया।

ठीक तभी फोन की घण्टी पुनः घनघनाई।

'ट्रिन...ट्रिन...।'

"हैलो...।'' रिसीवर उठाकर कान से लगाते हुए बोला जमशेद राय।

"मैं बिशन सरूप कालोनी के मन्दिर का पुजारी बोल रहा हूं इंस्पैक्टर साहब।'' दूसरी तरफ से आवाज आई।

"कहिये...।''

"अभी-अभी मन्दिर के पीछे वाली कोठी में गोली-बारी हुई है। साथ ही कुछ लोगों के चीखने की आवाजें आई हैं।''

"कोठी किसकी है वो...?"

"किसी प्रताप राय की है।"

"ठीक है, पुलिस अभी वहां पहुंच रही है।''

कहकर उसने रिसीवर रखा और हाथों को मसलने लगा।

तभी नाईक ने आफिस में प्रवेश किया और एक जोरदार सैल्यूट जमशेद राय को ठोका।

ओहदे में हालांकि नाईक उसके बराबर था, मगर चूंकि वह थाने का इंचार्ज था...तो उसका रूतबा अपने आप ही बड़ा हो गया था।

जमशेद राय ने उसे चांदनी की हत्या के बारे मे बताया, फिर बिशन सरूप कालोनी से आये फोन के बारे में बताया और बोला—"बिशन सरूप कालोनी तुम खुद जाओगे और चांदनी के यहां नितीश को भेज दो...।''

"यस सर...।''

"मैं जरा उस हरामी बलवीर को देखता हूं...।''

कहते हुए जमशेद राय के चेहरे पर कठोरता उभर आई थी।

□□□

□□□

फोन की घण्टी बजते ही जगतार की आंखें खुल गईं।

अभी वह सोया नहीं था, बल्कि अगले राउण्ड की तैयारी कर रहा था...और यह राउण्ड उसके अपने साथ सटी युवती के साथ

खेलना था जिसने पहले ही राउण्ड में उसे थका दिया था।

उस वक्त वह आंखें बंद किये उसकी छातियों में मुंह दबाये उसके अंगों पर हाथ फेर रहा था।

युवती की छातियों से मुंह निकाल उसने करवट ली और हाथ लम्बा करके साइड स्टूल पर रखे फोन का रिसीवर उठा लिया।

रिसीवर को कान से लगाते हुए अचानक ही उसका कलेजा धड़क उठा था। यह सोचकर कि कहीं उसके दुश्मन राजेश ने फिर से कोई चोट तो नहीं दे दी थी।

"हैलो।" वह धीमे स्वर में बोला।

"म...मैं प्रताप बोल रहा हूं चीफ।"

प्रताप की आवाज सुनकर जगतार के कलेजे को राहत मिली।

"हां बोल...।" वह बोला—"पुड़ियां बन गईं क्या...?"

"नहीं...अभी नहीं बनीं।"

"तो फिर फोन क्यों किया...?"

"मेरी कोठी पर हमला हुआ है चीफ...।"

"क्या...?" जोरों से चौंका जगतार।

"यस चीफ...एक भी नहीं बचा...। हमला करने वाला कोई सरदार था।"

"तुझे कैसे पता चला...?"

दूसरी तरफ से बताया गया।

"जरूर यह हमला उस हरामजादे गनेश ने किया है। वर्ना और किसी में इतनी हिम्मत नहीं जो जगतार के सामने सिर उठा सके।" गुर्राया जगतार फिर कुछ सोचकर बोला—"तू फौरन नानक के साथ पीली कोठी से निकल और नानक की कोठी में चला जा...।"

"यस चीफ...।"

उसके बाद लगातार उसे समझाने लगा कि उसे क्या करना है।"

तत्पश्चात उसने रिसीवर रखा और बैड की पुश्त से टेक लगाकर बैठ गया।

युवती सरक कर उसकी टांगों से लिपट गई और उसकी गोद में अपना मुंह छुपा लिया।

जगतार ने एक नजर युवती पर डाली, फिर गहरी सोचों में डूब गया।

युवती हालांकि उसे तैयार करने की पूरी कोशिश कर रही थी, मगर इस वक्त उसका जेहन कहीं और भटक रहा था, ऐसे में युवती की कोशिश बेकार साबित हो रही थी।

तभी पुनः फोन की घण्टी बजी।

गहरी सांस छोड़ते हुए जगतार ने रिसीवर उठाया।

"हैलो।"

"मैं बलवीर बोल रहा हूं चीफ...।" आवाज आई—"काम हो गया है।"

"गुड।" बोला जगतार—"किसी को शक तो नहीं हुआ...।"

"जी नहीं...जैसा आपने कहा था, बिल्कुल वैसा ही हुआ है अड़ोस-पड़ोस के लोगों को पता चल गया है कि चांदनी पुलिस की गोली का शिकार हुई है।"

"वैरी गुड...अब तू आराम कर तेरा काम खत्म।"

कहकर उसने रिसीवर रख दिया।

चांदनी का काम तमाम हो जाने से उसे बहुत बड़ी राहत मिली थी, अगर वह जिंदा रहती तो उसके खिलाफ बहुत बड़ा सबूत बन सकती थी और तब उसकी सारी इज्जत मिट्टी में मिल जाती...ऊपर से गिरफ्तार भी होता।

मगर अब उसे कोई डर नहीं था...।

इस चिंता के दिमाग से हटते ही उसका ध्यान युवती की तरफ हुआ...और उसी के साथ ही उसके खून में गर्मी भरने लगी।

❑❑❑

❑❑❑

"आ...ह...उंह...बस...अब और बर्दाश्त नहीं होता... ओह...समा जाओ मुझमें राजा...प्लीज...और न तड़पाओ मुझे।"

और फिर अंधेरे में गर्म सांसों की आवाजें इस तरह गूंजने लगी जैसे कोई दो बिगड़े हुए सांड एक-दूसरे से उलझ पड़े हों।

पलंग के चरमराने की आवाजें आने लगीं।

साथ ही आह...ऊह...वाह...मजा आ गया जैसी आवाजें आने लगी।

और फिर थोड़ी देर बाद गहरी तथा शांत सांसें कमरे में गूंजने लगी।

"बुरी तरह थका डाला है तुमने मुझे तो...।" थोड़ी देर बाद एक जनाना आवाज कमरे में गूंजी—"लगता है एक ही वार में पूरी बोतल पिला दी है तुमने...।"

"हा...हा...हा...।" एक मर्दाना हंसी उभरी।

"और एक वो मेरा कम्बख्त खसम है...जो चढ़ता बाद में उतर पहले जाता है। बंद भट्टी को बाहर से ही छींटे मारकर समझ लेता है कि आग बुझ गई है। जबकि उन छींटों से भट्टी और भी सुलग उठती है।"

"अब तो बुझ गई है न भट्टी?"

"हां...अब तो बुझनी ही थी। इतनी तेज बौछार पड़ी है...बुझती कैसे नहीं...। पता नहीं क्या-क्या कुश्ते खिला दिये हैं

मैंने मेरे खसम को... मगर उस पर कोई असर ही नहीं। घोड़ा बनना तो दूर...हरामी गधा भी नहीं बन सका। कई बार तो दिल करता है कि गर्दन काट डालूं उसकी।"

"तो काट दो ना...उसके बाद मुझे यूं चोरी-चोरी यहां नहीं आना पड़ेगा।"

"क्या बकवास करते हो...मैं एक औरत उसकी गर्दन काट सकती हूं क्या...?"

"तो मैं किस मर्ज की दवा हूं...। हम दोनों के प्यार में तेरा खसम दीवार है। हम दोनों मिलकर उसे तोड़ देते है, फिर सारी उम्र हम एक-दूसरे के हो जायेंगे।"

"हां...यह ठीक रहेगा।"

"तो फिर पक्का रहा...कल सुबह वह आते ही पलंग पर पड़ जायेगा। तभी तुम आ जाना फिर हम दोनों...।"

"खट...खट...खट...।"

तभी दस्तक की आवाज हुई साथ ही औरत की सिसकारी गूंजी।

"य...यह रात के इस वक्त कौन आ मरा...।" औरत की कांपती आवाज।

"कहीं तेरा खसम तो नहीं?" आदमी की कांपती आवाज—"अ...अगर वह हुआ तो मुझे तो देखते ही वह जमीन में गाड़ देगा।"

"और मुझे क्या छोड़ देगा वह।" औरत की आवाज।

और फिर हल्की-सी खट की आवाज के साथ कमरे में बल्ब का पीला प्रकाश फैल गया।

दीवार के पास पूर्णतया निर्वस्त्र एक औरत खड़ी थी। खौफ से उसका रंग पीला पड़ा हुआ था तथा पूरा वजूद कांप रहा था।

इसी तरह बेड पर ... अपने कपड़े संभालता आदमी भी बुरी तरह से घबराया हुआ था।

बेड के पास जाकर औरत जल्दी-जल्दी अपने कपड़े पहनने लगी।

आदमी भी कपड़े पहन रहा था।

पुनः दस्तक हुई।

"तुम बेड के नीचे छुप जाओ...अगर मेरा खसम हुआ तो रात को किसी वक्त मौका देखकर तुम्हें निकाल दूंगी...।"

आदमी बिना वक्त गंवाये बेड के नीचे घुस गया।

अभी थोड़ी देर पहले दोनों बहादुरी से खून करने की बातें कर रहे थे, मगर अब वह सारी बहादुरी गायब हो चुकी थी।

औरत ने दरवाजे का रुख किया और अपने चेहरे को ... हाथों

से पोंछती हुई कमरे से बाहर निकल कर आंगन में आई और मेन गेट की तरफ बढ़ी।

मेन डोर के नीचे आकर उसने जैसे ही दरवाजा खोला. . .उसकी ऊपर की सांस ऊपर और नीचे की नीचे रह गई।

सामने अपनी फुल वर्दी में जमशेद राय खड़ा था।

उसके पीछे सड़क पर उसकी जीप खड़ी थी।

"बलबीर कहां है?" उसके घबराये चेहरे को घूरते हुए बोला जमशेद राय।

"व...वो तो ट्रक लेकर गये है...।" थर्राये स्वर में बोली औरत।

"तू...?"

"मैं उनकी पत्नी हूं...सविता रानी।"

"तो बलवीर बाहर गया है।" इस बार जमशेद की आवाज में गुर्राहट थी।

"ह...हां...।"

"तो फिर भीतर कौन है?"

सविता का पूरा जिस्म थर्रा उठा। मन-ही-मन वह हैरान हो रही थी कि उसे कैसे पता चल गया कि अन्दर कोई है।

"अ...अन्दर तो कोई नहीं...।" वह बुरी तरह से कांपते स्वर में बोली।

"बकवास करती है।" गुर्राया जमशेद राय--"सच-सच बोल...कौन है अन्दर...?"

"क...कोई नहीं...।" बुरी तरह से फंसे स्वर में बोली सविता।

जमशेद राय ने बांह आगे करके उसे एक तरफ किया और जबरदस्ती भीतर प्रवेश कर गया।

सविता की हालत ऐसी होने लगी मानो वह अभी गश खाकर गिर पड़ेगी। उसका कलेजा धाड़-धाड़ करता उसकी पसलियों से टकरा रहा था। अपने भीतर उसे इतनी हिम्मत भी महसूस नहीं हो रही थी कि वह जमशेद राय की राह रोककर कह सके कि उसे एक अकेली औरत के घर में रात के इस वक्त दाखिल होने का कोई अधिकार नहीं...।"

जमशेद राय सीधा बेडरूम में पहुंचा जिसमें कि लाइट जल रही थी।

बेड पर बिछे बिस्तर की हालत देखकर वह मुस्कुरा पड़ा...।

साफ नजर आ रहा था कि बेड पर खूब जमकर कुश्ती हुई है।

और उसकी के साथ ही उसकी निगाहें बेड के नीचे एक जोड़ी पांव पर पड़ी।

"बाहर आ जा...।" वह गुर्राया।

कुछ ही पलों में वह आदमी बेड के नीचे से निकल आया जिससे कि सविता कुछ देर पहले बिस्तर पर कलाबाजियां खा रही थी।

सविता की तरह वह भी बुरी तरह कांप रहा था।

जमशेद राय को समझते देर नहीं लगी कि बलबीर की पत्नी ने उसकी गैरमौजूदगी में अपने इस यार को बुलाया था।

"क्या नाम है तेरा...?" गुर्राया जमशेद राय।

इस व्यक्ति ने जोरों से थूक सटकी...फिर सहसा ही उसके पैरों में गिर पड़ा और लगा गिड़गिड़ाने...।

"म...मुझे माफ कर दीजिये साहब...। म...मैं कसम खाता हूं कि आगे से मैं कभी ऐसा काम नहीं करूंगा।"

"नाम बोल अपना...।"

"र...रा...जा...।"

"कहां रहता है...?"

"प...पास के मोहल्ले में।"

"कब से चल रहा है यह चक्कर?"

राजा के गले की घण्टी जोरों से उछली।

"जवाब दे...।"

"द...दो साल हो गये है।" कहते हुए उसने सविता की तरफ देखा जो कि दरवाजे में खड़ी थर-थर कांप रही थी।

"वहां बैठ जा...।" जमशेद ने एक कुर्सी की तरफ इशारा किया।

"म...मैं कसम खाता हूं साहब मैं...।"

"बैठ जा...।"

हड़बड़ाते हुए राजा कुर्सी पर जाकर बैठ गया।

"और तू...!" जमशेद ने सविता की तरफ गर्दन मोड़ी—"जाकर अपने कपड़े सीधे करके पहन...।" कहते हुए उसने बांह उसकी तरफ लम्बी करके ऊपर नीचे की।

बुरी तरह से हड़बड़ाते हुए सविता ने अपनी कमीज देखी।

कमीज उलटी पहन रखी थी उसने।

फौरन समझ गई वह कि उस पुलिसिये को कैसे पता चला कि अन्दर कोई था...और यह भी पता चल गया कि वह भीतर क्या कर रही थी।

हड़बड़ाते हुये ही वह वहां से हटी और बाथरूम की तरफ लपकी।

शीघ्र ही वह कपड़े सीधे पहन कर वापस लौट आई। तब तक जमशेद राय कुर्सी पर बैठ चुका था।

"बैठ...।" वह बोला।

सविता बुरी तरह से सहमी हुई बैड के किनारे पर बैठ गई।
"क्या करता है तेरा घरवाला?"
"व...वो ट्रक चलाते हैं...।" थूक सटकते हुए बोली सविता।
"किसका ट्रक चलाता है?"
"ज...जगतार ट्रांसपोर्ट...।"
"जानती है क्या किया है तेरे घरवाले ने?"
सविता कुछ नहीं बोली...बस थूक सटक कर रह गई।
"खून किया है उसने।"
"ख...खून...।" उछल पड़ी सविता।
राजा भी खून का नाम सुनकर उछल पड़ा।
"हां खून...एक शरीफ औरत का खून...और मैं उसे गिरफ्तार करने आया हूं...।"
"ल...लेकिन वो तो घर में नहीं हैं।"
"वो तो तेरे यार को देखकर ही पता चल रहा है कि वो घर में नहीं है।" उसने राजा की तरफ इशारा किया।
सविता का चेहरा कानों तक लाल हो उठा।
बेशक उसके राजा के साथ अवैध सम्बंध थे। बेशक अभी थोड़ी देर पहले वह बलवीर को खत्म करने की बात कर रही थी, मगर किसी तीसरे के मुंह से निकला यार शब्द उसे गाली की तरह पड़ा।
मगर वह कर भी क्या सकती थी। मन-ही-मन अपने गुस्से पर काबू पाते हुए उसने सिर झुका लिया।
"और मैं तब तक यहीं बैठा हूं जब तक कि वह आ नहीं जाता...और तब तक तेरा यह यार भी यहीं रहेगा...।"
अभी उसकी बात खत्म ही हुई थी कि बाहर से दरवाजे पर दस्तक पड़ी।
"खट...खट...खट...।"
जमशेद राय फौरन कुर्सी छोड़कर खड़ा हो गया।
"लगता है बलवीर आया है। दरवाजा खोल जाकर।"
सविता जैसे ही खड़ी हुई...जमशेद राय पुनः बोल पड़ा—
"एक बात का ध्यान रखना...अगर तूने उसे कोई इशारा किया तो फिर तेरी और तेरे यार की हकीकत तो सामने आयेगी ही तुम्हारी जो हालत होगी...उसका तुम अंदाजा नहीं लगा सकती।"
"म...मैं कोई इशारा नहीं करूंगी।"
"ऐसा करके फायदे में ही रहोगी...अब जा...खोल दरवाजा।"
सविता दरवाजे की तरफ बढ़ गई।
"तू यहीं बैठा रहेगा...।" जमशेद राय ने राजा को हुक्म

सुनाया और फिर वह भी सविता के पीछे-पीछे बाहर निकल गया।

सविता मेन डोर के करीब पहुंची तो जमशेद राय दरवाजे के पीछे दीवार से सटकर खड़ा हो गया।

तभी एक अज्ञात आशंका से उसका कलेजा धड़क उठा।

उसकी जीप दरवाजे के सामने सड़क पर खड़ी थी। ऐसे में अगर बलवीर को जरा भी संदेह हो गया तो वह फौरन यहां से भाग निकलेगा।

अपनी इस बेवकूफी पर अब उसे पछतावा तो हो रहा था, मगर अब किया भी क्या जा सकता था।

"कौन है...?"

तभी सविता बोली।

"दरवाजा खोलो...।" बाहर से आवाज आई।

सविता ने जमशेद राय की तरफ देखा।

जमशेद राय ने उससे इशारे में पूछा कि क्या बाहर बलवीर ही है?

सविता ने हां में सिर हिलाया।

जमशेद राय ने दरवाजा खोलने का इशारा किया।

सविता ने दरवाजा खोला।

बाहर बलवीर ही था जोकि गर्दन पीछे मोड़े हुए जीप को देख रहा था।

"यह पुलिस की जीप यहां क्यों खड़ी है?"

गर्दन सीधी कर उसने सविता से पूछा।

"मुझे क्या पता?" सविता ने कंधे उचकाये—"आई होगी किसी के घर...।"

"मैंने समझा हमारे घर आई है...।"

कहते हुए जैसे ही उसने भीतर प्रवेश किया...पीछे से जमशेद राय की लात पूरे वेग से उसके कूल्हों पर पड़ी।

चीखता हुआ बलवीर उछलकर मुंह के बल आगे को गिरा।

उसका माथा पूरे वेग से फर्श से टकराया और वहां से खून बह निकला।

तभी जमशेद राय ने छलांग लगाई और उसकी पीठ पर सवार हो हथकड़ी निकाली और उसके हाथ पीछे कर उसकी कलाइयों में हथकड़ी डाल दी।

तत्पश्चात वह उसकी पीठ से उठा और बूट की भरपूर ठोकर उसके कूल्हों पर जमा दी।

बलवीर चीखता हुआ करवट में लुढ़क गया।

झुक कर जमशेद राय ने उसके बालों को पकड़ा और खड़ा कर दिया।

बलवीर का पूरा चेहरा खून से रंग गया था उसकी आंखों में बाल खिंचने की असहनीय पीड़ा नजर आ रही थी।

पीड़ा के साथ वह हैरान हो रहा था कि पुलिस वहां कैसे पहुंच गई।

"हैरान हो रहा है न...।" जमशेद राय उसके बालों को झिंझोड़ते हुए बोला—"कि पुलिस को इतनी जल्दी तेरा पता कैसे चल गया कि तू अभी-अभी एक खून करके लौटा है।"

बलवीर ने सख्ती से होंठ भींच लिये। बोला कुछ नहीं वह।

"अब आगे की कार्यवाई थाने में होगी...वहीं चलकर तेरे से पूछूंगा कि चांदनी को मारने का हुक्म तुझे किसने दिया था।"

यह कहकर उसे लगभग घसीटते हुए बाहर ले गया...।

उसने बलवीर को जीप की पिछली सीट पर फेंका और फिर उसे जीप के फ्रेम के पाइप के साथ हथकड़ी से जकड़कर स्टीयरिंग के पीछे आ बैठा।

कुछ ही देर में जीप थाने की तरफ उड़ती जा रही थी।

□□□

□□□

"वैसे एक बात तो माननी पड़ेगी शाहिद...।"

"क्या...?"

"यह साला गनेश बड़ी ही कुत्ती चीज है। कुछ ही दिनों में ही इसने हमारे पूरे गैंग को हिलाकर रख दिया है...यहां तक कि चीफ की नींद तक हराम कर दी है उसने।"

"हां...यह तो है।" शाहिद स्टेनगन की नाल में झांकते हुए बोला—"गनेश से पहले किसी माई के लाल में इतनी हिम्मत नहीं थी कि वह चीफ के एक प्यादे के सामने भी आंख उठा सके, मगर इस हरामी ने तो चीफ के सामने पूरा सिर ही उठा दिया है...और चीफ को चोट पर चोट दिये जा रहा है। जबकि चीफ अभी तक उसका बाल भी बांका नहीं कर पाये। पहले उसने रमेश और रेखा को मारा फिर इंस्पेक्टर शिवदयाल को उसके पूरे खानदान के साथ खत्म कर दिया और तो और उसकी बीवी को मारने से पहले हरामी ने उसके साथ ऐश की, फिर उसको मारा और अब प्रताप साहब की कोठी पर हमला बोल दिया और वहां मौजूद किसी भी आदमी को नहीं छोड़ा।"

"हैरानी तो यह सोचकर हो रही है कि वह अकेला ही हम सब पर भारी पड़ रहा है। कमबख्त हाथ भी तो नहीं आता।"

"हां...कई बार तो दिल यही सोचता है कि वो गनेश है ही नहीं...।"

"क्या मतलब...?"

शाहिद का जोड़ीदार रूस्तम चौंकते हुए बोला।

"कभी गनेश का नाम सुना है? अण्डरवर्ल्ड में मैंने तो आज तक किसी गनेश का चर्चा नहीं सुनी... जबकि जिस तरह गनेश चीफ को छका रहा है... उससे ऐसा लगता है कि वह खेला खाया व्यक्ति है। तजुर्बेकार है और हर कदम सोच समझ कर उठाने वाला है और अकेले अपने दम पर बड़े-बड़े गैंगस्टरों को छकाने वाले अण्डरवर्ल्ड में बस दो ही आदमी हैं।"

"कौन...?"

"बलराज गोगिया! और सतीश रावण।"

बुरी तरह से चौंका रूस्तम...।

"त...तू यह कहना चाहता है कि गनेश, गनेश नहीं बल्कि बलराज गोगिया या सतीश रावण हैं।"

"मैं यह नहीं कह रहा।"

"तो...।"

"अरे यार मैं तो यह कह रहा हूं कि यह दो शख्स अपने अकेले के दम पर कुछ भी कर सकते हैं और उनकी तरह गनेश भी अकेले अपने दम पर चीफ को छका रहा है। बाकी हो भी सकता है कि वह उन दोनों में से कोई हो, क्योंकि उन्हें हम में से किसी ने देखा तो है नहीं और अगर वह उन्हीं में से एक हैं तो निश्चय ही चीफ ने भी उन्हें पहले कभी नहीं देखा।"

रूस्तम और शाहिद के बीच यह बातें पीली कोठी के बेसमेंट की सीढ़ियों के मुहाने पर हो रही थीं। पीली कोठी जाने से पहले नानक ने पीली कोठी में पिशाच जारी किया था, अगर कोई जबरदस्ती भीतर घुसने की कोशिश करे तो उसे फौरन से पहले गोली से उड़ा दिया जाये। साथ ही पुड़िया बनाने का काम करते रहने को भी कहा था और फिर वह प्रताप के साथ वहां से चला गया था।

रूस्तम के चेहरे पर सोचें उभर आई। शाहिद की बात उसे दमदार लगी, मगर फिर यह सोचकर कि बलराज गोगिया या सतीश रावण लखनपुर जैसे शहर में क्यों आयेंगे वे तो किसी महानगर में डेरा डालेंगे उसने उन दोनों को अपने जेहन से निकाला और बोला–

"बात तो तेरी ठीक है, मगर गनेश उनमें से नहीं हो सकता।"

"क्यों...?"

रूस्तम ने अभी-अभी जो सोच उसके मन में उभरी थी उस पर व्यक्त की और बोला–

"वह गनेश नाम का कोई अपराधी ही होगा, जो अभी तक किस्मत के बल पर चीफ को छका रहा है। यूं भी अभी तक चीफ ने अपनी तरफ से ऐसा कुछ नहीं किया वर्ना अब तक तो वह किसी चौराहे पर मरा पड़ा होता।"

"इतना नुकसान हो गया है चीफ का, और अभी तक उन्होंने कोई चाल नहीं चली।"

"नुकसान आज ही हुआ है...। देखना कल चीफ जरूर कोई ऐसा पासा फेंकेंगे जिसमें कि गनेश के फंस जाने की सौ प्रतिशत संभावना होगी।"

"लेकिन जाल तो तभी फेंका जायेगा न जब उन्हें गनेश का पता चलेगा।"

"बहेलिया जब जाल बिछाता है तो उसे यह पता नहीं होता कि पंछी कहां-कहां हैं...। वह जाल में दाना रख देता है...और उसी दाने को देख पंछी खुद-ब-खुद खिंचा चला आता है। चाहे वह कहीं भी हो।"

"यानि अब चीफ उसे दाना डालेंगे...।"

"हां...और वो दाना क्या होगा...यह तो चीफ ही जानें...।"

अभी उसकी बात पूरी भी नहीं हुई थी कि तभी...।

□□□

□□□

वह एक दो मंजिला कोठी थी जिसके सामने सड़क पर सतीश रावण एक वृक्ष के तने के पीछे छुपा हुआ कोठी को देख रहा था।

अपने नाम के अनुरूप वह कोठी पीले पेंट से पुती हुई थी...ऐसे जैसे वह कोई सरकारी इमारत हो।

गेट बंद था और बंद गेट के बाहर स्टेनगनों से लैस दो गार्ड मौजूद थे।

जिस अंदाज से दोनों ने स्टेनगनें तान रखीं थी...उसी से पता चल रहा था कि दोनों पूरी तरह से चौकस हैं...और किसी भी सम्भावित खतरे का सामना करने के लिए पूरी तरह तैयार हैं।

दोनों तरफ बनी बाऊंड्री वाल करीब दस फीट ऊंची थी और उसके ऊपर लोहे की नोकदार ग्रिल थी ऐसी कि कोशिश करके भी दीवार फांदकर भीतर नहीं घुसा जा सकता था।

चूंकि सतीश रावण फुटपाथ पर था ऐसे में वह ग्राउंड फ्लोर पर क्या है...वह नहीं देख सकता था।

हां दूसरी मंजिल जरूर नजर आ रही थी उसे जिसके कम्पाउंड के बाहर उसे रेलिंग के साथ लगकर खड़े दो व्यक्ति आपस में बातें करते नजर आ रहे थे।

कम्पाउंड के अलावा एक खिड़की में से रोशनी नजर आ रही थी जोकि इस तरफ इशारा करती थी कि भीतर कोई है।

सतीश रावण ने कोठी की छत की तरफ निगाह मारी।

वहां कोई उसे हलचल नजर नहीं आई।

छत पर दाईं तरफ पानी की काफी बड़ी सिनटेक्स की काले

रंग की टंकी पड़ी थी जोकि तारों की रोशनी में अपने भीतर से निकले दाईयों के कारण अजीब-सा रूप बनाती नजर आ रही थी।

सतीश रावण कुछ देर टंकी को देखता रहा... फिर उसने साथ वाली कोठी की तरफ देखा... !

वह चार मंजिला कोठी थी।

सतीश रावण ने दूसरी मंजिल से पीली कोठी की छत के नीचे की दूरी का अंदाजा लगाया।

तीस फीट से ज्यादा का फासला था उनमें और इतनी दूरी फांद कर पूरी नहीं की जा सकती थी।

पीली कोठी के बाईं तरफ एक खाली प्लाट था जिसमें कि छोटी-छोटी झाड़ियां उगी हुई थीं उसके बाद भीतर को जाती गली थी।

सतीश रावण ने गहरी सांस छोड़ी फिर पेड़ के पीछे से निकलकर इस तरह आगे बढ़ा जैसे उसका पीली कोठी से कोई वास्ता ही न हो।

थोड़ा आगे जाकर उसने गर्दन पीछे मोड़कर गार्डों की तरफ देखा।

जिस जगह वह खड़ा था... वह स्थान अंधेरे में था, जबकि गार्डों वाले स्थान पर रोशनी थी। गेट के दोनों तरफ बने पिलरों पर लाइटें जल रही थीं।

इस वजह से वह आसानी से उन्हें देख सकता था।

दोनों गार्ड अभी भी पूरी तरह से अलर्ट नजर आ रहे थे और जिस तरह से खड़े थे... उससे साफ पता चल रहा था कि उनकी ड्यूटी यही है कि कोठी के करीब किसी को ठहरने न दें।

सतीश रावण मुस्कुराया। फुटपाथ से उतरा सड़क पार की कोठी की साइड में आ गया।

अंधेरे का लाभ उठाते हुए वह कोठी की तरफ बढ़ा और खाली पड़े प्लाट के करीब आकर भीतर जाती गली में प्रवेश कर गया।

कुछ कदम आगे बढ़ाकर उसने पूरी सतर्कता से प्लाट में प्रवेश किया और दबे पांव बिना कोई आवाज पैदा किये बाऊंड्री वाल की तरफ बढ़ा।

बाऊंड्री वाल के करीब आकर उसने सावधानीवश इधर-उधर देखा, फिर हाथ ऊंचाकर अपनी पूरी शक्ति से जम्प लिया।

मगर नाकामी ही हाथ लगी उसे।

उसके पैर नीचे जमीन पर वापिस आ लगे। उसी के साथ ही वह लड़खड़ाया।

वजह थी... उसके दायें पैर के नीचे एक पत्थर आ गया था जिस पर से कि उसका पैर फिसल गया था।

उसने खुद को सम्भालने की कोशिश की, लेकिन नाकामी ही हाथ लगी।

नतीजा... वह धड़ाम से नीचे आ गिरा।

जैसे ही वह उठने को हुआ उसे भागते हुए कदमों की आवाज सुनाई दी... जो कि उसी की तरफ आ रही थी।

बिना कोई वक्त गंवाये सतीश रावण लुढ़का और करीब की एक झाड़ी में रेंग गया।

उसी झाड़ी में एक सूअर महाशय बैठे आराम फरमा रहे थे। एक अतिथि को अपने घर में घुसते देख के घुर-घुर करते हुए उठे और झाड़ी से निकल भागे।

ठीक तभी गेट पर खड़े दोनों गार्डों में से एक प्लाट के सामने आ खड़ा हुआ... !

उसने जेब से टार्च निकाली और उसे ऑन कर प्लाट में उसकी तेज रोशनी फेंकी।

दूसरे हाथ से उसने स्टेनगन को इस तरह पकड़ रखा था मानो किसी भी वक्त गोली चलानी पड़ सकती हो।

घूमती हुई टार्च की रोशनी सुअर पर पड़ी तो वह घुर-घुर करता घूमा... ।

"साला... !" वह बड़बड़ाया—"खामखां डरा दिया... !"

उसने टार्च बंद की और अपनी पैंट की साइड में लटक रही चेन में फंसाई और वापिस मुड़ गया।

झाड़ी में घुसे सतीश रावण ने राहत भरी गीली लम्बी सांस छोड़ी, अगर गार्ड जो अब थोड़ा सा और रोशनी डालती तो कोई बड़ी बात नहीं थी कि वह उसकी निगाह में चढ़ जाता, फिर जो होता... उसे सोचकर ही वह भीतर से दहल उठा था।

गार्ड के जाने के थोड़ी देर बाद तक वह वैसे ही झाड़ी में दुबका रहा, फिर वह आहिस्ता से झाड़ी से बाहर निकला और अपने कपड़ों पर हाथ फेरा।

ठीक तभी अपने सीने पर हाथ फेरते ही उसका दिल पिघल उठा।

सुअर की गंदगी से उसका हाथ भर गया था।

फौरन उसने कपड़ों को झाड़ना बंद किया और दीवार के पास आकर दीवार से हाथ को रगड़ने लगा।

सीने के अलावा और कहां-कहां गंदगी लगी थी उसे यह उसने देखने की कोशिश नहीं की।

इस काम से निपटकर उसने पहले अपने पैरों से अपने नीचे के पत्थर एक तरफ किये, ताकि उस बार बैलेंस न बिगड़े फिर हाथ ऊंचे कर पुनः जम्प लिया।

इस बार कोशिश कामयाब रही।

बाउंड्री वाल का सिरा उसके हाथों में था।

बाहों के दम पर वह धीरे-धीरे ऊंचा उठा और गर्दन को बाउंड्री वाल से ऊंचा करके ग्रिल में से भीतर झांका।

काफी लम्बा चौड़ा लॉन था जो कि ड्राइव-वे के दोनों तरफ फैला हुआ था।

ड्राइव-वे के दोनों किनारों पर फूलदार पौधे लगे थे तथा सजावटी वृक्ष लगे थे जोकि अभी इतने ऊंचे नहीं उठे थे कि बाहर सड़क से नजर आ जायें।

लॉन में कुल छह आदमी जोकि स्टेनगनों से लैस थे... इधर से उधर टहल रहे थे। बाहर वालों की तरह वे भी पूरी तरह से चौकस थे।

उनके अलावा दो आदमी कम्पाउंड में थे।

ड्राइव-वे के कम्पाउंड के आगे से उसकी तरफ घूमकर पोर्च में खत्म हो रहा था जिसमें कि सतीश रावण को महरून रंग की टाटा सूमो खड़ी नजर आ रही थी।

पोर्च में से पक्की सड़क कोठी की पिछली साइड में जा रही थी।

सतीश रावण ने अच्छी तरह से सब कुछ देखा, फिर धीरे-धीरे नीचे होता हुआ लटका और दीवार पर से हाथ छोड़ दिये।

हल्की-सी आवाज के साथ उसके पंजे जमीन पर पड़े और फिर वह दबे पांव प्लाट से बाहर आ गया।

गली में आकर वह आगे बढ़ा और चलता हुआ कोठी की पिछली साइड में आ गया।

वहां पर भी वह जम्प लेकर पहले बाउंड्री वाल से लटका... फिर ऊंचा उठा और भीतर झांका... !

कोठी का पिछला लॉन सामने वाले लॉन से काफी छोटा था और वहां उसे तीन गार्ड टहलते नजर आये। आगे वाले गार्डों की तरह वे भी स्टेनगनों से लैस थे और पूरी तरह से अलर्ट थे।

सतीश रावण पुनः सड़क पर आया और कदम आगे बढ़ाकर चार मंजिला इमारत के सामने आ खड़ा हुआ।

उस कोठी की बाउंड्री वाल तो पीली कोठी की बाउंड्री वाल के बराबर थी, मगर उस पर नोकदार ग्रिल नहीं लगी हुई थी। सतीश रावण ने सावधानीवश इधर-उधर देखा... ! हाथ ऊंचे किये और जम्प लेकर ऊंचा उठा और गर्दन को बाउंड्री वाल से ऊंचा कर भीतर झांका... !

कोई भी नजर नहीं आया उसे।

छोटे से लॉन के तीन तरफ फूलों की क्यारियां लगी थी तथा चौथी तरफ कम्पाउंड था जिसमें कि खूब लाइट जल रही थी।

उसने तेजी से कुछ सोचा और ऊंचा उठकर अपना दांया पैर ऊपर उठाया और बाऊंड्री वाल पर रखकर पूरा का पूरा दीवार पर लेट गया।

फिर उसने भीतर की तरफ पैर लटकाये और दीवार को सम्भाल पूरा का पूरा भीतर लटक गया।

कुछ ही देर में वह कम्पाउंड में खड़ा अपने कपड़ों को देख रहा था।

उसके सीने पर अभी भी थोड़ी गंदगी जमी थी...उसके अलावा उसके घुटनों पर भी सुअर की गंदगी लगी थी।

सतीश रावण ने लॉन में आकर अपने घुटने को घास पर रगड़ा फिर सीने को भी रगड़ा और फिर हाथों को रगड़कर खड़ा हो गया।

हाथों से बदबू तो निकल चुकी थी उसके, मगर फिर भी एक वहम-सा बैठ गया था। उसके दिल में जो कि हाथों को साबुन से धोने पर ही निकल सकता था और अभी ऐसा कोई मौका नहीं था उसके पास।

उसने जेब से वह रिवाल्वर निकाली जो उसने इंसपेक्टर शिवदयाल से छीनी थी।

दूसरी रिवाल्वर उसकी जेब में थी।

वह दरवाजे की तरफ बढ़ा और उस पर हाथ का दबाव डाला।

दरवाजा भीतर से बंद था।

सतीश रावण ने दूसरे दरवाजे को भी आजमाया, फिर साइड से बने छोटे दरवाजे को भी आजमाया, जोकि उसके अनुसार टायलेट का होना चाहिए था और उसके हिसाब से ऐसे दरवाजे अमूमन भीतर से बंद नहीं होते।

मगर वह दरवाजा भी उसे बंद ही मिला।

गहरी सास छोड़ते हुए वह कम्पाउंड से निकला और कोठी की साइड की दीवार के साथ लगते हुए आगे की तरफ बढ़ने लगा।

उसके हाथ में थमी रिवाल्वर किसी भी पल आग उगलने को पूरी तरह से तैयार थी।

दीवार के अंत में आकर वह ठिठका और दीवार से निकल कर गर्दन को आगे की तरफ लम्बा करते हुए सामने देखा।

कोई भी नजर नहीं आया उसे।

पूरी तरह से सावधानी बरतते हुए वह दीवार से हटा और आगे आकर कम्पाउंड में आ गया।

यह देखकर उसका चेहरा खिल उठा कि कम्पाउंड में ही ऊपर को जाने की सीढ़ियां थीं।

बिना कोई आवाज पैदा किये वह सीढ़ियां चढ़ने लगा।

उस वक्त वह तीसरी मंजिल पर आकर चौथी मंजिल की

सीढ़ियों की तरफ घूम रहा था जब उसे अपने पीछे दरवाजे की सिटकनी गिराये जाने की आवाज सुनाई दी।

बिना कोई वक्त गंवाये सतीश रावण तेजी से एक तरफ हटा और दीवार से चिपककर खड़ा हो गया।

हाथ में थमी रिवाल्वर पर उसकी पकड़ सख्त हो उठी।

तभी दरवाजा खुला और नाइटी पहने एक औरत अपनी बाईं बांह ऊपर उठाये दायें हाथ से बगल खुजलाती बाहर निकली। जिस ढंग से वह बाहर निकली थी...उसी से पता चल रहा था कि वह नींद के आलम में चल रही है।

यानि उसे नींद में चलने की बीमारी थी।

सतीश रावण ने राहत भरी गहरी सांस छोड़ी और दीवार से हटकर दबे पांव सीढ़ियां चढ़ने लगा।

"रेनू... !" तभी पीछे से एक आदमी की आवाज आई।

सतीश रावण और तेजी से सीढ़ियां चढ़ने लगा।

"रेनू...रेनू... !"

"ओह !" औरत की आवाज।

"तेरी यह बीमारी एक दिन मुझे मरवायेगी !" कलपती हुई आदमी की आवाज– "इतना इलाज कराया तेरा फिर भी तुझे आराम न आया...रोज रात को बाहर निकल आती है। चलो अन्दर अब भीतर से ताला लगाकर रखूंगा मैं... !"

और फिर आवाज बंद हो गई।

सतीश रावण सीढ़ियों के दरवाजे के पास दबका बैठा रहा।

थोड़ी देर बाद जब उसे लगा कि अब कोई खतरा नहीं तो वह खड़ा हुआ और हाथ ऊंचा कर सिटकनी गिरा कर दरवाजा खोल छत पर आ गया।

चौथी मंजिल की छत पर आते ही ठण्डी हवा का एक तेज झोंका उसकी हड्डियों को ठिठरा गया।

सतीश रावण ने अपने शरीर को इधर-उधर मोड़कर पहले अपने भीतर गर्मी पैदा की, फिर पीली कोठी वाली साइड की मुंडेर की तरफ बढ़ा।

मुंडेर के करीब आकर उसने नीचे झांका।

अब पीली कोठी का आगे लॉन साफ नजर आ रहा था।

कुछ देर लॉन में निगाह मारने के पश्चात वह अपनी दाईं तरफ सरका और पीली कोठी की टंकी के ऊपर आकर उसने सिर पर बंधी पगड़ी को खोलने लगा।

पगड़ी को पूरी लम्बाई में खोलकर उसने उसे लम्बाई में ही दो हिस्सों में फाड़ा और उन दोनों हिस्सों को आपस में रस्सी की तरह लपेट कर दोनों सिरों पर गांठ बांध दी।

अब पगड़ी की मजबूती पहले से काफी बढ़ गई थी।

उसने पगड़ी के एक सिरे पर फंदा बनाया और पगड़ी को धीरे-धीरे नीचे लटकाने लगा।

पगड़ी को पूरा नीचे लटकाकर वह उसे पानी की टंकी में से निकल रहे एयर पाइप में फंसाने की कोशिश करने लगा।

लेकिन तेज हवा और कोठी तथा टंकी के बीच ज्यादा दूरी होने की वजह से उसमें सफल नहीं हो पा रहा था।

आखिर उसने पगड़ी वापिस खींची। जेब से दूसरी रिवाल्वर को निकालकर फंदे के साथ बांधा और उसे लटका दिया। रिवाल्वर के बंधने के कारण इस बार हवा पगड़ी पर अपना असर नहीं दिखा पाई।

सतीश रावण ने पगड़ी के दूसरे सिरे को पकड़े हुए उसे झुलाया।

फंदा सीधा टंकी के ऊपर जा पड़ा।

सतीश रावण थोड़ा-सा दाईं तरफ हुआ और फिर दायें हाथ को दाईं तरफ लम्बाकर पगड़ी को धीरे-धीरे खींचने लगा।

पगड़ी के खिंचने से रिवाल्वर भी खिसकी और एयर पाइप की तरफ बढ़ी।

पाइप ऐन टंकी के किनारे पर लगा हुआ था सो जैसे ही रिवाल्वर किनारे पर आई वह टंकी पर ही फिसल गई।

सतीश रावण ने पूरी तेजी दिखाते हुए इस तरह पगड़ी को दोनों हाथों से खींचा जैसे अपनी पतंग कट जाने पर बच्चे डोर को खींचते हैं कि कोई और उसकी डोर को लूट न ले।

यहां सतीश रावण को डर था कि फंदे के साथ बंधी रिवाल्वर वापिस आकर किसी खिड़की के कांच से न टकरा जाये। उस सूरत में पूरे घर में जाग हो जाती और 'चोर-चोर' का शोर मच जाता जोकि वह हरगिज नहीं चाहता था।

अपनी तरफ से उसने पूरी तेजी दिखाई थी पगड़ी को खींचने में, मगर फिर भी पूरी नहीं खींच पाया वह...और रिवाल्वर सीधा उसके ऐन नीचे दीवार से टकराई।

दीवार से टकराने की आवाज तो जरूर हुई, मगर उतनी नहीं कि कोठी में जाग हो जाये।

फिर भी उसने सावधानी से काम लिया और अपने स्थान से हटकर एक कोने में जा छुपा।

करीब दस मिनट तक वह किसी के छत पर पहुंचने का इंतजार करता रहा...तत्पश्चात वह पुनः पहले वाले स्थान पर आ खड़ा हुआ।

उसने पुनः पगड़ी को नीचे लटकाया और पहले की तरह उसे पुनः झुलाया।

रिवाल्वर सीधा टंकी पर जाकर रुकी।

इस बार सतीश रावण पहले से ज्यादा दाईं तरफ हटा और पगड़ी को हवा में गोल घुमाया... ।

पूरी पगड़ी घूमी और उसी के साथ ही वह सांप की तरह एयर पाइप से लिपट गई।

सतीश रावण ने पगड़ी को धीरे-धीरे खींचना शुरू किया।

रिवाल्वर एयर पाइप की तरफ सरकने लगी और फिर पाइप के साथ लग गई।

सतीश रावण अब और भी सावधानी से पगड़ी को इंच-इंच ऊपर खींचने लगा।

चूंकि पगड़ी पाइप से लिपटी थी, इसलिये रिवाल्वर पाइप से लगी ऊपर उठने लगी।

और जैसे ही फंदा पाइप के सिरे में आया सतीश रावण ने पगड़ी ढीली छोड़ दी।

रिवाल्वर के वजन के कारण फंदा नीचे सरका और पाइप की जड़ में आकर रुक गया।

सतीश रावण ने इस बार झटके से पगड़ी को खींचा।

अगले ही पल फंदा पाइप में कस गया।

सतीश रावण के होठों पर मुस्कान नाच उठी। आंखों में क्रूरता की चमक जाग उठी।

उसने पगड़ी के दूसरे सिरे को मुंडेर की एक उभरी हुई ईंट के साथ खींचकर बांधा। अब पगड़ी एक कसी हुई तार की तरह मुंडेर से पीली कोठी की टंकी तक जा रही थी।

सतीश रावण ने एक बार फिर उसकी मजबूती को परखा...और ऐसा करना उसके लिये जरूरी भी था, क्योंकि वह जानता था कि अगर पगड़ी टूट गई तो वह सीधा नीचे लगी नोकीली ग्रिल पर जा गिरेगा और भीष्म पितामह की तरह तीरों की जगह नोकीले सरियों की शैय्या पर पड़ा होगा और अगर वह नीचे गिर पड़ा तो उसकी हड्डियों के इतने टुकड़े हो जायेंगे कि डॉक्टरों से भी नहीं गिने जा सकेंगे।

पगड़ी की मजबूती को अच्छी तरह से परखने के बाद उसने रिवाल्वर निकालकर उसे अपने दांतों में दबाया और फिर मुंडेर फांद-कर पहले दायें हाथ में पगड़ी को पकड़ा... फिर बायें हाथ से...और फिर पैरों को धीरे से दीवार पर से हटा दिया।

पैरों के हटते ही एक बारगी तो उसे लगा कि पगड़ी टूट गई है।

मगर ऐसा नहीं था...उसका जिस्म हवा में झूल गया था।

बांहों के दम पर वह धीरे-धीरे नीचे की तरफ सरकने लगा।

चौथी मंजिल से दूसरी मंजिल पर आ रहा था... ऐसे में उसे

उतरने में कोई खास मुश्किल पेश नहीं आ रही थी।

करीब पांच मिनट की मेहनत के बाद वह सफलतापूर्वक टंकी पर उतरने में कामयाब हो गया।

रिवाल्वर को मुंह में दबाये ही उसने पगड़ी के साथ बंधी दूसरी रिवाल्वर खोली और उसे जेब में डालकर छत पर जा रहे पाइप के सहारे लटककर छत पर आ गया।

बिना कोई वक्त गंवाये उसने दांतों में फंसी रिवाल्वर हाथ में ली और सतर्कतापूर्वक अपने चारों ओर का जायजा लिया।

किसी को भी न पाकर उसने सीढ़ियों की तरफ कदम बढ़ाये।

सीढ़ियों के दरवाजे के सामने आकर उसने दरवाजे पर दबाव डाला।

उसकी खुशकिस्मती दरवाजा भीतर से बंद नहीं था।

पूरी सावधानी से उसने पहली सीढ़ी पर पैर रखा और रेलिंग से नीचे झांका...।

नीचे उसे दो व्यक्ति टहलते नजर आये।

दोनों के दोनों स्टेनगनों से लैस थे और पूरी तरह से चाकचौबंद थे।

उसने तेजी से कुछ सोचा और फिर निगाहें इधर-उधर घुमाईं।

सीढ़ियों के दाईं तरफ एक छोटा-सा लैंटर पड़ा हुआ था जिसमें कि कबाड़ा रखा हुआ था।

उसने आहिस्ता से गत्ते का एक कार्टून उठाया और उसे सीढ़ियों में फेंककर फौरन अपना पैर पीछे खींचा और छत पर आकर दरवाजे के दाईं तरफ दीवार से चिपक गया।

उसे उम्मीद थी कि आहट की आवाज से दोनों में से एक अवश्य ही ऊपर आयेगा, क्योंकि नीचे ऐसा हो चुका था और अगर ऐसा नहीं हुआ तो वह समझ जायेगा कि नीचे वाले लापरवाह हैं।

परिणाम उसकी उम्मीद के अनुसार ही निकला।

सीढ़ियों पर किसी के चढ़ने की आवाज आई... फिर एक तीखी आवाज उसके कानों में पड़ी।

"कौन है?"

सतीश रावण दीवार से और भी ज्यादा चिपक गया।

सीढ़ियों पर चढ़ने की आवाज सीढ़ियों के मुहाने पर आकर रुकी।

फिर सतीश रावण को पहले स्टेनगन की नाल दहाने से निकलती नजर आई... और फिर उसके पीछे-पीछे एक आदमी बाहर निकला।

जैसे ही उसकी पीठ सतीश रावण की तरफ हुई—वह चीते की तरह उस पर झपट पड़ा।

पूरी शक्ति से उसने रिवाल्वर का दस्ता उसकी स्टेनगन वाली कलाई पर मारा।

स्टेनगन उसके हाथ से छूटकर नीचे गिर पड़ी—साथ ही वह कराहा।

मगर उसकी कराह तेज होने से पहले ही सतीश रावण का हाथ उसके मुंह पर ऐसे फिट हुआ जैसे कुकर का ढक्कन। साथ ही उसकी रिवाल्वर उसकी कनपटी से जा लगी।

"खबरदार!" वह किंग कोबरा की तरह फुंफकारा—"अगर आवाज निकली तो गोली भेजे के आरपार हो जायेगी।"

अपनी जकड़ में उसने उस आदमी को कांपते हुए साफ महसूस किया।

"बोल...करेगा शोर?" गुर्राया सतीश रावण।

उस आदमी का सिर दायें-दायें हिला।

सतीश रावण उसे परे खींचकर ले गया, मगर उससे पहले उसने नीचे पड़ी स्टेनगन को अपने काबू में कर लिया था।

टंकी के करीब लाकर उसने स्टेनगन उसके पेट से लगाई और गुर्राया—

"क्या नाम है तेरा...?"

"भ.. भास्कर राव...।" बुरी तरह से कांपते हुए बोला वह—साथ ही उसकी नजर साथ वाली कोठी में आ रही पगड़ी पर पड़ गई।

पलभर में ही वह समझ गया कि वह वहां कैसे पहुंचा। जबकि पहले वह भीतर ही भीतर यही सोच रहा था कि वह छत पर पहुंचा तो कैसे पहुंचा?

"देख बेटा भास्कर राव...।" सतीश रावण धीमे स्वर में बोला—"अगर तू मेरी बातों का सच-सच जवाब देगा तो तेरी जिंदगी पक्की...वर्ना मौत की गारंटी लेता हूं मैं।"

"त...तुम कौन हो...?"

"इस वक्त तो तेरा बाप हूं और बच्चे बाप से नाम नहीं पूछा करते...।"

भास्कर राव के गले की घण्टी जोरों से उछली।

"तेरे अलावा और कितने आदमी है नीचे...कोठी के अंदर बताना...बाहर मैं देख चुका हूं...।"

"न...नौ...।"

"यानि तेरे समेत दस।"

"हां...।"

"कहां-कहां फिट हैं वे?"

"दो बेसमेंट की सीढ़ियों पर...प...पांच बेसमेंट में।"

"पांच और दो सात...आठवां तू...नौवां और जो तेरे साथ है और...दसवां वो कहां है?"

"व...वो ग्र...ग्राउंड फ्लोर पर है।"

"बेसमेंट का रास्ता बोल...।"

उसने बताया...।

"बेसमेंट में पांच गार्ड है...यानि अन्दर कुछ खास हो रहा है...।"

भास्कर राव ने जोरों से थूक सटकी।

"जवाब दे।"

"ह...हां...।"

"क्या हो रहा है?"

"व...ब्राउन शुगर की पुड़ियां बन रही हैं।"

"यानि गोदाम है बेसमेंट...?" पूछते हुए सतीश रावण की आंखें चमकने लगी थी।

"ह...हां...।"

"ब्राउन शुगर के अलावा और क्या-क्या है गोदाम में?"

"स...सोना...च...चरस...।"

"वल्ले...और?"

"ह...हथियार-बम वगैरह।"

सतीश राव की बांछें खिल गई। उसने भास्कर राव से कुछेक प्रश्न किये और फिर बाहर वाले गार्डा के बारे में पूछने लगा, फिर उसने प्रताप के बारे मे पूछा तो उसे जवाब मिला कि वह नानक के साथ उसकी कोठी पर गया है।

जब उसे लगा कि अब और कुछ भी पूछना नहीं रह गया तो एकाएक ही वह उस पर टूट पड़ा।

स्टेनगन का बट पूरी शक्ति से उसके सिर पर पड़ी थी और उसी के साथ ही भास्कर राव के घुटने मुड़ते चले गये।

सतीश रावण ने दूसरा वार उसकी खोपड़ी के ऐन बीचों-बीच किया।

भास्कर राव की खोपड़ी खुल गई और उसमें से भेजा बाहर निकल आया।

भास्कर राव बुरी तरह से छटपटाने लगा जबकि वह बेहोश था।

सतीश रावण ने एक और वार उसकी खोपड़ी पर किया और सीढ़ियों की तरफ कदम बढ़ा दिये।

बिल्ली की तरह दबे पांव वह सीढ़ियां उतरने लगा।

आधी सीढ़ियां उतरकर उसने रेलिंग से नीचे झांका...।

भास्कर राव का जोड़ीदार लाबी में एक सोफे पर बैठा सिगरेट

के कश लगा रहा था।

उसकी पीठ उसी की तरफ थी।

सतीश रावण के लिये यह सुनहरी मौका था और ऐसे सुनहरे मौकों को वह कभी भी हाथ से नहीं जाने देता था। बिना आवाज किये वह सीढ़ियां उतरा और पंजों के बल चलता हुआ उसके पीछे जा खड़ा हुआ।

ठीक तभी भास्कर राव के जोड़ीदार को अपने पीछे किसी की मौजूदगी का अहसास हुआ।

और जैसे ही उसने गर्दन पीछे मोड़ी...।

पहाड़ टूट पड़ा उस पर...।

स्टेनगन का बट सीधा उसकी खोपड़ी पर पड़ा था।

वह वहीं भरभरा कर सोफे पर ही लुढ़क गया।

सतीश रावण ने भास्कर राव की तरह उसकी खोपड़ी को भी तरबूज की तरह फाड़ डाला, फिर उसकी स्टेनगन भी अपने कब्जे में कर ली।

उस स्टेनगन को उसने अपने कंधे में लटका लिया था।

अब उसके पास दो रिवाल्वरों के साथ दो स्टेनगनें भी थीं... ऐसे में वह शेर बन गया था।

स्टेनगन सम्भाले वह चलता हुआ सीढ़ियों के करीब आया और दो सीढ़ियां उतरकर नीचे देखा।

भास्कर राव ने उसे बताया था कि बेसमेंट में जाने का रास्ता दाईं तरफ के आखरी कमरे में है और दो आदमी वहां पर तैनात हैं।

ऐसे में लाबी में अकेला एक ही व्यक्ति होना चाहिये और अकेला आदमी कुछ हद तक लापरवाह हो जाता है।

उसका अनुमान ठीक था।

लाबी में एक कुर्सी पर बैठा दिखा उसे वह आदमी...।

अपने घुटनों पर कोहनियां टिकाये वह हाथों में गालों को लिये आंखें बंद किये बैठा था।

उसकी स्टेनगन उसकी गोद में पड़ी थी।

सतीश रावण के होंठों पर भयानक मुस्कान रेंग गई। आंखों में शिकारी कुत्ते की सी चमक जाग उठी।

दबे पांव सीढ़ियां उतरकर वह उसकी तरफ बढ़ा।

अभी वह उससे दो कदम दूर ही था कि तभी एकाएक ही उसकी आंखें खुल गईं।

अपने सामने एक अंजान व्यक्ति को देखकर वह पहले तो चौंका, फिर उसने फौरन स्टेनगन की तरफ हाथ बढ़ाये।

मगर सतीश रावण ने उसे स्टेनगन उठाने का मौका नहीं दिया

उससे पहले ही उसने बुलडॉग की तरह उस पर छलांग लगा दी और उसे लिये हुए कुर्सी समेत ही पीछे को लुढ़क गया।

हालांकि वह चाहता तो बड़े आराम से उसे गोली से उड़ा सकता था। वह उसके निशाने पर शुरू से ही था।

मगर अभी वह गोली चलाने के हक में नहीं था। इसी वजह से उसने गोली चलाने की बजाये उस पर छलांग मारी थी। उसे नीचे गिराते ही सतीश रावण उसके सीने पर सवार हो गया और अपने पंजे उसकी गर्दन में गड़ा दिये।

उस गार्ड की स्टेनगन तो उसके पीछे गिरते ही एक तरफ जा पड़ी थी जबकि सतीश रावण ने अपनी स्टेनगन उसी वक्त छोड़ दी थी जब वह उस पर सवार हुआ था।

अपनी गर्दन पर उसकी उंगलियां कसते ही गार्ड खुद को उसके शिकंजे से निकालने की जी तोड़ कोशिश करने लगा।

अब उस बेचारे को क्या मालूम था कि उस पर सवार कोई साधारण इंसान नहीं, बल्कि एक शैतान आत्मा है।

थोड़ी ही देर के विरोध के पश्चात गार्ड के विरोध करने की गति में शिथिलता आने लगी।

मगर सतीश रावण की उंगलियों का कसाव कम नहीं हुआ, बल्कि पल प्रति पल बढ़ता ही जा रहा था।

गार्ड की आंखें बाहर को उबल आई, उसका मुंह भाड़ की तरह खुल गया जीभ बाहर निकलकर ठोड़ी को छूने लगी।

अन्त में उसने एक झटका लिया और स्थिर हो गया।

उसकी आंखों की जीवन ज्योति खत्म हो चुकी थी।

उसके मरने की पूरी तसल्ली हो चुकने के पश्चात सतीश रावण ने उसकी गर्दन को छोड़ा और अपनी स्टेनगन उठाते हुए खड़ा हो गया।

वह कोठी के मेनडोर की तरफ बढ़ा जोकि सिर्फ भिड़ा हुआ था।

मेन डोर के करीब आकर उसने दरवाजे को ठीक तरीके से बंद किया और भीतर से न सिर्फ सिटकनी लगा दी, बल्कि कुण्डा भी लगा दिया।

तत्पश्चात वह पीछे वाले दरवाजे की तरफ बढ़ा...।

उसका इरादा कोठी में प्रवेश करने के हर रास्ते को बंद करने का था ताकि बाहर वाले गार्ड भीतर न आ सकें।

कुल पांच रास्ते थे भीतर प्रवेश करने के, दो दरवाजे तथा एक टायलेट का दरवाजा पिछली तरफ, एक पोर्च में खुलने वाला दरवाजा और एक सामने का दरवाजा।

पोर्च का दरवाजा बंद करने के उपरांत उसने गहरी सांस छोड़ी

और उस दरवाजे की तरफ कदम बढ़ा दिये जिसमें कि बेसमेंट में जाने की सीढ़ियां थीं।

❑❑❑

❑❑❑

'फटाक... !'

दरवाजा पूरे वेग से पीछे दीवार से जा टकराया।

बुरी तरह से उछल पड़े शाहिद और रूस्तम और उनकी गर्दनें फौरन दरवाजे की तरफ घूम गईं।

सामने एक अंजान व्यक्ति को देख दोनों बुरी तरह से चौंके। साथ ही उन्होंने तेजी से स्टेनगनों का रुख उसकी तरफ किया।

मगर... ।

सतीश रावण ने उन्हें ट्रिगर दबाने का मौका नहीं दिया।

उससे पहले ही उसकी स्टेनगन गर्ज उठी।

'तड़...तड़ ...तड़... !'

रूस्तम और शाहिद के जिस्म जोरों से उछले। एक-दूसरे से उलझे और सीढ़ियों पर गिरकर लुढ़कते हुए नीचे जाने लगे।

सतीश रावण फौरन आगे लपका और लुढ़कती हुई लाशों के पीछे-पीछे सीढ़ियां उतरने लगा।

नीचे मौजूद लोगों को वह सम्भलने का मौका तक नहीं देना चाहता था।

उस वक्त बेसमेंट में तीन फर्श पर बैठे पुड़ियां बना रहे थे तथा दो उनके करीब खड़े थे जब गोलियों की आवाज सुनकर सभी उछल पड़े थे साथ ही सभी की निगाहें सीढ़ियों की तरफ उठ गई थीं।

ठीक तभी शाहिद और रूस्तम की लाशें लुढ़कती हुई बेसमेंट के फर्श पर आकर रुक गई।

अपने साथियों की लाशों को देख वे बुरी तरह से चौंक पड़े।

"य...यह तो रूस्तम और शाहिद है।" पुड़ियां बनाने वाला एक बोला।

"मगर इन्हें मारा... !"

दूसरे की बात अधूरी ही रह गई।

ठीक तभी सीढ़ियों में से छलांग लगाकर सतीश रावण सीधा दोनों लाशों के सीनों पर आ खड़ा हुआ और उसी के साथ ही उसकी स्टेनगन ने एक साथ ढेरों शोले उगलने शुरू कर दिये।

'तड़...तड़...तड़... !'

तीनों फर्श पर बैठे गार्डो के करीब खड़े दोनों गार्डों की लाशें बिछ गईं।

स्टेनगनों से लैस वही दोनों ही थे। फर्श पर बैठे पुड़ियां बना रहे तीनों गार्ड बिना हथियारों के थे।

अपने साथियों को मरते देख तीनों की घिग्घी बंध गई। आंखों में खौफ के भाव लिये वे उसे देखने लगे।

सतीश रावण स्टेनगन उनकी तरफ ताने शाहिद तथा रूस्तम की लाशों पर से उतरा और उनके सामने आ खड़ा हुआ।

"जमीन पर पैर बहुत ही कम रखा करता हूं, क्योंकि इससे मेरे जूते घिस जाते हैं...। इसलिए मैं ज्यादातर लाशों पर ही चला करता हूं।"

तीनों के पीले पड़े चेहरे और भी पीले पड़ गये।

"खड़े हो जाओ।" गुर्राया सतीश रावण।

तीनों ने बिना किसी आनाकानी के उसके हुक्म का पालन किया।

सतीश रावण ने अपने दाईं तरफ वाले गार्ड की तरफ स्टेनगन का रुख किया और ट्रिगर दबा दिया।

'तड़...तड़...तड़...।'

"देखा...।" सतीश रावण क्रूरता से हंसा–"लाशें बिछाना मेरे लिए कितना आसान है। तभी तो कहता हूं कि मैं जमीन की बजाये लाशों पर ज्यादा चला करता हूं।"

दोनों के गले की घण्टियां जोरों से उछलीं। सतीश रावण के रूप में उन्हें साक्षात् अपनी मौत नजर आ रही थी।

"अब तुम बोलो...।" सतीश रावण बोला–"मरना चाहते हो?"

दोनों की गर्दनें जोरों से दायें-बायें हिलीं।

"तो फिर जो मैं कहूं...वही करोगे तुम...।"

"ह...हम व...वो सब कुछ करेंगे...।"

"तू नहीं बोला...?" सतीश रावण ने दूसरे को घूरा।

"म...मैं तुम्हारे हुक्म का पालन करूंगा।" दूसरा हड़बड़ाते हुए बोला।

"तो पहले पैरों से स्टेनगनों को एक तरफ धकेलो।" सतीश रावण ने नीचे पड़ी दोनों स्टेनगनों की तरफ इशारा किया।

दोनों की कांपती टांगों ने स्टेनगनों को एक तरफ धकेला और फिर वे सतीश रावण की तरफ इस तरह देखने लगे जैसे उसके अगले हुक्म का इंतजार कर रहे हों...।"

"यहां जितना भी माल पड़ा है...वो सब तू इकट्ठा करेगा।" सतीश रावण ने बाईं तरफ वाले गार्ड से कहा–"और तू मुझे वहां ले चल जहां बम पड़े हैं।"

"ब...म...।"

"हां बम कहां है...?"

"व...वो उस अलमारी में हैं...।" उसने बिना पीछे देखे बांह

पीछे की।

सतीश रावण ने उनके पीछे देखा।

सामने दीवार से लगी चार अलमारियां खड़ी थीं।

"ठीक है... पहले मुझे बमों वाली अलमारी तक ले चलो... ।" सतीश रावण बोला—"फिर बाद में तुम माल को इकट्ठा करना।"

वे अपना पहला हुक्म उसने टाल दिया था। वजह यही थी कि बेशक डर ही सही... दो स्टेनगनें फ़र्श पर पड़ीं थीं... और वह ऐसा कोई भी खतरा नहीं उठाना चाहता था।

दोनों मुड़े और उसकी तरफ पीठ करके अलमारियों की तरफ बढ़े।

पीछे-पीछे सतीश रावण भी चलने लगा।

बायें से तीसरी अलमारी के सामने आकर वे ठिठके और गर्दनें सतीश रावण की तरफ मोड़ी।

"खोलो... ।"

एक ने हाथ आगे बढ़ाकर अलमारी खोली... ।"

दरवाजा खुलते ही सतीश रावण की आंखों में ऐसे कुत्ते की-सी चमक जाग उठी जिसे मांस का लोथड़ा मिल गया हो।

अलमारी के ऊपरी खाने में स्टेनगनें इस तरह रखी हुई थीं, मानो उन्हें जबरदस्ती उतने स्थान में ठूंसा गया हो।

उसके नीचे वाले खाने में चौकोर गत्ते के डिब्बे रखे थे... और उससे नीचे वाले खानों में ग्रेनेड इस तरह पड़े नजर आ रहे थे जैसे अण्डों की ट्रे में अण्डे रखे हुए होते है।

"डिब्बों में क्या है... ?" उसने पूछा।

"ट... टाईम बम... !" एक बोला।

"एक साइड में हो जाओ।"

सतीश रावण आगे बढ़ा... झुक कर निचले खाने में से एक-एक करके चार बम निकाले और अपनी जेबों में डाल लिए।

"बाकी अलमारियों में क्या है... ?"

उसने दोनों की तरफ रुख करते हुए पूछा।

"स... सोना... ।" एक ने पहली अलमारी की तरफ इशारा किया।

"च... चरस... अफीम और हेरोइन... !" दूसरे ने हथियारों के बराबर वाली अलमारी की तरफ इशारा किया।

"और इसमें... ?" सतीश रावण ने चौथी अलमारी की तरफ इशारा करके पूछा।

"क... कैश... ।"

"कितना है... ?"

"प... पता नहीं... व... वैसे दो करोड़ के करीब होगा।"

खुशी के मारे सतीश रावण का कलेजा धड़क उठा।

"सारा माल बाहर निकालो... ।"

वह गुर्राया और एक तरफ हट गया।

इतनी बड़ी सफलता हासिल होने के बाद भी उसने अपना आपा नहीं खोया। वह जानता था कि बाहर खड़े गार्डों ने गोलियों की आवाजें सुन ली होंगी और इस वक्त वे दरवाजे तोड़कर भीतर घुसने की कोशिश कर रहे होंगे तथा यह भी हो सकता है कि उन्होंने बाहर ही हमला करने के लिये पोजीशन सम्भाल ली हो।

कुल मिलाकर वह सीढ़ियों की तरफ से भी पूरी तरह सावधान था।

दोनों गार्ड अलमारियां खोलकर उसमें से माल निकालने लगे।

करीब बीस मिनट बाद ही सतीश रावण के सामने छह पेटियां फर्श पर पड़ी थी तथा एक गांठ पड़ी थी।

गांठ में ब्राउन शुगर और तैयार की हुई पुड़ियां थीं। पेटियों में कैश-सोना और बाकी का नशे का सामान भरा पड़ा था।

"पेटियां ऊपर ले चलो... ।"

सतीश रावण गुर्राया... ।

दोनों ने बड़ी मुश्किल से एक-एक पेटी उठाई और सीढ़ियों की तरफ बढ़े।

सीढ़ियों के आगे पड़ी दोनों लाशों के करीब आकर वे ठिठके।

"मुर्दे है यह...तुम्हारी टांग नहीं पकड़ लेंगे...पार करो इन्हें... ।"

सतीश रावण गुर्राया।

दोनों के जिस्म बुरी तरह से कांप उठे।

लाशों को फांदना उन्हें बहुत ही खौफजदा कर रहा था, मगर पीछे खड़ी मौत के खौफ से वह खौफ कम था।

किसी तरह खुद को सम्भाले उन्होंने रूस्तम तथा शाहिद की लाशों को फांदा और सीढ़ियां चढ़ने लगे।

उनके पीछे-पीछे सतीश रावण भी ऊपर चढ़ने लगा।

लाबी में आकर उसने पेटियां पार्च में खुलने वाले दरवाजे के करीब रखवाईं...फिर उन्हें वापिस बेसमेंट में ले गया।

वहां से उसने फिर उनसे पेटियां उठवाईं और लाकर पहले वाली पेटियों के पास रखवा दीं।

इस तरह उसने तीसरा चक्कर लगवाया।

अब बेसमेंट में सिर्फ एक गांठ पड़ी थी।

सतीश रावण स्टेनगन के दम पर उन्हें बेसमेंट में ले आया।

उनमें से एक ने जैसे ही गांठ की तरफ कदम बढ़ाये... ।

"रहने दें... ।" सतीश रावण बोल पड़ा—"इतना बोझ ढोकर

तुम काफी थक चुके हो।"

उस व्यक्ति ने तथा उसके साथी ने सतीश रावण की तरफ देखा।

"अब तुम आराम करो...अपने यारों के साथ...।"

कहने के साथ ही सतीश रावण ने स्टेनगन का मुंह खोल दिया।

"तड़...तड़...तड़...।"

एक साथ कई गोलियां उनके जिस्मों में जा समाई...।

बेचारों को यह तक कहने का मौका नहीं मिला कि उसने तो उन्हें छोड़ने का वादा किया था...फिर वह उन्हें मार क्यों रहा है।

अपना प्रश्न दिल में ही लिये वे इस दुनिया से विदा हो गये।

सतीश रावण ने स्टेनगन फर्श पर फैंकी...कंधे पर लटक रही स्टेनगन को उतार कर हाथ में लिया और उस अलमारी की तरफ बढ़ा जिसमें कि बम तथा हथियार पड़े थे।

उसने उनमें से कुछ बम और निकाले तथा दो टाईमबम भी निकाले।

उन सभी बमों को उसने गांठ के पास रखा...फिर गांठ खोलकर बमों को उसमें रखा और गांठ को पुनः बांधकर उसे उठाया और सीढ़ियां चढ़ते हुए ऊपर आ गया।

गांठ को उसने एक पेटी के ऊपर रखा और स्टेनगन सम्भाले वह सीढ़ियां चढ़ने लगा।

भीतर का तो उसने सफाया कर डाला था...अब बाहर वाले गार्डों का सफाया करना रह गया था...।

उन्हें खत्म किये बिना वह माल लेकर कोठी से बाहर नहीं निकल सकता था।

कुछ ही देर में वह छत पर था।

उसने छत पर खड़े-खड़े एक पल के लिए कुछ सोचा...फिर कोठी की पिछली साइड वाली मुंडेर की तरफ बढ़ा।

मुंडेर के करीब आकर उसने एक हाथ मुंडेर पर टिकाते हुए नीचे झांका...।

गार्ड पूरी मुस्तैदी से पहरा दे रहे थे।

जिस अंदाज से वे पहरे पर खड़े हुए थे। उससे साफ नजर आता था कि भीतर हुई फायरिंग की आवाज उनके कानों तक नहीं पहुंची है। वर्ना अगर ऐसा होता तो इस वक्त बाहर अफरा-तफरी मची होती।

सतीश रावण के होठों पर घिनौनी मुस्कान रेंग गई।

उसने अपने कपड़ों में से एक हैंड ग्रेनेड निकाला...दांतों से उसकी पिन खींची और नीचे झांका...।

इतफाक से तीनों गार्ड उस वक्त पास-पास मौजूद थे।

बिना वक्त गंवाये उसने बम नीचे फेंका और खुद सामने वाली साइड की तरफ दौड़ लगा दी।

दौड़ने के साथ-साथ उसने दूसरा बम भी निकाल लिया था।

अभी उसने आधी छत ही पार की थी कि तभी—

'ब...ड़ा...म...।

उसके पीछे एक गगनभेदी धमाका हुआ।

धमाका इतना जबरदस्त था कि सतीश रावण खुद लड़खड़ा गया।

बड़ी मुश्किल से उसने खुद को गिरने से बचाया...और आगे बढ़ते हुए गर्दन पीछे मोड़ी।

आग का एक बवण्डर पीछे से उठता नजर आया उसे...।

सतीश रावण ने गर्दन सीधी की और सामने वाली मुंडेर के करीब आकर नीचे झांका...।

गार्डों में अफरा-तफरी मची हुई थी...।

गेट खुल रहा था...तथा बाहर खड़े दोनों गार्ड भी भागते हुए भीतर आ रहे थे।

सतीश रावण ने हाथ में थमे बम की पिन खींची और उन्हें उन दोनों गार्डों पर उछाल दिया।

उसके साथ ही वह खुद छत पर लेट गया।

पहले वाले बम ने अपनी ताकत उसे बता दी थी।

'ब...ड़ा...म...!'

भयानक धमाका हुआ...और दोनों गार्डों के चीथड़े उड़ गये।

छत पर लेटे-लेटे ही सतीश रावण ने साथ वाली चार मंजिला कोठी की तरफ देखा।

तभी उस कोठी की एक खिड़की की लाइट बुझी...जैसे खौफ के मारे उसमें रहने वालों ने खुद को अंधेरे में छुपा लिया हो।

सतीश रावण एक जहरीली हंसी हंसा और खड़ा होकर छत के करीब आया।

पूरी सावधानी से उसने नीचे झांका, क्योंकि वह जानता था कि अब तक नीचे वालों को पता चल चुका होगा कि हमला किधर से हुआ है।

नीचे झांकते ही उसके होंठों पर शैतानी मुस्कान नाच उठी।

लॉन में चीथड़े उड़ी चार लाशें पड़ी थीं...तथा बाकी के गार्ड उसे गेट की तरफ भागते नजर आये।

सतीश रावण ने फौरन स्टेनगन का रुख उधर किया और ट्रिगर दबा दिया।

'तड़...तड़...तड़...!'

उसकी स्टेनगन से शोलों की बरसात निकली और उनकी तरफ

लपकी।

वातावरण में इंसानी चीखों की आवाजें गूंज उठी...साथ ही तीन गार्ड लड़खड़ाते हुए नीचे गिर पड़े।

बाकी के बचे तीन गार्ड गेट से निकलने में कामयाब हो गये थे।

सतीश रावण वहां से हटा और सीढ़ियों की तरफ भागा।

दो-दो सीढ़ियां फलांगते हुए वह ग्राउंड फ्लोर पर आया और पोर्च में खुलने वाले दरवाजे की तरफ बढ़ा।

दरवाजे के पीछे आकर उसने सिटकनी गिराई और दरवाजे के पीछे रहते हुए ही दरवाजे को धीरे-धीरे खोल दिया।

कोई भी भीतर नहीं आया

फिर भी सावधानी का दामन नहीं छोड़ा उसने।

कुछ पल इंतजार करने के उपरांत उसने धीरे से गर्दन बाहर निकाली और बाहर झांका...।

रास्ता साफ था।

सामने सूमो खड़ी नजर आ रही थी।

वह दरवाजे के पीछे से निकला पोर्च में आया और स्टेनगन ताने हुए इधर-उधर देखा...फिर सूमो की परली साइड की तरफ देखा।

पूरी तरह से आश्वस्त होकर उसने सूमो का पिछला दरवाजा खोला और स्टेनगन को एक तरफ रखकर जल्दी-जल्दी सारा सामान भीतर रखने लगा।

सारा सामान भीतर रखकर उसने दरवाजा बंद किया और भीतर की तरफ भागा।

कुछ ही देर में वह बेसमेंट में हथियारों वाली अलमारी के सामने खड़ा एक गत्ते का डिब्बा निकाल रहा था जिसमें कि टाइम बम था।

डिब्बे को खोलकर उसने उसमें से बम निकाला और उस पर दस मिनट का टाइम सेट करके लीवर दबा दिया और फिर बम को डिब्बे में बंद कर डिब्बा वापिस वहीं रख कर वापिस मुड़ गया।

तेज-तेज चलता हुआ वह ऊपर आया और सीधा सूमो की ड्राइविंग सीट पर आ बैठा।

उसने सूमो स्टार्ट की और अगले ही पल सूमो गोली की तरह गेट की तरफ लपकी।

वैसे कोठी के एक गेट का दरवाजा तो खुला हुआ था, जबकि दूसरा बंद था।

मगर सतीश रावण ने सूमो की रफ्तार कम नहीं की, बल्कि एक्सीलेटर पर पैर का पूरा दबाव बढ़ा दिया।

सूमो राकेट की-सी गति से बंद गेट से टकराई।

'भड़ाक... ।'

गेट पिलर से उखड़ कर आगे जा गिरा और सूमो उसे रौंदते हुए आगे निकल गई।

करीब आधा किलोमीटर चलने के उपरांत एकाएक ही पीछे एक भयानक विस्फोट हुआ।

"ब...ड़ा...म... ।"

सतीश रावण के होंठों पर भयानक मुस्कान रेंग गई।

उसने सूमो रोककर पीछे गर्दन मोड़ी।

पीली कोठी का उसके साथ वाली चार मंजिला कोठी तो इतनी दूर से नजर नहीं आ सकती थी, मगर आकाश में आग के बवडंर उठते हुए जरूर नजर आ रहे थे। साथ ही विस्फोटों की आवाजें भी आ रही थी।

'हा...हा...हा... !'

सतीश रावण ने एक शैतानी कहकहा लगाया और गर्दन सीधी कर सूमो आगे बढ़ा दी।

थोड़ी दूर चलने पर उसे सड़क किनारे फुटपाथ पर एक पब्लिक टेलीफोन बूथ नजर आया।

सतीश रावण ने सूमो उसके करीब खड़ी की और सूमो से निकल कर बूथ में प्रवेश कर गया।

□□□
□□□

'ट्रिन...ट्रिन... ।'

फोन की घण्टी घनघना उठी।

जगतार ने आंखें खोली और अपने साथ चिपककर सो रही युवती को पीछे धकेलते हुए करवटी ली और साइड स्टूल पर रखे फोन की तरफ बांह लम्बी करके रिसीवर उठा लिया।

"हैलो... ।" वह जम्हाई लेते हुए माउथपीस में बोला।

"लगता है प्रताप की कोठी पर हुए हमले का तूझे अभी तक पता नहीं चला जगतार जो मस्ती भरी नींद सो रहा है।" दूसरी तरफ से सतीश रावण की आवाज को सुनकर वह उछल कर बैठ गया।

"तू...?" वह गुर्राया।

"नींद खुल गई...?"

"जगतार कभी नहीं सोता हरामखोर।" वह फुंफकारा।

"तभी तो तेरी ऐसी-तैसी फिर गई। प्रताप वाली कोठी श्मशान बन गई।"

"फौज होती ही मरने के लिए है। मोहरे हमेशा पिटा करते हैं।" जगतार को उनसे कोई फर्क नहीं पड़ता...अगर आज तू दस को मारेगा...तो कल को बीस भरती हो जायेंगे।"

"और अगर तेरा करोड़ों का माल लुट जाये तो...?"

"क्या मतलब...?"

"तेरी पीली कोठी स्वाहा हो चुकी है जगतार...।"

"न...नहीं...।" स्वर कांप उठा जगतार का।

"मैंने तुझसे कहा था कि अगली बार जब फोन करूंगा तो बहुत ही फड़कती हुई खबर सुनाऊंगा। मुझे उम्मीद ही नहीं बल्कि पूरा विश्वास है कि पीली कोठी वाली खबर सुनकर तेरा कलेजा जरूर फड़क उठेगा।"

"हरामजादे...!" पागलों की तरह जगतार इतने जोरों से दहाड़ा कि उसके करीब लेटी युवती हड़बड़ा कर उठ बैठी।

उठते ही उसकी छातियां जोरों से हिलीं, फिर तनकर खड़ी हो गई।

"मैंने तुझसे यह भी कहा था कि अगली बार जब मैं तुझे खबर सुनाऊं तो किसी बढ़िया-सी गाली का आविष्कार कर लेना, मगर तू तो वही पुरानी घिसी-पिटी गाली दे रहा है। अरे मियां इतनी शानदार खबर सुनाई है। कोई अच्छी-सी गाली निकालकर हरामजादा तो कॉमन वर्ल्ड है।"

"हंस ले...खूब हंस ले हरामजादे...मगर इतना याद रख जिस दिन भी तू मेरे हत्थे चढ़ गया...उस दिन मैं अपने नुकसान हुए एक-एक रुपये का हिसाब तेरे खून की एक-एक बूंद से लूंगा।"

"बेचारा...यह ख्वाब देखते हुए ही कलेजा फट जायेगा...। च...च...च। खैर...तू अपने नुकसान का हिसाब लगा...मैं जरा कमर सीधी कर लूं।"

उसी के साथ दूसरी तरफ से सम्बंध विच्छेद हो गया।

जगतार ने रिसीवर कान से हटाया और खा जाने वाली निगाहों से उसे इस तरह देखने लगा जैसे अभी उसमें से उसका दुश्मन निकलेगा और वह उसे बिना नमक लगाये कच्चा ही खा जायेगा।

मगर ऐसा न तो हो सकता था न हुआ।

कुछ पल वह रिसीवर को घूरने के पश्चात उसने पलभर दबाया और कोई नम्बर डायल करने लगा।

"हेलो...दूसरी तरफ से आवाज आते ही वह गुर्राया—"मिर्जा...फौरन मेरी कोठी पहुंच...हां अभी...खैरियत ही तो नहीं है...तू यहां पहुंच...तभी बताऊंगा...जल्दी पहुंच...।"

उसने रिसीवर रखा और युवती की तरफ देखा जो घबराये अंदाज में उसे देख रही थी।

"फौरन दफा हो जा इस कमरे से।" वह गुर्राया।

युवती बुरी तरह से हड़बड़ाई और अपनी कमीज उठाकर उसे सीधी करने लगी।

"कपड़े बाहर जाकर पहन हरामजादी... कहीं ऐसा न हो कि गुस्से से मैं तेरी गर्दन काट दूं।" गुर्राया जगतार।

युवती का पूरा जिस्म कांप उठा।

आनन-फानन उसने अपने कपड़े समेटे और दरवाजे की तरफ भागी।

अगर कोई और वक्त होता तो जगतार युवती के भागने से उसके नितम्बों की थिरकन देखकर ही पागल हो उठता।

मगर इस वक्त तो वह खुद फूंका हुआ था...। उसने उसे देखा तक नहीं।

युवती ने सिटकनी गिराकर दरवाजा खोला और बाहर निकल गई।

युवती के जाने के उपरान्त जगतार भी अपने कपड़े पहनने लगा।

□□□
□□□

'तड़ाक...।

जमशेद राय का झन्नाटेदार थप्पड़ बलवीर के गाल पर पड़ा।

पूरा पंजा छप गया बलवीर के गाल पर आंखों में जलन के मारे आंसू भर आये।

"बोल...।" गुर्राया जमशेद राय और उसके बालों को अपनी मुट्ठी में जकड़ लिया...किसके कहने पर तूने चांदनी का खून किया था?"

"मैंने किसी का खून नहीं किया।" कराहते हुए बोला बलवीर।

जमशेद राय का हाथ पुनः लहराया और उसके गालों की लाली और ज्यादा बढ़ गई।

इस वक्त दोनों जमशेद राय के ऑफिस में थे।

बलवीर को गिरफ्तार करके लाते ही जमशेद राय सीधा उसे ऑफिस में लाया था... और आते ही उसे फर्श पर पैरों के बल बिठाकर उससे जवाब तलबी शुरू कर दी थी।

"सच-सच बोल हरामजादे...।" दहाड़ा जमशेद राय।

"म...मैं सच बोल रहा हूं...मैंने किसी का खून नहीं किया।" बलवीर ने अपना पहले वाला जवाब दोहराया।

"यह इंसपेक्टर की वर्दी कहां से ली तूने? क्यों पहनी इसे?" जमशेद ने उसके बालों को झिंझोड़ा—"साले हरामी मुझे इतने सालों बाद जाकर यह ए०एस०आई० की वर्दी मिली और तू फटाक से इंसपेक्टर भी बन गया...।"

बलवीर ने अपने होंठों को सख्ती से भींच लिया।

"जवाब दे...। क्यों पहनी तूने यह वर्दी...?"

"म...मैं चोरी करने गया था...।"

"यह वर्दी पहन कर...?"

"ह...हां।"

जमशेद राय की आंखों में खून उतर आया। उसने उसके बालों को छोड़ा और कुर्सी से खड़ा होकर टेबल पर रखा अपना डण्डा उठा लिया।

"तेरे जैसे हरामियों की जुबान कैसे खुलवाई जाती है...यह मैं खूब जानता हूं...।"

वह गुर्राया और उसके पीठ पर डण्डा बरसा दिया।

बुरी तरह से कराहा बलवीर और अपना दायां हाथ पीछे ले जाकर अपनी पीठ मसलने लगा।

'तड़ाक...।'

तभी डण्डा उसके हाथ पर पड़ा।

"अ...आ...ऊ...।'

बलवीर हाथ आगे कर उसे झटकने लगा।

"बोल...किसके कहने पर तूने चांदनी का खून किया...।"

पूछने के साथ ही जमशेद राय ने फिर से डण्डा चला दिया।

"आऽऽ...।" जोरों से चीखा बलवीर।

"मैं...मैं खूनी नहीं हूं...मैं किसी चांदनी को नहीं जानता...और न ही मैंने किसी का खून...।"

'तड़ाक...।'

बात अधूरी ही रह गई उसकी उसके स्थान पर चीख उबल पड़ी उसके होंठों से।

मगर जमशेद राय ने उसकी चीख पर ध्यान नहीं दिया...उसका हाथ मशीनी अंदाज में चलने लगा।

बलवीर की चीखें पूरे थाने में गूंजने लगी। साथ ही वह फर्श पर लेटकर इधर-उधर होते हुए छटपटाने लगा।

मगर जमशेद राय का हाथ नहीं रुका...बल्कि उसकी हर चीख के साथ वह और भी तेजी से उस पर डंडे बरसा देता।

डंडे बरसाने के साथ वह दहाड़ भी रहा था।

"बोल हरामजादे क्यों किया तूने चांदनी का खून...बोल...।"

शायद वह उसे मार-मारकर खत्म ही कर देता, क्योंकि जगतार के गिरेबान को पकड़ने की जो कड़ी उसके पास थी...वह टूट गई थी। ऐसे में उसका पागल हो उठना लाजिमी था।

मगर फोन की घंटी ने उसके हाथ को रोक दिया।

'ट्रिन...ट्रिन...।'

जमशेद राय ने कहर भरी निगाहों से बलवीर को देखते हुए डण्डा टेबल पर रखा और रिसीवर उठाकर गहरी सांसें छोड़ते हुए

कान से लगाते हुए बोला—''हैलो. . ।''

''पुलिस स्टेशन... ।'' दूसरी तरफ से आवाज आई।

''जी हां आप...?''

''पल्टन रोड पर एक कोठी बमों से उड़ा दी गई है... ।''

''क्या...?'' बुरी तरह से उछल पड़ा जमशेद राय।

''उससे पहले कोठी में फायरिंग हुई थी... ।''

''आप... ।''

मगर तब तक दूसरी तरफ से सम्बन्ध विच्छेद हो गया।

जमशेद राय ने रिसीवर रखते हुए दरवाजे की तरफ मुंह करके आवाज लगाई... ।

''केवल किशन... ।''

फौरन एक सिपाही भीतर दाखिल हुआ।

''यस सर... ।''

''इसे... ।'' जमशेद राय ने फर्श पर पड़े कराह रहे बलबीर की तरफ इशारा किया—''हवालात में फेंक दो... ।''

कहने के साथ ही वह कमरे से बाहर निकल गया।

उसके जाने के पश्चात केवल किशन ने बलवीर को बालों से पकड़कर सीधा खड़ा किया और फिर उसे लगभग घसीटते हुए ऑफिस से बाहर ले आया।

बलवीर को हवालात में डालकर वह वापिस ऑफिस की तरफ बढ़ा।

इस वक्त उसके चेहरे पर कुछ अजीब से ही भाव थे जो कि समझ से बाहर थे।

□□□

□□□

जगतार ने कपड़े पहने और दरवाजे की तरफ बढ़ा।

अभी वह दरवाजे के करीब पहुंचा ही था कि तभी पीछे फोन की घंटी घनघना उठी।

'ट्रिन...ट्रिन... ।'

''प्रणाम श्रीमान जी... ।''

दूसरी तरफ से आई एक अजनबी आवाज को सुन जगतार चौंका... ।

''कौन बोल रहे हो तुम...?''

''मैं उस शख्स का खासमखास बोल रहा हूं जो आपको 'सर' कहा करता था।''

जगतार पुनः चौंका...साथ ही उसके आंखों के सामने शिवदयाल का चेहरा नाच उठा। वही उसे सर कहा करता था।

''कौन बोल रहे हो तुम...?'' वह माथे पर बल डालते हुए

बोला।
"सिपाही केवल किशन... ।"
"सिपाही... ।"
"जी हां... इंसपेक्टर साहब को आपसे जो कुछ भी इनाम में मिलता था उसमें से थोड़ा बहुत वे मुझे भी दिया करते थे। जितना कुछ इंसपेक्टर साहब आपके बारे में जानते थे, उतना ही मैं जानता हूं... ।"
"देखो... ।" जगतार गम्भीर स्वर में बोला—"तुमने गलत दरवाजा खटखटाया है। मैं न तो कोई गलत काम करता हूं... न ही मेरा दिवंगत इंसपेक्टर से कोई सम्बन्ध था।"
वह यही समझा था कि यह जमशेद राय की कोई चाल है।
"क्या आप जगतार सिंह जी नहीं हैं?" आवाज आई।
"हूं... ।"
"तो फिर मैंने गलत दरवाजा नहीं खटखटाया... ।"
"लेकिन मैं... ।"
"मैं मानता हूं कि मैं एक मामूली सिपाही हूं... । जबकि आप के रिश्ते बड़े लोगों से है... लेकिन बड़े लोगों से दोस्ती करके छोटों को नहीं भूल जाना चाहिए... क्योंकि कई काम ऐसे होते हैं जो सिर्फ छोटे लोग ही कर सकते हैं। बस आप उन्हें उनकी हैसियत के मुताबिक खुराक खिलाते रहेंगे और उसी खुराक की वजह से ही मैंने आपको फोन करने की धृष्टता की है।"
"तुम चाहते क्या हो... ?"
"आपका आशीर्वाद... जोकि कोई बड़ी बात नहीं कि अब ज्यादा देर तक आप किसी को आशीर्वाद नहीं दे सकेंगे।"
"क्या मतलब?"
"एस०एच०ओ० जमशेद राय आपकी कलाइयों में हथकड़ी डालने की पूरी तैयारी कर चुका है। कोई बड़ी बात नहीं कि कल की रात आपको हवालात में गुजारनी पड़े।"
"क्या बकता है?"
"मैं बक नहीं रहा... हकीकत ब्यान कर रहा हूं श्रीमान जी... । चांदनी का कत्ल करवाकर आपने अपनी तरफ आने वाले खतरे को रोक जरूर लिया, लेकिन अब एक नया खतरा आपकी तरफ बढ़ रहा है।"
"नया खतरा?"
"जी हां... बलबीर... आपका प्यारा वह इस वक्त चांदनी के कत्ल के इल्जाम में हवालात में बंद है।"
जगतार का कलेजा उछलकर हलक में आ फंसा... । अपने नीचे से उसे जमीन खिसकती नजर आने लगी।

"य...यह क्या कह रहा है तू...।" वह घबराये स्वर में बोला।

"गुलाम बिल्कुल ठीक कह रहा है।"

"कुछ कहा बलवीर ने जमशेद गार्द से?"

"अभी तक तो बलवीर ने कुछ नहीं कहा है...अगर एस०एच०ओ० को एक कोठी में हुए धमाकों की खबर नहीं मिलती तो कोई बड़ी बात नहीं थी कि अब तक वह उससे जुबान खुलवा चुके होते। साहब तो वहां गये हुए हैं...और आते ही वे सीधा बलवीर की ही सुध लेंगे...और देख लीजियेगा...बलवीर ज्यादा देर तक अपनी जुबान बंद नहीं रख पायेगा...इधर जैसे ही बलवीर की जुबान खुली उधर वह हथकड़ी लेकर आपकी तरफ दौड़ लगा देंगे...।"

जगतार को काटो तो खून नहीं...। सचमुच मुसीबत आ पड़ी थी उस पर।

मन-ही-मन वह उस वक्त को कोस रहा था जब उसने सतीश रावण से पंगा लिया था। एक बार तो उसने जानबूझकर शनिचर को अपने घर बुला लिया था, अगर वह उनसे पंगा नहीं लेता तो जितना नुकसान उसका हो चुका था...वह नहीं होता...उसके आदमी नहीं मरते...और वह पुलिस की निगाहों में भी नहीं आता।

किसी तरह उसने खुद पर काबू पाया और बोला—

"बलवीर की जुबान नहीं खुलनी चाहिए...।"

"नहीं खुलेगी श्रीमान जी... केवल किशन के पास मुंह बंद करने के एक-से-एक शानदार तरीके हैं...। बस आपका आशीर्वाद...।"

"आशीर्वाद मिलता रहेगा तुम्हें...।"

"तो फिर आप लम्बी तानकर सो जाइये। मैं सब कुछ सम्भाल लूंगा।"

जगतार ने रिसीवर रखा...कुछ सोचा फिर पुनः रिसीवर उठाकर कोई नम्बर मिलाने लगा।

"हैलो...।"

थोड़ी देर बाद दूसरी तरफ से विजेन्द्र पाल की आवाज आई।

"लगता है तुझे दस लाख देकर बेवकूफी की है मैंने एस०पी०।" गुर्राया जगतार।

"य...यह आप क्या कह रहे हैं...।" दूसरी तरफ से विजेन्द्र पाल की हड़बड़ी से भरी आवाज उभरी।

"तो और क्या कहूं...वहां उस गनेश ने मेरी नींद हराम कर रखी है...और तू मस्ती भरी नींद ले रहा है...पता है उसने मेरी एक कोठी उड़ा दी है। ऊपर से मेरा पचास करोड़ का माल ले उड़ा है।"

"म...मगर मैं इसमें क्या कर सकता हूं...वह गनेश की और आपकी जंग है...। हां, अगर गनेश पकड़ा जाता तो मेरा पहला फर्ज

यही होता कि उसे आपके सामने पेश कर दूं।"

"और तू उसे सोकर ढूंढ रहा है।" गुर्राया जगतार।

"मैं...सर...।"

"मैं-मैं बंद कर...यहां मेरी जान पे बनी है...और तू मैं-मैं कर रहा है।" पता है चांदनी की हत्या हो गई है।"

"यह तो बहुत खुशी की बात है। आपने वक्त रहते उसे खत्म करवा दिया। वर्ना कल को वह आपके लिये मुसीबत बन सकती थी।"

"मगर मुसीबत वैसे की वैसे बनी हुई है।"

"मैं कुछ समझा नहीं सर।"

"जमशेद राय ने चांदनी की हत्या के जुर्म में बलवीर को पकड़ लिया है। पता नहीं कैसे पता चल गया उसे कि चांदनी को बलवीर ने मारा है। अब अगर बलवीर ने उसे बता दिया कि चांदनी को मारने के लिए मैंने उसे हुक्म दिया था तो मैं तो गया न काम से।"

"म...मगर सर इसमें मेरा तो कोई कुसूर नहीं...।"

"मैंने बलवीर की ज़ुबान बंद करने के लिए एक सिपाही को आदेश दे दिया है।"

"ओह।"

"अगर वह कामयाब रहता है तो ठीक...वर्ना सारी बात तुझे सम्भालनी है।"

"मैं समझ गया सर...आप निश्चिंत रहिये...मैं सब कुछ संभाल लूंगा।"

"निश्चिंत कहां रह सकता हूं मैं...मेरा इतना नुकसान हो गया है...इतने आदमी मारे गये मेरे...अब तो निश्चिंत तभी होऊंगा जब वह हरामजादा मेरे हाथों से मरेगा। खैर...तू वह कर जो तुझे कहा है।"

"यस सर।"

जगतार ने रिसीवर रखा और दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

□□□

□□□

सतीश रावण ने सूमो ऐन देवकी के मकान के दरवाजे के सामने खड़ी की...दरवाजा खोला और बाहर निकलकर बोनट के आगे से निकलते हुए दरवाजे के सामने आकर डोरबेल बजा दी।

भीतर से उसे घंटी का मधुर संगीत सुनाई दिया।

दो मिनट बाद उसने फिर पुश दबाया और दरवाजा खुलने का इंतजार करने लगा।

तीसरी बार बेल बजाने के बाद भीतर से देवकी की आवाज आई।

"कौन है?"

"मैं हूं... ।" सतीश रावण बोला।

दरवाजा खुला... ।

सामने देवकी आंखें मलती हुई खड़ी थी।

"बड़ी देर लगा दी दरवाजा खोलने में... ।" सतीश रावण बोला।

"इस वक्त यूं भी गहरी नींद आती है।" देवकी जम्हाई लेती हुई बोली... फिर गाड़ी की तरफ देखा—"यह गाड़ी... ।"

जवाब में सतीश रावण ने कुछ नहीं कहा... वह वापिस सूमो में जाकर बैठा और उसे स्टार्ट कर थोड़ा पीछे ले जाकर स्टीयरिंग काटते हुए आगे बढ़ाया।

थोड़ा-सा आगे-पीछे करके उसने सूमो को इस तरह खड़ा कर दिया कि सूमो का पिछला हिस्सा दरवाजे के सामने आ गया।

वह बाहर आया... सूमो के पीछे पहुंचा और दरवाजा खोल दिया।

सामने पड़ी पेटियों को देख देवकी चौंकी... ।

"इन पेटियों में क्या है?" वह बोली।

"पहले पेटियों को अन्दर रख लें... फिर बताऊंगा क्या है इनमें... ।"

कहते हुए सतीश रावण ने ऊपर पड़ी गांठ खींच ली।

उसने गांठ निकालकर देवकी के सिर पर रखी और बोला—

"इसे सम्भाल कर भीतर ले जाओ।"

देवकी लड़खड़ाती हुई भीतर चली गई।

सतीश रावण ने एक पेटी निकाली... उसे फिर सिर पर लादा और देवकी के पीछे-पीछे बेडरूम में आ गया।

देवकी ने गांठ बेड पर रखी और फिर सतीश रावण के सिर पर लदी पेटी को बेड पर उतारने में मदद करने लगी।

पेटी को बेड पर रखकर दोनों बाहर आये।

सतीश रावण ने एक हल्की पेटी उसके सिर पर रखी और भारी खुद उठा ली।

इस प्रकार कुल चार चक्कर लगाने पड़े उन्हें... ।

"मैं सूमो को कहीं छोड़ आता हूं... ।" सतीश रावण अपनी सांसें दुरुस्त करते हुए बोला—"क्योंकि इसका ज्यादा देर तक यहां रहना खतरनाक हो सकता है।"

"लेकिन इन पेटियों में है क्या... ?" देवकी बोली।

"यह जगतार की बर्बादी का एक अध्याय है... ।" सतीश रावण ने पेटियों की तरफ बांह लम्बी की—"और हमारा सुन्दरी भविष्य... ।"

"म... मैं कुछ समझी नहीं... ।"

"जगतार का करोड़ों का सोना है इसमें कैश है... और नशीले पदार्थों का जखीरा है यह... मैंने सारा सामान देखा था... मेरे हिसाब से चालीस करोड़ से ऊपर का माल है यह।"

"च... चा... लीस... करोड़... ।"

देवकी की आंखें फट पड़ीं।

"अभी तो यह कुछ भी नहीं मेरी जान... ।" सतीश रावण ने उसे अपनी बांहों में भर लिया—"जगतार को खत्म करने से पहले मैं तुम्हारे कदमों में इतनी दौलत बिछा दूंगा कि तुम जिधर भी पैर रखोगी... घुटनों तक दौलत के ढेर में धंस जाओगी।"

"क्यों कमर तक क्यों नहीं... ।"

"फिर मैं तुमसे खेल नहीं पाऊंगा।" हंसा सतीश रावण—"इसलिए घुटनों तक का कहा।"

हंस पड़ी देवकी।

"और जिस नये घर में तुम जाओगी... उसकी ईंटें सोने की होंगी... ।"

कहकर उसने उसकी नाइटी के ऊपर से ही उसकी छातियों को चूमा फिर उसे छोड़कर पीछे हटते हुए बोला—

"मैं सूमो को कहीं छोड़ आऊं... फिर दोनों मिलकर इस दौलत को किसी जगह पर सम्भाल कर रखेंगे।"

कहकर उसने देवकी की तरफ एक हवाई चुम्बन उछाला और फिर जैसे ही वह दरवाजे की तरफ मुड़ा... उसके कदम वहीं के वहीं रुक गये।

कलेजा न चाहते हुए भी जोरों से धड़क उठा।

सामने दरवाजे के बीचों-बीच हाथों में रिवाल्वर लिये एक खूबसूरत और स्मार्ट व्यक्ति खड़ा था, मगर इस वक्त उसके चेहरे पर जो भाव थे... वे उसकी सारी खूबसूरती को खत्म कर रहे थे।

उसने जीन्स की पैंट के ऊपर बनियान पहन रखी थी... जिससे कि उसके उभरे हुए मस्सल उसकी ताकत का प्रदर्शन कर रहे थे।

"सूमो मैं छोड़ आऊंगा... ।" वह व्यक्ति धूर्तता से मुस्कुराया—"मगर उससे पहले तुझे भगवान के घर रवाना करना जरूरी है।"

सतीश रावण ने गर्दन पीछे मोड़कर देवकी की तरफ देखा।

देवकी के होंठों पर नाच रही कुटिल मुस्कान देखते ही वह समझ गया कि माजरा क्या है।

चोर को मोर पड़ गये थे।

"कैसी रही मिस्टर सतीश रावण... ?" तभी देवकी ने बाईं आंख दबाई।

बुरी तरह से चौंका सतीश रावण।

"य...यह तुम क्या कह रही हो देवकी....। म...मैं गनेश हूं...त...तुम्हारा गनेश।"

देवकी के होठों पर नाच रही मुस्कान और भी तेज हो गई।

"तू सतीश रावण ही है...और सतीश रावण के रूप में मैंने तुझे उसी वक्त ही पहचान लिया था जब तू जख्मी हालत में मुझे यहां इसी बेड पर मिला था।

"क... किस सतीश रावण की बात कर रही हो तुम... मैं गनेश हूं...।"

"हा...हा...हा...।" देवकी हंसी—"तेरे बारे में बहुत कुछ जानती हूं मैं...। दिल्ली में मेरा आना-जाना रहता है। वही अखबारों में तुम्हारे बारे में न सिर्फ मैं बहुत कुछ पढ़ चुकी हूं, बल्कि तुम्हारी तस्वीरें भी देख चुकी हूं। सो जैसे ही मैंने अपने घर में तुम्हें देखा... मैं बुरी तरह से डर गई। मैं जानती थी कि तुम अव्वल दर्जे के धोखेबाज और मतलब परस्त इंसान हो। तुम्हारी सूरत में मुझे अपनी मौत नजर आने लगी।"

सतीश रावण कुछ नहीं बोला... बस उसे देखता रहा।

"और जब तुमने...।" देवकी अपनी बात को आगे बढ़ाया—"तुमने अपना नाम गनेश बताते हुए मुझे अपनी झूठी कहानी सुनाई तो मैंने भी तुम्हें न पहचानने का नाटक शुरू कर दिया। तुम्हें याद होगा कि तुम्हें घर में ही छोड़कर चली गई थी।"

"हां...तुम दवा लेने गई थी...।" सतीश रावण ने गहरी सांस छोड़ी।

"नहीं... मैं दवा लेने नहीं गई थी... बल्कि पुलिस को सूचित करने गई थी। बहुत ज्यादा डरी हुई थी मैं।"

"ओह।"

"मगर थाने मैं अकेले नहीं जाना चाहती थी इसलिए मैं राजीव के फ्लैट में गई...।" कहते हुए उसने दरवाजे की तरफ इशारा किया।

सतीश रावण ने गर्दन सीधी कर रिवाल्वर वाले की तरफ देखा।

उसने बड़ी अदा से सिर को थोड़ा नवाया और मुस्कुराते हुए बोला—

"बंदे को राजीव कहते हैं... राजीव अग्रवाल...। देवकी का प्रेमी और उसका होने वाला पति।"

सतीश रावण ने जोरों से थूक सटकी।

"तुम्हारे बारे में मैंने भी काफी कुछ पढ़ रखा था। सो...।" राजीव बोला—"जब देवकी ने मुझे तुम्हारे बारे में बताया और यह बताया कि तुम पुलिस और जगतार की ज्यादती का शिकार हुए हो तो मैं समझ गया कि लखनपुर में अब लाशें बिछने का मौसम आ गया है। जगतार की अमीरी जानता था मैं... मैं यह भी जानता था

कि जगतार गैरकानूनी काम करता है। इसका पता मुझे दो ढाई साल पहले तब लगा था जब जगतार के आदमियों ने चांदनी की इज्जत सरेआम लूटी थी। उसकी इज्जत लूटते देखने वालों में मैं भी था।

बस मैं समझ गया कि अब जगतार की खैर नहीं...और मैं यह भी समझ गया कि तुम उसे आर्थिक चोटें भी मारोगे। यानि हमें बैठे बिठाये करोड़पति बनने का मौका मिल गया था।"

"ओह।"

"मैंने देवकी को थाने जाने से रोक दिया और कहा कि वह तुम्हारा विश्वास जीते तुम्हें हर तरह से खुश कर दे...चाहे इसे तुम्हारे साथ रातें ही क्यों न रंगीन करनी पड़ें। मेरी बातें सुनकर देवकी पहले तो भड़की थी, मगर जब मैंने इसे समझाया कि हम तुम्हारे जरिये करोड़ों कमा सकते हैं...तो यह मान गई और फिर देवकी ने वह किया जो हमने सोचा था। तुमने यही समझा कि देवकी अकेली रहती है भला इससे महफूज जगह और क्या हो सकती थी तुम्हारे लिये।"

"ओह।"

"तुमने यही समझा कि तुमने देवकी को अपने जौहर दिखा कर उसे अपने प्रेम के जाल में फांस लिया है, मगर ऐसा नहीं था...तुमने देवकी को फांसा नहीं था, बल्कि खुद हमारे जाल में फंसे थे। देवकी तो तुम्हें उसी वक्त ठिकाने लगाने को उतावली हो गई थी...जब तुम अपनी पहली कमाई...यानि पंद्रह लाख लेकर आये थे, मगर मैंने मना कर दिया था, क्योंकि मैं जानता था कि पंद्रह लाख तो ऊंट के मुंह में जीरा है...तुम तो आगे करोड़ों का हाथ मारोगे और आज रात जब देवकी ने फोन करके मुझे बताया कि तुम जगतार को चोट मारने गये हुए हो तो मैं यहां आ गया, क्योंकि मुझे पूरा विश्वास था कि आज तुम मोटा हाथ मारकर लौटोगे।" वह हंसा—"और देख लो...मेरा विश्वास कितना सच्चा साबित हुआ...।" उसने बेड की तरफ इशारा किया।" तुम्हारे आने से पहले हम दोनों जिंदगी के मजे लूट रहे थे...जब तुमने बैल बजाई तो मैं देवकी को छोड़कर पास वाले कमरे में चला गया।"

"और अगर मैं खाली हाथ लौटता तो?" सतीश रावण गहरी सांस छोड़ते हुए बोला।

"तो तुम्हारी जिंदगी कुछ और बढ़ जाती...मैं चुपचाप यहां से चला जाता...।"

"ओह।"

"तुम्हारे प्रश्न ने ही साबित कर दिया है कि तुम सतीश रावण हो। कबूल करते हो न?"

"हां...करता हूं।"

सतीश रावण ने पुनः गहरी सांस छोड़ी।

"तो अब भगवान का नाम लो...और मरने के लिए तैयार हो जाओ। तुम्हारे अधूरे काम को मैं कर दूंगा...यानि सूमो को मैं कहीं छोड़ आऊंगा।"

कहते हुए उसने सतीश रावण पर रिवाल्वर तान दी।

सहसा ही सतीश रावण के होठों पर एक जहरीली मुस्कान नाच उठी।

"तुम क्या समझते हो...मुझे मारने में कामयाब हो जाओगे?" वह बोला।

"क्यों नहीं हूंगा...मेरे हाथ में रिवाल्वर है और मेरा निशाना भी ठीक है।" राजीव भी मुस्कुराया।

"अगर तुम मेरी हकीकत जानते होते तो ऐसी बात भी मुंह से न निकालते... ।"

"अच्छा।" व्यंग्य से बोला राजीव।

"तुमने यह तो जान लिया कि मैं सतीश रावण हूं...मगर तुम्हें यह नहीं पता कि मैं सतीश रावण नहीं बल्कि भेड़िया हूं।"

"भेड़िया... ।" राजीव की आंखें सिकुड़ गई।

"वो शैतान आत्मा जिसके आगे धर्मराज भी पनाह मांग उठा था। धर्मराज की ही बदौलत मुझे पता लगा कि मेरी मौत कैसी होगी और तुम्हारी जानकारी के लिए मेरी मौत रिवाल्वर से तो हरगिज नहीं लिखी।"

बुरी तरह से उछल पड़ा राजीव...साथ ही पहली बार उसकी आंखों में दहशत के भाव उभरे थे। जो यह जाहिर करते थे कि उसने भेड़िया के बारे में भी पढ़ रखा है।

"त...तुम भ...भेड़िया हो?"

"यकीनन... ।"

"मैं नहीं मानता... । भेड़िया के बारे में मैंने पढ़ रखा है कि जो भी औरत उसके नीचे आई...वह जिंदा नहीं बची...क्योंकि औरत से संसर्ग के वक्त भेड़िया घोड़े को भी मात दे देता था, जोकि औरत के बर्दाश्त से बाहर की बात है। जबकि देवकी तुम्हारे साथ कितनी ही बार सो चुकी है...और यह ठीक-ठाक है।"

"धर्मराम ने इसी एक शाप में तब्दीली कर दी थी। उसी वजह से देवकी सलामत है।"

कहते हुए सतीश रावण धीरे से उसकी तरफ बढ़ा।

"बकवास करते हो तुम... । त...तुम भेड़िया नहीं बल्कि सतीश रावण हो।"

हड़बड़ाया-सा बोला राजीव।

"तो फिर गोली चलाकर देख लो...तुम्हें खुद-ब-खुद यकीन हो जायेगा।"

कहने के साथ ही सतीश रावण के जिस्म ने तेजी से हरकत की और अगले ही पल–

'धांय...।'

राजीव के माथे के ऐन बीचों-बीच सुराख हो गया।

बेचारे को ट्रिगर दबाने का भी मौका नहीं मिला।

सतीश रावण ने बिजली की-सी गति से रिवाल्वर निकाली और उस पर फायर कर दिया।

करोड़पति बनने के अरमान दिल में लिये राजीव ईश्वरपुरी की तरफ रवाना हो गया था।

उसका जिस्म कटे वृक्ष की तरह धड़ाम से मुंह के बल फर्श पर आ गिरा।

रिवाल्वर हाथ में लिये हुए सतीश रावण दरिंदे की तरह पीछे घूमा।

देवकी की आंखें फटी हुई थीं...मुंह खुला हुआ था।

ऐसा लग रहा था जैसे वह चीखने के लिए पूरा जोर लगा रही हो...मगर आवाज उसके भीतर ही घुटकर रह गई हो।

सतीश रावण ने कदम बढ़ाये और उसके सामने आ खड़ा हुआ।

"तो मैडम ने मुझे देखते ही पहचान लिया था।" वह हौले से हंसा–"और करोड़पति बनने के लिए मुझे जिंदा छोड़ दिया।"

देवकी के पूरे जिस्म ने एक साथ ढेरों पसीना उगल दिया।

"हराम की दौलत हर किसी को नहीं पचा करती...उसे पचाने के लिए बहुत बड़े कलेजे की जरूरत होती है। जिसका कलेजा बड़ा नहीं होता...वह हराम की दौलत को छूते क्या देखते ही मर जाता है। जैसे तेरा भावी पति...देख कैसे मरा पड़ा है।"

देवकी की गले की घण्टी जोरों से उछली। चेहरा पसीने से तरबतर हो गया।

"और अब तेरी बारी है।"

कहने के साथ ही उसने रिवाल्वर की नाल उसके खुले मुंह में घुसेड़ दी।

"ग...गौं...गौं...।"

देवकी के हलक से केवल गौं-गौं ही निकल पाया।

तभी सतीश रावण ने ट्रिगर दबा दिया।

गोली उसके हलक को फाड़ती हुई पीछे से निकली और सामने दीवार में जा धंसी।

देवकी का जिस्म जोरों से उछला और फर्श पर गिरकर छटपटाने लगा।

सतीश रावण ने रिवाल्वर बेड पर फेंकी और मुड़कर दरवाजे के आगे पड़ी राजीव की लाश की तरफ बढ़ा।

लाश के करीब आकर वह झुका और लाश को उठाकर मेन गेट की तरफ तेजी से बढ़ा।

उसकी लाश को सूमो में फेंककर वह वापिस आया तो देवकी का छटपटाना बंद हो चुका था।

वह मर चुकी थी।

सतीश रावण ने उसकी लाश भी उठाई और ले जाकर सूमो के खुले दरवाजे में फेंककर दरवाजा बंद कर दिया।

तत्पश्चात् उसने गांठ खोलकर उसमें से एक टाइमबम निकाला और फिर ताला लेकर बाहर आ गया।

मेन डोर को ताला लगाकर उसने चाबी जेब के हवाले की और आकर सूमो की ड्राइविंग सीट पर बैठते हुए बम को अपने करीब सीट पर रखकर सूमो स्टार्ट की और वहां से रवाना हो गया।

करीब चार किलोमीटर चलने के उपरांत उसने सूमो को सड़क किनारे रोका और सीट पर बैठे-बैठे ही बम निकाल कर उसमें पांच मिनट का वक्त फिक्स किया और लीवर दबा कर बम को उठाये बाहर आ गया।

सूमो के पीछे आकर उसने दरवाजा खोला और बम को दोनों की लाशों के करीब सीट के नीचे रखकर दरवाजा बंद किया और एक तरफ दौड़ लगा दी।

अभी वह थोड़ी दूर ही जा पाया था कि तभी पीछे से एक गगन भेदी धमाका हुआ...।

'ब...ड़ा...म...।'

सतीश रावण के होठों पर एक शैतानी मुस्कान नाच उठी।

पीछे देखने की उसने जरूरत महसूस नहीं की, बल्कि अपने कदमों की गति और भी तेज कर दी।

देवकी की लाश को कोई पहचान सकता था...उस सूरत में पुलिस उसके घर आ सकती थी जोकि सतीश रावण हरगिज नहीं चाहता था, क्योंकि इससे महफूज जगह और कोई नहीं थी उसके पास।

इसी वजह से उसने उसकी लाश को चीथड़ों में उड़ा देना ही बेहतर समझा, ताकि न कोई उसे पहचान पायेगा...और न पुलिस उसके घर तक पहुंच पायेगी।

राजीव की लाश को भी उड़ाने के पीछे यही कारण था।

जिस कदर धमाका हुआ था...उससे उसे पूरा विश्वास था कि लाशें छोटे-छोटे टुकड़ों में बंट जायेंगी।

गलियों में पैदल ही चलता हुआ वह देवकी के घर पहुंचा...ताला खोलकर भीतर प्रविष्ट हुआ और घर का मुआयना करने लगा।

शीघ्र ही उसे वह चीज मिल गई जिसकी उसे तलाश थी।

एक दरवाजा था वह जो कि बेडरूम के साथ वाले कमरे के पीछे आंगन के बाद पिछली दीवार में था।

उस दरवाजे पर ताला झूल रहा था।

सतीश रावण कमरे में गया...वहां से ताले में से चाबियां निकाली और वापिस आकर चाबियों को उस ताले पर आजमाने लगा।

तीसरी चाबी ताले में घुस गई और ताले ने मुंह फाड़ दिया।

सतीश रावण ने ताला खोलकर दरवाजा खोला और गर्दन बाहर निकाली।

पीछे एक तंग गली में खुलता था वह दरवाजा।

सतीश रावण गली में आया...दरवाजा बंद किया और गली के सिरे की तरफ बढ़ गया।

ताला उसके हाथ में था।

गली से निकलकर वह मुड़ा और चलता हुआ मुख्य सड़क पर आ गया।

कुछ ही देर में वह मकान के मेन डोर के सामने था।

उसने मेन डोर को बाहर से ताला लगाया और फिर वापिस चलता हुआ पीछे वाले रास्ते से मकान में प्रवेश कर गया।

भीतर से कुण्डा लगाकर उसने कमरे का रूख किया...और कमरे में ही होता हुआ बाथरूम में आ गया। अब वह निश्चिंत था। देवकी का कोई मिलने वाला, अगर आयेगा भी तो बाहर से ताला देखकर वापिस लौट जायेगा, अगर उसे ताला लगा न मिलता तो निश्चय ही उसके लिये परेशानी खड़ी हो सकती थी।

बाथरूम में आकर उसने अपने कपड़ों को उतारा जिन पर लगी सूअर की गंदगी अब सूख चुकी थी और मल-मलकर नहाने लगा।

नहाकर वह बेडरूम में आया...वार्ड रब में से कपड़े निकाले और उन्हें पहनकर एक-एक करके सारा सामान बेड से उतारकर बेड के नीचे खिसका दिया...और फिर खुद बेड पर लेटकर रजाई ओढ़ ली।

जी भर कर अपनी थकान उतारना चाहता था वह।

सुबह ने अपने आने का संदेश अंधेरे को दे दिया था।

□□□

□□□

"हुजूर की खिदमत में इस नाचीज का आदाब...।"

जगतार ने हाथ में थमे पैग को मुंह की तरफ बढ़ाते हुए उसे देखा।

वह एक दुबला लम्बा व्यक्ति था जोकि सफेद चूड़ीदार पायजामे के ऊपर काले रंग की घुटनों तक लम्बी अचकन पहने हुए था। उसकी

दाढ़ी की नोक उसके सीने को छू रही थी जबकि मुछें सफानट थी।

मिर्जा था वह...मिर्जा वाहिद।

जगतार का ट्रबल शूटर...।

बेहद गम्भीर हालातों में ही जगतार उसकी सेवायें लिया करता था...वर्ना उसे याद भी नहीं करता था।

मिर्जा यूं तो इम्पोर्ट-एक्सपोर्ट का काम करता था...मगर दुनिया में कहा क्या हो रहा है उसकी उसे पूरी खबर रहती थी...।

जगतार का वह मुंह लगा था...और अपनी सेवाओं के बदले उससे मोटी रकम वसूल करता था। वर्ना उसका अपना धंधा गैरकानूनी हरगिज नहीं था और यह उसकी खासियत थी कि उसने कभी भी किसी का भी भेद किसी पर भी जाहिर नहीं किया था।

जगतार अब तक तीन पैग लगा चुका था...और चौथा खत्म कर रहा था जब मिर्जा के दर्शन हुए उसे।

मिर्जा आगे बढ़ा और उसके सामने वाले सोफे पर बैठते हुए बोला—

"खैरियत तो है हुजूर...जो इस नाचीज को इस वक्त फरमान भेज दिया।"

जगतार ने पैग होठों से हटाया और उसे टेबल पर रखते हुए बोला—

"बैठे बिठाये मुसीबत मोल ली मिर्जा।"

"कैसी मुसीबत...?"

"गनेश नाम है उस मुसीबत का।"

"जरा तफसील से बताइये हुजूर तभी कुछ बता पाऊंगा न मैं।"

जगतार ने उसे शुरू से लेकर अब तक की सारी कहानी सुना दी, फिर बोला—

"मेरा करोड़ों का माल लूट लिया उसने...इतने आदमी मार डाले...और मैं अभी तक यह भी पता नहीं लगा पाया कि वह छुपा कहां है।"

"ओह।" मिर्जा गम्भीर हो गया।

"अब तू ही कुछ कर मिर्जा...अगर उस हरामी गनेश ने इसी तरह की एक आध चोट मुझे और दे दी तो मुझे सड़क पर आने में देर नहीं लगेगी। कानून से तो मैं निपट लूंगा...मगर यह हरामी गनेश मुझ पर भारी पड़ता जा रहा है।"

"आपकी चिंता वाजिब है हुजूर।" मिर्जा गम्भीरता से बोला।

"तभी तो तुझे बुलाया है यहां...। शेरखान अभी तक उसे ढूंढने में नाकाम रहा है...अब तू ही उसे ढूंढ...।"

"हुजूर का हुक्म सिर आंखों पर, मगर उससे पहले मुझे वह

लिस्ट चाहिये।"
"कौन-सी लिस्ट?" चौंका जगतार।
"अभी-अभी तो आपने बताया था कि शिवदयाल ने पकड़े गये माल की लिस्ट बनाकर आपको दी थी ताकि आप देख ले...यकीन कर लें कि माल पूरा है...।"
"हां दी थी।"
"मुझे वह लिस्ट चाहिए।"
"मगर तू क्या करेगा उस लिस्ट का...?"
"आप दीजिये तो सही...वो भी बता दूंगा।"
जगतार ने अनमने भाव से जेब में से ढेर सारे तह किये कागजों का ढेर निकाला...फिर उनमें से एक कागज ढूंढकर उसकी तरफ बढ़ा दिया।
मिर्जा ने कागज की तह खोल और उसमें लिखे सामान को पढ़ने लगा।
तभी वह बुरी तरह से उछल पड़ा...साथ ही उसके होंठों से चौंकता स्वर निकला—
"या अल्लाह।"
"क्या हुआ?" उसे चौंकते देख जगतार भी चौंका।
"वही...जिसका मुझे डर था।"
"किस डर की बात कर रहा है तू...?"
मिर्जा ने लिस्ट उसकी तरफ बढ़ाई और बोला—
"इस लिस्ट में एक ऐसी चीज भी है जोकि मैं यकीनन कह सकता हूं कि आपकी नहीं।"
"कौन-सी चीज...?"
"आरी...।"
जगतार ने लिस्ट पर निगाह मारी और उसी तरफ देखते हुए बोला—"मेरी तो वे स्टेनगनें भी नहीं थी जो सूमो में से लाशों और माल के साथ बरामद हुई थीं।"
"मैं सिर्फ आरी की बात कर रहा हूं हुजूर।"
"मगर तू आरी की बात क्यों कर रहा है। ऐसा क्या है आरी में जो तू उसके नाम से ही घबरा उठा है?"
"क्योंकि यह आरी ही साबित करती है कि जिसे आप गनेश समझ रहे हैं वह गनेश नहीं...।"
"तो फिर कौन है वो...?"
"सतीश रावण...।"
बुरी तरह से उछल पड़ा जगतार...। आंखों का फैलाव एकदम से कई गुणा बढ़ गया।
"य...यह क्या कह रहा है तू?" जगतार की आवाज में

हल्की-सी थर्राहट उभर आई थी।

मिर्जा ने पहलू बदला और गहरी सांस छोड़ी।

"आपने मुझे गनेश का जो कारनामा बताया...उसी से मैं समझ गया कि वह गनेश नहीं है, क्योंकि यह काम किसी बहुत ही शातिर और तेज दिमाग वाले तजुर्बेकार व्यक्ति का है और अभी तक मैंने ऐसा कोई नाम नहीं सुना यानि कोई और सख्श गनेश का नाम अपने माथे पर लगाये यह काम कर रहा है।"

"ओह।"

"यह बात जेहन में आते ही मेरे जेहन में दो नाम उभरे जो कि अकेले अपने दम पर कुछ भी कर गुजरने में सक्षम हैं। एक बलराज गोगिया...और दूसरा सतीश रावण, मगर बलराज गोगिया की पहचान उसके जोड़ीदार राघव से है...और गनेश को आपने बिल्कुल अकेला बताया...और वो शख्स सिर्फ सतीश रावण ही हो सकता है, मगर सतीश रावण का कत्ल करने का तो तरीका यहां एक बार भी सामने नहीं आया जोकि उसे बेहद पसंद है।"

"कौन-सा तरीका...?"

"वह अपने दुश्मन की गर्दनें काटना ज्यादा पसंद करता है...जब तक मजबूरी न हो वह रिवाल्वर का बहुत ही कम इस्तेमाल करता है।"

"ओह।"

"ऐसे में मेरे जेहन में पहचान आई कि हो सकता है वह सतीश रावण भी न हो, क्योंकि अभी तक किसी की भी गर्दन नहीं रेंती गई। सभी के सभी गोलियों से मारे गये हैं, मगर दिल कह रहा था कि वह सतीश रावण ही हो सकता है। क्योंकि वह अव्वल दर्जे का मक्कार और धोखेबाज शख्स है और खुद को गाली निकलना अपनी शान समझता है और गनेश भी वैसा ही है।"

"ओह...ओह।"

"बस इसीलिए मैंने आपसे लिस्ट मांगी थी, क्योंकि मुझे लग रहा था कि या तो उसकी तलवार या कुल्हाड़ी या ऐसा ही कुछ कहीं गिर पड़ा है...या उसने वक्तीतौर पर उसे एक तरफ रख दिया है, अगर ऐसा न होता तो अब तक शिवदयाल ने उसे गिरफ्तार किया था...वह उसी वक्त अपने हथियार से कोई करामात दिखा देता। और देख लीजिये...आरी निकली लिस्ट में से...जो यह बताती है कि वह गनेश नहीं बल्कि सतीश रावण है।"

जगतार ने निराशा भरी गहरी सांस छोड़ी...।

"यानी मेरी लड़ाई किसी आम खार खाये व्यक्ति से नहीं...बल्कि एक नामी और आदि मुजरिम से है।"

"बेरहम और मक्कार भी है...।" बोला मिर्जा।

"मैं जानता हूं...और मुझे यह भी पता है [illegible] भी पीछे पड़ता है...उसका सत्यानाश करके ही दम लेता [illegible]"

"आप बजा फरमा रहे हैं हुजूर...और ऐसे [illegible] को फौरन से पेश्तर खत्म कर देना ही सबसे बड़ी अक्लमंदी है, अगर उसे खत्म करने की ताकत न हो तो बोरिया बिस्तर समेटकर कहीं छुप जाओ...और तब तक छुपे रहो जब तक कि वह तंग आकर शहर छोड़कर नहीं चला जाता।"

"और यह तू अच्छी तरह से जानता है कि जगतार मरना कबूल कर लेगा, मगर पीठ नहीं दिखायेगा।"

सख्ती से बोला जगतार।

"मरे आपके दुश्मन...आप तो हजारों बरस तक सलामत रहेंगे।" दाढ़ी खुजाते हुए बोला मिर्जा—"लेकिन हुजूर...।" वह [illegible] पर हाथ रख थोड़ा आगे होते हुए बोला—"इस बार पाला किसी मामूली दुश्मन से नहीं पड़ा...।"

"एक बार उसका पता चल जाये मिर्जा...।" दांत किटकिटाये जगतार बोला—"फिर वह चाहे कितनी ही बड़ी तोप क्यों न हो...मैं उसे ऐसी मौत दूंगा कि जब तक मैं जिंदा रहूंगा...वह दोबारा पैदा होने से इंकार कर देगा।"

"यह तो आपने वाजिब कहा।" सिर हिलाया मिर्जा ने।

"जिस तरह तूने गनेश की हकीकत बताई है...उसी तरह अब उसे ढूंढने का रास्ता खोज।"

मिर्जा ने टोपी उतार कर सिर को खुजाना शुरू कर दिया।

थोड़ी देर बाद उसने अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरा और बोला—"मैं वो जगह देखना चाहता हूं जिधर से वह भागा था।"

"मैं शेरखान को बुलाता हूं...।"

गम्भीरता से बोला जगतार।

□□□

□□□

"तो इधर से वह कूदा था...?"

मिर्जा सड़क पर इधर-उधर बांह हिलाते हुए शेरखान से बोला।

"जी हां मिर्जा साहब...।" शेरखान बोला।

"फिर...?"

"मैं आदमियों के साथ फौरन यहां पहुंच गया।"

मिर्जा कुछ देर तक दाढ़ी खुजाता रहा...फिर शेरखान बोला—

"तू वहां पहुंच जहां पर कि तू उस रोज था...मैं दीवार कूदता हूं...मेरे कूदते ही तू पूरी ताकत से भागते हुए य[illegible] पहुंचना...।"

"ल...लेकिन...।"

"जो कह रहा हूं वही कर...।" सख्ती से बोला मिर्जा।

शेरखान ने गहरी सांस छोड़ते हुए सिर हिलाया और कोठी में चल गया।

मिर्जा कूड़े के ड्रम पर पैर रखकर बाऊंड्री वाल पर चढ़ गया और भीतर देखने लगा।

शीघ्र ही शेरखान कोठी में प्रवेश करता नजर आया।

जब शेरखान बरामदे में पहुंचकर रुक गया तो मिर्जा ऊंचे स्वर में बोला–

"कूद जाऊं?"

"हां...कूद जाइये।" शेरखान बोला।

मिर्जा बाहर कूद गया...और पूरी शक्ति से सामने वाली गली की तरफ भागा।

मगर जब तक वह सड़क पार कर गली के सिरे तक पहुंचा...शेरखान कोठी से निकल चुका था।

"मिर्जा साहब...।" उसने आवाज लगाई।

मिर्जा के पैर वहीं रुक गये।

वह वापिस पलटा...इधर-उधर देखा...फिर शेरखान की तरफ बढ़ गया।

"आजा।"

शेरखान के करीब आ वह गेट की तरफ बढ़ते हुए बोला।

कुछ ही देर में वह जगतार के सामने सोफे पर बैठा था।

शेरखान जगतार के पीछे खड़ा हुआ था।

"क्या पता लगा?" जगतार उसे देखते हुए बोला।

मिर्जा ने एक गहरी सांस छोड़ी और बोला–"जिस वक्त वह भागा...वह बुरी तरह से जख्मी था।"

"अधमरा हो रहा था वह। ढंग से चला भी नहीं जा रहा था उससे, फिर भी वह पता नहीं कैसे भागने में कामयाब हो गया।"

"वह भागा नहीं था हुजूर...।"

"क्या मतलब?" बुरी तरह से चौंका जगतार।

मिर्जा ने पहलू बदला और बोला–"मैंने पूरी ताकत से दौड़ लगाकर गली में दाखिल होने की कोशिश की थी, मगर कामयाब नहीं हो पाया। जबकि वह तो जख्मी था...ऐसे में वह सड़क पार करने से पहले ही पकड़ा जाता।"

"तू कहना क्या चाहता है?"

"वह यहीं था...छुपा हुआ था वह।"

"कहां...?"

"वहां पर छुपने के लिए एक ही जगह है...कूड़े का

ड्रम...जरूर वह दीवार से कूदते ही उस ड्रम में छुप गया था और जब उसने वहां हलचल खत्म होती देखी तो वह ड्रम से निकल और एक तरफ चला गया।"

"मगर वह गया कहां?"

"किसी होटल...गेस्ट हाउस या धर्मशाला में तो जा नहीं सकता था...क्योंकि जो हालत उसकी हो रही थी उस हालत में अगर वह ऐसी किसी जगह पर जाता तो उसका फौरन पता लग जाना था।"

"तो फिर...?"

"उसने जरूर किसी के घर में पनाह ली है हुजूर...। रिवाल्वर तो उसके पास था ही...। उसने जरूर रिवाल्वर के दम पर घरवालों को डरा धमकाकर उन्हें काबू में किया और उसी घर में डेरा डाल लिया।"

"ओह।"

"और जहां तक मेरी खोपड़ी कहती है...वह ऐसे किसी घर में घुसा है जहां एक या दो आदमी रहते हैं। यानि कोई अकेला आदमी...या मियां-बीवी, क्योंकि भरे-पूरे परिवार को वह अकेला इतने दिनों तक डरा धमकाकर नहीं रख सकता, जबकि एक या दो शख्सों को वह आसानी से काबू में किये रह सकता है।"

"तो अब तू यह कहना चाहता है कि मैं पूरे लखनपुर में पहले ऐसे घरों की तलाश करूं जिसमें एक या दो व्यक्ति रहते हैं।"

"पूरे लखनपुर को खंगालने की जरूरत नहीं...बस एक डेढ़ किलोमीटर के ऐरिये को खंगालिये...। जख्मी हालत में इतनी ज्यादा दूर हरगिज नहीं जा सकता और यकीन मानिये...वह इतने ही एरिये में आपको बरामद हो जायेगा।"

जगतार ने अपनी खोपड़ी का पृष्ठ भाग गुद्दी से लगाया और अपने पीछे खड़े शेरखान की तरफ देखा।

"तूने सुना शेरखान...?" वह बोला।

शेरखान ने सिर हिलाया।

"मुंह से भौंक...वहीं का सिर हिला रहा है।"

"य...यस चीफ! सुना...।" हड़बड़ाया शेरखान।

"डेढ़ किलोमीटर के ऐरिये में ऐसे घरों की लिस्ट बना जहां एक या दो व्यक्ति रहते हैं...।"

"यस चीफ...।"

"ध्यान रहे किसी को भी पता नहीं चलना चाहिए वर्ना पंछी उड़ जायेगा।"

"ल...लेकिन चीफ...ए...ऐसा कैसे होगा। जब हम पता करेंगे तो...।"

''अक्ल से काम ले बेवकूफ... ।'' मिर्जा बोल पड़ा।

शेरखान ने हड़बड़ाते हुए उसकी तरफ देखा।

''पांच आदमियों को जनगणना अधिकारी बनाकर डोर-टू-डोर भेज दे... । वे हाथों में रजिस्टर लिये हर घर में जायेंगे और घर के सदस्यों के नाम लिखकर अपने घर में चले जायेंगे। इस तरह किसी को भी शक नहीं होगा।''

''मैं समझ गया मिर्जा साहब।'' आंखें चमकाते हुए बोला शेरखान।

''शुक्र है समझा तो...वर्ना पता नहीं यह समझाने के लिए और क्या-क्या समझाना पड़ता।''

भुनभुनाया मिर्जा।

''अब जा...और ड्यूटी पर लगा दे पांच आदमी।''

''यस चीफ... ।'' शेरखान तत्परता से बोला और दरवाजे से बाहर निकल गया।

□□□

□□□

सुबह दस बजे जमशेद राय वापिस लौटा।

पीली कोठी का जो हाल उसने देखा था...उसे देखकर एक बारगी तो उसका अपना कलेजा कांप उठा था। ऐसा लग रहा था जैसे उस कोठी पर हवाई जहाजों द्वारा जबरदस्त बमबारी की गई हो।

मलबे का ढेर बन गई थी कोठी।

और उसके साथ वाली...चारमंजिला कोठी की हालत भी बेहद खराब हो गई थी।

वह मलबे का ढेर तो नहीं बनी थी, मगर खंडहर जरूर बन गई थी।

पीली कोठी पहुंचते ही जमशेद राय ने पहले मलबे को हटाना शुरू किया।

काफी मेहनत के बाद उसे कई स्टेनगनों के साथ इंसानी लाशें मिलीं...जिनमें से कई लाशों के तो चीथड़े उड़े हुए थे।

इतनी स्टेनगनों को देखकर जमशेद राय फौरन समझ गया कि वह कोठी अण्डरवर्ल्ड के किसी खलीफा की थी जिस पर कि उसके किसी दुश्मन ने हमला किया है।

खलीफा का नाम जेहन में गूंजते ही उसके जेहन में फौरन जगतार का नाम उभरा...और उसी के साथ ही गनेश का नाम उभरा।

मौजूद वक्त में सिर्फ उन दोनों की ही लड़ाई हो रही थी।

यानि यह कोठी जगतार की है...और गनेश ने उस पर हमला किया है।

"अगर कोठी जगतार के नाम रजिस्टर्ड है तो फिर मैं उसकी गर्दन को दबोचने में देर नहीं करूंगा।"

वह मन-ही-मन बड़बड़ाया।

सुबह आठ बजे तक वह वहां खाक छानता रहा...फिर थाने फोन करके कुछ सिपाहियों को वहां बुलवाया और उन्हें मलबा हटाने वालों पर तैनात कर थाने रवाना हो गया।

इस वक्त उसके जेहन में बलवीर का नाम गूंज रहा था।

जिस कदर शहर में खून-खराबा हो रहा था...उसे रोकने का बस एक ही रास्ता था कि जल्द-से-जल्द जगतार या धनेश को गिरफ्तार कर लिया जाये और इस वक्त जगतार ही उसके सामने था। बलवीर की जुबान खुलवाकर वह जगतार को काबू में कर सकता था।

अपने ऑफिस में आते ही उसने टेबल पर रखी घण्टी पर हाथ मारा।

'टन्न...!' की तेज आवाज हुई।

फौरन सिपाही केवल किशन ऑफिस में प्रविष्ट हुआ।

"सर...।" वह सीना तानते हुए बोला।

"बलवीर कहां है?"

"हवालात में है सर।"

"उसे टार्चर रूम में पहुंचाओ।"

"यस सर...।"

"और नंगा करके उल्टा लटका दो।"

"यस सर...।"

तत्परता से बोला केवल किशन और ऑफिस से निकलकर सीधे हवालात के सामने आ खड़ा हुआ।

उसने हवालात के दरवाजे का ताला खोला और बलवीर की तरफ बढ़ा जोकि हवालात की दीवार के साथ पीठ लगाये उकड़ू होकर बैठा था।

"खड़ा हो...!" गुर्राया केवल किशन और बूट की ठोकर जमा दी उसे।

बुरी तरह से बिलबिला उठा बलवीर और खड़ा हो गया।

केवल किशन ने अपना दायां हाथ जेब से निकाला जो कि उसने बलवीर को ठोकर मारते वक्त जेब में डाला था और उसका कालर पकड़ लिया।

तभी बुरी तरह से चिहुंक उठा बलवीर...।

उसे ऐसा लगा जैसे उसकी गुद्दी में किसी इंजेक्शन की सुई घुसी हो।

उसने गर्दन केवल किशन की तरफ मोड़ी।

मुस्कुराया केवल किशन और उसके कान के करीब अपना मुंह ले जाते हुए फुसफुसाया—

"जगतार ने तुम्हें छुड़ाने का पूरा बंदोबस्त कर लिया है।"

बलवीर ने चौंककर उसे देखा।

"ग्यारह साढ़े ग्यारह बजे तक तेरी रिहाई का आर्डर पहुंच जायेगा।"

बलवीर का चेहरा खिल उठा।

"उन्होंने कहा है कि तुमने किसी भी सूरत में मुंह नहीं खोलना। वर्ना विदा होने के बाद तुम्हारा क्या होगा... इसका अंदाजा तुम खुद लगा सकते हो।"

"बेफिक्र रहो... मेरी जुबान नहीं खुलेगी।"

बलवीर बोला।

"चल...।" ऊंचे स्वर में बोला केवल किशन और उसे धक्का दिया... साथ ही उसके कालर को बायें हाथ में पकड़ लिया और उसी के साथ ही उसका दायां हाथ उसकी जेब में चला गया।

जो काम उसने करना था, वह कर दिया था उसने।

जो जहर एक सुई के जरिये उसके जिस्म में इन्जैक्ट किया था... उसका असर पैंतालीस मिनट बाद शुरू हो जाना था। उससे पहले बलवीर की जुबान बंद होनी थी... फिर धीरे-धीरे उसका बदन अकड़ना शुरू हो जाना था।

और फिर उसके बाद मौत ने उसे दबोच लेना था।

केवल किशन उसे कालर से पकड़े धकेलते हुए टार्चर रूम में ले गया जिसमें कि पहले से एक सिपाही मौजूद था।

उस सिपाही की मदद से केवल किशन ने जबरदस्ती बलवीर को नंगा किया और फिर उसके पैरों को बांधकर छत से उलटा लटका दिया।

उधर जमशेद राय टार्चररूम में जाने के लिए उठा ही था कि तभी ए०एस०आई० नितीश ऑफिस में दाखिल हुआ।

"तुम कब आये?" उसे देख वापिस कुर्सी पर बैठते हुए पूछा जमशेद राय ने।

"छह बजे आ गया था...।" कुर्सी पर बैठते हुए बोला नितीश।

"क्या हुआ था...?"

"गोलीबारी... सात हत्यायें हुई है और सातों लाशों के पास स्टेनगनें मिली हैं।"

"कोई भी जिंदा नहीं मिला कोठी में...?"

"नहीं...।"

"मन्दिर के पुजारी से कहा कि वह कोठी किसी प्रताप राव

की है।"

"हां...मगर उन सातों में से प्रताप राव की लाश नहीं थी। मैंने एक पड़ोसी को लाशें दिखाई थी...वह प्रताप राव की सूरत से वाकिफ है...उसी ने बताया था कि उनमें प्रताप राव कोई नहीं।"

"तो फिर वे लाशें किसकी थी?"

"उनमें से दो को तो उस पड़ोसी ने पहचान लिया था। उन दोनों को वह अक्सर कोठी के गेट पर देखा करता था। गेट के पीछे बुथ में एक स्टेनगनधारी जख्मी मिला था, मगर उसे अस्पताल भेजने की नौबत ही नहीं आई। एम्बूलेंस आने से पहले ही वह मर गया।"

"क्या उसे भी गोली लगी थी?"

"नहीं...उसके सिर पर किसी भारी चीज का प्रहार हुआ था...ज्यादा खून निकल जाने की वजह से उसकी मौत हो गई थी।"

"ओह।" जमशेद राव के मुंह से निकला और वह सोचों में डूब गया।

"बलवीर मिला?" तभी नितीश ने पूछा।

"हां...टार्चर सैल में है। मैं वहीं जा रहा था।"

कहकर वह खड़ा हो गया।

"तुम प्रताप राव के बारे में पता लगाओ।" वह बोला—"मैं बलवीर को देखता हूं।"

सिर हिलाते हुए नितीश खड़ा हो गया।

जमशेद राय ऑफिस से निकलकर टार्चर सैल में पहुंचा और उलटे लटक रहे बलवीर के करीब आ खड़ा हुआ।

"पट्टा लाओ।" वह गुर्राया।

फौरन केवल किशन कोने की तरफ बढ़ा जहां पर कि अपराधियों के मुंह खुलवाने के ऐसे-ऐसे यंत्र पड़े थे कि अपराधी उन्हें देखकर ही दहल जाये।

उन्हीं में से केवल किशन ने पट्टा उठाया जिस पर कि बड़े ही उभरे अक्षरों में लिखा हुआ था 'आन मिलो सजना'।

वह वापिस जमशेद राय के पास आ खड़ा हुआ।

जमशेद राय ने उससे पट्टा लिया और झुक कर अपना चेहरा बलवीर के चेहरे के पास कर पट्टे को दोनों के चेहरों के बीच लटकाते हुए गुर्राया—

"जानता है क्या है यह?"

बलवीर ने जवाब देने के बजाये होंठों को सख्ती से भींच लिया।

"इसकी एक चोट मांस को नोच लेती है। जरा सोच...जब तेरा सारा मांस इसकी मार से नुच जायेगा तो क्या होगा और जब ऊपर से नमक डाला जायेगा तब क्या होगा।"

बलवीर ने जवाब नहीं दिया...बल्कि अपने होंठों को और भी

सख्ती से भींच लिया।

"अभी तो तू होंठ भींचे हुए है, मगर जब यह बरसना शुरू होगा तो होंठ अपने आप ही खुल जायेंगे...और हलक से चीखें उबलने लगेंगी।"

"मैंने किसी का खून नहीं किया।" बलवीर सख्ती से बोला।

जमशेद राय ने गहरी सांस छोड़ी और सीधा होते हुए बोला—"अब तो तेरा भगवान ही मालिक है।"

कहने के साथ ही उसने उसके जिस्म पर पट्टे बरसाने शुरू कर दिये।

टार्चर सैल में सड़ाक-सड़ाक की आवाजें गूंजने लगी और उसी के साथ ही बलवीर के होंठों से हृदयविदारक चीखें उबलने लगीं।

पट्टे की हर चोट के साथ उसके जिस्म पर सुर्ख चौड़ी लकीर खिंच जाती।

आखिर मार की अधिकता को बर्दाश्त न करते हुए बलवीर बेहोश हो गया।

उसकी चीखों को विराम लग गया।

"होश में लाओ इसे।" पट्टे को नीचे फेंकते हुए गुर्राया जमशेद राय और आस्तीन से पसीना पोंछने लगा।

केवल किशन फौरन बाहर निकला और शीघ्र ही वह वापिस लौटा तो उसने पानी से आधी भरी बाल्टी उठा रखी थी।

बलवीर के करीब आकर वह हाथों से उसके जिस्म पर पानी का छिड़काव कर उसे होश में लाने की कोशिश करने लगा।

शीघ्र ही बलवीर ने हड़बड़ाते हुए आंखें खोलीं साथ ही पीड़ा भरी कराहटें उसके होंठों से उबलने लगीं।

"कुर्सी लाओ।" जमशेद राय बोला।

केवल किशन फौरन एक कुर्सी ले आया।

जमशेद राय ने कुर्सी खिसकाकर बलवीर के चेहरे की तरफ की और उस पर बैठ गया।

अब उसका चेहरा ऐन उसके उल्टे लटक रहे चेहरे के सामने था।

जमशेद राय ने उसकी आंखों में झांका जिसमें कि जिस्म का सारा खून जमा हो रहा था...।

"किसके लिए करता है तू उल्टे धंधे?"

"मैं कोई गलत काम नहीं करता।"

"मैं यह नहीं कह रहा... मैं यह कह रहा हूं कि अपनी बीवी का पेट पालने के लिए ही तू धंधे करता है...। उसे खुश करने के लिए उसे सोने से तोलने के लिए ही तू काम करता है...तू क्या हर कोई यही करता है...। सिर्फ इसलिए कि उसकी बीवी खुश रहे और

हमेशा उसकी वफादार बनी रहे। वह जब भी अपनी पत्नी को इशारा भी करे तो उसकी पत्नी फटाक से कपड़े उतारकर टांगें चौड़ी कर लेट जाये, मगर जब आदमी को पता चलता है कि जिस पत्नी को खुश करने के लिये वह दिन-रात एक करता है...वह उसको बजाय किसी ओर को खुश करती है...तो सोच क्या बीतेगी उसके दिल पर।"

"म...मगर आप यह सब मुझे क्यों सुना रहे हैं।"

"इसलिए कि मैं बात तेरी पत्नी की कर रहा हूं। राजा नाम के एक लड़के के साथ अटकी हुई है।"

"क्या बकते हो...। खबरदार जो मेरी पत्नी के बारे में एक भी उल्टा-सीधा शब्द बोला तो...अरे तू...क्या जाने उसे...गंगा की तरह पवित्र है वो...घर से बाहर कदम नहीं रखती।"

"मगर अपने यार को घर जरूर बुला लेती है। पता है कल जब तू अपने घर पहुंचा था तो राजा तेरे घर में ही था, तेरे बेड पर...मैंने रोककर रखा था उसे, क्योंकि मैं तेरी अकेली पत्नी के घर में अपने साथ किसी और की मौजूदगी चाहता था। वर्ना मैं उसे भगा देता...और वह राजा मेरे आने से काफी पहले तेरी बीवी से इश्क लड़ा रहा था।"

"झूठ...कोरा झूठ बोल रहे हो तुम...।"

जवाब में जमशेद राय ने उसे सब कुछ साफ-साफ बता दिया...। और उसे विश्वास दिलाने के लिए कसम भी उठा ली।

सुनकर बलवीर की तो जान ही निकल गई।

"तेरा मुंह तो मैं यूं भी खुलवा सकता हूं...। मुंह खुलवाने के मेरे पास एक-से-एक नायाब तरीके हैं, मगर मुझे तेरे बॉस जगतार को जल्द-से-जल्द पकड़ना है...इसीलिए मैंने तुझे यह हकीकत बताई, ताकि तुझे पता चल सके कि जिस औरत के लिये तू गलत धंधा करता है...वही औरत तेरे प्रति कितनी वफादार है और जब औरत ही बेवफा है तो फिर यह काम करने की जरूरत ही क्या रह जाती है।"

बलवीर भीतर तक टूट गया। जमशेद राय की बातों ने उसके दिल के टुकड़े-टुकड़े कर दिये थे।

जीने की तमन्ना ही खत्म हो चुकी थी उसकी।

"मैं...सब कुछ बताने के लिए तैयार हूं...।" वह बोला।

सुनकर केवल किशन का कलेजा धड़क उठा। चेहरे की रंगत एकदम से पीली पड़ गई।

हालांकि जहर के असर करने का वक्त हो चुका था...मगर वह अभी भी बोल रहा था।

केवल किशन को खुद अपनी नौकरी खतरे में नजर आने लगी,

क्योंकि बलवीर को पता चल चुका था कि वह जगतार का गुलाम है...उधर उसने उसका नाम लिया नहीं...उधर उसकी नौकरी खत्म...ऊपर से जेल।

"उतारो इसे...।" तभी जमशेद राय का आदेश कानों में पड़ा।

केवल किशन किसी तरह खुद को सम्भाले बलवीर को उतारने लगा।

कुछ ही देर में वह बलवीर फर्श पर टांगे पसारें जमशेद राय के सामने बैठा था।

इधर केवल किशन उसके चेहरे को देख रहा था...अभी उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं उभरा था। जिससे कि पता चले कि जहर उस पर असर कर रहा है।

"मुंशी को बुलाओ...।" जमशेद राय ने केवल किशन को हुक्म दिया—"उसे कहो कि वह रजिस्टर पैन लेकर आये, ताकि इसका ब्यान दर्ज किया जा सके।"

"यस सर...।"

केवल किशन किसी तरह खुद पर काबू पाते हुए बोला और टार्चर रूम से बाहर निकल गया।

उसके बाहर जाने के उपरान्त जमशेद राय ने बलवीर के चेहरे पर निगाहें गड़ाई और बोला—

"बोलो...चांदनी को किसके कहने पर खत्म किया था तूने?"

बलवीर ने बोलने के लिये मुंह तो खोला...लेकिन आवाज उसके हलक से नहीं निकल पाई।

उसे ऐसा लगा जैसे किसी ने उसकी गर्दन दबोच ली हो।

"बोलो...।"

जवाब में बलवीर ने अपनी गर्दन पकड़ ली...साथ ही उसके चेहरे पर गहन पीड़ा के भाव उभरने लगे। वह बोलना चाहता था, मगर उसकी आवाज हलक से नहीं निकल रही थी।

जमशेद राय ने भी उसकी हालत को देखा, मगर वह यही समझा कि बलवीर बहाना बना रहा है। तभी तो उसका चेहरा सुर्ख हो उठा।

'तड़ाक...।' उसने एक झन्नाटेदार थप्पड़ उसके चेहरे पर रसीद किया।

बलवीर पीछे पलट गया।

थप्पड़ लगने से उसके होठों से न तो कराह निकली न ही वह चीखा।

"बहानेबाजी कर रहा है हरामजादे...।" गुर्राया जमशेद राय।

मगर बलवीर उठा नहीं, बल्कि फर्श पर पड़ा छटपटाने लगा।

अब उसकी जो हालत हो रही थी...उससे जमशेद राय फौरन समझ गया कि वह बहाना नहीं बना रहा, बल्कि उसकी हालत वाकई

में खराब हो रही है।

तुरंत कुर्सी से उतर कर वह उसके करीब आया और पंजों के बल फर्श पर बैठते हुए उसे झिंझोड़ा।

"क्या हुआ तुझे? बोल बलवीर...क्या हुआ तुझे?"

मगर जवाब में बलवीर की छटपटाहट और भी ज्यादा हो गई। उसी के साथ उसका जिस्म ऐंठने लगा।

जगदीश राय के चेहरे पर घबराहट उभर आई।

उसकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था कि बलवीर की यह हालत एकाएक कैसे हो गई।

अभी-अभी तो वह भला चंगा था फिर एकाएक ही क्या हो गया उसे।

कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था उसे।

और फिर देखते-ही-देखते वह लाश में तब्दील हो गया...उसकी छटपटाहट खत्म हो गई।

जमशेद राय को काटो तो खून नहीं।

पुलिस की हिरासत में एक आदमी ने दम तोड़ दिया था। ऊपर से उसके जिस्म पर मार के निशान थे जोकि यह साबित करेंगे कि बलवीर को मिली बेपनाह यातना ने ही उसकी जान ली है।

जाहिर था कि उससे जवाब तलबी होगी और कोई बड़ी बात नहीं कि वह कानून के शिकंजे में फंस जाये।

ठीक तभी पीछे से चौंकती आवाज आई—

"अरे...इसे क्या हुआ?"

जमशेद राय ने गर्दन पीछे मोड़ी।

मुन्शी के साथ केवल किशन खड़ा था।

दोनों अवाक से बलवीर की लाश को देख रहे थे।

यह अलग बात थी कि केवल किशन मन-ही-मन ठहाके लगा रहा था।

"पता नहीं क्या हुआ इसे...।" खड़ा होते हुए बोला जमशेद राय—"अभी-अभी भला चंगा था...फिर एक दम से तड़पने लगा और...?"

"क्या मर गया यह?" मुंशी ने पूछा।

"हां...!"

"य...यह तो मुसीबत हो गई।" केवल किशन बोला—"अब सरकार को क्या जवाब देंगे आप।"

"कुछ नहीं होगा। तुम लाश को चुपचाप किसी जगह पर फेंक आओ...और यह बात फैला दो कि बलवीर फरार हो गया है...ताकि अगर उसकी बीवी...।" उसने लाश की तरफ इशारा किया—"अगर शोर मचाये तो हमारा कुछ न बिगड़े।"

"य...यह आप क्या कह रहे हैं सर?" मुन्शी घबराहट से बोला—"आ... आप ऐसा कब से सोचने लगे? आप तो कानून के मुहाफिज हैं, अगर आप ही कानून तोड़ने लगे तो फिर अपराधियों को कौन पकड़ेगा?"

"तुम ठीक कह रहे हो मुन्शी...।" गम्भीरता से बोला जयचंद राय—"मुझे वही करना चाहिये जो तुमने कहा है, लेकिन ऐसा करके मैं जगतार को नहीं पकड़ पाऊंगा...अगर मैंने इसे थाने में हुई मौत घोषित कर दिया तो ऊपर बैठे अधिकारी मुझे नहीं छोड़ेंगे...कानून भी मुझसे जवाब मांगेगा...तब मैं खुद को बेकसूर साबित करने के लिये कानून और अधिकारियों में ही उलझा रहूंगा और जगतार तब तक खुद को पूरी तरह से हिफाजत के दरवाजे में बंद कर लेगा।"

"ओह।"

"इसीलिये मैंने इस लाश को ठिकाने लगाने का फैसला किया है।"

"आप ठीक कह रहे हैं सर। हालात के अनुसार इस वक्त लाश से छुटकारा पाना ही बेहतर है।"

मुंशी समझने वाले अंदाज में बोला।

"और खबरदार किसी को भी थाने में हुई मौत की भनक भी नहीं पड़नी चाहिये....।"

मुन्शी और केवल किशन ने सिर हिला दिया।

इस वक्त केवल किशन के भीतर खुशी के जो फव्वारे फूट रहे थे...वह वह ही जानता था।

□□□

□□□

सुबह साढ़े दस बजे सतीश शर्मा की नींद खुली।

बेड पर लेटे-लेटे ही उसने एक भरपूर अंगड़ाई ली और रजाई को एक तरफ करके बेड के नीचे उतर गया।

बाथरूम में जाकर वह फ्रेश हुआ और फिर किचन में अपने लिये खाना बनाने लगा।

खाना बनाकर खाने में उसे एक घण्टा लग गया।

खाना खाकर उसने बर्तन उठाकर एक तरफ रखे और फिर बेडरूम में आ गया।

अपने उतारे कपड़ों में से ही उसने दोनों रिवाल्वरें निकालीं तथा बम को एक तरफ रखकर रिवाल्वरों को चैक किया।

शिवदयाल की सर्विस रिवाल्वर पूरी भरी हुई थी...जबकि दूसरी रिवाल्वर में दो गोलियां बचीं हुई थीं।

उसने दोनों रिवाल्वरों का मेक देखा।

दोनों ही अड़तालीस कैलीबर की जर्मन मेड रिवाल्वरें थीं।

सतीश रावण ने दूसरी रिवाल्वर की दोनों गोलियां निकालकर जेब में रखी और फिर शिवदयाल की रिवाल्वर भी जेब में रख ली।

तत्पश्चात उसने एक बम कपड़ों में छुपाया और फिर ड्रेसिंग टेबल के सामने आकर अपना हुलिया चेंज करने में जुट गया।

दो बजे उसने अपने चेहरे को काफी हद तक बदल लिया था।

अब उसकी नाक पकौड़े की तरह फूली हुई थी... रंगत में हल्का-सा सांवलापन आ गया था। आंखों पर मोटे लैंस का चश्मा था। सारे बाल पीछे की तरफ किये थे।

इस हुलिये में वह केवल उसी की नजरों से ही पहचाना जा सकता था जोकि उसे अच्छी तरह से जानता हो और उसे भी पहचानने के लिए बहुत ज्यादा गौर करना पड़ेगा।

उसने आखिरी बार खुद को आइने में देखा... मुस्कुराया और कमरे से निकल गया।

कमरे से बाहर आकर उसने दरवाजा बंद करके उसे ताला लगाया... और फिर पीछे के रास्ते से निकलकर पिछले दरवाजे की तरफ से ताला लगाया और गली में से निकलकर मेन रोड पर आ गया।

कुछ ही देर में वह एक टैक्सी में बैठा नानक की कोठी की तरफ उड़ा जा रहा था।

करीब आधे घंटे के बाद वह नानक की कोठी से कुछ दूर टैक्सी से उतरा और भाड़ा चुकाकर टैक्सी को वहां से चलता किया।

अभी वह अगला कदम उठाने की सोच ही रहा था कि तभी एकाएक ही उसकी निगाह दाईं तरफ छूट गली में से निकल रही एक साइकिल पर पड़ी।

साइकिल पर उसने जो देखा... उसे देख उसकी आंखों में भेड़िये की तरह चमक जाग उठी।

साइकिल के हैंडल से लेकर गद्दी के अगले सिरे तक एक चौड़ा फट्टा था जिस पर कि अलग अलग साइज के चाकू टंगे थे। चाकू छुरियां बेचने वाला था वह।

तुरंत सतीश रावण उधर बढ़ा और साइकिल वाले को आवाज दी।

"रुकना भैया चाकू वाले।"

साइकिल सवार जो कि साइकिल पर चढ़ने जा रहा था... उसकी आवाज सुनकर रुक गया।

गर्दन सतीश रावण की तरफ मोड़कर वह उसके करीब आने की प्रतीक्षा करने लगा।

सतीश रावण उसके करीब पहुंचा और बोर्ड पर टंगे चाकू देखने लगा।

जो चीज उसे चाहिए थी वह बाईं तरफ टंगी हुई थी।

उसकी फेवरेट आरी। बेकरी में काम आने वाली आरी।

उसने आरी को निकालकर अंगूठा उसकी धार पर फिराया।

दांतेदार धार के दांते काफी नोकीले और तीखे थे। साथ ही वह आरी भी पहले वाली आरी से कुछ भारी थी।

उसने उसके ब्लेड की लचक चैक की फिर लकड़ी के मुट्ठे को हाथ में लेकर देखा।

पूरी तरह से आश्वस्त होने के पश्चात् उसने साइकिल वाले की तरफ देखा।

"कितने की है?"

"पचास रुपये बाबू जी... !"

सतीश रावण ने पचास रुपये का नोट निकालकर उसे चलता किया और आरी के दस्ते को पकड़कर उसे हवा में लहराया।

'सांय... !' की तीखी आवाज पैदा हुई।

सतीश रावण मुस्कुराया और आरी को अपनी पीठ पर पैंट की बैल्ट से फंसा दिया।

अब आरी निकालने के लिये उसे अपना हाथ बस कालर तक पहुंचाने की जरूरत थी।

वह वहां से हटा और नानक की कोठी की तरफ बढ़ा।

कोठी के बारे में जिस तरह भास्कर राव ने बताया था... उससे उसे कोठी को पहचानने में देर नहीं लगी।

वह एक दो मंजिला कोठी थी जिसके गेट पर एक व्यक्ति जेब में हाथ डाले खड़ा था।

निश्चय ही उसका हाथ जेब में रखी रिवाल्वर के दस्ते पर था।

सतीश रावण गार्ड के करीब से होते हुए आगे निकला और खुले गेट में ऐसे देखा जैसे उत्सुकतावश भीतर झांक रहा हो।

भास्कर राव ने गलत नहीं बताया था कोठी की भीतरी सुरक्षा के बारे में।

सिर्फ दो ही गार्ड नजर आये उसे जोकि जेबों में हाथ डाले लॉन में टहल रहे थे।

सतीश रावण आगे बढ़ता चला गया।

कुछ ही देर में वह कोठी की पिछली साइड में बाऊंड्री वाल के करीब खड़ा था।

भास्कर राव ने उसे बताया था कि पिछली तरफ कोई पहरा नहीं रहता।

फिर भी सावधानी से नाता नहीं तोड़ा उसने।

हल्का का जम्प लेकर उसने बाऊंड्री वाल का सिरा पकड़ा और ऊपर उठकर भीतर झांका... ।

किसी को भी न पाकर और ऊपर उठा और आहिस्ता से भीतर कूद गया।

दबे पांव वह पिछले कम्पाउंड की तरफ बढ़ा... और रिवाल्वर निकाल ली।

कम्पाउंड में आकर उसने एक बार इधर-उधर देखा... फिर दरवाजे पर हाथ रख उसे भीतर की तरफ धकेला।

दरवाजा थोड़ा-सा खुलकर ठहर गया।

सामने करीब बीस फीट लम्बी गली थी जोकि एक हॉल में खत्म हो रही थी।

दरवाजे को और ज्यादा खोलते हुए सतीश रावण भीतर प्रविष्ट हुआ और गली में आगे बढ़ने लगा।

हाथ में थमी रिवाल्वर को उसने इस तरह पकड़ रखा था कि मानो किसी भी वक्त उसे ट्रिगर दबाना पड़ सकता हो।

गली के अन्त में पहुंचकर वह दीवार से चिपका और गर्दन को आगे कर भीतर हॉल में झांका...।

अभी वह हॉल का मुआयना ही कर रहा था कि तभी एकाएक ही पीछे एक फुंफकार उभरी।

"हाथ ऊपर...!"

उसके साथ ही स्टेनगन की नाल उसकी पीठ से आ लगी।

सारी की सारी सावधानी धरी की धरी रह गई उसकी।

उसने गर्दन पीछे घुमाई...।

एक दो नहीं... बल्कि तीन व्यक्ति खड़े थे उसके पीछे जो पता नहीं कैसे अचानक उसके पीछे आ खड़े हुए थे।

तीनों के तीनों स्टेनगनों से लैस थे।

अपने जौहर दिखाने का मौका नहीं था सतीश रावण के पास... सो उसने भी शराफत से रिवाल्वर फेंकी और हाथ ऊपर कर दिये।

"तलाशी लो इसकी...!" एक गुर्राया।

तुरंत दूसरे ने आगे बढ़कर सतीश रावण की तलाशी ली और कुछ ही देर में बम तथा गोलियां उसके कब्जे में थीं।

"आगे बढ़...!"

कहने वाले ने स्टेनगन की नाल से उसे आगे धकेला।

सतीश रावण आगे बढ़ा और हॉल में आ गया।

तीनों उसे कवर किये हुए हॉल में बाईं तरफ वाले आखिरी कमरे में ले गये।

उसमें सोफों पर आमने-सामने नानक और प्रताप बैठे स्कॉच के जाम चढ़ा रहे थे।

नानक ने पैग होठों से हटाकर पहले सतीश रावण की तरफ

देखा, फिर उसके पीछे खड़े आदमियों की तरफ देखा।

"पीछे वाली दीवार फांद कर चोरी से अन्दर आ रहा था बॉस... ।" एक बोला।

"कुछ मिला इससे?" प्रताप ने खाली बैग टेबल पर रखते हुए पूछा।

"यस बॉस... बहुत कुछ मिला... ।"

"क्या... ?"

"रिवाल्वर दो गोलियां और हैंडग्रेनेड... ।"

बुरी तरह से उछल पड़ा प्रताप... ।

नानक भी चौंका... ।

"गने... श... ।" दोनों के होठों से एक साथ चौंकनी आवाज निकली।

दोनों झटके से खड़े हुए और सतीश रावण के सामने आ खड़े हुए।

दोनों हाथ सिर पर रखे हुए सतीश रावण दोनों को बारी-बारी से देखने लगा।

"तो तू है वो हरामी... ।" तभी प्रताप गुर्राया—"जिसने मेरी कोठी पर हमला करके मेरे लोगों को मार डाला।"

"य... यह आप क्या कह रहे हैं... मैंने किसी का खून नहीं किया।"

हड़बड़ाया-सा बोला सतीश रावण।

"बकवास करता है हरामखोर... ।" दहाड़ा प्रताप और एक जोरदार थप्पड़ सतीश रावण के मुंह पर रसीद किया।

सतीश रावण का पूरा वजूद सुलग उठा।

"अगर तू खूनी नहीं तो यहां क्या अपनी मां की दलाली लेने आया था। दो रिवाल्वर और बम लेकर... ।" नानक गुर्राया।

"तू चीफ को फोन कर नानक... उनसे बोल कि गनेश नाम के हरामी को हमने पकड़ लिया है... ।"

नानक पीछे हटा और टेबल पर रखने फोन की तरफ बढ़ा।

"मुझे खत्म करने आया था यहां?" प्रताप गुर्राया—"हमारे कुछ आदमी क्या मार लिये... खुद को शेर घोषित कर दिया।"

"ए... ऐसी बात नहीं है साहब... मैं यहां चोरी करने आया था।"

"बल्ले ओये बल्ले... बड़ा जिगरे वाला है तू तो जो दिन दहाड़े चोरी करने यहां घुस आया।"

सतीश रावण ने जोरों से थूक सटकी।

"भौंक हरामी कि तू गनेश है... ।"

"मैं गनेश नहीं हूं।"

'तड़ाक... !'

प्रताप का थप्पड़ पुनः उसके गाल पर पड़ा।

सतीश रावण थप्पड़ खाकर जानबूझकर पीछे को लड़खड़ाया।

पीछे खड़े स्टेनगन धारी ने स्टेनगन की नाल से उसे आगे धक्का दिया।

बस यहीं अनर्थ हो गया।

सतीश रावण को मौका मिल गया।

बिजली की सी गति से वह प्रताप की तरफ झपटा... और जब तक प्रताप कुछ समझता... !

सतीश रावण न केवल उसके पीछे पहुंच चुका था, बल्कि उसकी आरी निकलकर उसकी गर्दन से लग चुकी थी।

"खबरदार... !" वह दहाड़ा–"अगर किसी ने भी गलत कदम उठाया तो तुम्हारे बॉस की गर्दन धड़ से अलग हो जायेगी।"

तीनों स्टेनगनधारी बुरी तरह से बौखला उठे।

उसके पास और भी होगा... यह तो उन्होंने सोचा ही नहीं था।

"हथियार फेंक दो... !" सतीश रावण गुर्राया– "और तू भी फोन रखकर सामने आ जा।"

नानक जोकि इस बदली स्थिति से नम्बर डायल करना तक भूल गया था, ने हड़बड़ाकर रिसीवर नीचे रखा और तीनों स्टेनगन-धारियों के पास आ खड़ा हुआ।

"स्टेनगनें फेंको... !" गुर्राया सतीश रावण।

तीनों स्टेनगनधारी प्रताप की तरफ देखने लगे।

"फेंक दो-- हाथ ऊपर नीचे करते हुए घिघियाया प्रताप... ह... हथियार फेंक दो।"

तीनों ने स्टेनगनें एक तरफ फेंक दी।

"पीछे हटो... !" सतीश रावण का अगला आदेश।

नानक समेत सभी थोड़ा पीछे हटे।

सतीश रावण ने प्रताप की गर्दन से आरी हटाते हुए बायें हाथ से उसकी तलाशी ली।

रिवाल्वर निकली उसकी जेब से जिसे सतीश रावण ने अपनी जेब में डाल दिया।

और फिर... !

एकाएक ही जैसे प्रलय टूट पड़ी नानक और उसके साथियों पर तथा प्रताप एक तरफ गिरा नजर आ रहा था।

'खचाक्-खचाक... की खौफनाक आवाजें कमरे में गूंजने लगीं।

देखते-ही-देखते चारों बिना सिर के फर्श पर तड़पते नजर आ रहे थे।

सतीश रावण ने गर्दन प्रताप की तरफ मोड़ी जोकि स्टेनगन की तरफ झपट रहा था।

सतीश रावण गोली की तरह उस पर झपटा...।

स्टेनगन उठाकर जैसे ही प्रताप ने उसकी तरफ तानी... सतीश रावण की आरी चल गई।

'खचाक...!'

प्रताप की कलाई उसकी बांह से जुदा हो गई।

बुरी तरह से कराह प्रताप और स्टेनगन छोड़कर अपनी कटी कलाई पर हाथ रख खौफजदा आंखों से उसे देखने लगा जोकि साक्षात पिशाच नजर आ रहा था।

"घबरा नहीं... मारूंगा नहीं तुझे...।" सतीश रावण होंठों पर भयानक मुस्कान लाते हुए बोला...।

प्रताप ने जोरों से थूक सटकी। सतीश रावण के न मारने के आश्वासन के बाद भी उसका खौफ कम नहीं हुआ था।

सतीश रावण ने झुककर उसको बालों से पकड़कर खड़ा किया और सोफे पर ले जाकर बिठाया और स्वयं उसके बराबर बैठकर आरी उसकी गर्दन से लगा दी।

"अपनी कलाई पर नजर मार... देख कितना खून बह रहा है।"

प्रताप ने गर्दन झुकाई।

हालांकि उसने बायें हाथ से अपनी कलाई को दबा रखा था... फिर भी खून काफी तेजी से बह रहा था।

"अगर ऐसे ही खून बहता रहा तो डेढ़-दो घंटे में तेरा राम नाम सत्य हो जायेगा।" सतीश रावण बोला—"हां, अगर वक्त रहते डॉक्टर की सेवायें प्राप्त करके बचना चाहता है तो जल्दी से मुझे वो सबकुछ बता जो मैं जानना चाहता हूं...।"

"व... क्या...?"

"मेरी तेरे से कोई दुश्मनी नहीं प्रताप... मेरी दुश्मनी है तो सिर्फ जगतार से है। तू मुझे उसके बारे में सबकुछ बता... ताकि मैं उसकी उससे जिंदगी छीनकर उसे मौत दे सकूं। अब यह तेरे पर निर्भर करता है कि जल्दी बतायेगा या देर से...। जल्दी बतायेगा तो बच जायेगा और देर से बतायेगा तो ज्यादा खून बहने से लाश में बदल जायेगा और बताना तुझे हर हाल में पड़ेगा।"

"व... क्या जानना चाहते हो?" थर्राये स्वर में बोला प्रताप।

सतीश रावण आरी पर लगा खून उसी शर्ट से साफ करने लगा।

"जगतार की कोठी का तो मुझे पता है।" वह बोला—"मगर उसकी कोठी के भीतरी मार्गों का मुझे कुछ भी पता नहीं... न ही मुझे यह पता है कि उसने अपनी हिफाजत के लिये क्या बंदोबस्त

कर रखे हैं। तू उसका खास है... ऐसे मैं तू जानता होगा कि उसने कोठी में क्या-क्या बंदोबस्त कर रखे हैं। तू मुझे कोठी के भूगोल के बारे में बता... सारे सुरक्षा प्रबन्धों के बारे में बता और मुझे यहां से दफा करके खुद डॉक्टर के पास जा।"

जवाब में प्रताप ने जोरों से थूक सटकी।

"बोल... ।"

प्रताप ने पुनः थूक सटकी।

सतीश रावण ने आरी उसकी दूसरी कलाई पर रख दी और खौफनाक स्वर में बोला—

"अभी तो तू काफी हद तक अपना खून बहने से रोके हुए है... क्योंकि तूने इस हाथ से अपनी कलाई को दबा रखा है... लेकिन अगर यह कलाई भी कट गई तो फिर किससे रोकेगा खून को और यह तो तू देख चुका है कि काटते वक्त मैं जरा भी शर्म नहीं करता। चलाऊं आरी... ?"

"न... नहीं... मैं बताता हूं।" बुरी तरह कांप उठा प्रताप।

"शाबाश... जल्दी से बोल। पहले कोठी का पूरा भूगोल बता... फिर उसके बाद आगे बढ़ना।"

प्रताप ने जोरों से थूक सटकी और बताने लगा।

"ज... जिस कमरे में तुम्हें कैद किया गया था... वह पिछले बरामदे का सबसे आखिरी कमरा है।"

"मैं जानता हूं... दाईं तरफ एक ऊंची दीवार थी तथा वह बरामदा आगे जाकर बाईं तरफ मुड़कर लॉन में आ जाता है। उसी तरफ से तो मैं भागा था।"

"दरअसल वह दीवार किसी और कोठी की नहीं... । वह जगतार की ही कोठी का पार्टीशन है।"

"क्या मतलब?"

"जहां तुम कैद थे... वहां गार्ड रहते हैं... ।"

"गार्ड... ?"

"जगतार के सुरक्षा गार्ड... ।"

"जब गार्ड वहां रहते हैं तो जगतार के पास कौन रहता है?"

"गार्ड ही रहते हैं।"

"जरा ढंग से समझा... मेरी खोपड़ी में कुछ नहीं घुस रहा।"

"जिस तरह से कोठियों में नौकरों के रहने के लिए सर्वेंट क्वार्टर बने होते हैं... उसी तरह वहां गार्ड रहते हैं। दरअसल जगतार की कोठी में हर वक्त पच्चीस गार्ड मौजूद रहते हैं और वे आठ-आठ घंटों की शिफ्टों में काम करते हैं और हर शिफ्ट में आठ गार्ड होते हैं... । तीन शिफ्टों के चौबीस गार्ड और पच्चीसवां शेरखान।"

"यह कौन हुआ... ?"

"जगतार का सिक्योरिटी इंचार्ज...।"

सतीश रावण ने समझने वाले अंदाज में सिर हिलाया।

"जिस वक्त आठ गार्ड ड्यूटी पर होते हैं... बाकी के सोलह आराम कर रहे होते हैं, मगर एमरजैंसी में सभी की ड्यूटी लगा दी जाती है।"

"यानि एक वक्त में आठ ही गार्ड ड्यूटी पर रहते हैं।"

"उनकी ड्यूटी कोठी की हिफाजत की नहीं, बल्कि सिर्फ जगतार की हिफाजत की है। कोठी की ड्यूटी पर दस गार्ड अलग से होते हैं।"

"क्या वे भी शिफ्टों में काम करते हैं।"

"दो शिफ्टों में बारह-बारह घंटों की।"

"यानि दस आराम करते हैं... और दस ड्यूटी देते हैं।"

"अब पहले उस पार्टीशन की दीवार के बारे में बोल, फिर गार्डों की ड्यूटी कहां-कहां है...वो बोलना।"

प्रताप ने थूक सटकी और कहने लगा—

"जिस रास्ते से गुजरकर तुम लॉन में पहुंचे थे...एक रास्ता दीवार के परली तरफ जाने का वहां है। वहां लोहे का गेट लगा है...जिसकी डिजाइनिंग ऐसी है कि वह दीवार का ही एक हिस्सा नजर आता है।"

"तभी मुझे वह गेट नजर नहीं आया।"

"तुमने गौर नहीं किया होगा... गेट पर बाकायदा हैंडल लगा है...कुण्डा लगा है सांकल लगे हैं।"

"हो सकता है गौर न किया हो...तू आगे बोल।"

"उस गेट से सिर्फ वही लोग एंट्री करते हैं जोकि शहर के विख्यात व्यक्ति होते हैं...यानि किसी भी आम नागरिक के लिये वही गेट प्रयोग में लाया जाता है।"

"और काले आदमी के लिए कौनसा गेट है।"

"वह कमरा जिसमें तुम कैद थे।"

"क्या...?" चौंका सतीश रावण।

"उस कमरे की बाईं तरफ वाली दीवार में एक दरवाजा है जोकि सिर्फ मैकेनिज्म से खुलता है।"

"लेकिन मुझे तो कोई दरवाजा नजर नहीं आया था।"

"वह दरवाजा किसी को नजर आ ही नहीं सकता... चाहे उसे ठोंक बजाकर भी क्यों न देख लो।"

"ओह।"

"उस कमरे के बाहर उसे खोलने का मैकेनिज्म है। यानि अगर किसी को पता चल भी जाये कि कमरे में एक गुप्त दरवाजा है तो वह उसे भीतर से खोलने का तरीका ढूंढने में सिर टकराता रहे...बाहर का तो उसे ख्याल भी नहीं आयेगा।"

"मैकेनिज्म क्या है?"

"बाहर बाईं तरफ एक स्विच बोर्ड लगा है...उस बोर्ड को दीवार में फिट बॉक्स पर करने के लिए चार बोल्ट लगे हैं...उन्हीं चारों से बाईं तरफ वाला ऊपर का बोल्ट कर मैकेनिज्म है। उस बोल्ट को पकड़कर बाहर की तरफ खींचते ही भीतर का दरवाजा खुल जायेगा।"

"क्या सभी गार्ड उसी रास्ते से भीतर जाते है?"

"हां...।"

"आगे बोल...।"

"दरवाजा पार करते ही करीब दस फीट लम्बी एक तंग गली है उस गली में तीन-चार कैमरे फिट है।"

"तीन या चार...।"

"यह मुझे नहीं पता...पांच भी हो सकते हैं...और दो भी।"

"आगे...।" सिर हिलाते हुए बोला सतीश रावण।

"जैसे ही दरवाजा खुलता है एक कमरे में हल्का सा सायरन बज उठता है। उस कमरे में चौबीसों घंटे दो गार्ड मौजूद रहते हैं...और उनकी निगाहें हर वक्त टी०वी० पर टिकी रहती हैं। सायरन के बजने के साथ ही टी०वी० पर उस शख्स की सूरत उभर आती है जोकि दरवाजे में प्रवेश करता है। गार्ड टी०वी० पर उसे पहचानते हैं...फिर उसके बाद ही गली के दूसरी तरफ का दरवाजा खुलता है।"

"और अगर गार्ड उसे न पहचाने तो...यानि कोई नया रंगरूट भर्ती हुआ हो तो...?"

"तो उससे एक दो सवाल पूछे जाते हैं और उसे अपना कार्ड दाईं तरफ दीवार में एक बक्से में डालने को कहा जाता है।"

"और यह आदेश स्पीकर से जारी किया जाता है?"

"हां...।"

"यानि जगतार ने हर गार्ड का पहचान पत्र बनाया हुआ है।"

"सिर्फ उन्हीं का जो कोठी में हैं।"

"सवाल क्या पूछे जाते हैं?"

"उसका नाम पता...कोड नम्बर और फिर यह पूछा जाता है कि वह कब भर्ती हुआ था...उसके बाद ही उसे बक्से में कार्ड डालने को कहा जाता है।"

"अगर टी०वी० के सामने बैठे गार्ड उसके सवालों से संतुष्ट न हो तो?"

"तो एक गार्ड वही बैठे-बैठे उसे खत्म कर देता है।"

"कैसे...?"

"वह एक बटन दबाता है...बटन के दबते ही दोनों साइडों की दीवारों में से दांतेदार तलवारें निकलती है और सामने वाली दीवार से लग जाती है ऐसे में उस आदमी का पूरा जिस्म तलवारों से बिंध जाता है।"

"आगे बोल।"

सिर हिलाते हुए बोला सतीश रावण।

"उस तंग गली से निकलते ही जगतार का दरबार आ जाता है।" बोला प्रताप—"जहां पर कि वह अपने गुलामों को अपना हुक्म सुनाता है।"

"उसके दरबार के बारे में बोल।"

"मैंने वहां जो कुछ भी देखा है... उसके अनुसार वह एक ऊंची पुश्त वाली सिंहासननुमा कुर्सी पर बैठता है। उस कुर्सी में क्या-क्या जादू छुपा है...वो मैं नहीं जानता, मगर इतना जरूर है कि उस कुर्सी में काफी कुछ है।" बोला प्रताप—"कुर्सी के सामने दायें-बायें साधारण कुर्सियां हैं। जिन पर हम जैसे गुलाम बैठते हैं, अगर किसी को भी जगतार से बात करनी होती है तो वह पहले जगतार के सामने एक खास जगह पर आकर खड़ा होता है...फिर बात करता है।"

"वो खास जगह क्या है?"

"जगतार की कुर्सी के सामने करीब चार फीट दूर सूर्यमुखी का एक फूल बना है...।"

"फर्श पर...?"

"हां...उसी फूल पर खड़ा होकर ही उसका गुलाम बात करता है।"

"आगे पीछे क्यों नहीं?"

"उस फूल की बहुत ही जबरदस्त विशेषता है।"

"क्या...?"

"मान लो जगतार को फूल पर खड़े व्यक्ति की बातें पसंद नहीं आतीं या फिर उसका कोई दुश्मन उसका गुलाम बनकर उसे मारने के इरादे से वहां पहुंच जाता है...तब उसी फूल के जरिये ही जगतार उसे सजा देता है।"

"फूल के जरिये।" हैरानी से बोला सतीश रावण।

"हां...!"

"वो कैसे?"

"फूल के ऐन नीचे पूल बना हुआ है जिसमें कि तीन-चार मगरमच्छ हैं। जगतार कुर्सी पर बैठे हुए ही एक बटन दबाता है और फूल पूरा-का पूरा जमीन में धंस जाता है। उस पर खड़े व्यक्ति को जब तक सम्भलने का मौका मिलता है...वह तब तक मगरमच्छों के मुंह में पहुंच जाता है।"

"ओह।"

"ऐसा हादसा मेरी जिंदगी में सिर्फ दो बार मेरे सामने हुआ है इसीलिए मुझे उसका पता है...वर्ना अमूमन जगतार अपने गार्डों को आदेश देता है कि उसके सामने खड़े व्यक्ति को गोली से उड़ा दिया जाये।"

"यानि गार्ड वहां कांफ्रेंस रूम में भी मौजूद होते हैं।"

"हां...मगर जब वह कांफ्रेंस रूम से बाहर कोठी के किसी

दूसरे कमरे में होता है तो गार्ड कमरे में नहीं आते...बल्कि बाहर पहरा देते हैं।"

"ताकि कोई अन्दर न जा सके।"

"हां...!"

"क्या कोई भी गार्ड किसी भी समय उस तंग गली में से होकर जगतार को मिल सकता है?"

"नहीं...। जगतार जिससे मिलना चाहता है...उसे खुद आदेश देता है कि वह फलां वक्त उससे आकर मिले।"

"अब गार्डों के बारे में बोल...।" सतीश रावण आरी से अपनी खाल खुजाते हुए बोला।

"क...क्या?"

"यही कि आठों गार्ड किस वक्त कहां तैनात रहते हैं और कोठी में मौजूद बाकी के गार्ड कहां-कहां तैनात होते हैं।"

"आठों गार्ड तो हर वक्त उसके आस-पास ही रहते हैं। बस जब वह कोठी के किसी कमरे में होता है...तभी वे उसके पास नहीं होते।

"और बाकी के गार्ड...?"

प्रताप ने बताया...।

सतीश रावण ने कुछ क्षण सोचा फिर बोला—

"मान ले कोई उसके सारे गार्डों को मार डालता है...तो उस सूरत में जगतार अपना बचाव कैसे करेगा?"

"म...मैं कुछ समझा नहीं।"

"अपनी सारी ताकत खत्म हो जाने पर उसने अपने बचाव का कोई-न-कोई रास्ता तो रखा होगा। कोई ऐसा दरवाजा जिससे निकलकर वह सुरक्षित वहां से भाग सकता हो।"

"व...वो मुझे नहीं पता।"

सतीश रावण ने आंखें तरेरी...।

"मैं सच कहता हूं...मुझे ऐसा कोई रास्ता नहीं पता।"

"जगतार के परिवार के बारे में बोल...।"

"वह अकेला ही रहता है यहां...चार साल पहले उसकी पत्नी का स्वर्गवास हो गया था।"

"औलाद पैदा नहीं की उसने?"

"एक लड़का है...आस्ट्रेलिया में पढ़ता है।"

सतीश रावण ने पहलू बदला और आगे बोला—

"अब जरा आम रास्ते के बारे में बोल।"

"क...क्या?"

"कोई भी आम आदमी जब उससे मिलने जाता है तो क्या उससे पूछताछ होती है?"

"हां...गेट पर तैनात गार्ड उससे पूछताछ करता है।"

"क्या...?"

"यही कि वह कौन है और जगतार से क्यों मिलना चाहता है।"

"फिर...?"

"अगर उसे लगता है कि उसे जगतार से मिलना चाहिये तो वह उसे अंदर जाने देता है...नहीं तो कह देता है कि वह कोठी में नहीं है।"

"फिर...?"

"गली में से होता हुआ जब वह गेट तक पहुंचता है तो वहां एक गार्ड उसे मिलता है। वह भी उससे वैसी ही पूछताछ करता है...फिर वह गेट को खड़काता है। गेट के भीतर की तरफ एक अन्य गार्ड गेट को खोलता है और आने वाला भीतर प्रवेश कर जाता है।"

"फिर...?"

"वहां उसकी तलाशी होती है...और फिर एक अन्य गार्ड उसे एक कमरे में ले जाकर बिठा देता है...और थोड़ी देर बाद जगतार उस कमरे में आकर उससे मिलता है।"

"वह कमरा कहां होता है...?"

"कोठी के अंदर ही है वो कमरा।"

सतीश रावण ने उससे कुछेक सवाल और किये और फिर जब उसे यह लगा कि वह और कुछ नहीं बता सकता तो वह उसकी आंखों में झांकते हुए बोला—

"अब तू डॉक्टर के पास जायेगा...?"

जवाब नहीं दिया प्रताप ने बस थूक सटक कर रह गया।

"वैसे एक डॉक्टर है मेरी निगाह में...बहुत ही अच्छा और स्याना डॉक्टर है, अगर तू कहे तो मैं तुझे उसके पास भेज दूं...। बस यू समझ ले उसके पास जाते ही तेरे को पूरी तरह से आराम आ जायेगा।"

"क...कौन-सा डॉक्टर?"

सतीश रावण ने आरी का रुख छत की तरफ किया...।

"ऊपर वाला...!" वह कुटिलता से मुस्कुराया।

"न...हीं...।" कांप उठा प्रताप—"त...तुमने मुझे छोड़ देने का वादा किया है।"

"अगर सतीश रावण वादे पूरे करने लगा तो जी लिया वह।"

"स...स...ती...श रावण।" बुरी तरह से हड़बड़ा उठा प्रताप।

"हां...सतीश रावण और सतीश रावण के बारे में हर कोई जानता है कि वह नम्बर एक का हरामी है। वादा पूरा करना उसकी फितरत में नहीं, धोखा देना उसकी नेचर है...बस यू समझ ले...जिस दिन वह किसी को धोखा नहीं देता उस दिन उसे खाना हजम नहीं होता और जिस दिन वह किसी का खून नहीं बहाता...उसे कब्ज

हो जाती है...।"

"न...हीं...।"

"अब तू ही बोल...आदमी को अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखना चाहिए कि नहीं...'। वैसे मुझे कोई गलत काम करने का शौक नहीं...मगर क्या करूं मेरी सेहत बिगड़नी शुरू हो जाती है। अपने सेहत और स्वास्थ्य बरक़रार रखने के लिए ही मुझे यह काम करने पड़ते है।"

"न...हीं...प...प्लीज मुझे बख्श दो।" गिड़गिड़ाया प्रताप।

"बख्शूंगा तो हरगिज नहीं...हां ऊपर वाले से मेरी अच्छी खासी जान-पहचान हैं। धर्मराज जी मुझे बहुत अच्छी तरह से जानते हैं...तू उनसे मेरा नाम लेना...तुम्हें नरक या स्वर्ग में कोई बेहतर-सी नौकरी मिल जायेगी।"

कहने के साथ ही वह उठा और बिना कोई बात किये आरी चला दी।

'खचाक...।'

सतीश रावण ने दूसरी बार आरी चलाई।

प्रताप की गर्दन कट कर सोफे पर गिर पड़ी और उसका धड़ फर्श पर गिरकर छटपटाने लगा।

खून का फव्वारा बह निकला उसके कंधों के बीच से।

सतीश रावण ने आरी उसके कपड़ों से पोंछ कर साफ की और अपनी पीठ पर चिपका ली...फिर उसने अपनी रिवाल्वर उस आदमी की जेब से बरामद की जिसने कि उसकी तलाशी ली थी। साथ ही दोनों गोलियां भी निकालीं और बम भी।

सारा सामान अपने कपड़ों में गायब कर उसने फोन की तरफ रुख किया और कुछ ही क्षणों में वह जगतार का नम्बर मिला रहा था।

□□□
□□□

'ट्रिन...ट्रिन...।'

फोन की घन्टी घनघनाई।

जगतार ने रिसीवर उठाया...।

"हैलो...।" वह माऊथपीस में बोला।

"कैसा है रे जग्गू...?"

दूसरी तरफ से सतीश रावण की आवाज सुनकर जगतार का पूरा वजूद ही सुलग उठा।

"हरामजादे...तूने मुझे जग्गू कहा।" वह फुंफकारा।

"जरूर तू पहले जग्गू ही था। जगतार तो तू पैसा बटोरने के बाद बना। अब तेरी दौलत का एक हिस्सा तो सरकारी हो चुका है...बाकी की दौलत भी छीन लूंगा मैं तेरे से...और तू फिर से जगतार से जग्गू बन जायेगा...। ऐसे में तेरे कानों को अभी से जग्गू सुनने

की आदत डाल रहा हूं। इतना बड़ा पुण्य कर रहा हूं और तू बुरा मान रहा है। बुरा नहीं मानना चाहिए जग्गू...होनी को भला कौन टाल सकता है।"

"होनी को तो तू भी नहीं टाल सकता हराम के बीज...और होनी यह होगी कि बहुत जल्द तेरी लाश बिछी नजर आयेगी।"

"अच्छा।"

"मैंने तुझे पहचान लिया है सूअर की औलाद...तू गनेश नहीं सतीश रावण है।"

दूसरी तरफ सन्नाटा-छा गया।

"क्या हुआ...मां मर गई या तूने उसे उसके किसी यार के साथ देख लिया है?"

"उसे मरे हुए तो तीन-चार साल हो गये...।" दूसरी तरफ से गहरी सांस छोड़ने की आवाज आई—"और उसकी मौत से पहले मैं हर रोज उसे किसी नये यार के साथ देखा करता था। कई बार रात को जब लाइट बंद हो जाती थी तो मेरी मां के यार को कोई तकलीफ न हो...इसलिये मैं उनके करीब लालटेन लेकर खड़ा हो जाता था।"

"बड़ा हरामी है...अपनी मां को ही गालियां दिये जा रहा है।"

"हरामी हूँ न तभी दे रहा हूं...अगर पसंद नहीं आ रहा तो तेरी मां को देना शुरू कर देता हूं...कितने यार थे तेरी मां के...और तूने कितनी बार लालटेन पकड़ी?"

"हरामजादे...।"

जगतार इतनी जोरों से दहाड़ा कि उसके मुंह से थूक के छींटे निकलकर फोन के माऊथपीस पर जा गिरे...।

"वो तो मैं हूं ही...।" दूसरी तरफ से हंसी उभरी—"मैं तेरी मां की बात कर रहा हूं उसका जवाब दे।"

"खबरदार जो मेरी मां के बारे में एक शब्द भी गलत बोला।"

"मैं कभी गलत बोलता ही नहीं...तेरी मां के बारे में। मैंने जो कहा सच कहा...और यह बात मैं गीता, कुरान, बाइबिल पर हाथ रखकर कह सकता हूं।"

"बकवास बंद कर अपनी...।"

जगतार के मुंह से थूक की फुहार पुनः निकली।

"कर दी...।"

दूसरी तरफ से हंसी उभरी।

जगतार अपने उबल रहे खून को सामान्य करने के लिये गहरी-गहरी सांसें छोड़ने लगा।

"मेरा पता कैसे लगा...?" दूसरी तरफ से आवाज उभरी।

"तो तू मानता है कि तू सतीश रावण है?" जगतार विजयी अंदाज में बोला।

"अब जब तू कह रहा है...जोर डाल ही रहा है तो मानना

ही पड़ेगा।" दूसरी तरफ से गहरी सांस छोड़ी गई—"पता कैसे लगा...?"

"तेरी आरी से...। जिस टाटा सूमो से तूने मेरा सामान निकाला था और मौके पर गिरफ्तार हुआ था...वहीं से बाकी के सामान के साथ तेरी आरी भी मिली थी और अण्डरवर्ल्ड में आरी का इस्तेमाल बस तू ही करता है...।"

"यानि आरी मेरी पहचान बन गई है।"

"हां...।"

"तू ठीक कह रहा है...।" दूसरी तरफ से सतीश रावण की गम्भीर आवाज आई—"आरी के बिना मैं खुद ही खुद को अधूरा मानता हूं। तभी तो मैंने आज नई आरी खरीद ली है।"

"ओह।"

"और उसका मुहूर्त भी कर दिया है।"

"क...या मतलब...?" कलेजा धड़क उठा जगतार का—"क...या किया तूने?"

"मुहूर्त भी अच्छा हुआ है...तीन और एक चार और एक पांच...पांच गर्दनें कटी हैं मुहूर्त में।"

जगतार का कलेजा और भी जोरों से धड़क उठा।

"क...किसको मारा है तूने?"

"कोई प्रताप नाम का आदमी था...बेचारा बहुत शरीफ था।"

"प...प्रताप...त...तूने प्रताप को मार डाला।"

"उसके साथ एक नानक भी था...। प्रताप की तरह वह भी बड़ा ही भला आदमी था।"

"हरामजादे...।" दहाड़ उठा जगतार—"तूने मेरे दो आदमी मार डाले।"

"क्या फर्क पड़ता है तुझे...कल को नये भरती कर लेगा...फौज होती ही मरने के लिये है। यही कहा था न तूने...फिर अब क्यों तिलमिला रहा है।"

"कर ले मजाक हरामखोर...मगर इतना याद रखना...बहुत जल्द तू मेरे सामने एड़ियां रगड़ रहा होगा।" गुर्राया जगतार—"और वह जल्दी कल तक पूरी हो जायेगी।"

"अच्छा...।"

"जिस तरह से मैंने तेरी हकीकत जानी है...उसी तरह मैं यह भी जान लूंगा कि तू कौन-सी बिल में छुपा हुआ है। उसके बाद तेरी वो हालत करूंगा कि तेरी रूह कांप उठेगी।"

"मेरी रूह नहीं कांपने वाली...बहुत बड़ा शैतान हूं मैं...।" दूसरी तरफ से हंसी उभरी।

"यह तो उस वक्त पता चलेगा जब तू मेरे सामने होगा।"

"हां...उसका पता तो उस वक्त चलेगा...जब मैं तेरे सामने होऊंगा। फिलहाल तो तू प्रताप और नानक की मौत का मातम

मना...मैं तुझे चोट पहुंचाने की अगली तैयारी करता हूं।"

इसी के साथ ही दूसरी तरफ से सम्बंध विच्छेद हो गया।

जगतार कुछ देर तक तो फोन को घूरता रहा फिर पलंजर दबाकर मिर्जा का नम्बर मिलाने लगा।

सतीश रावण जिस तरह उसे चोट पर चोट दिये जा रहा था उससे उसका दिमाग फिर गया था। कुछ भी नहीं सूझ रहा था उसे कि वह क्या करे...क्या न करे।

ऐसे में मिर्जा ही उसका दिमाग बन सकता था।

"हैलो...।" तभी दूसरी तरफ से मिर्जा की आवाज आई।

"जगतार बोल रहा हूं...।" जगतार बोला।

"ओह हुजूर...खैरियत तो है?"

"क्या खाक खैरियत है।" चिल्लाया जगतार–"वह हरामी मुझे चोट पर चोट दिये जा रहा है...और मैं उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ पा रहा।"

"क्या हुआ?"

जगतार ने बताया।

"ओह...।"

"वह हरामी तो...।"

"आप तो जानते ही हैं हुजूर कि वह कैसा हरामी है। जिसके पीछे पड़ जाता है उसका बंटाधार करके ही दम लेता है।"

"तू मुझे डरा रहा है?"

"नहीं हुजूर भला मेरी ऐसी मजाल कहां...मैं तो यह कह रहा हूं कि जब तक उसका पता नहीं चलता...तब तक आपको ऐसे हादसों से दो चार होना ही पड़ेगा। शेरखान को आपने इस काम पर लगा रखा है...और मुझे यकीन है कि जल्दी ही उसका पता चल जायेगा।"

"मुझे जल्द-से-जल्द उसका पता चाहिये...वर्ना कहीं ऐसा न हो कि जब तक उसका पता चले तब तक मैं कंगाल हो चुका होऊं...।"

"फिलहाल तो आपको इंतजार ही करना पड़ेगा हुजूर और...।"

भुनभुनाते हुए जगतार ने रिसीवर क्रेडिल पर पटक दिया।

"हरामी...अपने आपको बड़ा दिमागदार बताता है...मगर एक हरामी को जल्दी नहीं ढूंढ सकता।"

बड़बड़ाया और झटके से खड़ा हो गया।

□□□

□□□

जगतार को फोन करके सतीश रावण ने एक नजर करीब पड़ी सिर कटी लाशों की तरफ देखा...मुस्कुराया...फिर कमरे से बाहर आ गया।

कुछ ही देर में वह लॉन पार करता हुआ उधर बढ़ रहा था जिधर से वह कोठी में दाखिल हुआ था।

वह जानता था कि कोठी में अभी कम-से-कम तीन गार्ड और हैं...। एक गेट पर और दो कम्पाउंड में। जिन्हें कि उसने गेट के सामने से निकलते वक्त देखा था।

इसीलिये उसने पीछे के रास्ते से ही निकलना बेहतर समझा था।

वह दीवार फांदकर बाहर निकला और सड़क पर आ गया।

कुछ ही देर में वह कोठी के गेट के सामने से निकल रहा था।

गेट पर खड़ा गार्ड पूरी मुस्तैदी से जेब में हाथ डाले खड़ा था।

सतीश रावण मुस्कुरा पड़ा...अब वह उसे कैसे बताता कि जिसकी हिफाजत के लिये वह वहां खड़ा था...वह तो कब का ऊपर पहुंच चुका है!

थोड़ा आगे चलकर उसने एक टैक्सी रोकी।

अभी वह उसका पिछला दरवाजा खोलने ही जा रहा था कि तभी उसे पुलिस की जीप अपनी तरफ बढ़ती नजर आई।

मन-ही-मन चौंका सतीश रावण कि पुलिस को उसका पता कैसे चल गया।

उसी के साथ ही वह फौरन टैक्सी में प्रवेश कर गया। साथ ही उसने जेब से रिवाल्वर निकाल ली थी।

मगर जीप उसकी टैक्सी के सामने नहीं रुकी...बल्कि उसके बराबर से निकल गई।

इधर टैक्सी के पहिये भी घूमने लगे।

सतीश रावण ने गर्दन पीछे मोड़ी...।

जीप ऐन नानक की कोठी के गेट के सामने रुकी थी।

राहत भरी गहरी सांस छोड़ी सतीश रावण ने और गर्दन सीधी कर ली।

बाल-बाल बचा था वह, अगर वह और थोड़ी देर वहां रहता तो पुलिस के हत्थे चढ़ सकता था और इस बार अगर वह पुलिस के हाथ लग जाता तो उसका बचना नामुमकिन हो जाना था।

उसने यह नहीं सोचा कि पुलिस वहां पहुंच कैसे गई।

उसके दिमाग में बस यही आया था कि अवश्य ही जगतार ने पुलिस को फोन किया होगा।

□□□

□□□

सतीश रावण ने जो सोचा था वह सही नहीं था।

जगतार ने पुलिस को फोन नहीं किया था...बल्कि ए०एस०आई० नितीश अपनी काबलियत के दम पर नानक की कोठी ढूंढने में कामयाब हुआ था।

जमशेद राय ने उसे प्रताप को ढूंढने का हुक्म दिया था।

थाने से वह सीधा प्रताप की कोठी पर पहुंचा...जहां पर कि चार जवान मुस्तैदी से खड़े थे।

वह दो जवानों को साथ ले कोठी में प्रविष्ट हुआ और लगा उसकी तलाशी लेने।

वह किसी ऐसी चीज को ढूंढ रहा था जिससे कि वह जान सके कि प्रताप कहां मिल सकता है।

करीब एक घंटे की कड़ी मेहनत के बाद उसे अपनी मन माफिक चीज मिली।

वह एक टेलीफोन डायरी थी जोकि स्टडी रूम की दराज में थी।

उसने डायरी के पन्ने उल्टे।

डायरी पर कई टेलीफोन नम्बर लिखे थे, मगर उनमें कुछ नम्बर ऐसे थे जोकि लाल पेन से लिखे हुए थे और उन नम्बरों के साथ उस फोन वाले के पते भी दर्ज थे।

नितीश ने लाल स्याही वाले नम्बरों की गिनती की।

कुल चार नम्बर थे वे।

नितीश को लगा कि वे नम्बर प्रताप के खास साथियों के होने चाहिये...। सो उसने चारों पतों पर ही प्रताप को ढूंढने का फैसला किया।

और फिर कोठी को सील करके वह सिपाहियों को साथ ले वहां से रवाना हो गया।

उसने सबसे पहला निशाना नानक को ही बनाया और सीधा नानक की कोठी पर जा पहुंचा।

पुलिस की जीप जैसे ही गेट के सामने रुकी...गेट पर खड़ा गार्ड बुरी तरह से हड़बड़ा उठा।

रंगत फीकी पड़ गई उसके चेहरे की।

नितीश जीप से उतरा और गार्ड के सामने खड़ा हुआ।

"हाथ बाहर निकाल जेब से...।" पुलिसिया अंदाज में बोला नितीश।

गार्ड ने हड़बड़ा कर जेब से हाथ बाहर निकाला।

"नानक कहां है?" नितीश ने पूछा।

"अ...अन्दर...। न...हीं वो कहीं बाहर गये हैं।"

"पकड़ो इसे...।" सख्ती से बोला नितीश।

तुरंत एक सिपाही ने उसे कालर से पकड़ लिया।

गार्ड और बुरी तरह से हड़बड़ाया।

"मैंने क्या किया है साहब...मुझे क्यों पकड़ा गया है?"

जवाब में नितीश ने उसे घूर कर देखा और अन्य सिपाहियों के साथ भीतर प्रवेश कर गया।

कम्पाउंड में खड़े अन्य दोनों गार्ड पुलिस को अपनी तरफ बढ़ते देख घबरा से गये।

"बॉस को खबर कर... ।" एक दूसरे से बोला—"कि पुलिस आई है।"

दूसरा फौरन दरवाजा खोलकर भीतर प्रवेश कर गया।

इधर नितीश सिपाहियों के साथ कम्पाउंड में खड़े गार्ड के सामने पहुंचा और गुर्राया—

"नानक कहां है?"

इससे पहले कि गार्ड जवाब देता...भीतर से दूसरे गार्ड की खौफ भरी चीख की आवाज आई।

गार्ड के साथ-साथ नितीश भी चौंका और एक सिपाही को उस गार्ड को काबू में करने का आदेश देते हुए बाकी के दोनों सिपाही के साथ भीतर लपका।

हॉल में आकर उसने दूसरे गार्ड को एक कमरे के बाहर खड़े चीखते देखा। उसकी रंगत पीली पड़ चुकी थी तथा पूरा जिस्म सूखे पत्ते की तरह कांप रहा था।

नितीश जैसे ही गार्ड के पास पहुंचा...और जैसे ही उसकी निगाहें भीतर पड़ी।

उसका कलेजा उछलकर हलक में आ फंसा।

भीतर का दृश्य ही इतना वीभत्स था कि देखने वाले के रोंगटे खड़े हो गये।

पूरा कमरा खून का समुद्र बना हुआ था और उसमें सिर कटी लाशें तैर रही थीं।

बड़ी मुश्किल से उसने अपने भीतर के खौफ पर काबू पाया और गर्दन मोड़कर सिपाहियों की तरफ देखा।

दोनों सिपाहियों की हालत बदतर हो रही थी उनके चेहरे पसीने से भीगें हुए थे तथा जिस्म बुरी तरह से कांप रहे थे।

"सम्भालो खुद को... !" नितीश गुर्राया।

दोनों सिपाही इस तरह हड़बड़ाये जैसे किसी ने उन पर पहाड़ फेंक दिया हो।

नितीश ने गार्ड की तरफ देखा।

वह अभी भी कांप रहा था। हां...उसकी चीखें जरूर बंद हो गई थीं।

"किसने मारा इन्हें... ?" पूछा नितीश ने।

गार्ड भला क्या जवाब देता...। उसे खुद नहीं पता था कि यह सब हो कैसे गया।

"नानक है इनमें... ?" नितीश ने अगला सवाल किया।

गार्ड की कांपती उंगली नानक की लाश की तरफ उठी जो कि दरवाजे से थोड़ा आगे गार्डों की लाशों के साथ पड़ी थी।

उसकी गर्दन आधी से ज्यादा कटी हुई थी।

"और प्रताप... ?" पूछा नितीश ने—"क्या उसकी भी लाश है यहां... ?"

गार्ड ने सोफे पर पड़ी प्रताप की कटी गर्दन की तरफ इशारा करते हुए जोरों से थूक सटकी।

नितीश के चेहरे पर निराशा फैल गई।

वह यह प्रताप का पता करने आया था... उसे प्रताप मिला तो जरूर था... मगर वह इस हालत में नहीं था कि वह उससे कोई पूछताछ कर पाता।

उसने एक सिपाही की तरफ गर्दन मोड़ी और बोला—

"थाने वायरलैस करो... जमशेद राय को यहां की स्थिति बताओ और फिंगर प्रिंट एक्सपर्ट... फोटोग्राफर तथा मुर्दागाड़ी को भेजने के लिये कह देना।"

सिपाही वहां से ऐसे छूटा जैसे वहां वह अगर थोड़ी देर भी और रहता तो उसका हार्ट फेल हो जाता।

❑❑❑

❑❑❑

खून के समुद्र और लाशों को देखकर एक बारगी तो जमशेद राय की भी घिग्गी बंध गई थी, मगर उसने जल्द ही खुद पर काबू पा लिया था।

नितीश से उसे लाशों के बारे में पता चल चुका था।

लाशों का पंचनामा तैयार करके उन्हें पोस्टमार्टम के लिये रवाना कर वह दलबल के साथ वापिस थाने में आ गया।

तीनों गार्डों को उसने गिरफ्तार कर लिया था जोकि इस वक्त हवालात में थे।

जमशेद राय ने अपने तथा नितीश के लिये चाय मंगवाई और घूंट भर कर टेबल पर रखते हुए बोला—

"यह गनेश तो बड़ा ही खतरनाक आदमी निकला। पहले तो जगतार के आदमियों को गोली से उड़ाया... अब गर्दनें काटने लगा... उफ... कितना खौंफनाक दृश्य था वह।"

उसने झुरझुरी ली।

"हां...।" घूंट भरते हुए बोला नितीश—"और जिस तरह के हालात चल रहे हैं... उससे तो यही लगता है कि जल्द ही गनेश जगतार की गर्दन साफ कर देगा।"

"हालात तो ऐसे ही बन रहे हैं... मगर हम उसे मरने से पहले ही गिरफ्तार कर लेंगे।"

"लगता है बलवीर से काफी कुछ हासिल हो गया है तुम्हें?"

"नहीं...।" निराशा भरी गहरी सांसें छोड़ी जमशेद राय ने।

"कुछ बताया नहीं उसने?"

"बताने जा रहा था... पता नहीं क्या हुआ उसे जो उसका बदन ऐंठने लगा और देखते-ही-देखते वह लाश में तब्दील हो गया।"

बुरी तरह से चौंका नितीश।

"व... वो मर गया?"

"हां।"

"यह तो तुम्हारे लिये मुसीबत खड़ी हो गई।"

"मैंने उस मुसीबत से छुटकारा पा लिया है... बलवीर की लाश को मैंने कहीं फेंकने के लिये भेज दिया है।" उसने सारी बात कह सुनाई।

नितीश ने गहरी सांस छोड़ते हुए खाली कप टेबल पर रखा और बोला—

"पर कैसे गया वह?"

"कुछ समझ नहीं आ रहा... अच्छा भला था... एकाएक ही पता नहीं क्या पीड़ पा गई उसे।"

"तुम्हारे साथ कौन था उस वक्त...?"

"जब वह मरा था... तब तो कोई नहीं था... केवल किशन मुंशी को बुलाने गया था ताकि बलवीर का बयान लिखा जा सके।"

"यानि केवल किशन हर वक्त तुम्हारे साथ था।"

"हां।"

"कहीं ऐसा तो नहीं कि यह काम उसी का हो।"

बुरी तरह से चौंका जमशेद राय।

"य... यह क्या कह रहे हो तुम...?"

"शिवदयाल जगतार का पिट्ठू था... और यह तो तुम भी जानते हो कि केवल किशन शिवदयाल का मुंह लगा था। ऐसे में क्या यह नहीं सोचा जा सकता कि उसी ने बलवीर का काम तमाम किया हो और यह काम करने के लिए उसे जगतार ने कहा हो।"

"लेकिन मेरे सामने तो उसे ऐसा कुछ नहीं किया जिससे कि उस पर संदेह किया जा सके।"

"मगर मेरा दिल कह रहा है कि हो-न-हो... यह काम उसी का किया धरा है।"

"अगर ऐसा है तो भी उससे कुछ भी नहीं पूछा जा सकता... जबकि कोई ठोस सबूत न हो... उस पर कैसे हाथ डाला जा सकता है।"

"तुम अभी-अभी कह रहे थे कि तुम गनेश के जगतार तक पहुंचने से पहले ही जगतार को काबू पा लोगे।"

"हां...।"

"कैसे...?"

"नानक के तीनों गार्डों से पूछताछ करके...।" बोला जमशेद राय—"जरूर वे भी जानते होंगे कि जगतार ही उसका बॉस है।"

"तो फिर एक काम करो...।"

"क्या...?"

नितीश उसे बताने लगा।

"वैरी गुड...।" जमशेद राय की आंखें चमक उठीं—"बहुत शानदार स्कीम बताई है तुमने केवल किशन पर हाथ डालने की।"

"अब गनेश के बारे में बात की जाये, क्योंकि वह तो जगतार से भी ज्यादा खतरनाक साबित हो रहा है।"

"तुम ठीक कह रहे हो।" गहरी सांस छोड़ी जमशेद राय ने—"इतने खून इन कुछ ही दिनों में हो चुके हैं... जितने पिछले तीन सालों में भी नहीं हुए।"

"और खून भी बेहद खौफनाक ढंग से हुए हैं। यह आखिरी खून तो उसने ऐसे किये है कि देखने वाले की रूह कांप उठे।"

तभी एकाएक ही जमशेद बुरी तरह से उछल पड़ा... आंखों में हैरत के भाव उभर आये... चेहरा ऐसे हो उठा जैसे उसकी रंगत फीकी पड़ गई हो।

"क्या हुआ...?" उसे चौंकते देख नितीश भी चौंका।

"स...तीश...।"

"क्या सतीश...?"

"सतीश रा...वण...।"

"सतीश रावण...?" नितीश पहले तो बड़बड़ाया... फिर बुरी तरह से चौंका—"त...तुम उस सतीश रावण की बात तो नहीं कर रहे जो पूरे अण्डरवर्ल्ड में बदनाम है।"

"हां...मैं उसी सतीश रावण की बात कर रहा हूं।"

"किस मनहूस का नाम ले दिया...।" बुरा मुंह बनाया नितीश ने—"वो भी उस वक्त जब हमारी बातें गनेश के बारे में हो रही है। भगवान करे किसी दुश्मन के शहर में भी वह प्रवेश न करे।"

"म...मगर वह हमारे शहर में जरूर आ पहुंचा है।"

"क...या...?"

नितीश इतने जोरों से चौंका कि कुर्सी से खड़ा हो गया।

"हां...।"

"य...यह तुम क्या कह रहे हो?" थर्राये स्वर में बोला वह।

"सतीश रावण के बारे में मैंने काफी कुछ पढ़ा है... उसे दुश्मनों की गर्दनें काटने का बड़ा शौक है और आज भी वही वाकया हुआ है...।"

नितीश के होश उड़ गये।

"ल...लेकिन नानक और प्रताप को तो गनेश ने मारा है।"

"वही गनेश सतीश रावण है।"

"त...तुम बड़ी खतरनाक बात कर रहे हो।"

"है तो खतरनाक मगर हकीकत है।"

"अगर उसे गर्दनें उतारने का शौक है तो पहले तो उसने किसी की गर्दन नहीं उतारी। सभी को गोली मारी थी।"

"क्योंकि पहले उसके पास वो हथियार नहीं था जिससे कि वह गर्दनें उतारता था।"

"क्या मतलब?"

जवाब में जमशेद राय ने टेबल की ड्रायर खींचकर उसमें से

फाइल निकाली और उसे टेबल पर खोला और तीन पन्ने पलटकर फाईल को उल्टा करके उसकी तरफ खिसकाते हुए बोला—

"यह वो लिस्ट है जिसमें वो सारा सामान दर्ज है जो कि गनेश की गिरफ्तारी के साथ मिला था। सामान में सोना है...हेरोइन है, चरस है... स्टेनगनें हैं...और वो चीज है जो इस सारे सामान से मेल नहीं खाती।"

"बेकरी में काम आने वाली आरी?" चौंकते हुए बोला नितीश।

"बिल्कुल...और दावे से कह सकता हूं कि यह आरी सतीश रावण की ही है।"

"ल...लेकिन... ।" नितीश ने गर्दन ऊपर उठाई—"सतीश रावण तो अकेला ही काम करता है।"

"गनेश भी कोई पांच सात नहीं हैं...वो भी अकेल ही जगतार की खटिया खड़ी कर रहा है।"

"अगर ऐसा है तो फिर थाने पर हमला किसने किया था।"

"जगतार ही बचता है बाकी...जरूर उसी ने हमला किया था और अपने ही सिपाहियों को मरवाने में शिवदयाल का पूरा हाथ था।"

"त...तुम बहुत खतरनाक बात कर रहे हो।"

"यह बात मैं नहीं कर रहा...बल्कि हालात ऐसी बात कर रहे हैं...गनेश ही सतीश रावण है।"

"हो सकता है तुम्हारी सोच गलत हो?"

"तो फिर समझ लो कि एक और सतीश रावण पैदा हो गया है।"

"भगवान करे वही सतीश रावण हो।" नितीश ने दुआ करने वाले अंदाज में हाथ फैलाये—"पहले ही एक सतीश रावण नाक में दम किये हुए है...अगर दूसरा हो गया तो फिर भगवान ही मालिक है।"

"मेरा दिल तो कहता है कि गनेश ही सतीश रावण है... ।" जमशेद राय टेबल पर मुक्का मारते हुए बोला।

"फिर क्या किया जाये?"

जमशेद राय ने अपने बालों में उंगलियां फेरीं और गहरी सोचों में डूबे हुए बोला—

"अगर गनेश ही सतीश रावण है तो उसका जल्द-से-जल्द पकड़ा जाना बेहतर होगा। जितनी देर वह आजाद रहेगा...समझ लो खून का दरिया बहता रहेगा। लाशें गिरती रहेंगी।"

"पकड़ा तो तभी जायेगा न उसका पता लगेगा।" हताश स्वर में बोला नितीश।

"सभी मुखबिरों को खबर कर दो कि शहर में किसी भी अंजान व्यक्ति को देख उसकी तहकीकात करे।"

नितीश ने सिर हिला दिया।

तभी केवल किशन ऑफिस में प्रविष्ट हुआ।

जमशेद राय तथा नितीश की निगाहें उसकी तरफ उठीं।
"लगा आये लाश को ठिकाने...?" पूछा जमशेद राय ने।
"यस सर... ।"
"कहां फेंका उसे?"
"गटर में...शहर से काफी दूर फेंका है उसे।"
"गुड... ।" मुस्कुराया जमशेद राय...साथ ही छुटकारे की लम्बी सांस छोड़ी।
"अब क्या करना है उनका...?" तभी नितीश जमशेद राय से बोला।
जमशेद राय फोरन उसका इशारा समझ गया सो वह बोला–
"ऊपर वाला एक दरवाजा बंद करता है तो तीन दरवाजे खोल देता है। बलवीर की मौत पर मैंने यही समझा कि अब मैं जगतार का गिरेबान नहीं पकड़ पाऊंगा, मगर देख लो...तीन-तीन गार्ड काबू में आ गये है मेरे...अब उनकी चमड़ी उधेड़ दूंगा...उनके हलक में बांह देके उगलवाऊंगा कि वे जगतार के कुत्ते हैं।"
"अगर नानक और प्रताप काबू आ जाते तो और भी बढ़िया बात थी।"
"उन्हें तो गनेश ने खत्म कर दिया था... । नानक की कोठी में उसने बाकी सभी को खत्म कर दिया...मगर वे तीनों किसी तरह से बच गये और हमारे हत्थे चढ़ गये।"
"फिर ले चलूं उन्हें टार्चर सैल में...?"
"खाना खालें...फिर चलते हैं।"
कहकर उसने केवल किशन की तरफ देखा।
"तुम थक गये होंगे...जाओ थोड़ा आराम कर लो।"
"यस सर... ।"
"और हवलदार रंगनाथ को भेज दो।"
"यस सर... ।"
कहकर केवल किशन सीधा हुआ और बाहर निकल गया।
कुछ ही पलों में हवलदार रंगनाथ ऑफिस में जमशेद राय के सामने खड़ा था।
"केवल किशन का पीछा करो... ।" तुरंत बोला जमशेद राय–"पता करो वह क्या करता है...कहां जाता है और जहां भी लगे कि वह जगतार से सम्बन्धित है...उसे बालों से पकड़कर घसीटते हुए यहां ले आओ... ।"
हवलदार ने सिर हिलाया और फौरन ऑफिस से बाहर निकल गया।

□□□
□□□

केवल किशन थाने से निकला और थाने से कुछ दूर एक एस०टी०डी० बूथ में प्रवेश कर गया।

पी०सी०ओ० ऑपरेटर ने एक सिपाही को अपने बूथ में प्रवेश करते देखा तो वह थोड़ा सहम-सा गया।

केवल किशन ने उसकी तरफ एक नजर देखा...फिर बाद में बने एक शीशे के छोटे से केबिन में घुस गया जोकि प्राइवेट बात करने वालों के लिये बना होता है।

उसने जगतार का नम्बर मिलाया और दूसरी तरफ से फोन उठाये जाने का इंतजार करने लगा।

"हैलो...!" दूसरी तरफ से आवाज आते ही वह चापलूसी भरे स्वर में बोला—"मैं केवल किशन बोल रहा हूं श्रीमान...काम हो गया है और मैंने लाश ठिकाने भी लगा दी है...जमशेद राय ने कहा था ऐसा करने को...बिल्कुल नहीं श्रीमान...एक और मुसीबत आ पड़ी है आप पर...नानक की कोठी पर जो कत्लेआम हुआ था उसमें तीन गार्ड बच गये थे...जमशेद राय उन्हें गिरफ्तार करके थाने ले आया है...अब वह उनकी जुबान खुलवायेगा...क्या कह रहे हैं आप भला तीनों को कैसे खत्म कर सकता हूं मैं...क्या एस०पी०साहब सम्भाल लेंगे...फिर क्या बात है मैं अभी थाने पहुंच जाता हूं और अपना काम कर डालता हूं...। बस आपका आशीर्वाद मिलता रहे...।"

उसने रिसीवर रखा और केबिन से बाहर आकर पी०सी०ओ० से बाहर आ गया।

ऑपरेटर को न तो उसने पैसा देने की जरूरत समझी...न ही उसने उसकी तरफ देखा। ऑपरेटर ने भी उससे कुछ नहीं मांगा। उसकी हिम्मत ही नहीं हुई थी कि वह उससे पैसा मांगता।

बूथ से बाहर निकलते ही उसकी नजर जैसे ही रंगनाथ पर पड़ी...उसका रंग पलभर के लिये उड़ा फिर सामान्य हो गया।

रंगनाथ मुस्कुराया और बोला—

"साहब ने फोन करने के लिये भेजा है।"

"क्यों? थाने का फोन खराब पड़ा है क्या?" बोला केवल किशन।

"खुद ही पूछ लो जाकर...अपने ऑफिसर से सवाल करने की मेरी तो हिम्मत नहीं पड़ी।"

केवल किशन हड़बड़ाया...फिर मुस्कुराया।

"कहां करना है फोन...?"

"क्यों...?" रंगनाथ ने उसे घूरा—"क्यों बताऊं?"

केवल किशन ने कंधे उचकाये और उसके बराबर से होता हुआ बाहर निकल गया।

रंगनाथ ने गर्दन मोड़कर उसकी तरफ देखा।

वापिस थाने जा रहा था वह।

रंगनाथ ने गर्दन सीधी की और बूथ में प्रवेश कर गया।

"एक और काल का नुकसान...।"

उसे देख मन-ही-मन बड़बड़ाया टेलीफोन आपरेटर...।
रंगनाथ उसके करीब आकर रुका और बोला—
"अभी-अभी जो नम्बर सिपाही ने मिलाया था वह रीडायल करो।"
ऑपरेटर ने रिसीवर उठाकर उसे दिया और कम्प्यूटर का रीडायल बटन दबा दिया।
शीघ्र ही दूसरी तरफ से आवाज आई...।
"हैलो...।"
'मुझे जगतार से बात करनी है।" बोला रंगनाथ।
"मैं जगतार ही बोल रहा हूं तुम...।"
आगे की बात नहीं सुनी रंगनाथ ने और रिसीवर रख दिया।
उसने जेब से दो का सिक्का निकाला और आपरेटर के सामने टेबल पर रखकर बाहर निकल गया।

❑❑❑
❑❑❑

"खैरियत तो है? बड़ी जल्दी लौट आये तुम...?"
रंगनाथ को ऑफिस में प्रवेश करते देख चौंका जमशेद राय।
नितीश भी अभी वहीं बैठा था।
तभी पीछे-पीछे केवल किशन भी ऑफिस में प्रविष्ट हुआ।
"आपने मुझे बुलाया सर?" वह बोला।
जमशेद राय चौंका—"मैंने कहां बुलाया तुम्हें।"
"मगर हवलदार साहब तो कह रहे थे कि आप बुला रहे हैं।"
जमशेद राय रंगनाथ की तरफ देखने लगा।
"जी हां सर...मैंने कहा था इससे...।" रंगनाथ बोला—"यह थाने से बाहर किसी को फोन करने गया था और फोन करके वापिस थाने आ गया और सीधा अपनी बैरक में जाकर लेट गया।"
सुनकर हड़बड़ा उठा केवल किशन...साथ ही उसका कलेजा धड़क उठा।
"किसे फोन करने गया था तू...?" जमशेद राय उसकी तरफ देखते हुए गुर्राया।
"म...मैंने अपने घर फोन किया था सर।"
"यह झूठ बोलता है...जगतार को फोन किया था इसने।"
"य...यह मुझ पर इल्जाम लगा रहे है सर...मैंने घर फोन किया था।"
रंगनाथ ने घूरकर उसे देखा और गुर्राया—"जिस नम्बर पर तूने बात की थी...उसी नम्बर को रीडायल किया था...और मेरी जगतार से बात भी हुई थी।"
कहने के साथ ही उसने केवल किशन का कालर पकड़ लिया।
सुनकर केवल किशन का चेहरा फक्क पड़ गया।
इधर जमशेद राय की आंखों में खून उतर आया...। चेहरा

तमतमा उठा।

झटके से वह उठा और उसके सामने आकर एक भरपूर थप्पड़ उसके गाल पर दे मारा।

'तड़ाक... !'

केवल किशन का गाल सुलग उठा। कान में सांय-सांय होने लगी।

"तो जगतार का कुत्ता है तू जो खाता सरकार से है...और दुम उसके सामने हिलाता है। बोल बलबीर को कैसे मारा तूने...?"

केवल किशन को काटो तो खून नहीं...।

अभी पहली कमाई भी उसके घर नहीं पहुंची थी कि वह पकड़ा गया।

भला इससे बड़ी बदकिस्मती और क्या हो सकती थी।

"बोल... !" जमशेद राय ने एक और थप्पड़ उसके गाल पर दे मारा।

केवल किशन के मुंह से बोल नहीं फूटा।

तभी नितीश उठा और उसके करीब आकर बोला—

"तुम्हारा भेद तो खुल ही चुका है केवल किशन और यह तुम भी जानते हो कि पुलिस की थर्ड डिग्री क्या होती है। कइयों को टार्चर किया है तूने। क्या यह अच्छा होगा कि तू खुद उस टार्चर के दौर से गुजरे।"

केवल किशन चुप उसकी जुबान पहले-की तरह बंद रही।

"कानून की वर्दी पहनकर तूने कानून की खिलाफत करके उसकी पीठ में छुरा घोंपा है। इसकी सजा तो तुम्हें मिलेगी ही, लेकिन अभी तुम्हारे सामने प्रायश्चित करने का मौका है। तुम अपनी वर्दी को लाज रख सकते हो...जानते हो शहर में किस कदर खून की नदियां बह रही हैं, अगर तुम कानून का साथ दो तो यह खून खराबा रुक सकता है।"

"म...मुझे माफ कर दीजिये सर... मैं... मैं भटक गया था।"

सहसा ही फफक उठा केवल किशन।

नितीश की बातों ने पता नहीं उस पर असर किया था या वह थर्ड डिग्री से बचने के लिए फफक उठा था।

जो भी था वह टूट गया था।

और फिर उसने जो कुछ भी किया...जो भी बातें जगतार से हुईं...वह सब बता दीं और जब उसने एस०पी० का नाम भी लिया तो दोनों बुरी तरह से उछल पड़े।

"ए०एस०पी० साहब भी जगतार के आदमी हैं?" जैसे विश्वास नहीं हुआ जमशेद राय को।

"ह...हां।"

"इसे हवालात में डालो।"

तेजी से बोला जमशेद राय और बाहर की तरफ कदम बढ़ा

❑❑❑
❑❑❑

कॉलबेल की आवाज सुनकर उस औरत ने दरवाजा खोला। सामने हाथों में रजिस्टर लिये दो आदमी खड़े थे।

औरत ने प्रश्न भरी निगाहों से उसे देखा।

"हम जनगणना विभाग से आये हैं।" एक बोला।

"लेकिन वो तो पिछले महीने आये थे...।" औरत बोली—"फिर दोबारा क्यों हो रही है जनगणना?"

यह बात दोनों कई दरवाजों से सुन चुके थे। तो वे जरा भी नही हड़बड़ाये।

"दरअसल इस एरिया के कागजात ठीक ढंग से नहीं हो पाई थी।" दूसरा बोला—"इसलिये हमें दोबारा गणना करने का आदेश मिला है।"

औरत ने चुपचाप सिर हिला दिया।

"घर के मुखिया का नाम?" पहले ने पेन सम्भालते हुए पूछा।

"निरंजन दास।" औरत बोली—"और मेरा नाम शकुंतला है।"

"पता...।"

औरत ने अपना पता बताया।

पहले ने पता नोट किया और फिर बोला—"आपके बच्चे कितने हैं?"

"तीन...दो लड़के एक लड़की।"

"बच्चों के नाम और उम्र...?"

"बड़ा लड़का अट्ठारह साल का है सोनू नाम है उसका...कॉलेज में पढ़ता है। उससे छोटी लड़की पल्लवी है...सोलह साल की और फिर चौदह साल का मोनू है।"

"और कोई...?" रजिस्टर पर तेजी से लिखते हुए बोला पहला।

"नहीं...।"

"यह साथ वाले मकान में ताला लगा हुआ है।" दूसरे ने पूछा।

शकुंतला ने गर्दन बाहर कर देवकी के मकान की तरफ देखा...फिर बोली—

"देवकी रहती है यहां...।"

"अकेली?"

"हां...तलाकशुदा है। नौकरी करती है...।"

"कहां...?"

"मुझे नहीं पता।"

"और कोई नहीं रहता इसके साथ?" पहले ने पूछा।

"नहीं...मगर एक लड़का इससे अक्सर मिलने आता जाता

रहता है हो सकता है उसी के साथ शादी करले देवकी।"

शकुंतला दिलचस्पी लेते हुए बोली।

मगर जब उन्होंने उससे और कुछ नहीं पूछा तो उसकी दिलचस्पी बुझ गई।

पहले ने रजिस्टर पर देवकी का नाम पता नोट किया और उस पर गोल दायरा लगाया और अगले मकान की तरफ बढ़ गया। दूसरा उसके पीछे-पीछे चलने लगा।

❑❑❑

❑❑❑

बुरी तरह से उछल पड़ा कमिश्नर।

"य... यह क्या कह रहे हो तुम...?"

"मैं ठीक कह रहा हूं सर! केवल किशन ने मुझे बताया है कि एस०पी० साहब जगतार के लिये काम करते हैं।"

जमशेद राय आदर भरे स्वर में बोला।

"नहीं... मैं नहीं मानता इस बात को...।"

"ल... लेकिन सर केवल किशन का बयान...।"

"हो सकता है वह जानबूझकर एस०पी० का नाम ले रहा हो। या जगतार ने उसे ऐसा कहने को कहा हो।"

"बट सर वो...।"

"क्या केवल किशन के ब्यान के अलावा और कोई वजह है तुम्हारे पास जिसके आधार पर तुम एस०पी० पर संदेह कर सको।"

"हां है सर...।"

"है...?" चौंका कमिश्नर।

"यस सर... है।"

"क्या वजह है?"

जमशेद राय ने पहलू बदला और बोला—"उस मीटिंग को बेहद गुप्त रखा था सर जिसमें आपने मुझे थाने का एस०एच०ओ० बनाया था। उसी मीटिंग में मैंने आपको बताया था कि किस तरह हम चांदनी के ब्यान को आधार बनाकर जगतार को गिरफ्तार कर सकते हैं, इस बावत मैंने चांदनी से बात भी की थी...और मुझे पूरा यकीन था कि चांदनी जगतार के खिलाफ ब्यान देने को तैयार हो जायेगी, मगर ऐसा हो नहीं सका इसे पहले कि चांदनी जगतार के खिलाफ ब्यान देती... उसकी हत्या कर दी गई और जिस शख्स ने हत्या की वह जगतार की कम्पनी में ट्रक चलाता था...। यानि चांदनी को पुलिस के पक्ष में करने के लिये किये जा रहे प्रयास का पता जगतार को लग चुका था... तभी तो उसकी हत्या हुई।

अब सोचने वाली बात यह है सर! कि जगतार को कैसे पता चला कि पुलिस उसके खिलाफ कदम उठाने के लिये चांदनी की सेवायें लेने जा रही है?"

कम्मिश्नर के चेहरे पर सोचें उभर आईं।

"तो तुम यह कहना चाहते हो कि चांदनी के बारे में एस०पी० ने जगतार को बताया था।

"यस सर।"

"यह भी तो हो सकता है कि केवल किशन ने उसे बताया हो। आखिर वह भी तो जगतार का ही आदमी है।"

"जगतार से उसका सीधा सम्पर्क बलवीर की हत्या से पहले हुआ था सर! न उससे पहले वह इंसपेक्टर साहब के द्वारा जगतार का काम करता था।"

"वह झूठ बोल रहा हो सकता है।"

"नहीं सर... वह सच कह रहा है।" दृढ़ता भरे स्वर में बोला जमशेद राय।

कमिश्नर के चेहरे पर फैली सोचों की लकीरें और भी गहरी हो गईं।

जमशेद राय बेचैनी से उसके बोलने की प्रतीक्षा करने लगा।

थोड़ी देर बाद कमिश्नर ने गहरी सांस छोड़ी और खामोशी को तोड़ा—

"तुम्हारी दलीलों में दम तो है जमशेद राय... मगर एस०पी० के खिलाफ सबूत नहीं... !"

"सर केवल किशन का ब्यान... !"

"उस ब्यान की एस०पी० धज्जियां उड़ाकर रख देगा। उसके खिलाफ कार्यवाही तभी की जा सकती है जब कोई ऐसा सबूत हाथ लगे जो इतना ठोस हो कि एस०पी० अपना पूरा जोर लगाकर भी उसे तोड़ न पाये।"

जमशेद राय के चेहरे पर निराशा फैल गई।

"मगर तुमने जो दलील दी है... उससे यह बात तो सामने आती है कि एस०पी० जगतार का आदमी है।"

जमशेद को कुछ राहत मिली। वह बोला—

"केवल किशन के ब्यान पर जगतार को गिरफ्तार तो नहीं किया जा सकता सर। क्योंकि वह एक सिपाही है... जिसके बारे में वह कह सकता है कि पुलिस ने केवल किशन को सिखा पढ़ाकर उसे जगतार के खिलाफ बुलवाया है. लेकिन उसके तीन गार्डों के आधार पर तो गिरफ्तार हो सकता है।"

"हां ..तुम एक काम करो... !"

"सर... !"

"यहां से सीधा विजेन्द्र पाल के पास जाओ और उसे तीनों गार्डों की गिरफ्तारी के बारे में बताओ और... !"

कमिश्नर उसे समझाने लगा फिर अंत में बोला—

"अगर वह जगतार का आदमी है तो फौरन आदेश देगा।"

"मैं समझ गया सर... !" चेहरे पर चमक नाच उठी और जमशेद राय के—"मैं ऐसा ही करूंगा।"

□□□
□□□

एस०पी० विजेन्द्र पाल के ऑफिस में प्रवेश कर जमशेद राय ने उसे एक जोरदार सैल्यूट मारा और तनकर खड़ा हो गया।

"बैठो... ?" अपनी कुर्सी पर बैठे विजेन्द्र पाल ने पेपर वेट से खिलवाड़ करते हुए कहा।

"थैंक्यू सर... ।" कहते हुए जमशेद राय आगे बढ़ा और एक कुर्सी पर बैठ गया।

"जगतार वाले केस में कहां तक पहुंचे... ?" पेपर वेट को एक तरफ रखते हुए पूछा विजेन्द्र पाल ने।

"चांदनी के जरिये उस तक पहुंचा जा सकता था सर... मगर उसकी हत्या हो गई।"

"हत्या... मगर मुझे तो पता लगा है कि वह महज एक एक्सीडेंट था।"

"उसे एक्सीडेंट क्रियेट किया गया था सर, जबकि हकीकत में वह हत्या थी और मैंने उसकी हत्या के जुर्म में बलवीर को गिरफ्तार भी कर लिया था।"

"बलवीर कौन... ?"

"जगतार की एक कम्पनी में ट्रक ड्राइवर था वह... हत्या उसी ने की थी।"

"ओह फिर? क्या उसने कुछ बताया?"

"नो सर... उससे पहले ही उसकी भी हत्या हो गई।"

"व्हाट... उसकी हत्या हो गई?"

यस सर... ।"

"थाने के अंदर हत्या हो गई?"

"यस सर... सिपाही केवल किशन ने उसकी हत्या कर दी थी।"

इस बार विजेन्द्र पाल को सचमुच का झटका लगा।

"कैसे की उसने हत्या... ?"

जमशेद राय ने बताया साथ ही नानक की कोठी से गिरफ्तार हुए तीनों गार्डों के बारे में बताया... फिर बोला—

"केवल किशन के ब्यान के आधार पर जगतार को गिरफ्तार किया जा सकता है सर! उसी के लिये मैं आपके सामने आया हूं।"

"और वे तीनों गार्ड... उन्होंने कुछ बताया... ?"

"अभी उनसे कुछ नहीं पूछा गया... । यूं भी केवल किशन का ब्यान ही काफी है उसे गिरफ्तार करने के लिये... ।"

"उन तीनों को छोड़ दो... ।"

बुरी तरह से चौंका जमशेद राय... ।

"य... यह आप क्या कह रहे हैं सर। वे नानक नाम के एक व्यक्ति की कोठी से गिरफ्तार हुए हैं... जिसमें कि नानक और प्रताप

समेत पाच हत्यायें हुई है।"

"और तुम कूदकर इस नतीजे पर पहुंच गये कि नानक जगतार का आदमी था और वे तीन व्यक्ति भी जगतार के हैं।"

"हालात तो इसी तरफ इशारा कर रहे हैं सर।"

"व्हाट नानसैंस... ।" बुरा मुंह ... विजेन्द्र पाल ने... वे तीनों उस कोठी में सिर्फ नौकर थे। उनका इस केस से कोई लेना देना नहीं और न ही नानक वगैरह जगतार के आदमी है।"

"य...यह आप क्या कह रहे है सर?"

"अगर ऐसा होता तो जगतार उन्हें बचाने के लिये कुछ करता नहीं... ।"

"बट सर... ।"

"उन तीनों को छोड़ दो।"

"बट सर... ।"

"दिस इज आर्डर... ।"

"यस सर... ।"

"और सिपाही केवल किशन को मेरे पास भेज दो...मैं खुद इन्टरोगेट करूंगा उसे।"

"यस सर... ।"

"नाऊ गो।"

लेकिन जमशेद राय अपने स्थान से उठा नहीं। वह पूर्ववत बैठा रहा।

"तुमने सुना नहीं मैंने क्या कहा?" वह गुर्राया—"तुम जा सकते हो।"

...ा।"

...से?"

...लेने के लिये सर।"

"आडर दिया तो है मैंने... ।"

"सॉरी सर...आर्डर रिटर्न में चाहिये मुझे... ।"

विजेन्द्र पाल का चेहरा सुर्ख हो उठा।

"क्या बकते हो।" वह गुर्राया—"आई एम यूअर आफीसर... ।"

"आई नो सर...मगर मामला गम्भीर है...पांच कत्ल हुए है उस कोठी में जहां से तीनों पकड़े गये हैं। ऐसे में आपका लिखित आदेश ही मानूंगा मैं।"

विजेन्द्र पाल ने जलते-भुनते उसे आदेश लिखकर दिया और गुस्से से बोला—

"गेट आऊट... ।"

"यस सर... ।" आर्डर पर निगाहें दौड़ाकर खड़ा होते हुए बोला जमशेद राय।

उसने उसे सैल्यूट किया और बाहर निकल गया।

❑❑❑

❑❑❑

थाने में आते ही जमशेद राय ने नितीश को बुलाया और उसे तीनों में से एक गार्ड को टार्चर सैल में पहुंचाने का हुक्म दिया।

नितीश ने वह आदेश आगे रंगनाथ को ट्रांसफर कर दिया और स्वयं जमशेद राय के पीछे-पीछे चलता उसके ऑफिस में आ गया।

"कहां गये थे?" कुर्सी पर बैठते हुए पूछा नितीश ने।

"कमिश्नर साहब के पास...।"

"एस०पी० की कम्पलेंट करने...?"

"हां...।"

"क्या कहा...?"

उत्तर में जमशेद राय ने उसे सारी बात बताई...फिर जेब से कागज का पुर्जा निकलाते हुए बोला—

"इसमें विजेन्द्र पाल का लिखित आदेश है।"

"ओह।"

"अब बस तीनों में से एक को तोड़ने की देर है...।"

"मगर उसने तो तीनों को छोड़ने का आदेश दिया है।"

"हां...और मैंने उससे यह कहा है कि अभी तीनों से पूछताछ नहीं हुई...।"

"मैं कुछ समझा नहीं...।"

उत्तर में उसने कमिश्नर की सारी प्लानिंग नितीश को बताई तो नितीश की आंखें फट पड़ीं।

"ओह।" उसके मुंह से बस इतना ही निकला।

"अब यही आदेश...।" जमशेद राय ने पुर्जा हवा में लहराया—"विजेन्द्र पाल के लिये मुसीबत खड़ी कर देगा और उसके जुबानी आदेश ने ही उसकी हकीकत सामने कर दी है कि वह जगतार का ही आदमी है।"

कहकर वह खड़ा हो गया।

कागज के पुर्जे को उसने जेब में डाल लिया था।

"कहां चले...?"

"टार्चर सैल में...आओ देखते हैं वह क्या कहता है।"

नितीश भी फौरन खड़ा हो गया।

❑❑❑

❑❑❑

टार्चर सैल में तीनों में से वो गार्ड खड़ा था जिसने कि सबसे पहले प्रताप और उसके साथियों की लाशों को देखा था।

जिस वक्त उसे पकड़ा गया था...उस वक्त उसके चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं, मगर अब वह दृढ़ता फैली हुई थी। साफ नजर आ रहा था कि वह मुंह नहीं खोलेगा। मरता मर जायेगा...मगर जगतार के खिलाफ कुछ नहीं बकेगा।

जमशेद राय और नितीश उसके करीब पहुंचे...।

"यह कमरा देख रहा है।" जमशेद ने कमरे में दायें से बायें बांह फिराई—"थाने का सबसे स्पेशल कमरा है यह जिसमें यहां आने वाले मेहमानों की खातिरदारी का हर सामान मौजूद है... जरा नजरें घुमाकर देख ले।"

गार्ड ने गर्दन घुमाकर टार्चर करने वाले साजो-सामान पर निगाहें दौड़ाई और फिर पुनः जमशेद राय की तरफ देखने लगा।

क्या मजाल जो इतना सामान देखकर उसका दिल जरा भी दहला हो।

"अगर तू चाहता है कि तेरी खातिर न हो तो जो कुछ भी मैं पूछूं उसका सही-सही जवाब देना होगा तुझे।"

गार्ड कुछ नहीं बोला...बस उसे देखता रहा।

"नाम क्या है तेरा...?" जमशेद राय ने पूछा।

"विष्णु प्रसाद...।" गार्ड ने अपना नाम बताया।

"नानक की कोठी में क्या करता है तू?"

"कुछ भी तो नहीं।"

जमशेद राय ने उसे खा जाने वाली निगाहों से देखा।

"लगता है तुझे खातिरदारी पसंद है।" वह फुफकारा।

"मैं सच कहता हूं... हम वहां काम नहीं करते। हम तीनों तो वहां खैराती से काम मांगने आये थे... मगर वहां... हमारे वहां पहुँचते ही आप लोग पहुंच गये और हमें खामखां गिरफ्तार कर लिया।"

"यानि तुम्हारा नानक से कोई सम्बंध नहीं था।"

"नहीं...।"

"और तुम बेरोजगार हो।" तभी काम मांगने गये थे।"

"हां...।"

"रिवाल्वरें साथ लेकर...वो भी अड़तीस के लीवर की।"

विष्णु प्रसाद कुछ नहीं बोला।

"यह ऐसे नहीं बोलेगा।" तभी नितीश गुर्राया—"कपड़े उतारो इसके।"

तुरंत रंगनाथ विष्णु प्रसाद की तरफ बढ़ा।

"ठहरो...।" तभी एकदम से बोला विष्णु प्रसाद।

रंगनाथ के कदम वहीं ठिठक गये।

उधर नितीश और जमशेद राय ने समझा कि वह खौफ से ही टूट गया है...तभी तो रोक रहा है।

मगर यह उनकी भूल साबित हुई।

"तुम क्यों तकलीफ देते हो... मैं खुद ही उतार देता हूं।" विष्णु प्रसाद बोला और एक-एक करके अपने सारे कपड़े उतार दिये।

अब वह सिर्फ अंडरवियर में उनके सामने खड़ा था।

"इसे भी उतारूं...?" अंडरवियर के इलास्टिक में उंगलियां फंसाते हुए बोला विष्णु प्रसाद।

"उतार...!" गुर्राया जमशेद राय—"इसे भी उतार कर फर्श पर लेट जा।"

विष्णु प्रसाद ने फौरन बिना किसी शर्म के अपना अंडरवियर भी उतारकर करीब पड़े कपड़ों के ढेर पर फेंका और फर्श पर लेट गया।

जिस ढंग से उसने कपड़े उतारे थे...और जिस ढंग से वह लेटा था उसी से जमशेद राय समझ गया कि वह लोहे के दिल वाला है और ऐसा करके वह उसे भीतर से नर्वस करने की भी कोशिश कर रहा है।

ऐसे में उसका गुस्सा सातवें आसमान पर पहुंचना ही था।

गुस्से में भरे हुए ही वह कोने की तरफ बढ़ा और वहां से एक लम्बा बेलन उठा लाया।

उसने बेलन को उसकी जांघों पर रखा और रंगनाथ से बोला—

"दूसरी तरफ से घुमाओ...!"

वह कहकर स्वयं एक तरफ से बेलन पर पैर रखकर उस पर पूरा जोर डालते हुए उसे घुमाने लगा।

दूसरी तरफ से रंगनाथ घुमा रहा था।

विष्णु प्रसाद ने सख्ती से अपने होंठों को भींच लिया।

मगर कुछ ही सैकिंड भींच पाया। वह अपने होंठों को उसके बाद उसकी चीखें उबलने लगीं।

उसे ऐसा लग रहा था जैसे उसकी टांगें कुचली जा रही हैं।

नसों के दबने से उसे अत्याधिक पीड़ा हो रही थी। सो जोर-जोर से चीखने लगा वह।

"क्या बात है?" वजन और ज्यादा बढ़ाते हुए गुर्राया जमशेद राय—"चीख क्यों रहा है। अभी तो शुरूआत है। अभी तो सारा दिन यह बेलन चलेगा तेरे पर।"

विष्णु प्रसाद चेहरे से जितना दृढ़ लग रहा था...उतना निकला नहीं वह।

जिस अंदाज में उसने कपड़े उतारे थे और फर्श पर लेटा था...उससे जमशेद राय इस नतीजे पर पहुंचा था कि इसे तोड़ने के लिये उसे...बहुत ज्यादा मेहनत करनी पड़ेगी।

मगर ऐसा हुआ नहीं।

विष्णु प्रसाद पांच मिनट भी पीड़ा बर्दाश्त नहीं कर पाया और टूट गया।

"बस...!" वह चीखते हुए बोला—"और बर्दाश्त नहीं होता...म...मैं सब कुछ बताने को तैयार हूं...आ...ह...!"

"सच-सच बतायेगा न...?"

"हां...सच बताऊंगा।"

जमशेद राय ने रंगनाथ को इशारा करते हुए अपना पैर बेलन पर से हटा दिया।

रंगनाथ ने झुककर उसकी जांघों पर से बेलन उठाया और उसका एक सिर जमीन पर टिकाकर दूसरे पर अपनी कोहनी रखकर खड़ा हो गया।

जमशेद राय ने झुक कर उसे बालों से पकड़कर ऊपर खींचा।

बाल खिंचने से पीड़ा से कराहता हुआ विष्णु प्रसाद ऊपर उठता गया और सीधा खड़ा हो गया।

"बोल...किस का कुत्ता है तू...?"

कहते हुए जैसे ही जमशेद राय ने उसके बालों को छोड़ा वह वहीं भरभरा कर गिर पड़ा।

टांगों ने उस का बोझ उठाने से मना कर दिया था।

जमशेद राय ने उसे पुनः बालों से पकड़ कर खड़ा किया और अपना प्रश्न दोहराया...।

"किसका कुत्ता है तू...?"

विष्णु प्रसाद की टांगें बुरी तरह से कांप रही थीं। साफ नजर आ रहा था कि बालों के छूटते ही वह फिर से गिर पड़ेगा। सो इस बार जमशेद राय ने उसके बालों को अपनी मुट्ठी में जकड़े रखा। छोड़ा नहीं उसे।

"न...नानक का...।" बोला विष्णु प्रसाद...।

"और नानक...? वो किसका कुत्ता है?"

"ज...जगतार का...।"

"सब कुछ बता...जो कुछ भी जानता है वो सब कुछ बता।"

"ज...जगतार हमारा चीफ है...और नानक बॉस...।" बताने लगा विष्णु प्रसाद—"जगतार के पास कुछ सात सिपहसलार हैं...जिनमें में दो प्रताप और नानक थे। हर सिपहसलार को अलग-अलग विभाग मिले हुए थे। हां...अगर जरूरत पड़ती थी तो वे एक-दूसरे से मिलकर काम करते थे। उन्हीं सातों के नीचे पूरा गैंग काम करता था। जगतार पर पहुंच उन सातों की है...या फिर उसके बाडीगार्डों की जो कि उसकी कोठी पर हैं...।"

"यानि इन सातों सिपहसलारों के नीचे काम करने वालों में से कोई भी जगतार से नहीं मिल सकता था।"

"न...नहीं। हमारी पहुंच सिर्फ हमारे बॉस तक ही सीमित है।"

"बलवीर एक मामूली ट्रंक ड्राइवर था। वह किसके नीचे काम करता था...?"

"मुझे नहीं मालूम...।"

"नानक की कोठी किसके नाम है?"

"मुझे नहीं पता।"

"जगतार के ऐसे ठिकानों के पता बता जो उसके नाक हो और जहां गैरकानूनी सामान भी हो।"

"मैं ऐसे तीन ठिकाने जानता हूं जो कि बाहर से आने वाले

सामान को रखने के काम आते हैं, मगर मुझे यह नहीं पता कि वे ठिकाने जगतार के नाम है या नहीं...।"

"बता...।"

विष्णु प्रसाद ने उसे तीन पते बताये।

"जगतार के बारे में और क्या जानता है?"

"कुछ नहीं...।"

"तेरे दोनों साथी...?"

"वे भी उतना ही जानते है जितना मैं जानता हूं।"

जमशेद राय ने उससे काफी कुछ पूछा, मगर उससे ज्यादा वह उससे कुछ नहीं जान पाया।

"हवालात में डाल दो इसे...।" उसने रंगनाथ को आदेश दिया और टार्चरसैल से बाहर निकल गया।

पीछे-पीछे नितीश भी निकल आया।

ऑफिस में आकर जमशेद राय अपनी कुर्सी पर बैठा और कमिश्नर का नम्बर डायल करने लगा।

"जयहिन्द सर...।" दूसरी तरफ से कमिश्नर की आवाज आते ही वह बोला—"मैं जमशेद राय बोल रहा हूं सर...एस०पी० साहब ने मुझे लिखित आदेश दिया है कि नानक की कोठी से पकड़े गये तीनों गार्डों को छोड़ दिया जाये, क्योंकि वे बेगुनाह हैं...जबकि उनमें से एक विष्णु प्रसाद ने न सिर्फ यह कबूल किया है कि वह जगतार का आदमी है...बल्कि उसने जगतार के तीन अड्डों के पते भी बताये हैं जहां पर कि गैरकानूनी सामान रखा है...। अब मेरे लिये क्या आदेश है सर...यस सर...मगर सर तीनों अड्डों पर एक साथ रेड डालने के लिये बहुत ज्यादा फोर्स चाहिये...यस सर...थैंक्यू सर...मैं इंतजार कर रहा हूं।"

उसने रिसीवर रखा और मुस्कुराते हुए नितीश की तरफ देखा।

"क्या कहा कमिश्नर साहब ने?" बोला नितीश।

"हैडक्वार्टर से फोर्स आ रही है। उन्होंने हुक्म दिया है कि तीनों अड्डों पर एक साथ रेड की जाये।"

"और विजेन्द्र पाल के बारे में क्या कहा है?"

"एक घण्टे के अंदर-अंदर उसे ट्रांसफर के आदेश मिल जायेंगे।"

"तो अब लंगोट कस लें?" मुस्कुराया नितीश...।

"हां...अगर हमने तीनों अड्डों पर फतह कर ली तो जगतार अवश्य ही बुरी तरह से बौखला उठेगा और उसी बौखलाहट में वह कोई ऐसा कदम जरूर उठायेगा जिससे कि कानून उसे फौरन दबोच लेगा।"

"इस सारी कार्यवाही में तुम सतीश रावण को भूल रहे हो।" नितीश गम्भीरता से बोला—"एक बार भी तुमने कहीं पर भी उसका जिक्र नहीं किया।"

"उसे भूला नहीं मैं...।" गम्भीरता से बोला जमशेद राय—"मुझे पता है कि एक ऐसा शैतान लखनपुर में घूम रहा है जिसके जेहन में हर वक्त यही दौड़ता रहता है कि वह कब खून करे। वह बेरहम शैतान जगतार से भी कहीं अधिक खूंखार और भयानक है। कानून हमें उसे जगतार से भी पहले गिरफ्तार करना है...मगर चूंकि, अभी हमें उसका कोई सुराग नहीं मिल रहा इसलिये हमें जगतार की तरफ रुख करना पड़ रहा है। यूं भी किसी पर हाथ डालने से पहले हमारा यह फर्ज बनता है कि लखनपुर में हो रहा खून-खराबा रोका जाये, अगर जगतार गिरफ्तार हो जाता है तो उसका गैंग अपने आप ही छिन्न-भिन्न हो जायेगा...और इसी के साथ ही खून-खराबा भी रुक जायेगा, क्योंकि तब सतीश रावण का कोई भी दुश्मन उसके सामने नहीं होगा।"

"तुम ठीक कह रहे हो...।" सिर हिलाया नितीश ने—"सतीश रावण का पता, पता नहीं कब चले...तब तक जगतार ही सही।"

"तो फिर तैयारी शुरू कर दो...सिपाहियों को तैयार करो...मैं चाहता हूं कि जैसे ही फोर्स आये हम जगतार के अड्डों की तरफ कूच कर दें।"

सिर हिलाते हुए नितीश खड़ा हो गया।

जमशेद राय भी तैयार होने के लिये खड़ा हो गया।

❑❑❑

❑❑❑

जिस वक्त जगतार के आदमी जनगणना अधिकारी बने देवकी के घर के आगे से गुजरे थे...उस वक्त सतीश रावण मकान के भीतर ही था। नानक की कोठी पर कत्ले-आम करके लौटे उसे अभी थोड़ी ही देर हुई थी और वह बेड पर अधलेटी अवस्था में बैठा आराम फरमा रहा था। इस वक्त उसके जेहन में सिर्फ जगतार ही नाच रहा था।

उसे किस तरह खत्म किया जाये...वह यही सोच रहा था।

प्रताप ने उसे जगतार के जो सुरक्षा प्रबंध बताये थे...वे पूरे नहीं थे। जितना वह जानता था...उतना ही बता सका। उसे यह नहीं मालूम था कि वह कमरा कहां है जिसमें कि टी०वी० के आगे दो आदमी बैठे होते थे कि गली में प्रवेश करने वाले से जवाब तलबी करते थे...फिर उसके लिये दरवाजा खोलते थे।

वह यह नहीं जा बता पाया था कि जगतार अपनी कोठी के किस भाग से कांफ्रेंस रूम में पहुंचता है। क्या वहां तक पहुंचने के लिये वह किसी मैकेनिज्म से युक्त दरवाजे का प्रयोग करता है या किसी सीधे-सादे साधारण से दरवाजे से वहां पहुंचता है। उसे यह भी नहीं पता था कि उसकी सिंहासननुमा कुर्सी की क्या-क्या विशेषतायें है। और वह यह भी नहीं जानता था कि फंस जाने की सूरत में उसने अपने भागने के लिये कौन-सा रास्ता बना रखा है।

पता नहीं बना भी रहता है या नहीं। जो भी... प्रताप से उसे पूरे सुरक्षा संबंधों का पता नहीं लग पाया जिससे कि वह कोई फूल प्रूफ स्कीम बनाकर उस पर हमला कर सकता।

सीधे रास्ते से वह जगतार के पास जा नहीं सकता था... क्योंकि लोहे के गेट से प्रवेश करते वक्त उसे तलाशी देनी पड़ेगी और जैसे ही उसकी जेब से रिवाल्वर वगैरह बरामद होंगे... उससे जवाब तलबी होगी। यूं वह यह नहीं जानता था कि किसकी सूरत बनाकर वह लोहे के गेट में प्रवेश कर सकता है।

ऊपर से जगतार को वह जिस तरह चोट पर चोट पहुंचा रहा है... उससे वह बेहद सतर्क हो उठा होगा... ऐसे में किसी भी अंजान व्यक्ति का उससे मिल पाना नामुमकिन था।

फिर क्या किया जाये?

यही सोच रहा था वह।

डेढ़ घण्टे तक वह यही सब कुछ सोचता रहा, मगर कोई भी ऐसी स्कीम उसके दिमाग में नहीं घुसी कि किस तरह जगतार को खत्म किया जाये।

काफी सोच विचार करने के बाद उसके जेहन में एक नया विचार उभरा।

क्यों न उसे बिल से बाहर निकाला जाये? वह मन-ही-मन बड़बड़ाया—"जब बिल तंग हो और भीतर न जाया जा सकता हो तो सांप को बाहर निकालने की कोशिश की जाये और जैसे ही वह बाहर निकले उसका फन कुचल दिया जाये।"

"मगर वह निकलेगा कैसे...?" नया प्रश्न उभरा उसके जेहन में।

"बिल के मुहाने पर आग लगा दो... सांप खुद-ब-खुद बाहर आ जायेगा।"

अपनी यह सोच उसे बेहतर लगी... और वह बिल के मुहाने पर कैसे आग लगाई जाये... उस पर विचार करने लगा।

मन-ही-मन उसने यह तय कर लिया था कि जगतार को खत्म करने के बाद वह जितनी जल्दी हो सका लखनपुर से निकल जायेगा, क्योंकि जितना खून उसने यहां बहाया था... उससे यहां की पुलिस अवश्य ही उसके पीछे हाथ धोकर पड़ चुकी होगी।

पचास करोड़ का माल था उसके पास जिसमें कि कैश-सोना और नशीले पदार्थ थे। इतने माल से वह बड़े आराम से किसी दूसरे शहर में अपना संगठन बना सकता था।

और फिर उसने रात को सांप को बाहर निकालने का फैसला कर दिया।

□□□

"तुम लोग चारों तरफ से घेर लिये गये हो। तुम्हारे बचकर

निकलने का कोई भी रास्ता नहीं। इसलिये तुम्हारी बेहतरी इसी में है कि हथियार फेंककर खुद को कानून के हवाले कर दो। मैं ए०एस०आई० जमशेद राय तुम्हें पांच मिनट का वक्त देता हूं...अगर तुमने पांच मिनट में खुद को कानून के हवाले नहीं किया तो मुझे जवानों को जबरदस्ती भीतर प्रवेश करने का हुक्म देना पड़ेगा।"

जिप्सी के आगे लगे माइक में से आवाज निकल रही थी।

उसके करीब ही हाथ में माइक लिये जमशेद राय ऊंचे स्वर में बोल रहा था। जैसे वह माईक में नहीं बोल रहा था, बल्कि चिल्लाकर चेतावनी दे रहा था।

जिप्सी उस एक मंजिला कोठी से करीब पचास गज की दूरी पर खड़ी थी।

जमशेद राय के करीब ही हाथ में राइफल लिये रंगनाथ खड़ा था...। राइफल का रुख कोठी के गेट की तरफ था।

इसी तरह अलग-अलग पोजीशनों पर तीस पुलिस कर्मी कोठी को चारों तरफ से घेरे हुए थे।

हैडक्वार्टर से आर्म्ड पुलिस की तीन गाड़ियां आई थीं। हर गाड़ी में तीस जवान थे। जिन्हें कमिश्नर की तरफ से यह आदेश मिला हुआ था कि उन्हें जमशेद राय की कप्तानी में काम करना है। जो हुक्म वह दे वह पूरा करना है।

जमशेद राय ने एक गाड़ी तथा थाने के चार सिपाही नितीश के हवाले किये और उसे जगतार के एक अड्डे की तरफ रवाना कर दिया।

दूसरे अड्डे पर उसने हवलदार बहादुर सिंह की अगुवानी मे एक गाड़ी और दस जवानों को भेजा और खुद अपने लिये एक गाड़ी के साथ सिर्फ हवलदार रंगनाथ को ही लिया था।

अपनी बात पूरी कर उसने माइक जिप्सी के डैश बोर्ड पर रखा और अपनी घड़ी पर निगाह डालकर होलस्टर से रिवाल्वर खींच ली।

"पोजीशन ले लो।" वह रंगनाथ से बोला।

रंगनाथ फौरन जिप्सी की परली साइड में चला गया जबकि जमशेद राय घुटने और पंजे के बल वहीं जिप्सी के दरवाजे के करीब बैठ गया।

अपनी जिंदगी में वह पहली बार किसी इतने बड़े मिशन पर निकला था। ऐसे में उसका दिल जोर-जोर से धड़क रहा था।

□□□

□□□

पुलिस की वार्निंग मिलते ही कोठी के भीतर खलबली मच गई।

पंद्रह आदमी मौजूद थे उस कोठी में... और सौलहवां उनका इंचार्ज रामरक्खा था।

पुलिस की वार्निंग उसने भी सुनी थी... ऐसे में वह बुरी तरह

से उछल पड़ा था।

जिस वक्त वार्निंग दी जा रही थी...वह कोठी के एक कमरे में बैठा स्काच के घूंट लगा रहा था।

पैग को बीच में ही छोड़कर वह फौरन उठा और कमरे से बाहर निकल कर दो-दो सीढ़ियां फांदता हुआ छत पर पहुंचा।

मुंडेर के करीब आकर वह झुका और उकड़ू होकर आगे बढ़ते हुए मुंडेर तक आ पहुंचा।

रात का धुंधलका छाने लगा था।

गर्दन को थोड़ा ऊपर उठाकर उसने बाहर झांका...।

थोड़ी दूरी पर पुलिस की जिप्सी खड़ी थी तथा उसके करीब हाथ में रिवाल्वर लिये उसे जमशेद राय खड़ा दिखा।

गर्दन को थोड़ा और ऊपर कर उसने दायें-बायें देखा।

पुलिस के साथ जवान उसे अलग-अलग स्थानों पर पोजीशन लिये नजर आये।

सभी के सभी हथियारबंद थे।

कलेजा धड़क उठा उसका...।

गर्दन को नीचे कर वह पीछे हटा और दाईं साइड की मुंडेर की तरफ बढ़ा...।

उसने वहां से बाहर झांका तो वहां भी उसे पुलिस के जवान पोजिशन लिये खड़े नजर आये।

बाकी की दोनों साइडों को भी चैक किया उसने।

चारों तरफ से घिरी हुई थी कोठी।

हड़बड़ाई अवस्था में वह नीचे आया और कमरे में आकर टेबल की तरफ लपका जहां पर कि फोन रखा हुआ था।

कुछ ही देर में वह जगतार को फोन कर रहा था।

❑❑❑

❑❑❑

'ट्रिन...ट्रिन...!'

फोन की घण्टी घनघनाई।

जगतार के हाथ में थमा पैग हलक में उतारा और उसे खाली कर टेबल पर रखकर रिसीवर उठा लिया।

"हैलो...!"

"म...मैं रामरक्खा बोल रहा हूं चीफ?"

रामरक्खा की घबराई आवाज सुनकर बुरी तरह से चौंका जगतार।

"क्या बात है?" वह बोला—"क्या हुआ? खैर तो है?"

"प...पुलिस...!"

"क्या पुलिस...?"

"हम चारों तरफ से पुलिस से घिर चुके हैं चीफ।"

"क्या बकता है?"

जोरों से दहाड़ा जगतार।

"पुलिस ने हमें पांच मिनट का वक्त दिया है जिसमें से चार मिनट पूरे हो चुके हैं...अगर हमने एक मिनट में खुद को सिरेण्डर नहीं किया तो पुलिस कोठी पर हमला कर देगी।"

जगतार की आंखों में खून जमा हो गया। पूरा वजूद सुलग उठा उसका।

"हरामखोर....।" कदाचित यह गाली उसने विजेन्द्र पाल को ही दी थी—"मेरा खाकर मेरे को ही आंखें दिखा रहा है।"

"य...यह आप क्या कह रहे है चीफ...मैंने ऐसी कौन-सी गुस्ताखी कर दी जो...।" दूसरी तरफ से हड़बड़ाई आवाज आई।

"तुझे नहीं कह रहा हूं...।" गुर्राया जगतार।

"ओह।"

"कितना माल पड़ा है अड्डे पर...?"

"स...साठ करोड़ का चीफ।"

"एक बात कान खोलकर सुन ले रामरक्खे...।" वह गुर्राया—"साठ करोड़ के माल में से अगर मेरा एक पैसे का भी नुकसान हुआ तो तेरी खैर नहीं...।"

"ल...लेकिन चीफ...।"

"एक भी पुलिसिया जिंदा नहीं बचना चाहिये। सभी को खत्म कर दो और सारा माल लेकर तीन नम्बर वाले गोदाम में पहुंचा दो।"

"य...यस चीफ।"

जगतार ने रिसीवर रखा और फिर उसे पुनः उठाकर विजेन्द्र पाल का नम्बर मिलाने लगा।

"हैलो...।" तभी एस०पी० के टेलीफोन ऑपरेटर की आवाज उसके कान में पड़ी—"एस०पी० ऑफिस...।"

"जगतार बोल रहा हूं...एस०पी० से बात कराओ मेरी।"

"सॉरी सर...।"

"क्या सॉरी...?"

"कप्तान साहब का तबादला हो गया है...। खड़े पैर उन्हें दिल्ली पहुंचने का हुक्म मिला है और वे उसी वक्त रवाना हो गये।"

जगतार का दिल किया कि अपने बाल नोचने लगे।

जबसे सतीश रावण इस शहर में आया है...उसका नुकसान पर नुकसान होता जा रहा है। उधर सतीश रावण उसके पीछे हाथ धोकर पड़ा था...इधर पुलिस उसकी ऐसी तैसी फेर रही थी।

पहले पचास करोड़ सतीश रावण लूट कर ले गया। उसके बेतहाशा आदमी मारे वो अलग और अब पुलिस उसका नुकसान करने पर तुली है।

अगर इसी तरह उसके दो-तीन अड्डे और लुट गये तो वह तो सड़क पर आयेगा...और भीख मांगने के लिये कटोरा भी किसी से उधार लेना पड़ेगा।

"नहीं...मैं ऐसा नहीं होने दूंगा...अब फौरन ही इस शहर को छोड़ देना ही मेरे लिये ठीक रहेगा।" वह बड़बड़ाया—"मिर्जा ने ठीक ही कहा था कि मुझे सतीश रावण से पंगा न लेकर छुप जाना चाहिये।"

उसने फोन करने के लिये जैसे ही रिसीवर की तरफ हाथ बढ़ाया।

'ट्रिन...ट्रिन...।'

फोन बज उठा।

जगतार का कलेजा जोरों से धड़क उठा।

"कहीं फिर कोई मनहूस खबर न हो।"

वह मन-ही-मन बड़बड़ाया।

रिसीवर तो उसे उठाना ही था...सो उठाया।

"हलो।"

"मैं तीन नम्बर गोदाम से बोल रहा हूं चीफ...।"

दूसरी तरफ से घबराई आवाज सुनकर जगतार के पसीने छूटने लगे।

"बोल...।" वह थूक सटकते हुए बोला।

"पु...पुलिस ने गोदाम को चारों तरफ से घेर लिया है।"

"मुकाबला करो...मुझे एक पैसे का भी नुकसान नहीं होना चाहिये...भून डालो सभी को खत्म कर दो।"

वह दहाड़ा और रिसीवर रख दिया।

और पांच मिनट बाद ही तीसरा फोन आ गया...।

वहां से मिली खबर भी मनहूस थी। पुलिस ने उसके एक और अड्डे पर हमला बोल दिया था।

जगतार का दिल किया कि वह अपनी छाती पीटने लगे।

एक-एक सीढ़ी करके वह इस स्थान पर पहुंच पाया था...मगर एक ही झटके में पुलिस ने उसे शीर्ष से नीचे गिरा दिया।

जितना पुलिस ने उसे नीचे गिराया...उतना ही सतीश रावण ने उसकी ऐसी तैसी फेरी।

उसे ऐसा लग रहा था कि अगर ऐसे ही एक-दो फोन और आ गये तो वह अवश्य ही पागल हो जायेगा।

अपने तीनों अड्डों पर उसने पुलिस से मुकाबला करने का आदेश तो दे दिया था, मगर जिस तरह उसके सितारे गर्दिश में चल रहे थे...उससे उसे यही लग रहा था कि उसकी कंगाली का वक्त आ गया है।

ठीक तभी शेरखान भीतर प्रविष्ट हुआ। उसने हाथ में एक रजिस्टर उठा रखा था।

जगतार ने उसे देखा तो उसका दिल न चाहते हुए भी जोरों से धड़क उठा। उसे लगा कि वह भी कोई ऐसी खबर सुनाने आया है जो उसके दिल को चीर देगी।

"बोल... ।" उसकी आवाज भर्रा गई—"तू भी बोल क्या खबर लाया है।"

शेरखान हैरानी से उसे देखने लगा। अबसे पहले उसने जगतार को कभी भी इस कदर हताश नहीं देखा था।

"क्या बात है चीफ? आप आज हटी हुई बातें क्यों कर रहे हैं?" वह बोला—"पहले तो आपने कभी भी ऐसी बातें नहीं की थी।"

"वो हरामजादा सतीश रावण एक शनि की तरह मुझ पर आकर ऐसा चढ़ा है कि उतरने का नाम ही नहीं ले रहा हर तरफ से मुझे अपनी बर्बादी की ही खबरें मिल रही हैं... । ऐसे में मैं अपनी छाती न पीटूं तो क्या करूं।"

"हुआ क्या है?"

उत्तर में जगतार ने बताया।

"ओह।"

"मैंने फैसला कर लिया है कि मैं फौरन से पहले इस शहर को छोड़ रहा हूं।"

"य...यह आप क्या कह रहे है चीफ।"

"तो और क्या करूं...। सब कुछ तो खत्म हो ही चुका है मेरा। अब अगर गिरफ्तार हो गया तो बची खुची इज्जत भी खत्म हो जायेगी...इसलिये मैंने फैसला किया है कि जो कुछ भी बचा है...उसे समेटकर यहां से निकल जाऊं... ।"

"और सतीश रावण... ।"

"भाड़ में गया वो हरामजादा...नाम भी न ले...मनहूस का मेरे सामने साले का नाम ही ऐसा है कि मुंह से निकलते ही अपशकुन हो जाता है।"

"मगर चीफ...आपने जो आदेश दिया था... ।"

"कोई जरूरत नहीं अब उसकी... ।"

"लेकिन रिपोर्ट तो आ चुकी है... ।" तेजी से बोला शेरखान—"सिर्फ डेढ़ सौ घर ही ऐसे हैं जिसमें एक या दो प्राणी ही रहते हैं। मैं तो आपका आदेश लेने आया हूं कि उन घरों को छान सकूं... ।"

जगतार की आंखें सिकुड़ गई।

"ठीक है... ।" कुछ देर बाद वह बोला—"कर ले ट्राई...अगर वह हरामी मिल जाये तो मैं यही समझ लूंगा कि शनि उतर गया मुझ पर से।"

"आपको तीन घंटे के अंदर-अंदर पता चल जायेगा चीफ... ।"

कहकर उसने सिर झुकाया और बाहर निकल गया।

उसके बाहर जाते ही जगतार सोफे से उठा और आगे बढ़कर दरवाजा बंद कर दिया।

सिटकनी चढ़ाकर वह वापिस टेबल के करीब आया... खड़े-खड़े

ही अपने लिये पैग बनाया और उसे एक ही सांस में खाली कर टेबल पर रखा और कोने में बनी मिनी बार की तरफ बढ़ गया।

यह बार सिर्फ उसी के लिये थी जिसमें कि अलग-अलग किस्म की विलायती दारू की बोतलें पड़ी थीं।

उस बार से किसी को ऐक बूंद भी पीने का अधिकार नहीं था।

वह बार के करीब आकर रुका और वहां करीने से सजी बोतलें को देखने लगा जोकि सीढ़ियों के आकार की शेल्फों पर सजी थीं। हर बोतल के लिये खांचा बना हुआ था जिसमें कि बोतल दो इंच तक भीतर धंसी हुई नजर आ रही थी।

देखने वाला उन्हें देख सिर्फ यही सोच सकता था कि वे खांचों में इसलिए फिर है कि कहीं गिर न पड़ें...।

यानि बोतलों को न गिरने देने के लिये ही खांचे बने हुए थे।

मगर ऐसा नहीं था...हकीकत कुछ और थी।

वे खांचे अपने आप में ऐसा रहस्य समेटे हुए थे जो सिर्फ जगतार ही जानता था।

❑❑❑
❑❑❑

पांच मिनट पूरे हो ही जमशेद राय थोड़ा-सा ऊपर उठा...डेश बोर्ड पर पड़ा माइक उठाया और उसका स्विच ऑन कर बोला—

"पांच मिनट खत्म हो चुके हैं...मैं तुम्हें लास्ट वार्निंग दे रहा हूं...अपने आपको कानून के हवाले कर दो...मैं एक आखरी मौका देता हूं तुम्हें। तीन तक गिनूंगा मैं...अगर तब भी कोई बाहर नहीं आया तो मुझे जबरदस्ती फोर्स का इस्तेमाल करना पड़ेगा। एक...।"

उसने गिनती शुरू कर दी।

भीतर से कोई भी बाहर नहीं निकला...जिस तरह से वहां सन्नाटा छाया हुआ था उससे ऐसा लगता था मानो वहां कोई रहता ही न हो।

"दो...।" अपनी चौकन्नी निगाहों से वह इधर-उधर देखते हुए माइक में बोला।

ठीक तभी छत की मुंडेर पर एक नाल उभरी...साथ ही एक सिर थोड़ा-सा ऊपर उठा।

"ती...।"

अभी जमशेद राय ने तीन पूरा भी नहीं किया था कि उस नाल ने अंगारे बरसाने शुरू कर दिये।

'तड़...तड़...तड़...तड़...।'

एक साथ कई गोलियां जिप्सी की तरफ लपकी और देखते ही देखते जिप्सी की विंड स्क्रीन चूर-चूर हो गई।

जमशेद राय फौरन अपने स्थान पर बैठ गया।

अगर वह फौरन फुर्ती का इस्तेमाल नहीं करता तो निश्चय

ही उसका सिर अब तक चीथड़ों में तब्दील हो चुका होता।

"फायर...।" बैठे ही वह जोरों से दहाड़ा।

उसी के साथ फायरिंग शुरू हो गई।

गुण्डे कोठी की छत पर चढ़कर पुलिस पर फायरिंग कर रहे थे और वे मुंडेरों की ओट में भी थे...।

जबकि जवाब उनसे कहीं कम सुरक्षित थे।

मगर फिर भी वे मुकाबला कर रहे थे। सख्त ट्रेनिंग की वजह से वे अपना बचाव बखूबी कर रहे थे।

'तड़...तड़...तड़...तड़...रेट...रेट...रेट...।' की आवाजों से पूरा इलाका कांपने लगा।

तभी एक सिपाही के जिस्म में अनेको गोलियां एक साथ आ लगी और वह बुरी तरह से चीखता हुआ छटपटाने लगा। अपने साथी को मरते देख बाकी जवानों के खून खोल उठे और वे गुण्डों पर बेतहाशा फायरिंग करने लगे।

गुण्डे बेशक मुंडेर के पीछे छुपे थे... मगर निशाना लेने के लिए उन्हें अपने गर्दन ऊपर उठानी पड़ती थी।

और जैसे ही कोई गर्दन ऊपर उठती थी बेतहाशा गोलियां उसमें जा धंसती थी।

नतीजा...गुण्डे सुरक्षित होकर भी असुरक्षित हो गये थे।

उनकी संख्या में तेजी से कमी आने लगी।

एक बौखलाहट-सी भर गई उनमें...।

उनकी उसी बौखलाहट का फायदा जवानों ने उठाया और वे दो-दो करके कोठी की बाऊंड्री वाल को फांदकर भीतर घुसने लगे।

इधर जमशेद राय ने भी तीन गुण्डों को मार गिराया था और उसने जवानों को कोठी में प्रवेश करते भी देख लिया था। सो उसने रिवाल्वर लोड की और रेंगते हुए जिप्सी की साइड से निकला और बाऊंड्री वॉल की तरफ बढ़ा।

ठीक तभी एक सिर मुंडर के पीछे से उठा।

'धांय...।'

जमशेद राय की रिवाल्वर गर्ज उठी और वह सिर पीछे को पलट गया।

जमशेद राय तेजी से बाऊंड्री वाल की तरफ भागा और दीवार के करीब आकर एक पल के लिये रुका...ऊपर देखा फिर रिवाल्वर को दांतों में दबा कर छलांग मारकर दीवार पर चढ़ा और भीतर कूद गया।

जिस वक्त वह भीतर कूदा उस वक्त दो जवान राइफलें ताने भीतर प्रवेश कर रहे थे।

जमशेद राय उनके पीछे-पीछे प्रवेश कर गया।

तभी वह हॉल में पहुंचा ही था कि उसने पांच जवानों को सीढ़ियों से उतरते देखा।

"कोई नहीं बचा सर।" एक जमशेद राय के पास आकर बोला—"ऊपर मौजूद सभी गुण्डें खत्म हो गये है।"

"गुड...कोठी पर कब्जा कर लो जो भी हरामजादा नजर आये उसे फौरन पकड़ लो।"

"यस सर...।"

और फिर बाहर मौजूद जवान भी भीतर आ गये।

कोठी पर पुलिस का कब्जा हो गया।

तलाशी के दौरान जमशेद राय को भारी मात्रा में गैरकानूनी सामान मिला।

निश्चय ही एक बहुत बड़ी सफलता हासिल की थी जमशेद राय ने। भला इससे बड़ी खुशी और क्या हो सकती थी उसके लिये।

मगर इस खुशी के साथ उसे एक अफसोस भी हो रहा था और वह अफसोस यह था कि एक भी गुण्डा जिंदा नहीं बचा था।

अगर उसे कोई जीवित मिल जाता तो वह उससे यह अवश्य ही जान लेता कि वह कोठी किसके नाम है और यह सारा माल किसका है और यह जानकारी जगतार के विरूद्ध एक ठोस सबूत का काम करती।

फिर भी उसने बहुत बड़ी सफलता हासिल की थी।

करीब दो घण्टे जब पूरे दल बल के साथ जमशेद राय वापिसी के लिये वहां से रवाना हुआ तो उसके साथ अपनी सफलता के सबूत के तौर पर करोड़ों का अवैध सामान था।

□□□

□□□

जगतार ने बीच वाली शैल्फ की बिल्कुल बीच में बड़ी जानी वॉकर की बोतल उठाई जो कि आधी से ज्यादा खाली थी।

बोतल को काउंटर पर एक तरफ रखकर उसने खांचे में हाथ डाला और उसे अपने अंगूठे तथा उंगलियों से दबाकर बाईं तरफ घुमाया।

थोड़ी-सी कोशिश के बाद खांचे का तला बोल्ट की तरह घुमता हुआ ऊपर उठने लगा।

घुमाते हुए उसने खांचे के तले को बाहर निकाला और उसके नीचे करीब छह इंच तक चूड़ियां बनी हुई थीं। उसने उसे बोतल के करीब रखा और खांचे में हाथ डाला।

इस बार उसका हाथ नीचे इतनी गहराई तक गया था कि उसकी बांह कोहनी तक उसमें चली गई थी। भीतर बांह डाले हुए ही उसने भीतर पता नहीं क्या हरकत की...फिर बांह बाहर निकाल ली और लगा इंतजार करने।

ठीक तीन मिनट बाद हल्की-सी घूं-घूं को आवाज शैल्फ में से निकली और उसी के साथ ही बीच वाली शेल्फ स्लाइड की तरह एक तरफ हटने लगी।

करीब डेढ़ फीट एक तरफ हटकर शेल्फ रुकी तो जगतार ने खाली स्थान में झांका...।

भीतर शनील की नीले रंग की तीन थैलियां पड़ी नजर आई उसे।

उसने एक-एक करके तीनों थैलियां बाहर निकाली और उन्हें काउंटर पर रख कर शेल्फ के खाने में पुनः बांह घुसेड़ कर फिर नीचे कोई हरकत की।

फौरन शैल्फ ऊपर सजी बोतलों समेत सरकती हुई वापिस अपने स्थान पर आ गई।

जगतार ने खांचे का तला खांचे में डाला और उसे घुमाते हुए नीचे ले जाने लगा।

तले को अपनी तरह से कसकर उसने बोतल वापिस खांचे में रखी और तीनों थैलियां उठाकर सोफे पर आ बैठा।

एक नया पैग पेट में पहुंचा कर उसने बोतल तथा गिलास को एक तरफ सरकाया और फिर एक थैली उठाकर उसके मुंह पर बंधी रस्सी खोलने लगा।

डोरी खोलकर उसने बड़ी सावधानी से थैली को टेबल पर उलट दिया।

उलटते ही थैली ने हीरे उगलने शुरू कर दिये जो टेबल के शीशे से टकराकर इधर-उधर बिखर रहे थे।

ट्यूबों की लाइटें उन हीरों पर पड़कर आंखों को चौंधिया रही थीं।

उसने दूसरी थैली भी पलट दी...फिर तीसरी थैली को भी टेबल पर पलट दिया।

टेबल हीरों से जैसे भर गई। जिनमें से कई तरह की लाइटें निकल कर इधर-उधर फैल रही थीं।

जगतार की जिंदगी भर की कमाई थी यह।

उसने हीरे गिनने शुरू किये।

एक-एक हीरे को उठाकर वह एक थैली में डालता जाता और गिनती करता जाता।

कुल तीन सौ चालीस हीरे थे। जगतार के मुताबिक जिनकी कीमत दो सौ करोड़ से भी ज्यादा थी।

उनमें ऐसे-ऐसे नायाब हीरे भी थे जिनकी एक-एक की कीमत पांच करोड़ से भी ज्यादा थी।

सभी हीरों को एक ही थैली में डालकर उसने थैली का मुंह अच्छी तरह से बांधा और फिर थैली को टेबल पर रखकर खड़ा हो गया।

अपनी पैंट के हुक खोलकर उसने पैंट को घुटनों तक उतार दिया।

नीचे कच्छा पहन रखा था उसने।

उसने थैली उठाकर कच्छे के नाड़े से अच्छी तरह से बांधी और उसे कच्छे के भीतर धकेल दिया।

अब थैली उसके जांघों के बीच कच्छे के अंदर लटक रही थी।

उसने झुककर पैंट पकड़ी और सीधे होकर पैंट को पहना हुक बंद किये और फिर दरवाजे की तरफ बढ़ा।

सिटकनी गिराकर उसने दरवाजा खोला और वापिस सोफे पर आकर नया पैग बनाने लगा।

अपनी जिंदगी भर की पूंजी को उसने अपने काबू में कर लिया था।

जिस तरह पुलिस ने उसके तीन अड्डों पर छापा मारा था...उससे उसे अपने फंसने के चांस साफ नजर आने लगे थे।

इसीलिए उसने भागने की पूरी तैयारी कर ली थी...और इसीलिये ही उसने हीरे वक्त रहते निकाल लिये थे। ताकि भागने की नौबत आये तो वह खड़े पैर भाग सके।

अब उसे इंतजार था तो रिपोर्टों का था।

वह जानना चाहता था कि उसके अड्डों का क्या हुआ...।

सतीश रावण पर उसे खास खुन्दक थी। उसके बारे में जानने के लिये वह मरा जा रहा था। आखिर वही तो था उसकी बरबादी का कारण।

हालांकि सतीश रावण से ज्यादा नुकसान उसे पुलिस ने पहुंचाया था...मगर वह नुकसान भी उसे सतीश रावण के ही कारण हुआ था।

इसीलिये वह उसके बारे में जानने के लिये ज्यादा बेचैन था।

□□□

□□□

सतीश रावण ने बेड पर लेटे-लेटे ही वाल क्लाक पर निगाह मारी।

नौ बज रहे थे।

वह बेड से उतरा और पंजों के बल बैठकर बेड के नीचे से गांठ बाहर खींच ली।

गांठ को खोलकर उसने कोने इधर-उधर फैलाये।

एक तरफ बम नजर आये उसे जो कि नोटों की गड्डियों के ढेर के ऊपर पड़े थे।

वह वहां से उठा और कमरे की तलाशी लेने लगा।

किसी चीज की तलाश थी उसे।

जब उसे वह चीज नहीं मिली तो साथ वाले कमरे में चला गया और जब वहां से लौटा तो उसके पास वह चीज थी जिसकी कि उसे तलाश थी।

वह था एक थैला।

खुली पड़ी गांठ के करीब आकर उसने कुछ दस्ती बम उठाकर

थैले में रखे...साथ नें ही टाइम बम भी थैले में रख लिये।

तत्पश्चात उसने नोटों के ढेर से पांच-पांच सौ की दो गड्डियां उठाकर जेबों में डाली और गांठ को बंद करके बेड के नीचे खिसका दिया।

वह उठा बेड पर बैठा और नोटों की गड्डियां जेब से निकाल कर एक-एक करके दोनों गड्डियों की स्टैपल खोल दी।

अब गड्डियों की हालत यह थी कि उसे उन गड्डियों को हवा में उछालने की देर थी कि एक-एक नोट हवा में उड़ता नजर आता।

नोटों को जेब में डालकर उसने थैला उठाया और कमरे से बाहर निकलकर साथ वाले कमरे में आया और उसके पिछले दरवाजे से निकलकर पिछले दरवाजा खोला और पीछे वाली गली में आ गया।

गली से निकलकर उसने एक टैक्सी रुकवाई और उसमें सवार हो गया।

इधर उसकी टैक्सी आगे बढ़ी...ठीक उसी वक्त एक सूमो ऐन देवकी के मेन डोर के सामने आकर रुकी।

सूमो का पिछला दरवाजा खुला और चार आदमी बाहर निकले जिनमें से दो के पास रिवाल्वरें थी।

बाकी के दोनों खाली हाथ थे।

"ध्यान से...।" तभी ड्राइविंग सीट पर बैठा व्यक्ति बोला—"ज्यादा शोर न हो, और अगर कोई रोड़ा बनने की कोशिश करे तो बेशक गोली से उड़ा देना।"

चारों ने एक साथ सिर हिलाये और उसी के साथ ही उनमें से एक जोकि खाली हाथ था ने सूमो की पिछली सीट के नीचे से एक लम्बा लीवर निकाल लिया।

लीवर उठाये वह दरवाजे के सामने आया...लीवर को कुण्डे में फंसाया और एक तेज झटका दिया।

'खड़ाक...।' की आवाज के साथ कुण्डा उखड़ गया।

□□□

□□□

जमशेद राय अपने ऑफिस में प्रविष्ट हुआ।

सफलता का नशा उसकी आंखों में साफ नजर आ रहा था।

चेहरा खुशी से तमतमा रहा था।

अपने बलबूते पर उसने करोड़ों का अवैध सामान पकड़ा था। ऐसे में उसे पूरा विश्वास था कि वह जो इस वक्त इस थाने का अस्थाई एस०एच०ओ० है वह स्थायी हो जायेगा और कोई बड़ी बात नहीं कि वह डबल प्रमोट होकर इंस्पेक्टर बन जाये।

टेबल के पहलू से होकर अपनी कुर्सी पर बैठा और बैल पर हाथ मारा।

'टन्न...।'

तुरंत एक सिपाही भीतर प्रविष्ट हुआ।

"चाय लाओ... ।" वह बोला।
सिपाही तुरंत वापिस मुड़ा और बाहर निकल गया।
अब उसे नितीश का और हवलदार का इंतजार था जोकि दूसरे अड्डों पर रेड करने गये हुए थे और तब तक उसे जागना था।
तभी रंगनाथ ऑफिस में प्रविष्ट हुआ।
उसने एक जोरदार सैल्यूट उसे मारा और बोला–
"सारा माल खाने में रखवा दिया है सर।"
"गुड... ।" बोला जमशेद–"लेकिन अभी बेफिक्र नहीं हो जाना है तुम्हें पिछली बार थाने पर हमला हुआ था और जगतार के कुत्ते हमारे जवानों को मारकर सारा माल उड़ाकर ले गये थे...मैं उस इतिहास को दोहराना नहीं चाहता... ।"
"मैं समझ गया सर...इस बार ऐसा नहीं होगा... । सभी जवान हथियारों के साथ पूरी मुस्तैदी से पहरा देते रहेंगे। इस बार अगर जगतार ने ऐसी कोई हरकत की तो उसके पास उसका माल नहीं, बल्कि उसके कुत्तों की लाशें पहुंचेंगी।" कहते हुए उसकी आवाज में जोश भर आया था।
"वैरी गुड...अब जाओ सभी को चाय पिलाओ...खाना खिलाओ और ड्यूटी पर डट जाओ।"
"यस सर... ।"
कहकर रंगनाथ ने जयहिन्द किया और मुड़कर बाहर निकल गया।
तभी सिपाही चाय लेकर भीतर प्रविष्ट हुआ।
जमशेद राय ने अभी चाय का घूंट ही भरा था कि तभी फोन की घंटी घनघना उठी।
'ट्रिन...ट्रिन... ।'
कप को टेबल पर रखकर जमशेद राय ने रिसीवर उठाया और कान से लगाते हुए माउथपीस में बोला–
"हैलो पुलिस स्टेशन... ।"
"मैं निरंजन दास बोल रहा हूं राम बाग से... ।"
"कहां... ।"
"हमारे पड़ोस वाले मकान का ताला तोड़कर कुछ लोग भीतर घुस आये हैं टाटा सूमों में आये हैं वे...और उनके पास रिवाल्वरें भी है।"
जमशेद राय ने गहरी सांस छोड़ी... ।
चाय पीना भी हराम हो गया था उसके लिये।
"पता बताइये... ।" वह बोला।
दूसरी तरफ से पता बताया गया।
"हम पहुंच रहे हैं।" जमशेद राय बोला–"और आप कोई शोर मत मचाइयेगा...वर्ना चोर भाग जायेंगे।"
"जी।"

जमशेद राय ने रिसीवर क्रेडिल पर रखा और खड़ा हो गया।

चाय से भरे कप की तरफ उसने देखा भी नहीं जिसमें से कि उसने अभी सिर्फ एक ही घूंट भरा था।

बाहर आकर उसने हवलदार रंगनाथ तथा पांच सिपाहियों को जोकि राइफलों से लैस थे, जिप्सी में बिठाया और रामबाग की तरफ रवाना हो गया।

□□□
□□□

कुण्डे के उखड़ते ही उसी व्यक्ति ने दरवाजे को भीतर की तरफ धकेला और लीवर को सम्भाले भीतर दाखिल हो गया।

लीवर को उसने एक तरफ पकड़ रखा था मानो उसे कभी भी चलाने की जरूरत पड़ सकती हो।

पीछे-पीछे दोनों रिवाल्वरधारी तथा तीसरा भी अंदर प्रवेश कर गये।

सामने लाइन में दो कमरे थे जिनमें से एक पर ताला लगा था तथा दूसरा भिड़ा हुआ था...।

उसका कुण्डा भी बंद नहीं था।

लीवर वाला दूसरे दरवाजे के सामने पहुंचा और उस पर हाथ रख भीतर की तरफ धकेला।

यह देखकर उसे हैरानी हुई कि वह दरवाजा भीतर से बंद था।

उसने अपने साथियों की तरफ देखा और बोला—

"यह तो भीतर से बंद है।"

"तू उस दरवाजे को खोल...।"

एक रिवाल्वर वाला उसका स्थान लेते हुए दूसरे दरवाजे की तरफ इशारा करते हुए बोला।

लीवर वाला ताला लगे दरवाजे की तरफ बढ़ा।

रिवाल्वरधारी ने दरवाजे पर दस्तक दी और गुर्राया—

"अंदर जो कोई भी है...चुपचाप बाहर आ जाये...वर्ना इस घर को बम से उड़ा दिया जायेगा।"

मगर दरवाजा नहीं खुला। कोई भीतर होता तभी खुलता न।

उधर लीवर वाले ने दूसरे दरवाजे का ताला कुण्डे समेत उखाड़ दिया।

उसने दरवाजा खोला और भीतर प्रवेश कर गया।

इधर पहले वाले दरवाजे के सामने खड़े व्यक्ति ने फिर से चेतावनी दी।

ठीक तभी दूसरे कमरे के भीतर से आवाज आई।

"लोहार...जल्दी आ।"

बाकी के दोनों व्यक्ति जल्दी से भीतर पहुंचे।

लीवर वाला व्यक्ति एक गांठ खोले खड़ा था...गांठ में बम...नोट तथा ब्राउन शुगर की पुड़िया नजर आ रही थी।

"य... यह तो हमारा माल है...।" एक हैरत से चीखा।

"बेड के नीचे और पेटियां भी पड़ी है...।" लीवर वाला बोला।

"यानि सतीश रावण इसी घर में छुपा है...और वह साथ वाले कमरे में है।"

फौरन तीनों बाहर निकले...।

इस वक्त उनके चेहरों पर उत्तेजना के जो भाव थे वे देखते ही बनते थे।

लीवर वाले ने अपने साथी को एक तरफ धकेला और खुद दरवाजे के सामने आ लीवर को चौखट तथा दरवाजे के बीच उस जगह फंसाया जहां पर कि सिटकनी थी।

दो मिनट भी नहीं लगे कि भीतर सिटकनी साकेट समेट उखड़ गई।

लीवर वाले ने दरवाजे को भीतर की तरफ धकेला और इस तरह भीतर प्रविष्ट हुआ मानो सतीश रावण सामने खड़ा हो और वह लीवर से उसकी खोपड़ी तोड़ने के लिये आगे बढ़ा हो।

मगर अन्दर कोई नहीं मिला।

उस दरवाजे के सामने एक और दरवाजा था जोकि पीछे एक छोटे से आंगन में खुलता था और आंगन में उसे मकान का पिछला दरवाजा नज़र आ रहा था...।

यह सब नजारा उसने दरवाजे के साथ वाली खिड़की में से देख लिया था।

वह वापिस मुड़ा और अपने साथियों की तरफ देखा जोकि उसी की तरह खिड़की में से देख रहे थे।

"वह पिछले रास्ते से भाग गया है।" लीवर वाला बोला।

"वह भागा नहीं...।" लोहार बोला—"अगर भागता तो सारा माल साथ लेकर जाता, जबकि सारा माल यहीं पड़ा है। वह जरूर किसी काम से बाहर निकला है और वापिस लौटेगा।"

कहकर उसने जेब से मोबाइल फोन निकाला और शेरखान का नम्बर मिलाने लगा।

□□□
□□□

जिस उत्तेजित अंदाज से शेरखान कमरे में प्रविष्ट हुआ था उसी से जगतार समझ गया था कि सतीश रावण का पता चल गया है, मगर कुछ पूछा नहीं उसने बस पैग होठों से हटा उसकी तरफ देखने लगा।

"सतीश रावण का पता चल गया है चीफ...।"

हालांकि जगतार ने पहले से ही उसकी उत्तेजना को भांप लिया था फिर भी वह चौंक पड़ा।

"पता लग गया?" उसे जैसे विश्वास न हुआ हो।

"यस चीफ।"

"कहां है वो...?"

"राम बाग में एक मकान में छुपा हुआ है।"

"फौरन गोली से उड़ा दो उसे।"

"वो मकान में नहीं है।"

"क्या मतलब...?"

"उस मकान में वो सारा माल मिल गया है जोकि उसने पीली कोठी से लूटा था...लेकिन वह खुद मकान में नहीं है।"

"यानि वह वापिस लौटेगा।"

"हां...।"

"कितने आदमी गये हैं वहां...?"

"पांच हैं।"

"पांच और भेज दो और माल को वहां से उठवा कर यहां ले आओ...।"

"यस चीफ...।"

बोला वह और जेब से मोबाइल फोन निकाल कर आदेश देने लगा।

❑❑❑
❑❑❑

"ओ०के० बॉस...।" अभी सारा सामान गाड़ी में रखवा देता हूं।"

लोहार ने मोबाइल पर कहा और फोन बंद करके जेब में डाल दिया।

उसने अपने साथियों की तरफ देखा और बोला—

"बॉस ने कहा है कि सारा माल गाड़ी में रखवाकर भेज दिया जाये और हमें यहीं पर रहकर सतीश रावण का इंतजार करने को कहा है...और यह भी कहा है कि वे पांच आदमी और भेज रहे हैं हमारा साथ देने के लिये।"

"सतीश रावण के आने पर हमें क्या करना है?"

लीवर वाले ने पूछा।

"बिना कुछ कहे उसे खत्म कर देना है।"

लोहार बोला।

"अब बातों में वक्त बर्बाद न करो और माल निकालो...।"

दूसरा रिवाल्वरधारी बोला।

फौरन सभी देवकी के बेडरूम में आये और बेड के नीचे से पेटियां बाहर निकालने लगे।

अभी वे चार पेटियां ही निकाल पाये थे कि तभी...।

❑❑❑
❑❑❑

जमशेद राय की निगाहें जैसे ही टाटा सूमो पर पड़ी वह एक-दम से चौंकन्ना हो गया।

"उस गाड़ी पर काबू पाना है। उसे सम्भलने का जरा भी मौका नहीं देना।"

जिप्सी चलाते हुए ही वह बोला।

सभी ने सिर हिला दिया। साथ ही उनकी निगाहें सूमो पर जम गई।

और जैसे ही जिप्सी सूमो के पीछे आकर रुकी सभी छलांगे मारते हुए जिप्सी से उतरे और देखते ही देखते उन्होंने सूमो को घेर लिया।

रंगनाथ की राइफल की नाल खिड़की में से होकर ड्राइविंग सीट पर बैठे व्यक्ति की कनपटी पर जा टिकीं।

"खबरदार... !" वह फुफकारा—"अगर चालाकी दिखाने की कोशिश की तो भेजा उड़ जायेगा बाहर निकल... !"

वह आदमी बुरी तरह से घबरा गया।

घबराने के साथ-साथ वह हैरान भी हो रहा था कि पुलिस को कैसे पता चला उनका जो वहां आ पहुंची।

बुरी तरह से कांपते हुए उसने दरवाजा खोला और बाहर आ गया।

इससे पहले कि वह दरवाजा बंद करता...जमशेद राय उसके पीछे पहुंचा और रिवाल्वर निकालकर उसका दस्ता पूरे वेग से उसके सिर पर दे मारा।

उस व्यक्ति के घुटने मुड़ते चले गये और वह वही रंगनाथ के पैरों में ढेर हो गया।

"इसे गाड़ी के नीचे धकेलो और अन्दर चलो।" बोला जमशेद राय।

तुरंत ड्राइवर को सूमों के नीचे धकेल दिया गया।

और फिर जवानों के साथ जमशेद राय भीतर प्रवेश कर गया।

❑❑❑

❑❑❑

"खबरदार... !"

इस दहाड़ को सुन सभी उछल पड़े...साथ ही उनकी गर्दनें दरवाजे की तरफ मुड़ गई।

पुलिस को दरवाजे में देख के एक बार फिर चौंके... !

उन्हें सपने में भी गुमान नहीं था कि पुलिस वहां पहुंच जायेगी।

"सभी अपने हाथ सिर पर रखो और पीछे हटो।" गुर्राया जमशेद राय।

तभी लोहार ने फुर्ती का प्रदर्शन करते हुए रिवाल्वर निकाली और जमशेद राय की तरफ तान दी।

मगर उसकी सारी की सारी फुर्ती धरी की धरी रह गई।

जमशेद राय ने उसे ट्रिगर दबाने का मौका नहीं दिया उससे पहले ही उसकी रिवाल्वर ने आग उगल दी।

'धांय... !'

गोली सीधा लोहार के सीने में जा धंसी... ।

जोरों से चीखता हुआ लोहार उछला और फिर पलट गया। रिवाल्वर उसके हाथ से छूटकर एक तरफ जा गिरी।

"हाथ ऊपर... !" दहाड़ा जमशेद राय।

बाकी के तीनों ने फौरन अपने हाथ सिर पर रख लिये।

अपने साथी की हालत वे देख चुके थे। जमशेद राय ने उसे वार्निंग भी नहीं दी थी और उसे गोली से उड़ा दिया था।

"तलाशी लो इनकी... !" जमशेद राय गुर्राया।

फौरन उसके पीछे से निकलकर रंगनाथ आगे आया और उनकी तलाशी लेने लगा।

कुछ ही देर मे दोनो रिवाल्वरें और लीवर उसके कब्जे में था।

उन्हें पूरी तरह से काबू में करने के बाद ही जमशेद राय ने फर्श पर पड़े सामान की तरफ देखा, फिर बोला—

"क्या है इनमें... ?"

"कोई कुछ नहीं बोला। सभी थूक सटक कर रह गये।

जमशेद राय ने एक अन्य सिपाही को सामान खोलने का आदेश दिया।

और जब उस सिपाही ने पेटियां खोलीं... तो जमशेद राय उछल पड़ा।

पलभर में ही वह समझ गया कि वे जगतार के आदमी है।

"तो जगतार के कुत्ते हो तुम... !" वह फुंफकारा।

तीनों कुछ नहीं बोले... बस उनकी तरफ देखते रहे।

"और जगतार ने एक अड्डा बना रखा है यहां? और कहां-कहां छुपा रखा है माल।"

"य... यह ह... हमारा अड्डा नहीं है।"

लीवर वाला हड़बड़ाते हुए बोला।

"तो क्या इतना सारा माल तेरी मां का है?" गुर्राया जमशेद राय।

"य... यह सारा माल.. सतीश रावण ने लूटा था... !"

बुरी तरह से उछल पड़ा जमशेद राय।

"सतीश रावण... !"

"ह... हां... चीफ का माल लूटकर वह यहां छुपा हुआ था... !"

"अब कहां है वह... ?"

उत्तर में लीवर वाले ने सब कुछ कह सुनाया।

पता नहीं पुलिस के खौफ से या फिर लोहार की मौत से वह इस कदर खौफजदा हो गया था कि जो कुछ भी जमशेद राय उससे

पूछता गया... वह बताता गया।

'गिरफ्तार कर लो इन्हें।'' सारी बात जानने के पश्चात् जमशेद राय ने हुक्म दिया।

फौरन तीनों के हाथों में हथकड़ियां डाल दी गई।

तत्पश्चात् जमशेद राय ने सारा समान जिप्सी में रखवाया और फिर सूमो के नीचे बेहोश पड़े व्यक्ति को निकलवा कर उसे जिप्सी की पिछली सीटों के बीचों-बीच फर्श पर फिकवाया तथा बाकियों को भी पिछली सीटों पर गधों की तरह लादकर उसने जवानों को वहीं ठहरकर सतीश रावण की इंतजार करने का हुक्म दे वहां से रवाना हो गया।

एक और बहुत बड़ी सफलता पर उसका नाम दर्ज हो गया था और अब बारी थी जगतार की जिसे गिरफ्तार करने की अब उसके पास ढेर सारी वजह हो गई थीं साथ ही सबूत भी बन गये थे।

थाने पहुंचकर उसने चारों को हवालात में पहुंचाया और माल को मालखाने में रखवाकर सिपाहियों को कूच करने के लिये तैयारी करने का आदेश दनदना दिया।

□□□

□□□

जिस वक्त देवकी के घर जाने के लिये एक कार में पांच आदमी जगतार की कोठी के गेट से निकले थे उस वक्त सतीश रावण कोठी से कुछ दूर सड़क किनारे एक पेड़ के पीछे खड़ा था।

आगे दौड़ पीछे दौड़ वाली बात हो रही थी उसके साथ।

वह जगतार को लूट रहा था और पुलिस पीछे से उसे लूट रही थी...और इसका पता उसे बिल्कुल नहीं था।

अगर उसे पता चल जाता कि उसके द्वारा कमाया गया सारा माल पुलिस के कब्जे में चला गया तो अवश्य ही उसे गश आ जाता।

पेड़ के तने के पीछे छुपे हुए ही उसने गेट की तरफ देखा जिसमें से कि कार निकल रही थी।

कार के जाने के उपरांत गेट पर खड़े दोनों गार्ड मुस्तैदी से खड़े हो गये।

यह बात पूरे गार्डों में फैल चुकी थी कि सतीश रावण का पता चल गया, मगर फिर भी गार्ड पूरी तरह से मुस्तैद थे।

सतीश रावण कुछ देर तो उन्हें देखता रहा...फिर थैले को कंधे पर टांगकर पेड़ पर चढ़ने लगा। कुछ ही देर में वह पेड़ की एक ऊंची शाख पर बैठा था।

वहां उसने कंधे से थैला उतार कर उसे एक शाखा पर टांगा और फिर कोठी के भीतरी भाग पर निगाह मारी।

बाऊंड्री वाल के पीछे काफी लम्बा चौड़ा लॉन था जोकि ड्राइव वे दो भागों में बंटा हुआ था।

ड्राइव वे के किनारे सजावटी वृक्ष लगे हुए थे तथा उनके बीच के फासले के बीच फूलों के पौधे लगे थे।

तीन गार्ड लॉन के अंत में बने लम्बे बरामदे में थे जोकि बाईं तरफ से भीतर मुड़ रहा था।

इसी बरामदे से ही तो बाहर निकला था वह।

बरामदे में लाईन में कुल छह दरवाजे थे जिनमें से चार बंद थे और दो खुले थे।

तभी भीतर जा रहे बरामदे में से शेरखान निकला और लम्बे बरामदे में टहल रहे तीनों गार्डों की तरफ बढ़ा।

उसे देख तीनों ठिठक गये।

फिर शेरखान उनके करीब पहुंचा और उनसे बातें करने लगा।

जिस अंदाज से वह बातें कह रहा था...और जिस तरह वे तीनों सिर हिला रहे थे उसी से सतीश रावण समझ गया कि वह या तो शेरखान है या जगतार का कोई सिपहसलार...।

और फिर जैसे ही शेरखान वहां से हटकर ड्राइव वे पर आया सतीश रावण तेजी से नीचे उतरने लगा।

फुटपाथ पर आकर उसने पांच-पांच सौ के नोटों को निकाल और उन्हें सीधा कर अपनी जेब में इस तरह डाला जैसे वह उन्हें जबरदस्ती जेब में ठूंसे हुए हो।

ऐसा लग रहा था जैसे जुए से ढेरों रुपये जीतकर उसने जेबें भरी हुई हों।

फुटपाथ से उतरकर वह इस तरह आगे बढ़ा, जैसे उसने बेतहाशा शराब पी रखी हो।

उसका एक पैर फुटपाथ पर इस तरफ पड़ रहा था और दूसरा दूसरी तरफ।

"साली...हर रोज ताने देती है...हिच...आज दिखाऊंगा हरामजादी को कि अपुन कितना लक्की है।"

गेट के सामने पहुंचकर वह तनिक ऊंचे स्वर में बोला ताकि गार्ड उसकी बात सुन ले।

तभी वह जोरों से लड़खड़ाया और धड़ाम से फुटपाथ पर गिर पड़ा।

दोनों गार्ड स्टेनगनें ताने उसी की तरफ देख रहे थे।

कोठी के गेट के पिलरों पर जल रही लाइटों में से गेट के सामने की सड़क ही नहीं सड़क के परले कोने पर गिरे पड़े सतीश रावण पर भी पूरी लाइट पड़ रही थी।

बड़ी मुश्किल से सतीश रावण उठा और गिरते-पड़ते आगे बढ़ने

लगा।

अब्रे पीछे उसने देखा तक नहीं कि क्या हुआ है।

पांच-पांच सौ के सात-आठ नोट गिर चुके थे वहां।

"पट्ठा काफी मोटा जीत कर आया है।" एक गार्ड बोला।

"पांच-पांच सौ के नोट हैं।" दूसरा बोला।

"फिर क्या करें?"

"आधा-आधा।"

"क्या आधा-आधा?" तभी पीछे से शेरखान की आवाज आई।

दोनों ने हड़बड़ाकर पीछे देखा।

"क्या आधा-आधा?" शेरखान दोनों के पीछे आते हुए बोला।

"व...वो सॉब सड़क पर रुपये गिरे पड़े हैं...।" पहले ने नोटों की तरफ इशारा किया।

शेरखान ने उधर देखा...फिर उसकी निगाहें सतीश रावण की तरफ उठी जोकि थोड़ा आगे एक गली के किनारे गिर पड़ा था और उठने की कोशिश कर रहा था।

उसके उठते वक्त कई नोट उसकी जेबों से गिरते हुए उसने साफ देखे थे...और फिर देखते ही देखते वह गली में प्रवेश कर गया।

माया किसे अच्छी नहीं लगती।

यह तो अच्छे-अच्छों के इमान डांवाडोल कर देती है।

शेरखान के दिल में भी लालच आ गया।

"अपनी ड्यूटी देख...।" वह गुर्राया और खुद नोटों की तरफ बढ़ा।

सड़क पार करके उसने नोट उठाये और फिर गली की तरफ बढ़ा जिसके सिरे पर नोट बिखरे पड़े थे।

वहां पहुंच कर वह झुका और नोट बटोरते हुए गली के भीतर झांका...।

सतीश रावण लड़खड़ाता हुआ जा रहा था।

तभी वह पुनः गिरा।

शेरखान को उसकी जेबों से बाहर झांकते नोट साफ नजर आये।

"साला नशे में है। लुटवाकर ही होश में आयेगा।"

वह बड़बड़ाया और उसकी तरफ बढ़ा।

"साली...।" उसके करीब पहुंचने पर उसे सतीश रावण की बड़बड़ाहट सुनाई दी—"लात मारती है। कहती है कमा कर लाऊं, फिर कपड़े उतारूंगी...।हिच्च...आज पूरे कपड़े उतरवाऊंगा...देखूंगा कैसे मना करती है हिच्च...।"

बड़बड़ाते हुए सतीश रावण उठने की कोशिश कर रहा था।

तभी उसकी नजर शेरखान पर पड़ी।

फौरन पहचान लिया उसने उसे कि वह वही बरामदे वाला है।

वह तो दोनों में से किसी गार्ड के आने की उम्मीद कर रहा था जबकि यहां तो उनका बॉस आ पहुंचा था।

सतीश रावण की बांछें खिल गईं।

"ए...ऐ भाई साहब...।" उसने खड़ा होने की कोशिश करते हुए शेरखान की तरफ हाथ बढ़ाया—"म...मेरे को न...नशा हो गया है...प्लीज...मेरी माशूक के घर पहुंचा दीजिये मुझे...हिच्च...।"

नोट खिसकाने का अच्छा मौका था उसके पास। तभी तो मुस्कुरा पड़ा था।

"इतनी ज्यादा पीते ही क्यों हो जो दूसरों का सहारा लेना पड़े।"

वह उसे सहारा देता हुआ बोला। साथ ही उसका हाथ उसकी जेब की तरफ रेंग गया।

"व...वो...म...मेरी माशूक...खबरदार...।"

एकाएक ही एक फुंफकार शेरखान के कानों में पड़ी साथ ही आरी उसकी गर्दन में आ लगी।

बुरी तरह से चौंका शेरखान कलेजा उछलकर उसके हलक में आ फंसा।

पलक झपकते ही वह समझ गया कि वह एक पिशाच के चंगुल में फंस गया है। पिशाच भी वो जिसने उसके चीफ तक की जड़ें हिला दीं है...ऐसे में भला उसकी क्या बिसात।

"स...तीश...।"

"रावण...।" गुर्राया सतीश रावण—"हाथ ऊपर कर...।"

आरी की धार उसकी गर्दन से सिर्फ लगी ही हुई थी...फिर भी शेरखान को ऐसा लग रहा था कि जैसे आरी उसकी गर्दन में धंसी की धंसी।

तुरंत उसने हाथ ऊपर उठा लिये।

बेशक वह जगतार का सिक्योरिटी इंचार्ज था, लेकिन सतीश रावण के नाम का खौफ उसके जेहन में किस कदर बैठा हुआ था...यह उसके हाथ उठाने से ही पता चल रहा था।

सतीश रावण ने बिना वक्त गंवाये उसकी रिवाल्वर जेब से निकालकर अपने कब्जे में की और फिर उसके गले से आरी को हटाते हुए ही गुर्राया—

"आगे बढ़...।"

"द...देखो...त...तुम मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते...मेरी एक आवाज पर ही तुम्हारा जिस्म गोलियों से बिंध जायेगा और...।"

"तू आवाज निकालने की कोशिश तो कर, फिर देख कैसे अलग होती है तेरी गर्दन तेरे जिस्म से। आगे बढ़।"

बुरी तरह से थरथर्रा उठा शेरखान! आज्ञा का पालन करना पड़ा उसे।

सतीश रावण उसे एक अंधेरी साइड में ले गया...ताकि अगर गार्ड उसका पता करने गली के सिरे पर पहुंचे तो भी उन्हें गली खाली मिले...।

"अब बोल...।"

"क...या...?"

"जगतार के बारे में बोल...वो सब कुछ बोल जो तू जानता है।"

मौत की खौफ ने शेरखान को जुबान खोलने पर मजबूर कर दिया।

सब कुछ बताता चला गया वह।

जो कुछ भी सतीश रावण ने उससे पूछा...उसका उत्तर मिला उसे।

सतीश रावण ने उससे और तो सब कुछ पूछ लिया, लेकिन यह नहीं पूछा कि कार में बैठे गार्ड कोठी से निकलकर कहां गये थे।

अगर वह पूछता तो जवाब उसे मिलता...उसे सुनकर उसके पैरों तले से धरती खिसक जाती।

वे पांचों देवकी के घर की तरफ रवाना हुए थे। इतना सुनते ही उसे पता चला जाता कि देवकी के घर में पड़ा उसका माल अब उसका नहीं रहा।

जब सतीश रावण ने उससे सब कुछ पूछ लिया तो उसने बिना कोई डायलॉग बोले आरी चला दी।

'खचाक...।'

एक ही झटके में शेरखान की गर्दन उसके कंधे पर झूल गई।

वह जोरों से उछला और वहीं गिर कर छटपटाने लगा।

सतीश रावण ने तड़फ रहे शेरखान के कपड़ों से आरी पोंछी और उसे अपनी पीठ पर चिपकाते हुए साइड से बाहर आकर गली के परे सिरे की तरफ बढ़ गया।

वापिस नहीं आया वह, क्योंकि वह जानता था कि गार्डों की निगाहें गली के सिरे की तरफ ही उठी होंगी और वह कोई खतरा उठाना नहीं चाहता था।

एक लम्बा चक्कर लगाकर वह उसी पेड़ के पास पहुंचा जिस पर कि उसने बमों का थैला लटका रखा था।

पेड़ पर चढ़कर उसने थैला उतारा और उसे लिये हुए नीचे उतर आया।

थैले को उठाये हुए ही वह सड़क पार कर कोठी वाली साइड

में आया और फुटपाथ पर चढ़कर थैले में से एक टाइम बम निकालकर उस पर पांच मिनट का टाइम फिक्स किया और लीवर को दबाकर बम को सक्रिय कर दिया।

थैले को कंधे पर टांगकर वह पास वाली कोठियों की दीवारों से चिपकते हुए आगे सरका और सरकते हुए जगतार की कोठी की बाऊंड्री वाल तक आ गया।

गेट पर मौजूद दोनों गार्डों का ध्यान गली की तरफ था।

निश्चय ही वे शेरखान के लौटने का इंतजार कर रहे थे।

सतीश रावण ने हाथ ऊंचा किया और बम को भीतर की तरफ उछाल कर तेजी से पीछे हटा और फिर थोड़ा आगे भागकर सड़क पार की और उसी पेड़ के पीछे आ छुपा जिस पर कि उसने थैला छुपाया था।

तने के पीछे आते ही उसने थैले में से एक दस्ती बम निकाला और दांतों से उसकी पिन खींचकर इंतजार करने लगा।

ठीक एक मिनट बाद...।

"धड़ा...म...।'

एक गगनभेदी विस्फोट हुआ और जगतार की कोठी की बाऊंड्री वाल का काफी लम्बा हिस्सा उड़ गया। उसी के साथ ही आग का बवण्डर ऊपर को उठा जिसकी रोशनी में उसने इंसानी जिस्म के चीथड़े उड़ते देखे। विस्फोट इतना जबरदस्त था कि गेट पर खड़े दोनों गार्ड लड़खड़ाकर गिर पड़े...।

लॉन में मौजूद गार्डों में से एक तो बम के साथ ही उड़ गया था तथा तीन बुरी तरह से जख्मी हो गये।

गेट वाले दोनों गार्ड किसी तरह सम्भले और उठकर स्टेनगनें गेट के टूटे भाग की तरफ तान दी।

मगर वहां कोई होता तो ही नजर आता न वह।

तभी बरामदे के दरवाजे खुले और स्टेनगनों से लैस कई गार्डों को सतीश रावण ने भागकर टूटी दीवार की तरफ बढ़ते देखा।

सतीश रावण के होठों पर शैतानी मुस्कान नाच उठी।

जैसे ही वे टूटी हुई बाऊंड्री वाल के करीब पहुंचे... सतीश रावण ने बम को हाथों में तोला... पेड़ के नीचे से निकला और उधर उछाल दिया।

'धड़ा...म...।'

एक जबरदस्त विस्फोट हुआ और कई इंसानी कटे-फटे जिस्म हवा में उड़ते नजर आने लगे।

बुरी तरह से हड़बड़ा उठे बाकी के गार्ड... और जब तक वे सम्भलते सतीश रावण ने एक और बम उधर उछाल दिया।

'धड़ाम...।"

गार्डों की संख्या काफी घट गई।

तभी गेट की तरफ से कई गोलियां सतीश रावण की तरफ लपकीं।

'तड़...तड़...तड़...।'

गेट वाले गार्डों ने अपनी स्टेनगनों के मुंह खोल दिये थे।

मगर सतीश रावण सुरक्षित था।

सारी गोलियां या तो पेड़ के तने में लगीं या इधर-उधर निकल गई।

सतीश रावण ने एक बम गेट की तरफ उछाल दिया।

'बड़ा...म...।'

बम गेट तक तो नहीं पहुंचा पाया उससे पहले ही फट गया।

लेकिन फिर भी गेट वाले दोनों गार्ड घायल जरूर हो गये।

सतीश रावण ने एक और बम उधर फेंका और इस बार पूरा जोर लगाकर फेंका था।

इस बार बम उनके काफी करीब गिरा।

नतीजा—

दोनों के जिस्मों के चीथड़े उड़ गये।

सतीश रावण ने टूटी हुई बाउण्ड्री वाल की तरफ देखा।

भीतर लॉन में इधर-उधर आधी अधूरी लाशें बिखरी पड़ी थीं...कई घायल हुए पड़े थे।

एक भी ऐसा व्यक्ति नजर नहीं आया उसे जिसे कि वह जिन्दाकर सकता था।

फिर भी उसने एक और बम बाउण्ड्री वाल के उस हिस्से की तरफ उछाल दिया, जहां से कि दीवार टूटी थी।

हो सकता था कि बाउण्ड्री वाल के पीछे कोई छुपा हो जो कि उसके पेड़ के पीछे से निकलने की इन्तजार कर रहा हो...ठीक कब वह निकले और वह उस पर अंगारे बरसाये।

'बड़ा...म...।'

बाउण्ड्री वाल का एक और हिस्सा मलवे के ढेर में बदल गया।

सतीश रावण ने नया बम निकाला और पेड़ के पीछे से निकलकर सड़क पर आ गया।

बम की पिन को दांतों से खींचते हुए वह तेजी से आगे बढ़ा और गेट के आगे से निकलकर बाउण्ड्री वाल की लम्बाई के बराबर चलते हुए उसके अन्त में आकर भीतर को जाती सड़क की तरफ मुड़ गया।

यह वही सड़क थी, जिस पर कूड़े का ड्रम पड़ा था, जिसमें छुपकर उसने अपनी जान बचाई थी।

ड्रम के करीब से निकलकर वह थोड़ा आगे बढ़ा और फिर

कदमों को रोककर गर्दन ऊपर उठाई।
दो-मंजिला कोठी थी वह।
उसने बम को पूरे वेग से छत की तरफ उछाला और तेजी से पीछे भागा।
जैसे ही बम छत पर गिरा।
'बड़ा...म...।'
छत के एक भाग के परखच्चे उड़ गये।
उसने थैले में हाथ डाला।
सिर्फ एक ही बम बचा था।
बम को निकालकर उसने थैले को वहीं फेंका और उसकी पिन खींचकर ऊपर देखा।
ठीक तभी--
'धांय...धांय...।' पीछे से फायरिंग हुई।
सतीश रावण ने फौरन एक तरफ छलांग लगा दी।
गर्म हवा फेंकता हुआ एक शोला उसके कान के करीब से गुजर गया।
सड़क पर गिरते ही सतीश रावण ने पीछे देखा।
कई सिपाही हाथों में राइफलें लिये खड़े थे।
सतीश रावण ने बिना वक्त गंवाये बम उधर उछाल दिया।
'बड़ाम...।'
दो सिपाही वहीं ढेर हो गये।
जैसे ही बम फटा...सतीश रावण उठा और पूरी शक्ति से वहां से भाग खड़ा हुआ।
अब उसका वहां एक पल के लिये भी रुकना बेवकूफी थी।
और जब तक गुब्बार और आग के बादल छंटते...वह वहां से नौ-दो ग्यारह हो चुका था।

□□□

□□□

"पीछा करो...और देखते ही गोली से उड़ा दो।"
दहाड़ा जमशेद राय।
इस वक्त वह जगतार की कोठी की बाउण्ड्री वाल के मोड़ पर खड़ा था।
जगतार के आदमियों को गिरफ्तार कर उसके थाने पहुंचने के कुछ देर बाद ही पहले नितीश जिसका सेहरा बांधे थाने पहुंचा, फिर हवलदार।
बहुत बड़ी उपलब्धि थी यह जमशेद राय के लिये।
वहां से मिला सारा माल भी उसने मालखाने में जमा कराया और फिर एक गाड़ी जवानों की भरकर नितीश को साथ ले वह जगतार

की कोठी की तरफ रवाना हो गया।

रास्ते में उसने नितीश को बताया कि किस तरह उसे सतीश रावण का पता लगा और किस तरह उसने जगतार के आदमियों को गिरफ्तार किया।

"अब तो तुम इंस्पेक्टर बने कि बने...।" हंसा था नितीश।

"और मुझे उम्मीद ही नहीं पूरा विश्वास है कि तुम भी प्रमोट होवोगे।"

"तुम्हारे मुंह में घी शक्कर...।"

उस वक्त वे जगतार की कोठी से काफी दूर थे, जब उनके कानों में विस्फोटों की आवाजें पड़ीं।

"यह आवाजें तो उधर से ही आ रही हैं जिधर हम जा रहे हैं।"

नितीश चौंकते हुए बोला।

"कहीं सतीश रावण यहां तो नहीं पहुंच गया।"

जमशेद राय भी चौंका...साथ ही उसने जिप्सी की रफ्तार बढ़ा दी।

उसके पीछे चल रही पुलिस की गाड़ी की भी रफ्तार तेज हो गई।

और जब तक वे वहां पहुंचे... तब तक सतीश रावण कोठी का मोड़ मुड़ चुका था।

हर तरफ लाशें बिखरी पड़ी थीं। कई-कई लाशें तो इस कदर उधड़ चुकी थीं कि उन्हें देखा भी नहीं जा सकता था।

बहुत ही भयानक लग रही थीं वे लाशें।

गेट के सामने रुककर जमशेद और नितीश जिप्सी से नीचे उतर आये।

पीछे आ खड़ी हुई गाड़ी से भी धाड़-धाड़ करते जवान उतरने लगे।

अभी जमशेद राय उन्हें कोई आदेश देने ही जा रहा था कि तभी एक जबरदस्त विस्फोट के साथ कोठी की ऊपरी मंजिल की छत उड़ गई।

"वह अभी यहीं है...।" चीखा जमशेद राय—"साइड की सड़क पर।"

फौरन जवान उस तरफ लपके और सतीश रावण को देखते ही उस पर गोली चला दी।

मगर सतीश रावण दो जवानों को उड़ाकर भाग निकला था।

आदेश मिलते ही छः-सात सिपाही राइफलें उठाये उधर भागे जिधर कि सतीश रावण गया था।

जमशेद राय ने पांच सिपाहियों को वहीं खड़े रहने का आदेश

दिया और बाकियों के साथ गेट के चीथड़े उड़ी दोनों गार्डों की लाशों से बचता हुआ कोठी में प्रवेश कर गया।

जो हालत यहां हुई नजर आ रही थी...उससे तो अब जगतार का कानून के हाथों से बचना नामुमकिन था।

इस वक्त जमशेद राय के चेहरे पर सख्ती थी और आंखों में कठोरता।

ऐसी ही कठोरता नितीश के चेहरे पर थी।

□□□

□□□

'बड़ा...म...।'

विस्फोट की आवाज सुनकर बुरी तरह से उछल पड़ा जगतार।

"शेर खान...।" वह जोरों से दहाड़ा।

मगर शेर खान की बजाय एक अन्य गार्ड भीतर प्रविष्ट हुआ।

"बॉस तो नहीं है चीफ।"

"यह विस्फोट कैसा है...पता लगा।"

गार्ड फौरन वापिस पलट गया...जबकि जगतार ने पैग उठाकर होंठों से लगा लिया।

अभी उसने पैग खत्म ही किया था कि एक और विस्फोट की आवाज उसके कानों में पड़ी...और फिर ऐसा लगने लगा जैसे बमों के गोदाम में आग लग गई हो।

तभी गार्ड बुरी तरह से हांफता हुआ अन्दर आया।

"ह...हमला हो गया चीफ...।"

"क्या...?" उछल पड़ा जगतार।

"क...कोई भी नहीं बचा...।"

जगतार झटके से खड़ा हो गया। उसका चेहरा धुआं-धुआं हो गया।

वह समझ गया कि सतीश रावण ने हमला कर दिया है।

अभी वह सकते की हालत से निकल भी नहीं पाया था कि अन्य गार्ड घबराई अवस्था में भीतर प्रविष्ट हुआ।

"प...पुलिस...।"

पुलिस का नाम सुनकर जगतार के चेहरे पर निराशा फैल गई।

अब बचना नामुमकिन था। अगर बचा जा सकता था, तो उसका सिर्फ एक ही रास्ता था कि वहां से भाग जाये।

हीरे उसके पास थे ही। सो उसने वहां से भागने का फैसला कर लिया।

फौरन उसने जेब से रिवाल्वर निकाली और बिना कोई बात किये दोनों गार्डों को शूट कर दिया।

दोनों की लाशें गिराकर उसने दरवाजा भीतर से बन्द किया

और पीछे वाली दीवार के पास आकर एक कील को जो कि दीवार में ठुका नजर आ रहा था, अंगूठे से दबाया।

फौरन दीवार का एक हिस्सा फट गया और उसमें रिक्त स्थान पैदा हो गया।

जगतार उस रिक्त स्थान में प्रविष्ट हुआ और उस हॉल में आ गया जिसमें कि वह अपना दरबार लगाता था।

सामने उसकी सिंहासननुमा कुर्सी पड़ी थी।

आगे बढ़कर वह उस कुर्सी पर बैठा और कुर्सी के दायें हत्थे पर हाथ रखकर एक विशेष अंदाज में हथेली के पीछे के भाग को दबाया।

फौरन वह दीवार जिसमें से कि वह निकला था...इकसार हो गई।

तत्पश्चात् उसने अंगूठे से एक अन्य स्थान को दबाया।

उसी वक्त कुर्सी एक लिफ्ट की तरह भीतर धंसने लगी।

करीब पन्द्रह फीट नीचे जाकर कुर्सी रुकी तो जगतार कुर्सी से उतर गया।

उसी के साथ ही कुर्सी ऊपर रवाना हो गई।

जिस स्थान पर इस वक्त जगतार खड़ा था, वह एक छह बाई छह का कमरा था, जिसके एक तरफ लम्बी सुरंग बनी हुई थी।

सुरंग इतनी लम्बी थी कि उसका दूसरा सिरा नजर नहीं आ रहा था।

जगतार उस सुरंग में आगे बढ़ने लगा।

करीब तीन सौ फीट लम्बी सुरंग थी वह...जिसे पार कर जगतार वैसे ही एक कमरे में रुका जैसे कमरे से वह सुरंग में प्रविष्ट हुआ था।

कमरे के दायीं तरफ दीवार में वैसी ही एक छोटी-सी कील लगी थी जैसा कि उसने कोठी में दबाया था।

उसने कील को दबाया और एक तरफ हट गया।

फौरन पूरी-की-पूरी छत नीचे आने लगी और आकर फर्श से सट गई।

जगतार उस पर चढ़ा और कील को बाहर की तरफ खींचा।

छत लिफ्ट की तरह ऊपर उठने लगी...और ऊपर आकर एक कमरे का फर्श बन गई।

जगतार ने कदम दरवाजे की तरफ बढ़ाये।

अपनी कोठी से तीन सौ फुट दूर था वह और यहां से वह अपनी गाड़ी द्वारा आराम से निकल सकता था।

दरवाजे के करीब आकर उसने दरवाजे का हैंडल पकड़ा और जैसे ही उसने दरवाजा खोला।

कलेजा मुंह को आ गया उसका।
आंखें फट पड़ीं।
सामने सतीश रावण खड़ा था।

□□□
□□□

भागता हुआ सतीश रावण कोठी की पिछली साइड वाली सड़क पर मुड़ा और कोठी के अन्त में पहुंचकर सड़क पार कर चार कोठियां फांदकर पांचवी कोठी की बाउण्ड्री वाल के सामने आ खड़ा हुआ।

शेरखान ने उसे बताया था कि जगतार के भागने का गुप्त रास्ता इसी कोठी से है और उसने यह भी बताया था कि कैसे वह सुरंग के जरिये जगतार की कोठी में प्रवेश कर सकता है।

पीछे पुलिस लगी हुई थी...ऊपर से जगतार को खत्म करने का उसके पास यह आखिरी मौका था। सो उसने उसी रास्ते से जगतार को सिर तक पहुंचने का फैसला किया।

बिना कोई वक्त गंवाये वह बाउण्ड्री वाल पर चढ़ा और भीतर कूद गया।

कम्पाउण्ड की तरफ बढ़ते वक्त उसने रिवाल्वर निकाल ली।

बिना किसी दिक्कत के वह कम्पाउण्ड में पहुंच गया।

शेर खान ने उसे बताया था कि उस कोठी में सिर्फ एक ही आदमी अपनी पत्नी के साथ रहता है और वह आदमी जगतार का खासमखास है।

दरवाजे पास जाकर उसने कॉलबैल का बटन दबाया।

"कौन...?" भीतर से आवाज आई।

"दरवाजा खोलो...।"

सतीश रावण जगतार की आवाज की नकल करते हुए बोला।

और जैसे ही दरवाजा खुला...सतीश रावण ने रिवाल्वर आगे की और ट्रेगर दबा दिया।

'धांय...।'

गोली सीधी उस व्यक्ति के सीने में जा दफन हुई।

सतीश रावण ने उसकी सूरत भी नहीं देखी और उसे गिरने से पहले ही एक तरफ धकेल कर भीतर प्रवेश कर गया।

तभी उसके दायीं तरफ घुटी-घुटी चीख उभरी।

सतीश रावण ने गर्दन उधर मोड़ी।

एक औरत बुरी तरह से खौफजदा अपने पति की लाश देख रही थी।

सतीश रावण ने रिवाल्वर का रुख उधर किया और ट्रेगर दबा दिया।

वह औरत चीखती हुई अपना सीना पकड़े वहीं ढेर हो गई।

सतीश रावण ने रिवाल्वर की नाल में फूंक मारी और हॉल में दायीं तरफ मुड़कर आखिरी कमरे की तरफ बढ़ा।

जैसे ही वह दरवाजे के सामने पहुंचा—

ठीक तभी दरवाजा खुला।

सतीश रावण ने बिना वक्त गंवाये रिवाल्वर सामने तान दी और जैसे ही उसने जगतार को सामने देखा...उसके होठों पर जहर भरी मुस्कान नाच उठी।

"बड़ी देर से खड़ा था मैं यहां...बड़ी बेसब्री से इन्तजार कर रहा था तेरा।" वह हंसा।

जगतार को सपने में भी उम्मीद नहीं थी कि सतीश रावण को इस रास्ते का पता चल चुका है।

तभी तो वह बुरी तरह से चौंक उठा था।

"त...तुम...?"

"हैरानी हो रही है?" हंसा सतीश रावण।

"इ...इस रास्ते का पता कैसे चला तुम्हें...?"

"शेरखान से और शेरखान ने तेरे से जो गद्दारी की है...उसकी सजा उसे दे दी है मैंने...।"

जगतार ने जोरों से थूक सटकी।

"मुझे मारा था तूने...।" सतीश रावण गुर्राया—"एक हरामी को मारा था तूने। तू कहता था न कि एक बार मैं तेरे सामने आकर देखूं...फिर तू बतायेगा कि तू क्या बला है और मैंने कहा था कि जब मैं तेरे सामने आऊंगा...मौत तेरे सिर पर सवार होगी। तू बला तो नहीं बन सका...मगर देख ले...मौत तेरे सामने खड़ी है।"

"द...देखो सतीश रावण...जो कुछ भी हुआ अन्जाने में हुआ...।" जगतार बोला—"मैंने यही समझा था कि तुम किस्मत के साथी हो...इसीलिये तुम पर ज्यादती कर बैठा।"

"अगर तुझे पता लगता तो क्या तू मुझे छोड़ देता?" हंसा सतीश रावण।

"मेरी तुम्हारे साथ कोई दुश्मनी तो थी नहीं...फिर मैं तुम्हें क्यों कुछ कहता? मेरी गलतफहमी की जो सजा तुमने मुझे दी है...वो सजा ही बहुत है। अब तुम अपने रास्ते जाओ...और मुझे जाने दो। इस शहर से मेरा दाना-पानी अब उठ चुका है।"

सतीश रावण के होठों पर शैतानी मुस्कान नाच उठी।

इस शहर से नहीं...इस दुनिया से ही तेरा दाना-पानी उठ चुका है। यूं भी मैं हरामी किस्म का जीव हूं और ऐसा हरामी हूं कि किसी की जेब में चवन्नी भी देख लूं तो उसे गोली मार देता हूं। जब मैं एक राह चलते आदमी को मार सकता हूं तो तुझे क्यों बख्शूं...जबकि तू तो मेरा दुश्मन है।"

''मगर मैं तो तुम्हें अपना दुश्मन नहीं मानता।''

''अच्छा!''

''हां...म...मेरे पास अभी भी इतनी दौलत है सतीश रावण कि अगर तुम सारी उम्र भी उसे दोनों हाथों से लुटाते रहो, तो भी वह खत्म न हो। मैं उसमें से सारी दौलत तुम्हें दे सकता हूं।''

''कहां है वह दौलत?''

''पहले तुम्हें वादा करना होगा कि तुम दौलत पाने के बाद मुझे छोड़ दोगे।''

''पहले दौलत दिखा।''

''पहले वादा।''

सतीश रावण ने ऐसे मुंह बनाया जैसे मजबूर हो गया हो।

''ठीक है...।'' वह गहरी सांस छोड़ते हुए बोला—''वादा किया। अब बोल कहां है दौलत?''

''यहां...।'' जगतार ने अपनी जांघों के बीच हाथ मारा।

सतीश रावण ने घूरकर उसे देखा।

''तो यह देना चाहता है तू मुझे...?'' वह गुर्राया।

''तुम गलत समझ रहे हो...यहां हीरे बांध रखे हैं मैंने...कम से कम दो सौ करोड़ के हीरे हैं।''

सतीश रावण ने कदम उसकी तरफ बढ़ाया और उसके सामने आकर हीरे टटोलने के लिये जैसे ही झुका--

जगतार का हाथ हथौड़े की तरह उसकी कलाई पर पड़ा।

सतीश रावण को सपने में भी उम्मीद नहीं थी कि वह इतनी बड़ी चाल खेल जायेगा।

रिवालर उसके हाथ से छूटकर परे जा गिरी।

जगतार ने फुर्ती का प्रदर्शन करते हुए अपनी रिवाल्वर निकाली और जैसे ही वह सतीश रवाण पर गोली दागने को हुआ--

'खचाक...।'

उसकी रिवाल्वर वाली कलाई कट कर नीचे को लटक गई।

जगतार के होंठों से चीख निकल गई। उसे पता ही नहीं चला कि कब सतीश रावण ने आरी निकाली और कब चला दी।

'खचाक...।' तभी आरी पुनः लहराई और जगतार की गर्दन आधी से ज्यादा कट गई।

वह नीचे गिरकर छटपटाने लगा।

सतीश रावण ने झुककर उसकी जांघों के बीच टटोला तो उसकी आंखें चमक उठीं।

झूठ नहीं कहा था जगतार ने।

तुरन्त उसने उसकी लाश की पैंट खोलकर हीरों की थैली निकाली और आरी उठाकर उसे जगतार के कपड़ों से पोंछा और खड़ा

हो गया।

थैली को जेब में रखकर उसने आरी को पीठ पर चिपकाया और रिवाल्वर उठाकर बाहर निकल गया।

कोठी से बाहर आकर वह छुपते-छुपाते काफी दूरी तक पैदल चला और फिर एक टैक्सी पकड़कर देवकी के घर की तरफ रवाना हो गया।

और जैसे ही देवकी का घर करीब आया...वहां लगी भीड़ तथा पुलिस को देखकर वह चौंक पड़ा।

पुलिस ने उन पांचों को बाहर सड़क पर ही मार गिराया था, जो अपने साथियों की मदद के लिये यहां आये थे।

इतना माल निकल जाने का सतीश रावण को मलाल तो जरूर हुआ था, मगर फिर भी वह खुश था।

यह पहला मौका था जब उसे दौलत हाथ लगी थी।

और दौलत भी काफी तगड़ी लगी थी।

दो सौ करोड़ की दौलत।

इतनी बड़ी सफलता से वह फूला नहीं समा रहा था।

उसने टैक्सी ड्राइवर को किसी होटल में चलने का आदेश दिया और सीट की पुश्त पर सिर टिका दिया।

सुबह होने पर वह माहौल देखकर ही यहां से निकलेगा।

मन ही मन यही फैसला किया था उसने।

समाप्त



खून पीने वाले पिशाचों के
बारे में तो आपने सुना होगा
मगर दौलत खाने वाले पिशाच
से आप मिलेंगें

सतीश रावण सीरीज के प्रस्तुत उपन्यास

पिशाच में

वि पॉकेट स